Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SAMELAN PATRIKA
B. K. U.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113057

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आषाढ़, श्रावण सम्वत् १९९५

सम्मेलन पत्रिका

[भाग २५, संख्या ११-१२]

सम्पादक

श्री रामकुमार वर्मा एम्० ए०

साहित्य मंत्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

प्रयाग

वार्षिक १)

एक प्रति =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—भक्ति-मार्ग के गुण दोष [श्री बलदेव प्रसाद मिश्र एम० ए०, एल-एल० बी०] १

२—सिद्धराज (बा० मैथिलीशरण गुप्त) [श्री कृष्ण एम० ए०] ७

३—हिन्दी-संसार [श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, संग्रह मंत्री] ... १४

४—प्राप्ति स्वीकार— ,, ,, ... २१

५—परिशिष्ट २४

६—स्थायी समिति की नियमावली ४९

७—विविध-विषय ९०

८—सम्पादकीय दृष्टिकोण ९८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

संख्या ११, १२] आषाढ़, श्रावण, सम्वत् १९९५ [भाग २५

भक्ति-मार्ग के गुणदोष

श्री बलदेवप्रसाद मिश्र एम० ए० एल-एल० बी०

१ इस मार्ग का पहला गुण तो यह है कि यही वास्तव में लोकधर्म
७ कहलाने योग्य है। श्रीमद्भागवत के अनुसार कामनावान् क्रियाशील
१४ व्यक्तियों के लिये कर्म-मार्ग, वैराग्यशील और तार्किक प्रवृत्तिवालों के
२१ लिये ज्ञान-मार्ग तथा मध्यमावृत्तिवालों के लिये भक्ति-मार्ग है१। जनता
२४ अधिकांश में मध्यमावृत्तिवाली (न एकदम विरक्त न एकदम अतिसक्त)
४९ होती है। इसी लिये भक्ति-मार्ग सर्वसाधारण को सदैव रुचिकर रहता
९० आया है। यहाँ एक बात जान लेने योग्य है। वास्तव में तो कर्म, भक्ति
९८ और ज्ञान इन तीनों के समन्वय के बिना कोई मार्ग शुद्ध हो ही नहीं सकता। इसलिये विशुद्ध भक्ति-मार्ग भी असल में समन्वय मार्ग ही है२ जिसमें कर्म का अंश विरति (अनासक्ति) के रूप से और ज्ञान का

---

१ योगास्त्रयो मया प्रोक्ता नृणां श्रेयोविधित्सया।
ज्ञानं कर्म च भक्तिश्च नोपायोऽन्योऽस्ति कुत्रचित्॥
निर्विण्णानां ज्ञानयोगो न्यासिनामिह कर्मसु।
तेष्वनिर्विण्णचित्तानां कर्मयोगस्तु कामिनाम्॥
यदृच्छया मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान्।
न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगोऽस्य सिद्धिदः॥

भागवत-११।२०।६ से ८ तक

२ विशेष विवरण के लिये लेखक का "जीवविज्ञान" देखिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंश विवेक (तत्वसाक्षात्कार) के रूप से समाया हुआ है। समन्वयमार्ग होते हुए भी इसमें प्रेम की प्रधानता है इसलिये यह भक्ति-मार्ग कहलाता है। प्रेम प्रारम्भ से ही आनन्दप्रद होता है इसलिये यह मार्ग न केवल सुगम है वरन् वैसा ही सुखद भी है। इस मार्ग में न तो कठोर क्रियाओं की आवश्यकता है न गम्भीर चिन्तन की। यह पथ किसी मरुस्थल के पथ के समान नहीं है जो समाप्त होकर ही हमें कृतकृत्यता प्रदान करे--हरित भूमि के दर्शन करावे। इसे तो अविनाशी मीनाबाज़ार का वह राजपथ समझना चाहिये जिसके पद-पद पर आनन्द ही आनन्द है।

इस मार्ग का दूसरा गुण यह है कि इस पर चलकर मनुष्य न केवल भुक्ति और मुक्ति के फल प्राप्त कर सकते हैं वरन् लीला के अनुपम आनन्द का भी भरपूर उपभोग कर सकते हैं। यह मार्ग कोई मृगमरीचिका नहीं है। इष्टदेवों का अस्तित्व ठीक उसी प्रकार सत्य है जिस प्रकार उनके भक्तों का और भक्तों की भावनाओं का। मनुष्यों की इच्छाशक्ति अखंड चैतन्य परब्रह्म परमात्मा का ही चमत्कार है। इसलिये उस इच्छाशक्ति द्वारा इष्टदेव का निर्माण भी "भगतन हित लागो" ब्रह्म का ही सगुण साकार बनना कहा जायगा। पूर्व के महात्माओं ने इष्टदेव की कल्पना करके उनके दर्शन कर लिये। जब एक बार इष्टदेव का दर्शनीय व्यक्तित्व बन गया तो परवर्ती भक्तों के लिये वह रूप और भी सुलभ हो गया। विभिन्न स्थलों और विभिन्न समयों में विभिन्न व्यक्तियों ने एक ही इष्टदेव पर अपना ध्यान जमाकर उनकी सत्ता और शक्ति को और भी दृढ़ कर दिया है। राम और कृष्ण के समान ऐतिहासिक महापुरुषों में इष्टदेवत्व का स्थापन होने से उनके व्यक्तित्व की सत्यता तो सामान्य जीवों के अस्तित्व की सत्यता से भी अधिक सत्य हो गई है। ऐसे इष्टदेव अवश्य ही हमारी प्रार्थनाएँ सुनते और हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। हमारी शक्ति ससीम है उनकी शक्ति असीम है। हम अपने प्रयत्न से जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं उससे अधिक अनायास ही उनकी कृपा से प्राप्त कर सकते हैं। जब वे परब्रह्म परमात्मा ही हैं तब फिर उनके दरबार में क्या कमी है? वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस लोक के सब ऐश्वर्य हमें दे सकते हैं, परलोक के सब कल्याण हमें दे सकते हैं, मुक्ति की दिव्य शान्ति हमें दे सकते हैं और प्रेम के प्रमोद-मय लीला-लावण्य में भी हमें मस्त बनाए रख सकते हैं। बहुधा ऐसा देखा जाता है कि इष्टदेव पर भक्ति करते हुये भी अभीष्ट फल प्राप्ति शीघ्र नहीं होती। ऐसी स्थिति में इष्टदेव के अस्तित्व पर ही शङ्का करने लग जाना अथवा भक्ति-मार्ग को ही निन्दनीय कहने लगना सरासर अनुचित है क्योंकि साधक का प्रारब्ध, लोक-संग्रह की दूर-दर्शिता, अनुराग की अपरिपक्वता आदि ऐसे अनेक कारण हो सकते हैं जिनसे हमारे इष्टदेव फल प्रदान करने में देर कर दिया करते हैं।

इस मार्ग का तीसरा गुण यह है कि इस पर चलकर हमारा हृदय शुद्ध सबल और सरस बन जाता है। थोड़ी देर के लिये यदि मान भी लिया जाय कि इष्टदेव का वास्तविक व्यक्तित्व है ही नहीं अथवा यदि वे हैं भी तो हमारी पुकार की ओर उदासीन ही रहा करते हैं तो भी यह तो निश्चित है कि उनके सौंदर्यमय अस्तित्व पर श्रद्धा और विश्वास दृढ़ करते जाने से हमारे आस्तिक्य भाव, इच्छाशक्ति और प्रेमानन्द की वृद्धि होती ही जायगी। इन बातों को तो कोई हमसे छीन नहीं सकता। आस्तिक्य भाव के कारण जहाँ एक ओर हम लोककल्याण के लिए प्रवृत्त होते रहेंगे वहाँ दूसरी ओर विषम परिस्थितियों में भी भगवान् का भरोसा रखकर एक सच्चे आशावादी की भाँति अपना धैर्य अटल रख सकेंगे। इच्छाशक्ति की वृद्धि से तो हम न जानें क्या-क्या पदार्थ प्राप्त कर सकते हैं, न जाने कैसे-कैसे असाध्य कार्य सिद्ध कर सकते हैं। प्रेमानन्द की उपयोगिता के लिये जितना कहा जाय उतना ही थोड़ा है। मुक्ति का आनन्द अधिक महत्वपूर्ण है अथवा भक्ति का इस प्रश्न के उत्तर में बहुमत भक्ति के आनन्द (प्रेमानन्द) ही की ओर झुक रहा है। इस प्रेमोन्माद के लिये यह बिलकुल आवश्यक नहीं है कि प्रेमपात्र हमारा होकर रहे। यह भी आवश्यक नहीं है कि वह हमारे प्रेम को स्वीकार करे। यह भी जरूरी नहीं है कि वह वास्तविक सत्तावान् ही हो और कल्पित न हो। प्रेम करते-करते प्रेम में ही वह आनन्द आने लगता है कि फिर प्रेमपात्र की आवश्यकता ही नहीं रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाती। इसीलिये सच्चा भक्त केवल भक्ति के आनन्द के लिये भक्ति करता है। उसके सामने न तो कामना-पूर्ति का सवाल उठता है और न प्रेमपात्र को अपनाने का।

इन गुणों के अतिरिक्त और भी अनेक गुण गिनाए जा सकते हैं। जो तीव्र श्रद्धावाले व्यक्ति हैं उनकी तो बात ही अलग है परन्तु जो मन्द श्रद्धावाले हैं वे भी इस मार्ग से पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं। पहली बात तो यह है कि इष्टदेव में आदर्शपूर्णत्व मानने के कारण मनुष्य आप ही आप आदर्श की ओर खिंचता चला जाता है और इस प्रकार सरलतापूर्वक विकसित होता चला जाता है। दूसरी बात यह है कि इष्टदेव की महत्ता के अनुभव के कारण उसका अहंकार आप ही आप दूर होता जाता है। तीसरी बात यह है कि शान्ति के साथ कुछ देर भगवान् का स्मरण करने से मन को विश्राम का अवसर मिल जाता है और वह नई-नई बातें भलीभाँति सोच तथा सुझा सकता है। इसी प्रकार के और भी अनेक लाभ बताए जा सकते हैं।

संसार गुणदोषमय है इसलिये इस मार्ग में जहाँ अनेक गुण हैं वहाँ कुछ दोष भी गिनाए जा सकते हैं। पहला दोष तो यह है कि इष्टदेवों की (नामरूपात्मक इष्टदेवों की—परब्रह्म परमात्मा की नहीं) संख्या अनेक होने के कारण और उनके विशिष्ट व्यक्तित्व अलग-अलग होने के कारण उनके उपास्य लोग आपस में झगड़ने लग जाते हैं। वैष्णव लोग विष्णु को सर्वश्रेष्ठ मानकर शिव गणेश आदि को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगते हैं। शैव लोग शिव को सर्वश्रेष्ठत्व प्रदान करके अन्यों के इष्टदेवों को सामान्य दृष्टि से देखने लग जाते हैं। विभिन्न धर्मों और विभिन्न सम्प्रदायों में इस तरह इष्टदेव के नाम-रूपभेद के कारण बड़े झगड़े मच जाया करते हैं। जो विचारवान् लोग हैं वे तो इन झगड़ों को निर्मूल समझकर शान्त रहते हैं परन्तु सर्व-साधारण के मन से तो इष्टदेवों का यह भेद कठिनता ही से हटाया जा सकता है। दूसरा दोष यह है कि अन्धश्रद्धा के कारण लोग अकसर इष्टदेव की "मर्ज़ी" पर इतने अधिक निर्भर हो जाते हैं कि वे व्यवहार में भी स्वावलम्बी बनना छोड़कर एकदम आलसी और निकम्मे से हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं तथा अपनी कमज़ोरियों और आपत्तियों का दोष ईश्वर (इष्टदेव) के मत्थे मढ़कर चुप हो जाया करते हैं। जब ईश्वर ने हमें विवेक दिया है, कार्य करने की शक्ति दी है और उपयुक्त शरीर तथा परिस्थिति के साधन प्रदान किये हैं, तब उनका समुचित उपयोग न करके एकदम परवशता धारण कर ली जाय यह तो कोई बुद्धिमानी नहीं है। परन्तु इतना जानते हुए भी लोग इस विषय में कभी-कभी विशेष भ्रान्ति उत्पन्न कर ही लिया करते हैं। तीसरा दोष यह है कि अन्धविश्वास का प्राबल्य कभी-कभी इतना अधिक हो जाता है कि लोग दम्भियों के चक्कर में पड़कर दुःख भी ख़ूब उठाते हैं। दुनिया में सन्तवेषधारी सभी लोग वास्तविक सन्त नहीं रहा करते। यह भली-भाँति जान लेना चाहिये कि ईश्वर के नाम पर अनेक पाखण्डी दुनिया को ख़ूब ठग सकते हैं। फिर, वैधी भक्ति के विधानों पर अधिक ज़ोर देने से आडम्बरप्रियता और सामाजिक विषमता की वृद्धि हो सकती है, प्रेम और सौन्दर्य भाव को अनुचित प्राधान्य देने से भक्ति-मार्गी लोग विलासिता के दलदल में फँस जा सकते हैं और दैन्य को अत्यधिक महत्व देने से दासत्व की मनोवृत्ति बढ़कर व्यक्ति तथा समाज दोनों को हानि पहुँचा सकती है। इसी तरह के और भी कुछ दोष हैं। परन्तु इन दोषों की उलझन में वे ही फँसते हैं जिन्होंने न तो सच्चे गुरु की सेवा की है न सत्संग किया है न सद्ग्रन्थों का मनन किया है और न सद्विवेक से काम लिया है। ऐसे-ऐसे दोषों को देखकर इस मार्ग को ही हेय अथवा गौण बता देना सरासर नासमझी है। कांटों के डर से कोई गुलाब को हेय नहीं बताता। मच्छड़ों के डर से कोई उपवन-विहार नहीं बन्द कर देता। कछुओं के डर से कोई तीर्थ का स्नान नहीं छोड़ देता।

गोस्वामी जी ने अपने भक्तिमार्ग को दोषों से बचाने की भरपूर चेष्टा की है। पहिले दोष को मिटाने के लिये उन्होंने भारत के सम्मान्य इष्टदेवों का सामञ्जस्य कर दिया है और वह सामञ्जस्य इस ख़ूबी से किया है कि किसी इष्टदेव की ओर द्वेष अथवा तिरस्कार का भाव उठने ही नहीं पाता। दूसरे दोष को मिटाने के लिये तो उन्होंने स्वतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान् के मुँह से कहला दिया है कि जो नर शरीर पाकर भी परलोक के लिये प्रयत्नशील नहीं होता वह काल कर्म और ईश्वर को मिथ्या ही दोष लगाता फिरता है। तीसरे दोष को मिटाने के लिये उन्होंने बाह्य आडम्बर को—जटा रखाना, तिलक लगाना, मठ मन्दिर की पद्धतियों को पूरा करना आदि को—अपने भक्तिपथ में कोई प्राधान्य दिया ही नहीं। फिर, न तो वे वैधी भक्ति के विधानों ही पर ज़ोर देते हैं, न अपनी भक्ति के प्रेम और सौन्दर्य को "सेव्यसेवकभाव" की मर्यादा से आगे बढ़ने देते हैं और न इस सेव्यसेवकभाव ही को वे ऐसा अमर्यादित होने देते हैं कि वह दास्यमनोवृत्ति उत्पन्न करके आत्महन्ता बन जाय। वे तो उपयुक्त अवसर पर अहिंसा के समान परमधर्म१ को भी ताक़ पर रखने की सलाह देते हुए कहते हैं :—

संत संभु स्रीपति अपवादा। सुनिय जहाँ तहँ असि मरजादा।
काटिय तासु जाभ जो बसाई। स्रवन मूँदि न त चलिय पराई॥ ३५-१, २

लोकसेवा के लिये (जिसके समान और कोई धर्म नहीं है२) वे प्राणों के उत्सर्ग को भी प्रशंसनीय कहते हुए लिखते हैं :—

परहित लागि तजइ जो देही। सन्तत सन्त प्रसंसहिं तेही॥ ४३-४, ५

---

१ परम धरम स्रुतिविदित अहिंसा। ५०४ ५
२ परहित सरिस धरमु नहिं भाई। ४६१-२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिद्धराज (बा० मैथिली शरण गुप्त)

श्री कृष्ण एम० ए०

बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने हमें जो एक अपूर्व वस्तु प्रदान की है वह है अपने प्राचीन वैभव का एक जीता जागता चित्र। साकेत, पंचवटी, द्वापर, जयद्रथ-वध इत्यादि ग्रन्थों में कवि ने रामायण तथा महाभारत काल के चित्र उपस्थित किये हैं; अनघ और यशोधरा में बौद्ध-संस्कृति की झलक है, और सिद्ध राज में मध्यकालीन वैभव तथा शौर्य का सुन्दर सामंजस्य है।

सिद्धराज का कथानक ऐतिहासिक है। हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत में साम्राज्य अनेक भू-भागों में विभक्त हो गया। जिस पर राजपूत-गण अपना स्वतंत्र शासन-सूत्र चला रहे थे। इनमें जब कोई राजा प्रबल हो उठता, तो वह अपनी वैभव-वृद्धि के लिये, आस-पास के राजाओं को जीत कर, एक-छत्र राजा बन बैठता। विक्रम की बारहवीं शताब्दी में गुजरात के सोलंकी-नरेश महाराज जयसिंह (सिद्धराज) ने मालवा, सोरठ, सिन्धु-देश तथा अजमेरु को जीत पश्चिमी भारत में अपना अखंड शासन चलाया। इन्हीं सिद्धराज की विजय गाथा सिद्धराज का कथानक है।

कवि ने अपना कथानक बड़े सुन्दर ढंग से सजाया है। प्रारम्भ ही में हमें पुत्र की शुभ-कामना के लिये सोमनाथ की यात्रा करती हुई राज-माता के दर्शन होते हैं। उस दृढ़ परन्तु क्षमाशीला, दयाशीला पति-परमेश्वर-भक्ति-परायण रमणी के चरित्र में हमें सिद्धराज की दृढ़ता, वीरता तथा विनय का समुचित आभास मिल जाता है। उसी की देख-रेख में बढ़कर पितृ-हीन बालक जयसिंह सन्तत-जयी सिद्धराज होता है। द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ सर्गों में सिद्धराज के ऐतिहासिक युद्धों का वर्णन है जिसमें उसकी दृढ़ता और शौर्य का अच्छा परिचय मिलता है। और अन्त में, जैसे भीषण झंझावात का अन्त शान्त वातावरण में होता है वैसे ही युद्धों के पश्चात न्याय-शासन-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधान और स्नेह-मिलन का सुन्दर चित्र उपस्थित होता है। कवि का कौशल सराहनीय है। उस दुस्सह 'प्रताप तेज' 'प्रभा विष्णु' सिद्धराज की प्रताप-गाथा के लिये इससे सुन्दर क्रम और हो ही क्या सकता था! प्रारम्भ में ऊषा सी 'शान्त-कान्त रूप' राजमाता का दर्शन, मध्य में 'प्रताप-तेज' और अन्त में संध्या का सा शान्त वातावरण तथा भविष्य के अन्धकार की ओर संकेत, सभी अपूर्व हैं। मैं फिर कहूंगा कि कवि का कौशल सराहनीय है।

राजपूतों के उस वैभव-काल में युद्ध और प्रेम ही उनकी नित्य प्रति की दिनचर्या हुआ करती थी। समय के प्रभाव से ठीक वैसी ही दिनचर्या सिद्ध-राज की भी हो जाती है। यद्यपि उसमें मातृ-भक्ति का गुण विशेष है, उसकी धीरता और वीरता अनुकरणीय है, उसका प्रेम प्रबल है; और प्रेम की प्रतिहिंसा भीषण है. परन्तु उस समय के सभी वीरों में ये गुण न्यूनाधिक मात्रा में पाये जाते हैं। यशोवर्मा भी पिता का योग्य पुत्र था, जगद्देव और खंगार में भी सिद्धराज की सी वीरता और धीरता थी परन्तु परिस्थितियों के झकोरों में पड़कर ऐसी वीरता दिखलाना केवल सिद्धराज का ही काम था। इसके अतिरिक्त वह एक आदर्श राजा भी है। राज्य-कोष की परवाह न कर उसने यात्रियों की सुविधा के लिये तीर्थ-कर उठा दिये।

"राज्य-कोष रिक्त हो तो चिन्ता नहीं मुझको
राज्य में प्रजा की सुख-सिद्धि, निद्धि-वृद्धि हो,
पुष्ट प्रजा जन ही हैं सच्चे धन राजा के।"

शैव होते हुए भी उसने अन्य धर्मों का उचित आदर किया और पक्षपात विहीन होकर प्रजा का न्याय किया। वह "शस्त्रोंके सदृश ही सुमार्मिक था शास्त्रों का।" उसके दरबार में हेमचन्द्र जैसे विद्वान् रहते थे और उसके राज्यत्व में कला का समुचित आदर रहा।

सिद्धराज के अतिरिक्त रानक दे का सतीत्व पालन, अर्णोराज की दृढ़ता और खंगार तथा जगद्देव की वीरता का चित्रण भी सुन्दर हुआ है। कवि ने मध्य कालीन वीरों तथा वीराङ्गनाओं का बहुत ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन्दर चित्र उपस्थित किया है। वीरों में वीरता के साथ ही साथ वीरोचित उदारता और विनय भी है।

सिद्धराज ने जगद्देव को मुक्त करके कहा था

"जाओ जिस भाव से समक्ष अब आओगे।
पाओगे समुचित हमें भी उसी भाव से।"

और दुर्दांत हठी जगद्देव भी इस उदारता से विजित होकर सिद्धराज का सच्चा हितू बन जाता है।

सिद्धराज के चरित्र में सबसे सुन्दर उसका परिवर्तन है। कवि ने स्वयं ही लिखा है।

"एक क्षण ऐसा इस जीवन में आता है
एक दृष्टि में जो नई सृष्टि रच जाता है।"

वैसा ही एक क्षण सिद्धराज के जीवन में भी आया था उसी क्षण से वह उद्धत स्वभाव सिद्धराज मृदु हो गया। उसी क्षण से उसे राज्य-शासन की सुधि हुई और वह एक आदर्श वीर से एक आदर्श राजा हो गया।

सिद्धराज की शैली, गुप्त जी ही द्वारा अनुवादित सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'मेघनाद-वध' की सी है। भाषा में वही ओज और प्रवाह है जैसा मेघनाद वध में है।

ओज के साथ ही साथ गुप्त जी ने अपने काव्य में प्रसाद गुण भी सफलता पूर्वक रखा है। भाषा शुद्ध खड़ी बोली है जिसमें गुप्त जी ने सरल सुबोध और उपयुक्त शब्द रक्खे हैं।

फाड़ डाले तोड़ ताड़ के, आड़ में उसी की बच' में ड़ की आवृत्ति भी सुन्दर है ऐसी ही कविता हृदय तक पहुँचती है जिसमें बोल चाल के शब्द सुन्दर ढङ्ग से गुँथे हों। शैली (Shelly) को भी अन्त में मानना पड़ा था "I entirely agree with critics who assert that in order to move men to true sympathy we must use the familiar language of men" (मैं उन समालोचकों से पूर्णतया सहमत हूँ जो मनुष्यों की सच्ची समवेदना पाने के लिये उनके बोल चाल की बोली का प्रयोग अत्यावश्यक समझते हैं।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु गुप्त जी ने कहीं कहीं भरती के शब्द लाकर काव्य-सौन्दर्य को अप्रतिभ सा कर दिया है। वहां पर न तो प्रसाद गुण ही रह पाता है और न काव्य-सौन्दर्य ही। उदाहरण-स्वरूप देखिये

"जननी प्रसिद्ध सिद्ध राज जयसिंह की
मीनल दे नाम और काम शुभ जिनका"
"विस्मय उसे था, नई मूर्ति किस देवी की--
आगई अभी अभी कहाँ से, यह है यहाँ ?

यहाँ चिन्हित पद केवल चरण-पूर्ति ही के लिये रखे गये जान पड़ते हैं।

कवि ने अनुप्रास युक्त भाषा लिखने का भी प्रयत्न किया है और कहीं कहीं भाषा सुन्दर भी है।

"है क्या अधिकार हम जैसे लुब्ध पुत्रों को,
बैठें मुञ्ज राज के सुमञ्जु कीर्ति-कुञ्ज में।'

अथवा "ठेका ले लिया है ठाकुरों ने ही ठसक का" में अनुप्रास सुन्दर है परन्तु

"ठोक नहीं सकते थे यदि उस ढीठ को
तो क्या तुम रोक भी न सकते थे उसको" में

'रोक' के तुक में आया 'ठोक' शब्द भद्दा है और 'रक्खा था भविष्य मेरा भद्र ही भवानी ने" में भविष्य और भवानी के साथ अनुप्रास मिलाने के लिये भद्र शब्द का प्रयोग अच्छा नहीं बन पड़ा।

कवि ने शायद रसाभाव की पूर्ति के लिये वाक्-विदग्धता (wit) का प्राधान्य रखा है। इसमें गुप्तजी अपना सानी नहीं रखते। राजमाता के सामने बन्दी-युवक की माँ द्वारका जाने का कारण बतलाती हैं और राज माता भी हँसकर उत्तर देती हैं।

इसी प्रकार की वाक्-विदग्धता हमें अर्णोराज और सिद्धराज के प्रधान मन्त्री की बातचीत में भी मिलता है।

परन्तु इस वाक्-चातुर्य से काव्य-सौन्दर्य की वृद्धि नहीं होती। क्योंकि इसमें हृदय से उमड़ कर रसधारा नहीं बहती। केवल मस्तिष्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की शुष्क उपज से सच्चा काव्य नहीं बन सकता। यदि हृदय में स्पन्दन नहीं तो वस्त्राभूषित सुन्दर शरीर भी व्यर्थ हो जाता है। ठीक ऐसी ही दशा काव्य की भी होती है। रस ही कविता की जान है यदि रस का अभाव हुआ तो अलंकार, ध्वनि, वाक्-विदग्धता, ऊँची कल्पना सभी निर्जीव सी जान पड़ती है।

सिद्धराज काव्य में कई स्थानों पर बड़े सुन्दर शब्द-चित्र भी मिलते हैं। राजमाता के शिविर के चारों ओर वामा व्यूह का सुन्दर चित्र कवि के शब्दों में देखिये।

जिन पर खेलती हैं स्वच्छ गुच्छ रूपिणी,
कंचुक-कवच सब एक ही से पहने,
गहने हैं—बेंदी, कर्णफूल, हार किंकणी,
कङ्कण करों में और नूपुर पदों में हैं,
शौर्य-वीर्य-साहस की प्रतिमा सजीव-सी,
मन्दिर समान उस सुन्दर शिविर की
करती हैं मंडल बना कर परिक्रमा!

और एक इससे भी सुन्दर है वीर नारियों के पाटन-यात्रा का चित्र :—

पाके वीर-नारियों का गुल्फ-स्पर्श हींस के
ग्रीवा-भंग-पूर्वक तुरंग चले नाचते,
देते हुए ताल लय बाँध टाप-थापों से।
मानों उड़ जाते अश्व, यदि गज-शुण्डों सी
दो उरुओं से कसे होतें वे न उनको!

परन्तु ऐसे चित्र बहुत थोड़े हैं।

गुप्त जी की प्रतिभा का सबसे सुन्दर परिचय हमें उस स्थान पर मिलता है जहाँ उन्होंने मनुष्य-जीवन के अनुभव सत्य तथ्यों का बड़े सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है, जहाँ कवि द्रष्टा (Seer) बन कर सामने आता है :—

"भूल इस भव में मनुष्य से ही होती है,
अन्त में सुधारता है उसको मनुष्य ही।

•

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु वह चूक हाय ! जिसके सुधार का
रहता उपाय नहीं हूक बन जाती है,
और जन-जीवन बिगड़ जैसे जाता है।"

और "देखता था कौन वे दो आँसू अन्धकार में
सुनती थी नीरवता उनकी टपक ही।
देखी दर्शकों ने तो अरुणिमा ही अग्नि की
उसके दृगों में यही जीवन की गति है—
आता वह बाहर है भीतर से उलटा।"

और "एक क्षण ऐसा इस जीवन में आता है
एक दृष्टि में जो नई सृष्टि रच जाता है
यौवन का बोध अकस्मात ही तो होता है
मुग्धा एक पल में ही मध्या बन जाती है"

अथवा "खिँच खिँच जाता कहीं मन जब तन से
भाता है विशेष तब जन को विजन ही

ये सभी उत्तम हैं और कुछ भी न रहने पर केवल इन्हीं पदों के सहारे गुप्तजी महाकवियों की श्रेणी में बैठ सकते हैं।

कवि ने हमें मध्य कालीन वैभव का दृश्य मात्र ही नहीं दिखलाया परन्तु कौशल से राजपूतों के पराजय और पतन का भी कारण बतला दिया। महोबे के साधु राजा मदन वर्मा की मार्मिक दृष्टि में राजपूतों के पतन का कारण उनका चरम विकास ही है।

"निश्चय बखानने के योग्य यह मान है
चरम-विकास जहाँ किन्तु वहीं ह्रास भी।"

मदनवर्मा ने राजपूतों की राजनीति की भी खिल्ली उड़ाई है।

"सह्य नहीं अपनों की बाध्यता हमें, भले
सन्तति हमारी करे दूसरों की दासता"

राजपूतों में दूरदर्शिता का अभाव था और राज्य की रक्षा का भार पूरी प्रजा पर न होकर केवल क्षत्रियों के ही ऊपर था और उनमें भी ईर्ष्या, द्वेष और भेद-भाव भरा था। क्षत्रियों के प्रति कितना सुन्दर व्यंग्य है !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु वीर-धर्म यहाँ केवल हमारा है
ठेका ले लिया है ठाकुरों ने ही ठसक का

और "ऊँचे हम अब भी, परन्तु नीच मानना
औरों को हमारा, हमें नीचा दिखलायगा।"

और अन्त में कवि एक आशा बँधाकर चुप हो जाता है :—

"आर्य-भूमि अन्त में रहेगी आर्य-भूमि ही
आकर मिलेंगी यहाँ संस्कृतियाँ सब की
होगा एक विश्व-तीर्थ भारत ही भूमि का।"

सिद्ध राज कवि की एक सफल कृति है।

भाषा और भावों की सरलता और सौष्ठव, अनुप्रासों की छटा, अलंकारों का बाहुल्य, वाक्-विदग्धता और चरित्र-चित्रण सभी कुछ अपूर्व हैं परन्तु रसात्मकता का अभाव खलता अवश्य है। यदि इस ग्रन्थ में कवि ने थोड़ी सी रस-धारा और बहाई होती तो यह ग्रन्थ अपूर्व हो जाता है।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी संसार

हिन्दी का विरोध—मद्रास प्रान्त में चार पांच भाषाएँ प्रचलित हैं; किन्तु उनमें परस्पर कुछ भी साम्य नहीं है। इसलिये उस प्रान्त के हितैषियों ने सोचा कि यदि वहाँ हिन्दी का प्रचार कर दिया जाय तो राष्ट्रीय भाषा की गरज पूरी होने के साथ ही उन सभी भाषा भाषियों में भी भाषा साम्य की कुछ आवश्यकता पूर्ण हो सकेगी। इसीलिये मद्रास प्रान्तीय कांग्रेस सरकार ने मिडिल स्कूलों में मातृभाषा के साथ ही हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक कर दिया है। मद्रास सरकार की इस दूरन्देशी की चारों ओर प्रशंसा हो रही है। किन्तु जहाँ एक ओर राष्ट्रीयता के हितैषी इससे प्रसन्न हैं और इसे सफल बनाने का उद्योग कर रहे हैं वहाँ मद्रास में एक ऐसा भी दल उत्पन्न हो गया है जो इस आज्ञा का विरोध कर रहा है और कुछ युवक इसके विरुद्ध दुराग्रह करने को भी तैयार हो गये हैं कुछ दुराग्रह कर जेल भी गये हैं। कहा जाता है कि यह दल उन लोगों का है जो कांग्रेस के विरुद्ध हैं और ऐसी कार्यवाही कर मद्रासियों की सहानुभूति संचित करने की दुराशा रखते हैं। जिससे अगले चुनाव में वे कांग्रेस को हरा सकें। यह भी ख़बर मिली है कि हिन्दी विरोधियों की संख्या बहुत थोड़ी है और उनके विरोध का विशेष प्रभाव नहीं पड़ रहा है। ऐसे राष्ट्रीय कार्य का विरोध कर वे नाहक नक्कू बन रहे हैं।

शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन—संयुक्त प्रान्त की सरकार शिक्षा में संशोधन करना चाहती है और इसके लिये उसने कमिटी बनायी है। कहा जाता है कि कमिटी के निर्णय के अनुसार काम होने से इस प्रान्त की शिक्षा प्रणाली में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो जायँगे। समझा जाता है कि ७ से १४ वर्ष तक के बालक-बालिकाओं की शिक्षा मुफ़ और अनिवार्य कर दी जाने वाली है। सात साल से कम उम्र के बच्चों की शिक्षा के लिये आर्थिक सहायता द्वारा प्रोत्साहन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायगा। शायद ११ साल तक की उमर के लड़के-लड़कियों की शिक्षा एक साथ कर दी जाने वाली है। एक साल में अभी २४० दिन पढ़ाई होती है अब प्रस्ताव किया जा रहा है कि शिक्षा साल में २२५ दिन हो। किन्तु वर्धा की शिक्षा योजना में २८८ दिन की सिफ़ारिश की गयी है। लड़कों से यह प्रतिज्ञा करायी जाने वाली है कि वे छुवाछूत और जाति-पांति नहीं मानते तथा सहभोज के लिये तैयार हैं। हमारी समझ में यदि खान-पान जैसा बादग्रस्त विषय शिक्षा के साथ न मिलाया जाय तो अच्छा होगा। पाठ्यक्रम उपसमिति और शिक्षा-नियन्त्रण उपसमिति अपना अपना काम कर रही हैं। शिक्षा क्रम में दस्तकारी को प्रधान स्थान दिया जाने वाला है।

देव-पुरस्कार—श्रीमान् ओरछा नरेश प्रति वर्ष दो सहस्र रुपयों का जो साहित्यिक देव-पुरस्कार देते हैं वह इस वर्ष ब्रजभाषा के सर्वोत्तम मौलिक अथवा अनुवादित गद्यात्मक काव्यग्रंथ पर दिया जायगा। प्रतियोगिता के लिये दो वर्ष के भीतर प्रकाशित ग्रन्थ की ९ प्रतियाँ ३१ जुलाई सन् १९३८ तक प्रधान-मन्त्री श्रीवीरेन्द्रकेशव साहित्य-परिषद ओरछा राज्य टीकमगढ़ के पते पर पहुँच जानी चाहिये थीं।

प्रान्तीय भाषाओं को हानि न होगी—जिन लोगों को यह सन्देह अथवा भय है कि मद्रास के स्कूलों में हिन्दी के प्रचार से वहाँ की प्रान्तीय भाषाओं को हानि पहुँचेगी, उनके सन्देह निवारण के लिये प्रधान-मन्त्री पण्डित राजगोपालाचार्य जी ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है। आपने कहा कि प्रान्तिक भाषाओं को हानि पहुँचने का सवाल नहीं है, सवाल यह है कि जनता द्वारा निर्वाचित सरकार को प्रान्त के बालकों को उदार शिक्षा देने की स्वतन्त्रता है या नहीं। प्रश्न यह है कि जनता के मन्त्री शासन करें या थोड़े से असन्तुष्ट व्यक्ति उन्हें धमकाने पावें। हर एक आदमी को जान लेना चाहिये कि मैं इस प्रान्त के बालकों को प्यार करता हूँ और चाहता हूँ कि उन्हें उचित रूप से शिक्षा दी जाय। पूर्ण और उदार शिक्षा के लिये उस भाषा का काम-चलाऊ ज्ञान आवश्यक है जिसे हिन्दुस्थान में सब से ज्यादा आदमी बोलते हों। सरकार किसी प्राथमिक स्कूल में हिन्दुस्तानी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ावेगी जहाँ सिर्फ़ तेलगू, मलयालम या कन्नड भाषा पढ़ायी जायँगी। सब विषयों के सिखाने का माध्यम तामिल, तेलगू, मलयालम या कन्नड भाषा ही होगी। शिक्षकों को आदेश दिया गया है कि वे विदेशी भाषा को माध्यम बनाना छोड़ दें। सरकार योग्यता बढ़ाने के जबरदस्त उपाय काम में ला रही है। हिन्दुस्तानी भाषा सिर्फ़ हाई स्कूल के विद्यार्थियों को छठे से आठवें दर्जे तक पढ़ायी जायगी। किसी विद्यार्थी को अपनी मातृभाषा के बदले हिन्दुस्तानी भाषा सीखने नहीं दी जायगी। दर्जे में हिन्दुस्तानी भाषा सीखनी होगी किन्तु उसमें फ़ेल होने से कोई लड़का या लड़की को अगले दर्जे में जाने की तरक्की रोकी न जायगी। भाषा आम तौर पर बोलने वाली होगी लिपि चाहे कोई नागरी ले या उर्दू।

हिन्दी की अवस्था— काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में हिन्दी की अवस्था पर कुछ प्रकाश डाला है। सभा का कहना है कि सात प्रान्तों में कांग्रेसी-सरकार स्थापित होने के कारण वहाँ हिन्दी के सम्बन्ध में भी कुछ प्रगति हुई है और हिन्दी की उन्नति के अनेक मार्ग उन्मुक्त हो गये हैं। किन्तु हिन्दी भाषा की शैली के सम्बन्ध में कांग्रेस से सभा का मतभेद है। हिन्दुस्तानी नाम की नयी गढ़ी हुई भाषा साहित्य के किसी काम की नहीं हो सकती। हाँ, कचहरियों की तथा अन्य साधारण व्यवहार की भाषा सरल और बोलचाल की भाषा हो यह तो सभा का वर्षों से मत रहा है। व्यवस्थापिका सभाओं में हिन्दी बोल सकने के सम्बन्ध में संयुक्त प्रान्त के अध्यक्ष माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन की व्यवस्था चिरस्मरणीय रहेगी। इससे यह भी लाभ हुआ है कि हिन्दी चित्रलेखन प्रणाली के विकास को प्रोत्साहन मिला है। सभा की सम्मति में हिन्दी में यूनाइटेड प्रेस अथवा असोसियेटेड प्रेस की भांति कोई आयोजन हो जाना बहुत ही प्रशंसनीय और उपयोगी होता। इस समय समाचार आदि का हिन्दी में अनुवाद करके छापने के कारण हिन्दी पत्रों के पाठकों को समाचार मिलने में विलम्ब होता है। व्यापारिक दृष्टि से भी यह लाभदायक होगा। सभा की सम्मति में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथ से दक्षिण भारत के प्रचार कार्य के निकल जाने के कारण सम्मेलन के प्रचार कार्य में शिथिलता आ गयी है। किन्तु उसका साहित्यिक तथा परीक्षा सम्बन्धी कार्य पूर्ववत प्रशंसनीय रूप से चल रहा है। उसका विशाल पुस्तकालय और संग्रहालय भवन भी बन गया है।

इस वर्ष काशी के रायबहादुर पण्डा बैजनाथ ने इक्कीस हज़ार रुपये का प्रामिसरी नोट थियासोफिकल सोसायटी को भाषा में थियासफी सम्बन्धी पुस्तकों के प्रकाशन के लिये दान दिया है। लिपिसुधार सम्बन्ध में जो कुछ किया जाय वह बहुत सोच-समझ कर किया जाय। कांग्रेस मंच पर से राष्ट्रपति श्री सुभाषचन्द्र बोस ने भारतवर्ष के लिये रोमन लिपि को उपयोगी बतलाया है। उनका व्यक्तिगत विचार चाहे जो हो किन्तु उनका राष्ट्र सभा के मंच पर से ऐसा कहना बहुत ही अनुपयुक्त था। दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार पूर्ववत हो रहा है जो अखिल भारत की भावी एकता का शुभ लक्षण है। चतुर्वेदी पं० बनारसीदास जी का मत है कि हिन्दी भाषा भाषियों का जो पैसा हिन्दी प्रचार के लिये ख़र्च हो रहा है उसका अधिकांश हिन्दी ग्रंथकारों के प्रोत्साहन अथवा महत्वपूर्ण हिन्दी ग्रन्थों के प्रकाशन तथा प्रचार के लिये व्यय होना चाहिये। सभा इस मत से सहमत है। बाल-साहित्य (Juvenile literature) और बाल शिक्षा साहित्य (Pedagogies) में पुस्तकों की संख्या शून्य के बराबर है। हिन्दी में ऐसे मौलिक ग्रन्थ निकलने चाहिये जिनका दूसरी भाषाओं के बोलने वाले सहर्ष अपनी भाषा में अनुवाद करें। इसी पर अधिकांश रुपया ख़र्च होना चाहिये। आज लंका में बौद्ध भिक्षु बड़े चाव से हिन्दी पढ़ रहे हैं और बहुत से उपनिवेशों में भारतवासी पर्याप्त साधन न होने के कारण हिन्दी भूल रहे हैं। इसलिये हिन्दी-प्रेमी महानुभावों और हिन्दी प्रचारकों को इस ओर भी ध्यान देना चाहिये। भारतीय इतिहास के अद्वितीय विद्वान श्री जयचन्द विद्यालंकार के उद्योग से स्थापित इतिहास परिषद द्वारा भारतवर्ष का एक समूचा इतिहास भारतीय दृष्टिकोण से हिन्दी में लिखा जाने वाला है। यह बड़ा ही शुभ समाचार है। असन्तोष का विषय है कि लोकोपयोगी साहित्य के निर्माण की ओर लेखकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ध्यान नहीं जा रहा है। सवाक् पटों के लिये जो नाटक साहित्य-निर्माण हो रहा है, उसमें भाषा-भाव तथा सुरुचि पर कुठाराघात हो रहा है। दुःख का विषय है कि बड़े से बड़े और अच्छे से अच्छे सम्पादक द्वारा सम्पादित पत्रों में भी भाषा की बहुत बुरी तरह नित्य प्रति हत्या होती रही है; और अंग्रेजी शैली का इतना प्रभाव बढ़ रहा है कि भाषा का निजस्व नष्ट होता जा रहा है। प्रांजल, गठित और मुहावरेदार भाषा प्रायः नहीं मिलती है। पत्रकारकला की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न होने के कारण अनुत्तरदायी लोग सम्पादक बन जाते हैं, जिससेपत्रों की भाषा और नीति स्थिर नहीं होने पाती।

गश्ती पुस्तकालय—जिन प्रान्तों में कांग्रेस सरकार है वहां के मन्त्री लोग इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि देहाती जनता की निरक्षरता किसी तरह कम की जाय। इसके लिये शिक्षा विस्तार की योजना काम में लाने की तजबीज की जा रही है। जो लोग थोड़ा बहुत पढे हैं उनके लिये अभ्यास बढ़ाने का एक साधन यह भी है कि उन्हें पुस्तकें और समाचार-पत्र दिये जायँ; जिससे वे पढ़ने का अभ्यास भी बढ़ावें और यह भी जानें कि दुनियां का रङ्ग-ढङ्ग क्या है। इस तरह वे अपनी शिक्षा विकसित कर अच्छे नागरिक बन सकते हैं। यू० पी० सरकार ने निश्चय किया है कि लगभग १०० वाचनालय खोले जायँ। जो लोग अपने ग्राम में वाचनालय खोलना चाहेंगे उन्हें सरकार आर्थिक सहायता देकर उत्साहित करेगी। यदि किसी गांव वाले १००) इकट्ठा कर स्वीकृत पुस्तकें मँगालें तो १००) सरकार से भी मिलेगा। इसी तरह वाचनालय खोलने वाले एक पत्र मँगालें तो दूसरे के लिये सरकार ख़र्च देगी। आरम्भ में प्रत्येक वाचनालय में कमसे कम एक हिन्दी और एक उर्दू पत्र रखना आवश्यक होगा। जो वाचनालय सरकार खोलेगी वे डिस्ट्रिक्टबोर्ड के स्कूलों में खोले जायँगे। प्रत्येक तीन-चार मील की सीमा के भीतर एक वाचनालय खोला जा सकेगा। सभी वाचनालय शिक्षा विभाग के नियन्त्रण में रहेंगे। हर एक जिले में १२ से १८ तक गश्ती पुस्तकालय भी खोले जावेंगे। डिस्ट्रिक्टबोर्ड के अध्यापकों से अनुरोध किया जायगा कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने अवकाश के समय में नवयुवकों को अक्षर ज्ञान करावें। जिससे एक साल में ऐसे कई लाख मनुष्य पढ़ जावेंगे जिनकी अवस्था स्कूलों में जाकर पढ़ने योग्य नहीं है। जनता से इसमें सहयोग करने की अपील की गयी है और आशा है जनता अवश्य सहयोग करेगी।

हिन्दी के विरोधियोंसे—वर्तमान लिखता है कि जहां हिन्दी का स्वयं प्रचार हो रहा था वहां अब उसका विरोध होने लगा है। बङ्गाल की एक प्रमुख संस्था ने हिन्दुस्तानी या हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का जोरदार विरोध किया है। यद्यपि बङ्गाल के सभी शिक्षित व्यक्ति हिन्दी अक्षर जानते और आधा बङ्गाल हिन्दी समझता है। मद्रास में हिन्दी के विरोध का हम यह अर्थ नहीं समझते कि यह हिन्दी का विरोध है। बल्कि इसे कांग्रेस के सभी उचित अनुचित कामों का विरोध करने वालों का काम समझते हैं। हम चुनौती देते हैं कि कोई व्यक्ति आकर बतावे कि हिन्दी और नागरी के बदले और कौन राष्ट्रभाषा और राष्ट्रलिपि हो सकती है? जो बंगाली अँगरेजी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते हैं वे सोचें कि अँगरेजी जानने वाले भारत में एक करोड़ भी न होंगे; किन्तु हिन्दी बोलने और समझने वाले २० करोड़ हैं। हम तो कांग्रेस द्वारा उर्दू-लिपि को स्वीकार किये जाने के भी विरोधी हैं; किन्तु लिपि का प्रस्ताव इच्छा पर निर्भर है, इसलिये किसी हद तक उचित ही है। क्या कोई लिपि नागरी लिपि से बढ़ कर वैज्ञानिक है। बंगाली जिस लिपि पर भूले हैं. स्वयं बतलावें कि "वर्क्स" को "ओयार्क्से" क्यों लिखते हैं? क्या नाटक, उपन्यास और साहित्य की पुस्तकों की बहुलता पर ही सच्चा साहित्य स्थिर है? बतलाइये कि सूर और तुलसी की कृतियों की तुलना किसी हिन्दुस्तानी भाषाकी मौलिक कृतियों से की जा सकती है? राष्ट्रभाषा बनाते समय तो केवल यह ध्यान रखना जरूरी है कि किस भाषा और किस लिपिका प्रचार जल्द हो सकता है। ताकि सामुहिक संगठन जल्द हो सके और देश एक सूत्र में बँध जावे। इस दृष्टि से कांग्रेस का निर्णय सर्वथा उचित और सराहनीय है और उसका विराध करना देशद्रोहिता है।

•

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्यिकों का सम्मान—ग्वालियर दरबारकी ओरसे साहित्य और साहित्यिकोंको प्रोत्साहन देने के लिये एक "आथर्स पेट्रोनेज फण्ड" स्थापित है। उसके द्वारा हिन्दी के कुछ उत्तम लेखकों को भी पुरस्कार दिये गये हैं। १—अनन्त के पथ पर श्री हरीकृष्ण प्रेमी ३००), २—नागरिकशास्त्र २००) श्री भगवानदासकेला ३—वृत्त विधान २००) श्रीप्रवासीलाल वर्मा, ४—काष्ठशिल्प १५०) श्री वि० ल० माने ५—क़ागजमोड़ना काटना दक़्क़ी के नमूने बनाना १००), श्री अम्बाप्रसाद श्री वास्तव, ६—ग्रामसुधार १००) श्री गणेशदत्त शर्मा गौड़, ७—आरोग्य मार्गदर्शिका ७५) डा० पुस्तके ८—धर्मप्रवेशिका ७५) पं० सदाशिवशास्त्री ९—प्रतापप्रतिज्ञा नाटक ६० श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द, १०—भारतीय इतिहासके रत्न ५०) श्री लालसिंह मिश्र, ११ आदर्श-माधव सेंधिया प्रताप ५०) श्री रामसहाय ब्रह्मभट्ट—१२ रांगोली तीनभाग ५०) श्री दुर्गासिंह, १३—प्रपण ५०) प्रो० बालकृष्णपति वाजपेयी।

हिमालय हिन्दी भवन—दार्जिलिंग से आगे तिब्बत के रास्ते में कलिम्पोंगस्थान है। यहाँ हिमालयहिन्दीभवन नामकी संस्था स्थापित है। मई महीने में इसका तृतीय वार्षिकोत्सव श्रीयुत राहुलसांकृतायन जी के सभापतित्वमें हुआ था। बङ्गाल के सुप्रसिद्ध दार्शनिक पं० हिरण्यदत्त जी का महत्वपूर्ण भाषण तीन चार हज़ार जनता की उपस्थिति में हुआ। आपने कहा हिन्दी ही ऐसी भाषा है जो राष्ट्रभाषा के पद पर आरूढ़ हो सकती है। मिशन कालेज के अध्यापक प्रो० कुस्टोदास और एक तिब्बती विद्वान का भी भाषण हुआ। जिन्होंने लामाओं से हिन्दी सीखने की अपील की। सभापति महोदय का विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ।

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्ति स्वीकार

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल संग्रह मन्त्री

भावी महाभारत—पुस्तक का पूरा नाम संवत् दो हज़ार अथवा भावी महाभारत है। लेखक ने दुनियाँ के रंगढंग, राजनैतिक दाँव-पेंच और सभी स्वतन्त्र देशों में लड़ाई की तैयारी एवं भयंकर शस्त्रास्त्रों और युद्ध के साधनों की ईजाद देखकर भविष्य कथन किया है कि पांच वर्ष के भीतर संवत् दो हज़ार तक में विश्वव्यापी महा-युद्ध अवश्यम्भावी है। विविध देशों के दूरदर्शी और राजनैतिक पुरुषों के वचनों से लेखक ने अपने कथन की पुष्टि की है। लेखक का यह भी इशारा है कि ऐसी दशा में भारतवासियों का क्या कर्त्तव्य है? महा-भारत की हानियों से बचने और उस परिस्थिति से अपना भी कुछ स्वार्थसाधन कर लेने के लिये भारतवासियों को क्या करना चाहिये। संसार में रह कर संसार की गतिविधि की जानकारी होना आवश्यक है। इस कारण पुस्तक सभी के पढ़ने योग्य है। पुस्तक काफ़ी मनोरंजक वर्तमान हाल-चाल की जानकारी से भरी हुई है। एक रुपये में नवयुग-पुस्तक भण्डार इलाहाबाद सिटी से प्राप्त होगी।

हिन्दी शिक्षक—इसका दूसरा नाम है 'स्वराज्याच्या, भाषेशीं परिचय।" मराठी भाषा जानने वालों को हिन्दी सिखानेके लिये श्रीयुत पुण्डलीक जी कातगडेने इसे लिखा है। इसकी उपयोगिता का यह प्रमाण काफी है कि वर्धा की हिन्दी प्रचार समिति ने इसे पुरस्कृत किया है। इसमें एक ओर हिन्दी और दूसरी ओर मराठी शब्द तथा वाक्य दे कर व्याकरण तथा वाक्य रचना की विधि समझायी गयी है। कहीं-कहीं महाविरे के शब्दों तथा प्रचलित शब्दों में कुछ ग़लती का ऐसा मतभेद रह गया है जैसे गारा को रद्दा और सरपतको बेत, कल पुर्जा को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्प्रिंग, खटकाको संकट, हकीमोंको वैद्य कहा गया है। इसी तरह क्रिया या सिया क्रिया पद स्त्री लिंग में क्रियी वा सियी न होकर की और सी होती है। इसी तरह हिन्दी-विश्वविद्यालय में आचार्य नहीं रत्न परीक्षा होती है। अगले संस्करण में इन्हें सुधारा जा सकता है। पुस्तक काम की है दाम १॥) पता श्री जिवाजी व्यंकटेश यालगी, कडोलकरगली वेलगांव।

हमारे गावों की कहानी—दिल्ली के सस्तासाहित्य मण्डल ने लोक साहित्य माला में यह पहला रत्न पिरोकर प्रकाशित किया है। इसके लेखक हैं स्वर्गीय रामदास जी गौड़। इसमें वेदकालीन समय से लेकर आज तक गावोंकी दशा कैसी रही, उनमें समयानुसार कैसे परिवर्तन हुए इसका किस्सा प्रामाणिक और मनोरञ्जक लिखा गया है। कला कोशल और सभ्यता में आर्य लोग कितने बढ़े चढ़े थे यह बात रामायण-महाभारत आदि के उदाहरणों से सिद्ध कर लिखी गयी है। मूल्य ॥)

मेरा गाँव—कहानी के रूपसे इसमें ग्रामवासियों के कर्तव्य और ग्राम सुधार सम्बन्धी विषयों का अच्छा वर्णन किया गया है। स्वास्थ्य-सुधार, सफ़ाई आदि की बातें शास्त्रीय ढङ्ग से कहने में लोग रुचि के साथ नहीं पढ़ते। इसलिये नगर और ग्रामवासियों के काम में आने वाली बातें इसमें आत्मकथाके रूपमें कही गयी हैं। वर्णन रोचक है। ग्राम सेवा-समिति और स्वयं सेवकों के कर्तव्य का काफी मसाला है। पुस्तक सामयिक है। दाम ॥) लेखक रायसाहब आयुर्वेदपञ्चानन पं० तनसुखजी व्यास राजवैद्य व्यावर राजपूताना। लेखक ने वैद्य होते हुए भी कुनैनके गुण तो गाये हैं; किन्तु सुदर्शन, मृत्युञ्जय, गोदन्ती, ज्वरांकुश आदि की याद भी नहीं की!

श्रीउद्यान मालिनी—मध्यप्रदेशके शिक्षा विभाग में पण्डित नन्दलाल दुबे एक लेखक और कवि हो गये हैं। ये अपना नाम मालिनी रखा करते थे। यही नहीं अपनी बनायी पुस्तकों का नाम भी मालिनी संयुक्त रखते थे। ये आध्यात्मिक विचार के विद्वान थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी धुनके एक ही थे। ईश्वर भी मालिनी रूप से ही इनके आराध्य थे। इसमें भी ईश्वर ज्योति मालिनी और जीव रूपी पथिक का संवाद है। उनकी पुस्तकों की खोजमें हम बहुत दिनों से थे। श्रीयुत व्योहार राजेन्द्रजी की कृपा से यह पुस्तक हमें मिली है। इनकी पुस्तकें दुर्मिल हो रही हैं। इसलिये इस कृपाके लिये व्योहार जी हमारे अनेक धन्यवाद के पात्र हैं। इनकी और पुस्तकें संग्रहालय के लिये कोई सज्जन भेज सकें तो हम उपकृत होंगे।

नोट ऊपर लिखी हुई पुस्तकें सम्मेलन के हिन्दी संग्रहालय में प्राप्त हुई हैं। प्रेषक सज्जनों को अनेक धन्यवाद हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिशिष्ट

कार्य समिति का दसवाँ अधिवेशन

कार्य समिति की बैठक रविवार ज्येष्ठ सौर १ संवत् १९९५ तारीख १५ मई १९३८ को ८ बजे प्रातःकाल से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

१ श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन
२ " जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
३ " श्रीनाथ सिंह
४ " लक्ष्मीधर वाजपेयी
५ " रामकुमार वर्मा
६ " ब्रजराज
७ " बाबूराम सक्सेना (प्रधान मंत्री)

१—नियमानुसार श्री० पुरुषोत्तमदास टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् प्रधान मन्त्री ने गत अधिवेशन की कार्यवाही सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधान मन्त्री ने स्वर्गीय श्री० गौड़ जी के परिवार की सहायता का विषय उपस्थित किया और पिछली समिति के निश्चयानुसार जिन जिन सज्जनों से पत्र व्यवहार हुआ था उनके पत्र पढ़ कर सुनए। निश्चय हुआ कि श्री कृष्ण चन्द्र जी मुंसिफ़ और श्री महावीर प्रसाद पोद्दार को लिखा जाय कि सम्मेलन इस सम्बन्ध में एक समिति बनाना चाहता है। अब तक जो कुछ हुआ है वह उद्योग सहायतार्थ अलग-अलग रूप से हुआ है। संगठित रूप से समिति के द्वारा किया जाय तो अधिक सफलता की आशा है। उन सज्जनों का उत्तर आने पर पुनः यह विषय विचारार्थ पेश हो।

३—प्रधान मन्त्री ने प्रबन्ध, परीक्षा तथा साहित्य विभाग के आगामी छमाही के अनुमान पत्र उपस्थित किए जो स्वीकृत हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य विभाग के अनुमान पत्र के सिलसिले में सम्मेलन-पत्रिका के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि उसका वार्षिक व्यय ७००) से बढ़ने न पावे और वार्षिक मूल्य ३) के स्थान पर १) कर दिया जाय। श्री रामकुमार वर्मा पूर्व के अनुसार पत्रिका के सम्पादक रहें। लेखों का प्रबन्ध तथा अन्य काम ठा० श्रीनाथ सिंह जी करेंगे।

४- प्रधान मन्त्री ने लेखकों तथा वाचनालय की छुट्टी तथा स्थायी और अस्थायी लेखकों की छुट्टियों में अन्तर के विषय में सूचना दी कि संग्रह मन्त्री जी की सम्मति अभी प्राप्त नहीं हुई है। निश्चय हुआ कि अगली बैठक में यह विषय पेश हो।

५--प्रधानमन्त्री ने आगामी स्थायी समिति के प्रतिनिधियों के लिए विभिन्न सभाओं और सदस्यों की ओर से आए हुए मतों की गणना का विषय पेश किया। निश्चय हुआ कि प्रधान मन्त्री जी इसका निरीक्षण करके स्थायी समिति में पेश करें।

६--प्रधान मन्त्री ने सम्मेलन की सेवा करने वाले और उसकी सहायता करने वालों को सम्मेलन पत्रिका तथा उसकी प्रकाशित पुस्तकें देने का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि विशेष व्यक्तियों को पत्रिका दी जाय। श्री सम्पादक जी और प्रबन्धक जी इस बात का ध्यान रक्खें कि हिन्दी के जो विशेष कार्यकर्त्ता हैं उनके पास पत्रिका पहुंचती रहे। कार्यालय में तीन सूचियां होनी चाहिएँ।

१—नियम के अनुसार सदस्यों के पास भेजी जाने वाली सूची।

२—ग्राहक सूची।

३—आदरणीय व्यक्तियों के पास भेजी जाने वाली सूची।

७—प्रधान मन्त्री ने बंगीय साहित्य परिषद के प्रधान श्री हीरेन्द्र नाथ दत्त का श्री बंकिमचन्द्र चटर्जी जी की जीवनी के सम्बन्ध की सामग्री आदि आवश्यक वस्तुएँ भेजने के विषय का पत्र पढ़ कर सुनाया। निश्चय हुआ कि पत्र साहित्य मन्त्री जी के पास भेजा जाय, वह इसका उत्तर दें। और लिखा जाय कि श्री चटर्जी जी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवनी बंगला भाषा में नागरीलिपि में छापी जाय और उसका हिन्दी अनुवाद भी छापा जाय तो अच्छा हो।

८—प्रधान मन्त्री ने प्रान्तीय सरकार के नये शिक्षा मन्त्री श्री० सम्पूर्णानन्द जी के पास प्रतिनिधि मण्डल ले जाने की आवश्यकता बताई। निश्चय हुआ कि निम्नलिखित सज्जनों का मण्डल उनसे जाकर मिले और अपनी आवश्यक मांगें उनके समक्ष रक्खे।

१—श्री० हीरालाल खन्ना।
२— " गुरुप्रसाद टंडन।
३— " बालकृष्ण पाण्डेय।
४— " बाबूराम सक्सेना।

९—सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रधान मन्त्री जी डाइरेक्टर को एक पत्र लिखकर निवेदन करें कि विशेष योग्यता उत्तीर्ण विद्यार्थी को जो सुविधाएँ दी जाती हैं वे सम्मेलन के विशारद उत्तीर्ण विद्यार्थियों को भी दी जावें।

१०—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी ने सूचना दी कि साहित्य सदन अबोहर जो सम्मेलन की निजी संस्था है उसके ऊपर क़रीब ३०००) का क़र्ज़ हो गया है और उसके प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री केशवानन्द जी ने उसकी सहायता के सम्बन्ध में लिखा हैं। टंडन जी ने यह भी सिफ़ारिश की कि कुछ न कुछ सहायता की जावे। अपनी संस्था होने के कारण उसकी सम्पूर्ण सम्पत्ति सम्मेलन की है। निश्चय हुआ कि अगली छमाही के आरम्भ में परीक्षा विभाग से २५०) उनके पास सहानुभूति सूचक भेज दिए जायं और उनको लिखा जाय कि परीक्षा शुल्क की कुछ आमदनी आ जाने पर हमें आशा है कि २५०) और भेज सकगे।

बाबूराम सक्सेना,
एम० ए०, डी०-लिट्०,
प्रधान मन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य समिति की ग्यारहवीं बैठक

कार्य समिति की बैठक शुक्रवार आषाढ़ सौर १७ संवत् १९९५ तारीख़ १ जुलाई १९३८ को ३ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

१—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२— " हीरालाल खन्ना
३— " रामप्रसाद कक्कड़
४— " श्रीनाथसिंह
५— " दयाशंकर दुबे
६— " बाबूराम सक्सेना (प्रधान-मन्त्री)

१—नियमानुसार श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। प्रधान मन्त्री ने गत अधिवेशन की कार्यवाही सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधान-मन्त्री ने नियमावली संशोधन का विषय उपस्थित किया और आए हुए संशोधनों के उद्देश्य संक्षिप्त में बताये। श्री जमनालाल बजाज के संशोधनों पर बहुत देर तक विचार होता रहा। विषय की महत्ता और समय की कमी का ख्याल करके निम्नलिखित सिद्धान्त स्थिर किए गए और निश्चय हुआ कि विस्तृत विचार संशोधन उपसमिति की बैठक में करके उसकी रिपोर्ट कार्य समिति में उपस्थिति की जाय।

१—निधि पालक समिति की आवश्यकता समझ में नहीं आती इसलिए कार्य समिति उसके बनाने के पक्ष में नहीं है।

२—पदाधिकारियों का चुनाव वर्तमान पद्धति के अनुसार प्रति वर्ष रक्खा जाय। तीन वर्ष के लिए नहीं।

३—प्रबन्धमन्त्री और संग्रहमन्त्री तथा अर्थमन्त्री के पदों की आवश्यकता है और इनसे संस्था की कोई हानि भी नहीं प्रतीत होती। इसलिए इनको न हटाया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४—निश्चय हुआ कि "कार्याध्यक्ष" रखने के सिद्धान्त में समिति को कोई आपत्ति नहीं है परन्तु अभी इस पद की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

५—समिति इस सिद्धान्त से सहमत है कि कार्यसमिति के कुछ निर्णय अन्तिम हों।

६—स्थायी समिति के संगठन के सम्बन्ध में सदस्यों का चुनाव प्रान्तवार पहले की नियमावली में था किन्तु इसको कार्य में लाने में कठिनाई प्रतीत हुई। अब फिर प्रान्तवार चुनाव की सुविधा दी जाय इसमें कार्य-समिति को कोई आपत्ति नहीं है।

७—प्रचार का कार्य एक स्वतन्त्र विभाग को दे दिया जाय इस सिद्धान्त से कार्य समिति सहमत नहीं है। प्रचार-समिति को हर प्रकार की सुविधा दी जावे और उसका समय ३ वर्ष का रहे। सुविधा देने के लिए संशोधन उपसमिति ब्योरे वार नियमों पर विचार करे।

३—प्रधान मन्त्री ने गत कार्य समिति के निश्चयानुसार स्वर्गीय श्री गौड़ जी के कुटुम्ब को सहायता के सम्बन्ध में धन संग्रहार्थ समिति बनाने का विषय पेश किया। सर्व सम्मति से नीचे लिखे सज्जनों की समिति बनाई गई।

१—श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२— " श्रीकृष्णचन्द्र मुन्सिफ़ (संयोजक)
३— " जमनालाल बजाज
४— " रामनारायण मिश्र
५— " बाबूराम सक्सेना (प्रधान मन्त्री)

४—प्रधान मन्त्री ने, सभापति निर्वाचन के सम्बन्ध में नियम (८१) के अनुसार अधिकारप्राप्त सज्जनों और संस्थाओं की सम्मतियाँ उपस्थित की। सम्मतियों की गणना हुई और सम्मेलन के सभापति पद के लिए तथा परिषदों के सभापति के लिए नीचे लिखे पाँच पाँच सज्जनों को अधिक मत मिले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-सभापति

१—श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, काशी
२— " मैथिलीशरण गुप्त , झाँसी
३— " रामचन्द्र शुक्ल . काशी
४— " राहुल सांकृत्यायन , "
५— " शिवप्रसाद गुप्त , "

साहित्य-परिषद

१—श्री अमरनाथ झा प्रयाग
२— " धीरेन्द्र वर्मा "
३— " मैथिलीशरण गुप्त झाँसी
४— " शुकदेव बिहारी मिश्र लखनऊ
५— " सुमित्रानन्दन पन्त अलमोड़ा

इतिहास-परिषद

१—श्री गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा , अजमेर
२— " जयचन्द विद्यालङ्कार , काशी
३— " दात्तेय वामन पोद्दार , पूना
४— " आचार्य नरेन्द्रदेव , फ़ैज़ाबाद
५— " रामप्रसाद त्रिपाठी , प्रयाग

विज्ञान-परिषद

१—श्री कविराज प्रताप सिंह काशी
२— " गोरखप्रसाद प्रयाग
३— " फूलदेव सहाय वर्मा काशी
४— " सत्यप्रकाश प्रयाग
५— " शालिग्राम भार्गव प्रयाग

दर्शन-परिषद

१—श्री काका कालेलकर वर्धा
२— " गंगानाथ झा प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३— " गुलाब राय आगरा
४— " भगवानदास काशी
५— " राहुल सांकृत्यायन काशी

इसके पश्चात् समय अधिक हो जाने के कारण समिति की बैठक दूसरे दिन (२-७-३८) ७॥ बजे सायंकाल के लिए स्थगित की गई।

स्थगित बैठक दूसरे दिन ७॥ बजे से नीचे लिखे सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुई।

१ -श्री पुरुषोत्तमदास टंडन
२— " बाबूराम सक्सेना
३— " दयाशंकर दुबे
४— " लक्ष्मीधर बाजपेयी
५— " रामप्रसाद कक्कड़

किन्तु रात अधिक बीतने के कारण सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि समिति का स्थगित अधिवेशन दूसरे दिन (३-७-३८) ११ बजे दिन को किया जाय।

स्थगित अधिवेशन ३ तारीख को ११ बजे दिन से नीचे लिखित सदस्यों की उपस्थिति में प्रारम्भ हुआ।

१—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन
२— " बाबूराम सक्सेना
३— " दयाशंकर दुबे
४— " लक्ष्मीधर बाजपेयी
५— " रामप्रसाद कक्कड़
६— " श्रीनाथ सिंह
७ — " जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
८— " रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

५—प्रधान मन्त्री ने सूचित किया कि नियम संशोधन उपसमिति ने २६वें नियम तक व्योरेवार विचार कर लिया है और उस अंश की रिपोर्ट उपस्थित की जो नीचे लिखे अनुसार सर्व सम्मति से स्वीकृत हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसमिति की रिपोर्ट

नियम संशोधन समिति की प्रथम बैठक १७ आषाढ़ ९५ तारीख़ १ जुलाई १९३८ को १ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई। नीचे लिखे सदस्य उपस्थित थे:—

श्री पुरुषोत्तम दास टंडन
" ब्रजराज
" बाबूराम सक्सेना (संयोजक)

आए हुए समस्त संशोधनों पर विचार करके समिति ने मूल सिद्धान्त निश्चित किए और बैठक स्थगित हुई।

समिति की स्थगित बैठक १८ आषाढ़ १९९५ को १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुई। नीचे लिखे अनुसार नियमों में संशोधन स्वीकृत हुए।

(१) जोड़िए—'भारतीय' हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पूर्व।

(२) ख – राष्ट्र भाषा हिन्दी के ऊपर *चिह्न लगाकर नीचे टिप्पणी दीजिए।

टिप्पणी—इस विषय पर सम्मेलन के २४वें अधिशवेशन (इन्दौर) में जो निश्चय हुआ था उसकी प्रतिलिपि नीचे दी जाती है—

इस सम्मेलन को मालूम हुआ है कि राष्ट्रभाषा के स्वरूप के सम्बन्ध में हिन्दुस्तान के भिन्न भिन्न प्रान्तों में कुछ ग़लतफ़हमी फैली हुई है और लोग उसके लिए अलग अलग राय रखते हैं। इसलिए यह सम्मेलन घोषित करता है राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हिन्दी का वह स्वरूप मान्य समझा जाय जो हिन्दू मुसलमान आदि सब धर्मों के ग्रामीण और नागरिक व्यवहार करते हैं जिसमें रूढ़ सर्व सुलभ अर्बी, फ़ारसी, अँग्रेज़ी या संस्कृत शब्दों का या मुहाविरों का बहिष्कार न हो और जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जाती हो।

(ख) के उपरान्त नई धारा जोड़िए। नागरी लिपि को मुद्रण-सुलभ और लेखन-सुलभ बनाने की दृष्टि से उसे अधिक विकसित करने का प्रयत्न करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) के 'और लाभदायक' शब्द के स्थान पर 'व्यवस्थित' शब्द रखिए।

(ज) में विश्वविद्यालय के स्थान पर विद्यापीठ।

(झ) को इस प्रकार पढ़िए—हिन्दी भाषा द्वारा उच्च परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करने के लिए एक हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापित करना।

(ड) इस प्रकार पढ़िए—हिन्दी की हस्तलिखित और प्राचीन सामग्री तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माताओं के स्मृति-चिन्हों की खोज करना, और इनके तथा प्रकाशित पुस्तकों के संग्रह और रक्षा के निमित्त सम्मेलन की ओर से एक वृहत संग्रहालय की व्यवस्था करना।

(४) तीन के स्थान पर चार (ग) के पूर्व जोड़िए विशेष सदस्य। निमयों में जहां जहां साधारण सदस्य शब्द आया है उसकी जगह विशेष सदस्य लिखिए।

नियम (५) के पूर्व बढ़ाइए—साधारण सदस्यों से एक रुपया वार्षिक शुल्क लिया जायगा। सम्मानित और स्थायी सदस्यों को सम्मेलन के प्रकाशित ग्रन्थ बिना मूल्य भेंट किए जायंगे तथा विशेष सदस्यों को उस वर्ष की प्रकाशित पुस्तकें दी जायंगी जिस वर्ष का उनका शुल्क प्राप्त होगा।

नियम (८) में स्थायी के पूर्व सम्मानित जोड़िए।

नियमों में जहां जहां हितैषी शब्द आया हो उसके स्थान पर साधारण सदस्य पढ़िए।

नियम (९) और (१०) उड़ा दिए जायं।

नियम (११) में 'मुख्य स्थान' के स्थान पर 'प्रधान कार्यालय' जोड़िए।

नियम (१२) उड़ा दिया जाय।

नियम (१५) में दशमांश के बाद जोड़िए "जो १० से अधिक न हों।"

(घ) के स्थान पर पढ़िए—स्थायी सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि जो उनकी संख्या के पंचमांश होंगे किन्तु १० से अधिक न होंगे।

विशेष सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के पंचमांश होंगे किन्तु १० से अधिक न होंगे।

(ङ) के स्थान पर—साधारण सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के दशमांश होंगे किन्तु पांच से अधिक न होंगे। इसके उपरान्त नई धारा जोड़िए—

उन प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनों के निर्वाचित ३३ प्रतिनिधि जो नियम (५९) के अनुसार सम्मेलन से सम्बद्ध हों।

(च) के नोट में ॥) के स्थान पर ।)।

(छ) निकाल दिया जाय। रहेगा नहीं।

(झ) के अन्त में जोड़िए—किन्तु ऐसे प्रतिनिधियों की संख्या २० से अधिक न होगी।

(ञ) के अन्तिम वाक्य में १० के स्थान पर ५।

(१६) (अ) के अन्त का पैराग्राफ़ इस प्रकार पढ़िए—जो सज्जन भूतपूर्व सभापति तथा सम्मानित सदस्य होने के कारण स्थायी समिति के सदस्य माने गए हैं तथा जो सज्जन स्थायी सदस्यों के प्रतिनिधि नियत किए जाते हैं उनसे यह शुल्क लेना आवश्यक न होगा।

(आ) अंश को नीचे लिखे अनुसार एक अलग नियम बनाकर पढ़िए—सम्मेलन परीक्षाओं में उत्तीर्ण उपाधिधारियों का एक रजिस्टर रक्खा जायगा। प्रत्येक उपाधिधारी ॥) वार्षिक अथवा ५) एक मुश्त जीवन भर के लिए देकर इस रजिस्टर में अपना नाम लिखा सकेगा।

(१९) इस प्रकार पढ़िए—सभापति को छोड़कर सब पदाधिकारियों का चुनाव स्थायी समिति के प्रथम अधिवेशन में होगा। समस्त पदाधिकारी अपने पद के कारण स्थायी समिति के सदस्य होंगे। स्थायी समिति का प्रथम अधिवेशन सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के साथ उसके उपरान्त ही होगा और इसके लिए नियम (२४) के अनुसार सूचना न दी जायगी। केवल अधिवेशन का समय सम्मेलन के अवसर पर घोषित कर दिया जायगा।

नियम (२०) निकाल दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२६) इस प्रकार पढ़िए—प्रधान मंत्री कार्य समिति की स्वीकृति के पश्चात् आगामी वर्ष के आय व्यय का अनुमान पत्र माघ मास में स्थायी समिति के सामने स्वीकारार्थ उपस्थित करेंगे। इस अनुमान-पत्र की प्रतियां सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में प्रतिनिधियों को बाँट दी जायँगी।

६—प्रधान मन्त्री ने आगरा के साहित्य विद्यालय को ६०) सहायतार्थ देने के लिए उक्त रक़म को परीक्षा विभाग के अनुमान-पत्र में बढ़ाने का विषय पेश किया। निश्चय हुआ कि उक्त रक़म परीक्षा-विभाग के अनुमान पत्र में बढ़ाकर स्थायी समिति से स्वीकृति ली जाय।

७—प्रधान मन्त्री ने सेवदह के साहित्य महाविद्यालय को सहायता दिए जाने के सम्बन्ध में उसके व्यवस्थापक का पत्र उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि अभी इस संस्था की जांच की जाय और यह विषय आगामी समिति में उपस्थित हो।

८—प्रधान मन्त्री ने गंगा पुस्तक माला, लखनऊ के संस्थापक का पत्र उपस्थित करते हुए बताया कि वे चाहते हैं कि संग्रहालय में उनकी किताबें रखने के लिए अलग आलमारियां दी जायँ। सूचना मिली कि इस सम्बन्ध में श्री टंडन जी से बातें हो चुकी हैं और वह अब इस तरह की व्यवस्था नहीं चाहते।

बाबू राम सकसेना
एम० ए०, डी-लिट्,
प्रधान मन्त्री

स्थायी समिति का चतुर्थ अधिवेशन

स्थायी समिति का अधिवेशन रविवार ज्येष्ठ सौर १ संवत् १९९५ ता० १५ मई १९३८ को ४ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में हुआ। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :—

१— श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन
२— " लक्ष्मीधर बाजपेयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३— " रामकुमार वर्मा
४— " दयाशंकर दुबे
५— " उदयनारायण तिवारी
६— " ज्योतिप्रसाद मिश्र
७— " योगीन्द्र चन्द्र शुक्ल
८— " सत्यजीवन वर्मा
९— " ब्रजराज
१०— " श्रीनाथ सिंह
११— " लालबहादुर शास्त्री
१२— " रामनारायण मिश्र
१३— " जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
१४— " रामरत्न
१५— " बाबूराम सक्सेना (प्रधान मन्त्री)

१—नियमानुसार श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् प्रधान मन्त्री ने गत अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ कर सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—प्रधान मन्त्री ने मंगलाप्रसाद पारितोषिक समिति के निश्चयानुसार पारितोषिक की नियमावली में निम्नलिखित संशोधन और परिवर्द्धन का विषय उपस्थित किया। निश्चय हुआ कि संशोधन (१) नियम (९) में नीचे दूसरे पैराग्राफ़ के रूप में जोड़ दिया जावे। संशोधन नं० (२) दूसरे पैरा के रूप में नियम (१८) के नीचे बढ़ा दिया जाय। और संशोधन नं० (३) दूसरे पैराग्राफ़ के रूप में नियम (१) के नीचे जोड़ दिया जाय।

"१—निश्चय हुआ कि नियम (९) में यह स्पष्ट कर दिया जाय कि पारितोषिकसमिति जो पुस्तकें नियम (१४) के अनुसार उपस्थित करेगी वह उपयुक्त दो की गणना में न आवेंगी।

२—जब पारितोषिक समिति निर्णायकों के सामने जाने वाली पुस्तकों की अन्तिम सूची बना ले उसके बाद यदि किसी लेखक का शरीरान्त हो जाय तो उसकी पुस्तक सूची में से हटाई न जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और यदि उस पुस्तक के लिए पुरस्कार मिले तो पुरस्कार की रक़म और ताम्रपत्र उक्त पुस्तक के लेखक के निकटतम सम्बन्धियों में से किसी एक को दे दिया जायगा अथवा एक से अधिक में बांट दिया जायगा। सम्बन्धी चुनने के लिए किसी क़ानूनी नियम से पारितोषिकसमिति बद्ध न होगी। पारितोषिक समिति ही इसका निर्णय करेगी कि पारितोषिक किस एक या अधिक सम्बन्धी को दे और उसका निर्णय अन्तिम होगा।

३—यदि किसी कारण वश कोई अधिवेशन के अवसर पर पारितोषिक लेने के लिए उपस्थित न हो सके तो ताम्र-पत्र और पारितोषिक का रुपया स्थायी समिति के किसी अधिवेशन में दे दिया जायगा। ताम्रपत्र पर नियमानुसार तिथियां आदि वही रहेंगी जिस तिथि को सम्मेलन हुआ करेगा।"

३—प्रधान मन्त्री ने हिन्दी साहित्य सेवियों को सम्मेलन की ओर से आनरेरी उपाधि दी जाने के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय परिषद का प्रस्ताव उपस्थित किया। प्रस्ताव पर विचार होने के प्रथम तत्सम्बन्धी निम्नलिखित दो सिद्धान्त स्वीकृत हुए।

१—ऐसी उपाधि की आवश्यकता है कि जिसके द्वारा लेखक तथा अन्य साहित्य सेवियों को सम्मानित किया जा सके।

२—यह उपाधि इस प्रकार की हो जिसका देना किसी परीक्षा पर निर्भर न हो।

इसके पश्चात् यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि उपाधि का नामाकरण 'विद्या' शब्द से हो या 'साहित्य' से। बहुमत से निश्चय हुआ कि जो उपाधि रक्खी जाय उसका पहला शब्द 'साहित्य' हो। समिति के सदस्य श्रीरामरत्न जी कुछ देर में आए थे। इसलिए उन्होंने प्रस्ताव किया कि प्रस्ताव पर फिर से विचार किया जाय किन्तु प्रस्ताव बहुमत से अस्वीकृत हो गया।

इसके पश्चात् उपाधि के नाम का प्रश्न पेश हुआ। कई नाम आए। बहुमत से तय हुआ कि उपाधि का नाम 'साहित्य वाचस्पति'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रक्खा जाय और निश्चय हुआ कि उपाधि देने की स्वीकृति इस क्रम से होगी—

१—हिन्दी साहित्य सेवियों को सम्मानित करने के लिए सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि दी जा सकेगी। उपाधि के प्रमाण में ताम्रपत्र भी दिया जायगा।

२—सब से पहले उपाधि देने का प्रस्ताव प्रधान मन्त्री द्वारा कार्य समिति की ऐसी बैठक में उपस्थित किया जायगा जो केवल इसी काम के लिए बुलाई जायगी। किन्तु उपस्थित करने के पहले यह आवश्यक होगा कि प्रधान मन्त्री किसी एक उपसभापति और सभापति की स्वीकृति प्रस्ताव उपस्थित करने के लिए ले लें। बिना इस प्रकार की स्वीकृति के कोई प्रस्ताव उपस्थित नहीं होगा। कार्य समिति की जिस बैठक में यह प्रस्ताव उपस्थित किया जायगा उसके कार्य क्रम में कार्य का संकेत तो किया जायगा किन्तु जिन विद्वानों को उपाधि देने का प्रस्ताव प्रधान मन्त्री उपस्थित करना चाहेंगे उनके नाम न प्रकट किए जायंगे। नाम केवल बैठक के समय ही प्रगट किए जायंगे। कार्य-समिति में यह प्रस्ताव तभी स्वीकृत समझा जायगा जब उपस्थित सदस्यों की कम से कम दो तिहाई संख्या उसके पक्ष में होगी।

जो मंतव्य कार्य समिति में उपर्युक्त रीति से स्वीकृत हो वह हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद में उपस्थित किया जायगा। वहाँ स्वीकृत होने के पश्चात् वह स्थायी समिति में उपस्थित किया जायगा और यदि स्थायी समिति ने इस मंतव्य को स्वीकृत किया तो वह मान्य होगा। हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद तथा स्थायी समिति के कार्य क्रमों में भी कार्य की सूचना का संकेत तो होगा किन्तु नाम प्रगट न किए जायँगे। नाम केवल इन समितियों की बैठक के समय ही प्रगट किए जायँगे। स्थायी समिति द्वारा अन्तिम निर्णय होने पर उपाधि वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर प्रदान की जायगी।

यदि वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कोई सज्जन न आ सकें तो स्थायी समिति के अधिवेशन के अवसर पर दी जा सकेगी अथवा वह भी सम्भव न हो तो उपाधि उनकी अनुपस्थिति में भी दी जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक अन्तिम निर्णय स्थायी समिति द्वारा न हो जाय तब तक कार्यसमिति, विश्वविद्यालय परिषद तथा स्थायी समिति के सदस्यों का कर्त्तव्य होगा कि उपाधि पाने वाले सज्जनों के नाम गुप्त रक्खें। किसी से भी प्रगट करना अनुचित होगा। उपाधि दिए जाने की आवश्यक विज्ञप्ति प्रधान मन्त्री द्वारा दी जायगी।

४--उपरोक्त नियमों पर विचार करते समय सम्मेलन की नियमावली के नियम सं० ३९ (छ) में 'परिषद' के स्थान पर 'समिति' शब्द भूल से छपा देखा गया। निश्चय हुआ कि नियमावली संशोधन समिति इसका उचित संशोधन करे।

५--प्रधानमन्त्री ने आगामी स्थायी समिति के संगठन का विषय उपस्थित किया। निम्नलिखित सदस्य विभिन्न संस्थाओं और सदस्यों की ओर से प्रतिनिधि चुने गए :--

सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति

१ श्रीयुत महामना पं० मदनमोहन मालवीय, हिन्दू-विश्व-विद्यालय, काशी।
२ " महात्मा मोहनदास करमचन्द गान्धी, मगन बाड़ी, वर्धा।
३ " रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।
४ " पं० जगन्नाथप्रसाद चतुर्वेदी, एम० आर० ए० एस०, पो० मलेपुर, ज़िला मुङ्गेर।
५ " बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन, मीरगंज, प्रयाग।
६ " डा० भगवानदास, एम० ए०, डी०-लिट्, सेवाश्रम, सिगरा, काशी।
७ " बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सदाक़त आश्रम, पो० दीघाघाट, पटना।
८ " पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सेण्ट्रल हिन्दू स्कूल, कामाच्छा, काशी।
९ " रायबहादुर पं० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझा, राजपूताना म्यूज़ियम, अजमेर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१० श्रीयुत रावराजा रायबहादुर पं० श्यामबिहारी मिश्र, एम० ए० १०५, गोलागंज लखनऊ।

११ " हिज़ हाईनेस महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ महाराजाधिराज फ़रज़न्दे-ख़ास दौलते इङ्गलीशिया सेना ख़ास खेल, शमशेर बहादुर, जी० सी० एस० आई, जी० सी० आई० ई० बड़ौदा नरेश, बड़ौदा।

सम्मेलन के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री

१२ " प्रो० ब्रजराज एम० ए०, बी-एस० सी०, एल-एल बी० क्रास्थवेट रोड, प्रयाग।

१३ " पं० कृष्णकान्त मालवीय, अभ्युदय प्रेस, प्रयाग।

१४ " पं० रमाकान्त मालवीय, बी० ए०, एल-एल० बी० हिन्दू-विश्व-विद्यालय, काशी।

१५ " आयुर्वेद पञ्चानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, दारागंज, प्रयाग।

१६ " सरदार नर्मदा प्रसाद सिंह, लूकरगंज, प्रयाग।

परीक्षकों की ओर से प्रतिनिधि

१ श्रीयुत दयाशङ्कर दुबे, प्रयाग।

२ " लक्ष्मीधर बाजपेयी "

३ " धीरेन्द्र वर्मा "

४ " उदयनारायण तिवारी "

५ " रामकुमार वर्मा "

६ " सद्गुरुशरण अवस्थी, कानपुर।

७ " चन्द्रावती त्रिपाठी प्रयाग।

८ " रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' "

९ " गोरखप्रसाद "

१० " भगीरथप्रसाद दीक्षित लखनऊ

१ " भगवतीप्रसाद बाजपेयी, प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१२	श्रीयुत उमेश मिश्र	”
१३	” रामबहोरी शुक्ल,	काशी।
१४	” गिरिजादत्त शुक्ल	प्रयाग।
१५	” नन्ददुलारे बाजपेयी	गोरखपुर।
१६	” अयोध्यानाथ शर्मा	कानपुर
१७	” कालिकाप्रसाद दीक्षित	इन्दौर।
१८	” योगीन्द्रचन्द्र शुक्ल	प्रयाग।
१९	” सिद्धिनाथ दीक्षित	”
२०	” रामलखन शुक्ल,	”
२१	” बृजभूषण शुक्ल	”
२२	” आनन्द कौशल्यायन	काशी।
२३	” गंगाप्रसाद उपाध्याय,	प्रयाग।
२४	” ज्योतिप्रसाद मिश्र	”
२५	” केशवदेव शर्मा	”
२६	” रामचन्द्र टण्डन	”
२७	” जगपति चतुर्वेदी	”
२८	” शेषमणि जी	”

स्वागत समिति के प्रतिनिधि

(१) रा० स० ला० गयाप्रसाद जी, एसिस्टेन्ट फ़ाइनेन्शल एडवाइज़र, मिलिटरी फाईनेन्स, शिमला। नई देहली

(२) श्री रामगोपाल जी, गुप्त, इन्डियन स्टोर्स डिपार्टमेन्ट, शिमला। नई देहली

(३) श्री हरनामदास जी, एम० जी० ओ० ब्राञ्च, शिमला।

(४) श्री गङ्गादत्त जी, पाण्डेय, एम० जी० ओ० ब्राञ्च, शिमला।

(५) श्री हरिबिलास जी गुप्त, सिविल एवीएशन आफ़िस, शिमला। नई देहली

नियम १५ (छ) के अनुसार सभाओं के प्रतिनिधि

१—श्री राजाराम शास्त्री, बनारस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२—श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, सहारनपुर
३—" काशीनाथ नारायण त्रिवेदी वर्धा
४—" राजदेव त्रिपाठी प्रयाग
५—" मगनभाई प्रभुदास देसाई अहमदाबाद
६—" चन्द्रशेखर सिंह विद्यालंकार पटना
७—,, विद्यावती सेठ देहरादून
८—,, बुद्धिनाथ झा कैरव देवघर
९—,, वृहस्पति शास्त्री वृन्दावन
१०—,, नरदेव शास्त्री ज्वालापुर

हितैषियों के प्रतिनिधि

१—श्री मूलचन्द जैन बाँदा

स्थायी एवं साधारण सदस्यों के प्रतिनिधि

१ श्री शिवप्रसाद गुप्त काशी
२ " राजकुमार रणञ्जयसिंह सुल्तानपुर
३ " पुत्तनलाल विद्यार्थी लखनऊ
४ " दुलारेलाल भार्गव "
५ " स्वामी केशवानन्द पंजाब
६ " लालचन्द सेठी इन्दौर
७ " सेठ युगुलकिशोर बिड़ला कलकत्ता
८ " मदालसादेवी अग्रवाल वर्धा

सम्मानित सदस्यों के प्रतिनिधि

१ श्री गोकुलचन्द रईस कलकत्ता
२ " सेठ हुकुमचन्द इन्दौर
३ " महाराजा इन्दौर "
४ " शिवप्रसाद गुप्त "
५ " बड़ौदा नरेश बड़ौदा
६ " सीताराम सेकसरिया कलकत्ता
७ " वियोगी हरि दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाधिधारियों की ओर से प्रतिनिधि

१ श्री बालकृष्ण पाण्डेय एम० ए० लखनऊ
२ ,, दीनदयाल गुप्त एम० ए० ,,

सम्बद्ध सभाओं के प्रतिनिधि

१	श्री सीताराम पाण्डेय	कटनी
२	,, केशरी किशोरशरण	पटना
३	,, रामवृक्ष बेनीपुरी	,,
४	,, बनारसीदास चतुर्वेदी	टीकमगढ़
५	,, लक्ष्मीनाथ मिश्र	,,
६	,, गौरीशङ्कर द्विवेदी	,,
७	,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री	कलकत्ता
८	,, रामलखन तिवारी	,,
९	,, विद्याधरी जौहरी	आगरा
१०	,, पी० एम० भम्भानी एम० ए०	,,
११	,, हरिहरनाथ टण्डन	,,
१२	,, गुलाबराय	,,
१३	,, महेन्द्र जी	,,
१४	,, उमरावसिंह पाण्डेय	मैनपुरी
१५	,, विद्याधर चतुर्वेदी	,,
१६	,, रामभरोसे तिवारी	इन्दौर
१७	,, श्रीनिवास चतुर्वेदी	,,
१८	,, वैद्यनाथसिंह	,,
१९	,, शिवसेवक तिवारी	,,
२०	,, हाकिमसिंह चौहान	मैनपुरी
२१	,, सत्यप्रकाश कुलश्रेष्ठ	,,
२२	,, विश्वनाथ ,,	,,
२३	,, मदनगोपाल	मुरादाबाद
२४	,, नीतीश्वर प्रसादसिंह	मुज़फ्फरपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२५ श्री गणेश वैशम्पायन पूना
२६ ,, हनुमानप्रसाद कोटा
२७ ,, शम्भूदयाल सक्सेना ,,
२८ ,, छत्रधारीसिंह जौनपुर
२९ ,, सुन्दरीप्रसाद रईस ,,

हितैषियों की सूची पेश करते हुए प्रधान मन्त्री ने बताया कि हितैषी कुल चार हैं। नियमावली के अनुसार कुल संख्या के दशमांश प्रतिनिधि होने चाहिएँ। उक्त नियम के अनुसार एक भी प्रतिनिधि उक्त सदस्यों की ओर से नहीं लिया जा सकता और इस दशा में उनकी सम्मति मंगानी व्यर्थ हो जाती है। निश्चय हुआ कि जहाँ किसी एक वर्ग में यदि संख्या नियमानुसार हिसाब करने से एक से कम आती हो तो वहाँ एक मान ली जाय।

६—प्रधान मन्त्री ने शिमला अधिवेशन के अवसर पर उपस्थित किए जाने के लिए लेखों के लिए विषय-सूची का प्रश्न उपस्थित किया और सूचित किया कि स्वागतकारिणी समिति से अभी तक कोई सूची नहीं प्राप्त हुई। निश्चय हुआ कि प्रधानमन्त्री, साहित्य मन्त्री तथा श्री लक्ष्मीधर वाजपेई इन तीन सज्जनों की उपसमिति एक सूची बना कर भेज दे। उप समिति को अधिकार होगा कि यदि स्वागतसमिति कोई सूची भेजे तो उस सूची में उचित परिवर्तन कर ले।

७—प्रधान मन्त्री ने प्रबन्ध विभाग, परीक्षा विभाग और साहित्य विभाग के आगामी छमाही के आय व्यय के अनुमान पत्र उपस्थित किए जो स्वीकृत हुए।

८—सभापति की आज्ञा से श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र ने सूचना दी कि श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल' ने जिनको कार्यसमिति ने सम्मेलन का २५ वर्ष का इतिहास लिखने का काम सौंपा था, मिश्र जी को यह कार्य भार दे दिया है और मिश्र जी सम्मेलन के वार्षिक विवरणों की पूरी फ़ाइल एतदर्थ चाहते हैं। कार्यालय से मालूम हुआ कि कतिपय वर्षों के कार्य विवरण की एक ही प्रति मौजूद है। निश्चय हुआ कि उन वर्षों के कार्य विवरण की और प्रतियाँ तलाश की जावें यदि मिलें तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिश्र जी को दे दी जावें। अन्यथा मिश्र जी कार्यालय में ही उनको देखने का कष्ट करें।

बाबूराम सक्सेना एम० ए० डी० लिट्
प्रधान मन्त्री

स्थायी समिति का पाँचवाँ अधिवेशन

स्थायी समिति का अधिवेशन मंगलवार आषाढ़ सौर २१ संवत् १९९५ तारीख़ ५ जुलाई १९३८ को ५ बजे सायंकाल से श्री जमनालाल बजाज के स्थान पर वर्धा में निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में हुआ।

१	श्री जमनालाल बजाज	वर्धा
२	,, राजेन्द्रप्रसाद	पटना
३	,, भगीरथप्रसाद दीक्षित	लखनऊ
४	,, दयाशंकर दुबे	प्रयाग
५	,, सत्यदेव शास्त्री	वर्धा
६	,, लालबहादुर शास्त्री	प्रयाग
७	,, राधाकृष्ण तिवारी	,,
८	,, श्रीमन्नारायण अग्रवाल	वर्धा
९	,, श्रीनाथसिंह	प्रयाग
१०	,, दादा धर्माधिकारी	वर्धा
११	,, रामनारायण मिश्र	प्रयाग
१२	,, बालकृष्ण पाण्डेय	लखनऊ
१३	,, काका कालेलकर	वर्धा
१४	,, पुरुषोत्तमदास टण्डन	प्रयाग
१५	,, व्यौहार राजेन्द्रसिंह	जबलपुर
१६	,, बाबूराम सक्सेना	प्रयाग (प्रधान मंत्री)

१—नियमानुसार श्री जमनालाल बजाज ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् प्रधान मन्त्री ने गत अधिवेशन की कार्यवाही सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—शिमला अधिवेशन के लिए नियमावली की धारा ८३ (क) के अनुसार विभिन्न प्रान्तों से प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय उपस्थित हुआ। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रधान मंत्री सम्बद्ध सभाओं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केन्द्र व्यवस्थापकों और हिन्दी प्रचार समिति से सलाह कर सूची आगामी स्थायी समिति में उपस्थित करें।

३--प्रधान मंत्री ने परीक्षा विभाग के अनुमान पत्र में ६०) संस्था सहायतार्थ बढ़ाने का विषय पेश किया। निश्चय हुआ कि परीक्षा विभाग के आगामी श्रावण ९५ से पौष ९५ तक के अनुमान पत्र की बचत से ६०) साहित्य विद्यालय, आगरा को सहायतार्थ दिए जायँ।

४--प्रचार समिति का सन् १९३८-३९ का अनुमान-पत्र उपस्थित हुआ। जो स्वीकृत हुआ।

[नोट—इस समय जबलपुर के श्री ब्यौहार राजेन्द्रसिंह भी बैठक में आए।]

५—श्री सभापति जी ने सूचना दी कि श्री वियोगी हरि जी ने प्रचार समिति की सदस्यता से त्याग-पत्र दिया है और सिफ़ारिश की कि उनके स्थान पर श्री श्रीकृष्णदास जाजू समिति के सदस्य स्वीकार किए जायँ। सर्वसम्मति से श्री जाजू जी वियोगीहरि जी के स्थान पर समिति के सदस्य चुने गए।

६—प्रधान मन्त्री जी ने श्री जमनालाल बजाज का हिन्दी प्रचार समिति के उपसभापति पद और कोषाध्यक्ष पद से त्याग पत्र पेश किया। अधिक देर तक परामर्श के पश्चात श्री बजाज जी का उक्त दोनों पदों से त्याग-पत्र स्वीकृत हुआ और उनके स्थान पर श्री काका कालेलकर उपसभापति और श्रीकृष्णदास जाजू कोषाध्यक्ष चुने गए। श्री बजाज जी समिति के सदस्य बने रहेंगे।

इसके बाद समिति की बैठक ८ बजे के लिए स्थगित की गई और ८ बजे रात पुनः कार्यवाही आरम्भ हुई।

७—श्री काका कालेलकर ने सूचना दी कि प्रचार मन्त्री श्री सत्यनारायण जी प्रचार कार्य के लिए मद्रास भेजे गए हैं उनके स्थान पर प्रचारसमिति ने श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल को मन्त्री चुना है। सर्वसम्मति से श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल का प्रचारमन्त्री चुना जाना स्वीकृत हुआ।

८—प्रधान मन्त्री ने, शिमला अधिवेशन की तिथियाँ बदलने के सम्बन्ध में वहाँ की स्वागत समिति की कार्यकारिणी समिति की २०—६—३८ की बैठक का प्रस्ताव उपस्थित किया जिसमें अधिवेशन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की तिथियाँ १६, १७, १८ सितम्बर कर देने की प्रार्थना की गई थी। स्वागतसमिति की सुविधाओं का ध्यान करके निश्चय हुआ कि अधिवेशन की तिथियाँ १७, १८, और १९ सितम्बर १९३८ कर दी जायँ और इसकी सूचना स्वागत समिति को दे दी जाय।

९—प्रधान मन्त्री ने नियमावली संशोधन का विषय पेश किया और कार्य समिति के १—७—३८ के अधिवेशन में स्वीकृत उन सिद्धान्तों को उपस्थित किया जिनके अनुसार उपसमिति ने संशोधन किया है। निश्चय हुआ कि कार्यसमिति द्वारा स्वीकृत निम्नलिखित सिद्धान्त स्वीकार किए जायँ।

१—निधिपालक समिति की आवश्यकता समझ में नहीं आती इसलिए कार्यसमिति उसके बनाने के पक्ष में नहीं है।

२—पदाधिकारियों का चुनाव वर्त्तमान पद्धति के अनुसार प्रति वर्ष रक्खा जाय। तीन वर्ष के लिए नहीं।

३—प्रबन्ध मन्त्री और संग्रह मन्त्री तथा अर्थमन्त्री के पदों की आवश्यकता है और इनसे संस्था की कोई हानि भी नहीं प्रतीत होती। इसलिए इनको न हटाया जाय।

४—निश्चय हुआ कि "कार्याध्यक्ष" रखने के सिद्धान्त में कोई आपत्ति नहीं है परन्तु अभी इस पद की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती।

५—समिति इस सिद्धान्त से सहमत है कि कार्यसमिति के कुछ निर्णय अन्तिम हों।

६—स्थायी समिति के संगठन के सम्बन्ध में सदस्यों का चुनाव प्रान्तवार पहले की नियमावली में था, किन्तु इसको कार्य में लाने में कठिनाई प्रतीत हुई। अब फिर प्रान्तवार चुनाव की सुविधा दी जाय इसमें कार्यसमिति को कोई आपत्ति नहीं है।

७—प्रचार का कार्य एक स्वतन्त्र विभाग को दे दिया जाय इस सिद्धान्त से कार्यसमिति सहमत नहीं है। प्रचार समिति को हर प्रकार की सुविधा दी जावे और उसका समय ३ वर्ष का रहे। सुविधा देने के लिए संशोधन उपसमिति ब्यौरेवार नियमों पर विचार करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् नियमावली संशोधन उपसमिति की रिपोर्ट पढ़ी गई और नियम २ के ड अंश तक विचार हुआ।

इस समय रात के १०॥। बज चुके थे अतः बैठक तारीख़ ६-७-३८ प्रातःकाल ८॥ बजे के लिए स्थगित हुई। स्थगित अधिवेशन उक्त तारीख़ को ८॥ बजे से प्रारम्भ हुआ जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे :--

१ श्री जमनालाल बजाज
२ ,, पुरुषोत्तमदास टण्डन
३ ,, काका कालेलकर
४ ,, राजेन्द्रप्रसाद
५ ,, बाबूराम सक्सेना
६ ,, दयाशङ्कर दुबे
७ ,, श्रीनाथसिंह
८ ,, राधाकृष्ण तिवारी
९ ,, सत्यदेव शास्त्री
१० ,, व्योहार राजेन्द्रसिंह
११ ,, लालबहादुर शास्त्री
१२ ,, दादाधर्माधिकारी
१३ ,, रामनारायण मिश्र

कुछ नियमों पर विचार होने के उपरान्त सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रधान मंत्री और बाबू राजेन्द्रप्रसादजी विचार कर कार्य समिति में रिपोर्ट उपस्थित करें कि नियमों में से कौन से उप-नियमों में डाले जाएँ और कौन से नियम रहें।

इसके पश्चात् उद्देश २ (ड) से नियम १४ तक विचार हुआ।

तत्पश्चात् स्थायी समिति की बैठक भोजन के लिए स्थगित हुई और १२ बजे दिन से पुनः आरम्भ हुई। नीचे लिखे सदस्य उपस्थित थे:—

१ श्री जमनालाल बजाज
२ ,, पुरुषोत्तमदास टण्डन
३ ,, काका कालेलकर
४ ,, रामनारायण मिश्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ ,, दयाशंकर दुबे
६ ,, बाबूराम सक्सेना
७ ,, राधाकृष्ण तिवारी
८ ,, सत्यदेव शास्त्री
९ ,, लालबहादुर शास्त्री
१० ,, श्रीनाथसिंह
११ ,, श्रीमन्नारायण अग्रवाल

नियम १४ से फिर विचार आरम्भ हुआ और नियम २९ तक विचार हुआ।

इसके पश्चात निश्चय हुआ कि समिति की बैठक सायंकाल ८ बजे से पुनः की जाय।

समिति की स्थगित बैठक ६—७—३८ को सायंकाल ८ बजे से पुनः आरम्भ हुई। नीचे लिखे सदस्य उपस्थित थे।

१ श्री जमनालाल बजाज
२ ,, पुरुषोत्तमदास टण्डन
३ ,, काका कालेलकर
४ ,, राधाकृष्ण तिवारी
५ ,, लालबहादुर शास्त्री
६ ,, श्रीनाथ सिंह
७ ,, श्रीमन्नारायण अग्रवाल
८ ,, व्यौहार राजेन्द्र सिंह
९ ,, राजेन्द्र प्रसाद
१० ,, सत्यदेव शास्त्री
११ ,, बाबूराम सक्सेना
१२ ,, दादा धर्माधिकारी

(१०) नियम ३० से ६० तक तथा नियम ६९ पर विचार हुआ। शेष नियमों के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि कार्यसमिति उन पर विचार करके पूरी संशोधित नियमावली सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में स्वीकारार्थ उपस्थित करे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

की

स्थायी समिति द्वारा

संशोधित नियमावली

नाम

१—इस संस्था का नाम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन है।

उद्देश

२—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के निम्नलिखित उद्देश हैं—

(क) हिन्दी-साहित्य के सब अंगों की पुष्टि और उन्नति का प्रयत्न करना।

(ख) देशव्यापी व्यवहारों और कार्यों को सुलभ करने के लिए राष्ट्र-लिपि देवनागरी और राष्ट्र-भाषा* हिन्दी का प्रचार बढ़ाने का प्रयत्न करना।

(ग) नागरी लिपि को मुद्रण-सुलभ और लेखन-सुलभ बनाने की दृष्टि से उसे अधिक विकसित करने का प्रयत्न करना।

---

*इस विषय पर सम्मेलन के २४ वें अधिवेशन (इन्दौर) में जो निश्चय हुआ था उसकी प्रतिलिपि नीचे दी जाती है।

इस सम्मेलन को मालूम हुआ है कि राष्ट्र-भाषा के स्वरूप के सम्बंध में हिंदुस्तान के भिन्न-भिन्न प्रांतों में कुछ ग़लतफ़हमी फैली हुई है और लोग उसके लिए अलग-अलग राय रखते हैं। इसलिए यह सम्मेलन घोषित करता है कि राष्ट्रभाषा की दृष्टि से हिंदी का वह स्वरूप मान्य समझा जाय जो हिन्दू-मुसलमान आदि सब धर्मों के ग्रामीण और नागरिक व्यवहार करते हैं, जिसमें रूढ़ सर्व सुलभ अरबी, फ़ारसी, अँगरेज़ी या संस्कृत शब्दों या मुहाविरों का बहिष्कार न हो और जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जाती हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) हिन्दी भाषा को अधिक सुगम, मनोरम, व्यापक और समृद्ध बनाने के लिए समय समय पर उसके अभावों को पूरा करना और उसकी शैली और त्रुटियों के संशोधन का प्रयत्न करना।

(ङ) हिन्दीभाषी प्रान्तों में सरकारी प्रबन्ध, देशी राज्यों, पाठशालाओं, कालेजों, विश्वविद्यालयों, म्युनिस्पैलटियों और अन्य संस्थाओं, समाजों, जन-समूहों तथा व्यापार, ज़मींदारी और अदालत के कार्यों में देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा के प्रचार का उद्योग करते रहना।

(च) हिन्दी के ग्रन्थकारों, लेखकों, कवियों, पत्र-सम्पादकों, प्रचारकों और सहायकों को समय-समय पर उत्साहित करने के लिए पारितोषिक, प्रशंसा-पत्र, पदक, उपाधि आदि से सम्मानित करना।

(छ) सारे देश के युवकों में हिन्दी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिए प्रयत्न करना।

(ज) हिन्दी-भाषा द्वारा परमोच्च शिक्षा देने के लिए विद्यापीठ स्थापित करना।

(झ) हिन्दी भाषा द्वारा उच्च परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध करने के लिए एक हिन्दी विश्वविद्यालय स्थापित करना।

(ट) जहाँ आवश्यकता समझी जाय वहाँ पाठशाला, समिति तथा पुस्तकालय स्थापित करने और कराने का उद्योग करना तथा इस प्रकार की वर्तमान संस्थाओं की सहायता करना।

(ठ) हिन्दी-साहित्य की वृद्धि के लिए उपयोगी पुस्तकें लिखवाना और प्रकाशित करना।

(ड) हिन्दी की हस्तलिखित और प्राचीन सामग्री तथा हिन्दी भाषा और साहित्य के निर्माताओं के स्मृतिचिह्नों की खोज करना, और इनके तथा प्रकाशित पुस्तकों के संग्रह और रक्षा के निमित्त सम्मेलन की ओर से एक वृहत् संग्रहालय की व्यवस्था करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ढ) हिन्दी भाषा और साहित्य सम्बन्धी अनुसन्धान का प्रबन्ध करना।

(ण) उपर्युक्त उद्देशों की सिद्धि और सफलता के जो अन्य उपाय आवश्यक और उपयुक्त समझे जायँ उन्हें काम में लाना।

३—हिन्दी साहित्य और देवनागरी लिपि की उन्नति और प्रचार से सम्बन्ध रखने वाले विषयों के अतिरिक्त सम्मेलन में राजनीतिक, सामाजिक अथवा मतमतान्तर सम्बन्धी विवादास्पद विषयों पर विचार न किया जायगा।

सदस्य

४—सम्मेलन के सदस्य चार प्रकार के होंगे :—

(क) सम्मानित सदस्य (ख) स्थायी सदस्य (ग) विशेष सदस्य तथा (घ) साधारण सदस्य।

जिस हिन्दी-प्रेमी ने सम्मेलन को सहायतार्थ या किसी विशेष काम के लिए १०००) या इससे अधिक दिया हो वह वार्षिक अधिवेशन द्वारा सम्मानित सदस्य चुना जा सकेगा। ऐसे सदस्यों को वे कुल अधिकार प्राप्त होंगे जो स्थायी सदस्यों को हैं; किन्तु जिस सम्मानित सदस्य ने ५०००) या इससे अधिक की सहायता दी हो वह आजीवन स्थायी समिति का सदस्य होगा।

स्थायी सदस्यों से एक साथ २५०) और विशेष सदस्यों से १२) वार्षिक शुल्क लिया जायगा। साधारण सदस्यों से १) वार्षिक शुल्क लिया जायगा। सम्मानित और स्थायी सदस्यों को सम्मेलन के प्रकाशित ग्रन्थ बिना मूल्य भेंट किए जायँगे तथा विशेष सदस्यों को उस वर्ष की प्रकाशित पुस्तकें दी जायँगी जिस वर्ष का उनका शुल्क प्राप्त होगा।

५—कोई भी हिन्दी-साहित्य-सेवी या हिन्दी का प्रेमी उस समय सदस्य हो सकेगा जब उसकी लिखी हुई इच्छा के आधार पर कार्य समिति के किसी अधिवेशन में किसी सदस्य द्वारा उसके निर्वाचन के लिए प्रस्ताव होगा और उसके अनुमोदन तथा समर्थन में उपस्थित सदस्यों का बहुमत होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६—जो साधारण सदस्य अपने किसी वर्ष का शुल्क वर्ष के आरम्भ होने से छः मास के भीतर नहीं भेज देंगे उनको, जब तक वह शुल्क न भेज देवें, सदस्य के अधिकार प्राप्त न होंगे।

७—यदि कोई विशेष सदस्य या साधारण सदस्य सम्मेलन के उद्देशों वा नियमों के विरुद्ध आचरण करे अथवा दो वर्ष का शुल्क उसके ऊपर शेष रहे और रजिस्ट्री पत्र द्वारा सूचना देने पर भी शुल्क न आवे तो स्थायी समिति को अधिकार होगा कि मन्तव्य द्वारा उनका नाम सूची से निकाल देवे।

८—स्थायी समिति को अधिकार होगा कि किसी हिन्दी सेवी सज्जन को बिना शुल्क लिए ही सम्मानित, स्थायी, विशेष अथवा साधारण सदस्य बना ले। ऐसे सदस्यों के अधिकार अन्य सदस्यों के समान ही होंगे, परन्तु उनकी संख्या शुल्क देने वाले सदस्यों के दसवें अंश से अधिक न होगी।

सम्मेलन का मुख्य स्थान

९—सम्मेलन का प्रधान कार्यालय प्रयाग में होगा।

सम्मेलन के पदाधिकारी

१०—सम्मेलन के कार्य करने के लिए नीचे लिखे अनुसार पदाधिकारी होंगे :—

सभापति।

छः उपसभापति।

प्रधान मंत्री, प्रबन्धमंत्री, प्रचारमंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचारमंत्री, परीक्षामंत्री, साहित्यमंत्री, संग्रहमंत्री, अर्थमंत्री तथा आय-व्यय परीक्षक।

नोट—वार्षिक अधिवेशन के साथ होने वाली चारों परिषदों के सभापति अपने पद के कारण उपसभापति माने जायँगे। उनमें से यदि कोई भी प्रयाग का रहने वाला न हो तो बाक़ी दो उपसभापतियों में से एक प्रयाग का अवश्य होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थायी समिति

११—सम्मेलन के अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्तावों और उद्देशों के अनुसार अगले सम्मेलन तक बराबर कार्य करने के लिए सम्मेलन के प्रतिनिधि रूप एक समिति होगी जो सम्मेलन की स्थायी समिति कहलाएगी।

१२ - स्थायी समिति का सङ्गठन प्रतिवर्ष निम्न प्रकार होगा:—

(क) पिछले सब अधिवेशनों के सभापति एवं प्रधान मन्त्री।

(ख) सम्मेलन परीक्षोत्तीर्ण रजिस्टर्ड उपाधिधारियों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के दशमांश होंगे किन्तु १० से अधिक न होंगे।

(ग) सम्मेलन को ५०००) से अधिक देने वाले सब सम्मानित सदस्य तथा अन्य सम्मानित सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के पंचमांश होंगे।

(घ) स्थायी सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के पञ्चमांश होंगे किन्तु १० से अधिक न होंगे।

(ङ) विशेष सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के पंचमांश होंगे किन्तु १० से अधिक न होंगे।

(च) साधारण सदस्यों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जो उनकी संख्या के दशमांश होंगे किन्तु पाँच से अधिक न होंगे।

(छ) उन प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनों के निर्वाचित तीन तीन प्रतिनिधि जो नियम ६१ (क) के अनुसार सम्मेलन से सम्बद्ध हों।

(ज) सम्बद्धसंस्थाओं द्वारा उपनियमों के अनुसार निर्वाचित प्रतिनिधि। सभा के १ से १०० सदस्यों पर १ प्रतिनिधि, १०१ से २०० तक २ प्रतिनिधि, २०१ से ३०० तक ३ प्रतिनिधि, ३०१ से ४०० तक ४ प्रतिनिधि, और ४०१ से ५०० तक ५ प्रतिनिधि, तथा ५०० के ऊपर प्रत्येक ३०० सदस्यों के लिए एक प्रतिनिधि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट—इन संस्थाओं के उन्हीं सदस्यों की गणना की जायगी जो कम से कम ।) प्रतिवर्ष उस सभा को देते हों। सम्मेलन की सम्बद्ध संस्था से जो अन्य संस्था सम्बद्ध होगी वह निर्वाचन के लिए उस संस्था के एक सदस्य के समान समझी जायगी।

(झ) स्वागत समिति के पाँच प्रतिनिधि जो वार्षिक अधिवेशन के लिए नई स्वागत कारिणी समिति बनते ही उसके द्वारा नियत किए जायँगे और वे उस समय से स्थायी समिति के सदस्य तब तक रहेंगे जब तक दूसरे अधिवेशन की स्वागत कारिणी द्वारा प्रतिनिधि नियत न किए जाएँ।

(ञ) हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद की परीक्षाओं के परीक्षकों द्वारा निर्वाचित उनकी संख्या के दशमांश प्रतिनिधि किन्तु ऐसे प्रतिनिधियों की संख्या २० से अधिक न होगी।

(ट) हिन्दी विश्वविद्यालय के केन्द्र व्यवस्थापकों द्वारा निर्वाचित उनकी संख्या के दशमांश प्रतिनिधि किन्तु ऐसे प्रतिनिधियों की संख्या २० से अधिक न होगी।

(ठ) उपर्युक्त सदस्यों के अतिरिक्त तीस सदस्य सम्मेलन अधिवेशन में निर्वाचित किए जायँगे। इनमें से दस से अधिक किसी एक प्रान्त के नहीं हो सकेंगे।

१३ — (अ) स्थायी समिति के प्रत्येक सदस्य से २) वार्षिक शुल्क लिया जायगा। बिना इस शुल्क के दिए हुए किसी सदस्य को स्थायी समिति की सदस्यता के कोई अधिकार प्राप्त न होंगे। प्रत्येक सदस्य को सम्मेलन के अधिवेशन के कार्य विवरण एवं सम्मेलन की मुख-पत्रिका निःशुल्क पाने का अधिकार होगा। यदि सूचना देने पर भी सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन से ३ मास के भीतर किसी सदस्य का वार्षिक शुल्क न आए तो उनका स्थान रिक्त समझा जायगा और स्थायी समिति को अधिकार होगा कि उस स्थान की पूर्ति कर ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सज्जन भूतपूर्व सभापति तथा सम्मानित सदस्य होने के कारण स्थायी समिति के सदस्य माने गए हैं तथा जो सज्जन स्थायी सदस्यों के प्रतिनिधि नियत हुए हैं उनसे यह शुल्क लेना आवश्यक न होगा।

१४—सम्मेलन की परीक्षाओं में उत्तीर्ण उपाधिधारियों का एक रजिस्टर रक्खा जायगा। प्रत्येक उपाधिधारी ।।) वार्षिक, अथवा ५) एक मुश्त जीवन भर के लिए, देकर इस रजिस्टर में अपना नाम लिखा सकेगा।

१५—निर्वाचन के नियम इस प्रकार होंगे :—

(क) प्रत्येक वर्ष सौर आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर) महीने में सम्मेलन कार्यालय नियम १२ ख, ग, घ, ङ, च, ञ और ट के अनुसार प्रत्येक रजिस्टर्ड निर्वाचक के पास, उसके मण्डल के उन निर्वाचकों की जो जीवन भर के लिए शुल्क दे चुके हैं या जिन्होंने उस वर्ष का शुल्क सौर भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर) मास के अन्त तक में दे दिया हो, पूरी सूची भेज कर सम्मति माँगेगा कि वह किस को अपना प्रतिनिधि बनाते हैं।

(ख) इसी प्रकार सम्मेलन कार्यालय प्रत्येक वर्ष सौर आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर) मास में नियम १२ छ, ज और झ के अनुसार तदुक्त संस्थाओं से अपना निर्वाचित प्रतिनिधि भेजने का अनुरोध करेगा।

नोट—तीनों प्रकार के प्रतिनिधियों का नाम कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर) मास के अन्त तक सम्मेलन कार्यालय में पहुँच जाना आवश्यक होगा।

१६—प्रत्येक सम्मेलन के सभापति आगामी सम्मेलन के समय तक इस समिति के सभापति रहेंगे। उनकी अनुपस्थिति में उपसभापति उनका काम करेंगे। उपसभापति भी न हों तो समिति को अधिकार होगा कि उपस्थित सदस्यों में से किसी को सभापति निर्वाचित कर ले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७—सभापति और राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री को छोड़ कर सब पदाधिकारियों का चुनाव स्थायी समिति के प्रथम अधिवेशन में होगा। समस्त पदाधिकारी अपने पद के कारण स्थायी समिति के सदस्य होंगे। स्थायी समिति का प्रथम अधिवेशन सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन के साथ उसके उपरान्त ही होगा और इसके लिए नियम (२१) के अनुसार सूचना देना आवश्यक न होगा। केवल अधिवेशन का समय सम्मेलन के अवसर पर घोषित कर दिया जायगा।

१८—यदि समिति के किसी पदाधिकारी अथवा सदस्य का स्थान रिक्त हो जाय तो स्थायी समिति को अधिकार होगा कि उसके स्थान पर दूसरी नियुक्ति कर ले। यदि वह सदस्य नियम १२ के अनुसार किसी निर्वाचक मंडल से निर्वाचित हुआ हो तो समिति प्रायः उसी मण्डल से नई नियुक्ति करेगी और यदि वह सदस्य नियम १२ छ, ज अथवा झ के अनुसार निर्वाचित हुआ हो तो उस संस्था से परामर्श कर समिति उक्त स्थान की पूर्ति करेगी।

१९—इस समिति के अधिवेशनों के करने का अधिकार साधारण रीति से सभापति अथवा प्रधान मन्त्री को होगा और समिति का अधिवेशन साधारणतः सम्मेलन के मुख्यस्थान में होगा। आवश्यकता पड़ने पर समिति के बारह सदस्यों को अधिकार होगा कि प्रधान मन्त्री को लिखें कि किसी विशेष समय पर समिति का अधिवेशन करें। ऐसा लेख आने पर प्रधान मन्त्री को उस समय समिति का अधिवेशन करना आवश्यक होगा।

२०—किसी प्रान्त के सात सदस्यों की प्रार्थना पर प्रधान मन्त्री का कर्त्तव्य होगा कि वहाँ वे उस प्रान्त के प्रान्तीय सम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर स्थायी समिति के अधिवेशन का प्रबन्ध करें।

२१—यह आवश्यक होगा कि स्थायी समिति के सब अधिवेशनों की सूचना कार्यक्रम के सहित कम से कम १५ दिन पहले समिति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदस्यों को भेज दी जाय और कम से कम चार हिन्दी समाचार पत्रों में छपने के लिए भेज दी जाय।

यदि कोई ऐसा विषम प्रश्न उठे जिसका तुरन्त निर्णय करना अनिवार्य हो और नियमानुसार सूचना देने का समय न हो तो प्रधान मन्त्री को अधिकार होगा कि स्थायी समिति के केवल स्थानीय सदस्यों को सूचना देकर उस प्रश्न के विचार के लिए एक विशेष बैठक कर लें और उस निर्णय की सूचना कम से कम चार समाचार पत्रों में प्रकाशित करने को भेज दें और अगली स्थायी समिति में उसे सूचनार्थ उपस्थित कर दें।

२२--स्थायी समिति के किसी अधिवेशन का काम मंत्रियों के अतिरिक्त कम से कम ५ सदस्यों की उपस्थिति बिना न होगा। प्रयाग के बाहर रहने वाले सदस्यों को अधिकार होगा कि विचारणीय विषयों पर अपनी लिखित सम्मति भेज दें, जिस पर विचार किया जायगा किन्तु सम्मति में उसकी गणना न की जायगी।

नोट--स्थायी समिति द्वारा सङ्गठित समितियों के सदस्यों को भी इसी तरह विचारणीय विषयों पर अपनी लिखित सम्मति भेजने का अधिकार होगा, जिस पर विचार किया जायगा किन्तु गणना न की जायगी।

२३- प्रधान मन्त्री कार्य समिति की स्वीकृति के पश्चात् आगामी वर्ष के आय-व्यय का अनुमान पत्र माघ(जनवरी-फ़रवरी) मास में स्थायी समिति के सामने स्वीकारार्थ उपस्थित करेंगे।

स्थायी समिति के कर्तव्य

२४--स्थायी समिति का कर्तव्य होगा कि वर्ष भर का (१) कार्य विवरण (२) आय-व्यय का हिसाब (जो नियुक्त परीक्षक से परीक्षित हो) और (३) स्थायी समिति द्वारा स्वीकृत आगामी वर्ष के आय-व्यय का अनुमान-पत्र सूचनार्थ सम्मेलन के अधिवेशन में प्रधान मंत्री द्वारा उपस्थित करे।

२५—स्वीकृत अनुमानपत्र में यदि किसी विशेष आय या व्यय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समावेश करने की आवश्यकता हो तो स्थायी समिति को आवश्यक परिवर्तन करने का अधिकार होगा।

पदाधिकारियों के अधिकार और कर्त्तव्य

२६—पदाधिकारियों के अधिकार और कर्त्तव्य नीचे लिखे अनुसार होंगे--

सभापति

(क) सम्मेल के अधिवेशन तथा स्थायी समिति और उन समितियों की अध्यक्षता जिनमें वह सदस्य हों।

(ख) अधिवेशनों में मताधिक्य तथा नियम के अनुसार निर्णय करना।

(ग) सम्मेलन के कार्यों का निरीक्षण करना।

(घ) आवश्यकता होने पर स्थायी समिति के अधिवेशन करने की आज्ञा देना तथा अन्य कोई आकस्मिक महत्व के कार्य आ पड़ें तो उनके विषय में आज्ञा देना।

उपसभापति

(क) कार्यालय के कार्यों का निरीक्षण।

(ख) सभापति की अनुपस्थिति में (१) उनके कर्त्तव्यों का पालन तथा (२) उन समितियों की अध्यक्षता जिनका उपसभापति सदस्य हो।

नोट—यदि किसी समिति में एक या अधिक उप सभापति सदस्य हों तो सभापति की अनुपस्थिति में उन में से कोई एक अध्यक्ष चुन लिया जायगा।

प्रधान मंत्री

(क) सम्मेलन के उद्देशों की पूर्ति और उनके प्रतिरोधक कारणों के निवारण का उचित प्रबन्ध करना।

(ख) कार्यालय के कार्यों का निरीक्षण।

(ग) सहायक मंत्री के अतिरिक्त वैतनिक कर्मचारियों को नियुक्त करना, अलग करना और छुट्टी देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नोट—जिस विभाग के ये कर्मचारी हों उस विभाग के मंत्री की भी सलाह इसमें होनी चाहिए। यदि प्रधान मंत्री और विभागीय मंत्री के मतों में अन्तर हो तो उसका निर्णय कार्य समिति करेगी।

(घ) आवश्यक होने पर मन्त्रियों की अधिकांश सम्मति के अनुसार वैतनिक सहायक मन्त्री को पदच्युत करना तथा नया सहायक मन्त्री नियुक्त करना, किन्तु यह पदच्युति और नियुक्ति स्थायी समिति के विचाराधीन होगी।

(च) मन्त्रियों में यथायोग्य कार्यालय के कार्यदायित्व का वितरण।

(छ) आगामी वर्ष के लिए अनुमान पत्र माघ (जनवरी-फ़रवरी) मास में स्थायी समिति में उपस्थित करना।

(ज) स्थायी समिति का कार्यविवरण प्रत्येक प्रान्त के कम से कम एक समाचारपत्र में छपने के लिए भेजना।

(झ) सम्बद्ध सभाओं की उन्नति का ध्यान रखते हुए उनके कार्य का निरीक्षण करना और उन्हें उत्साहित करना।

(ञ) सभापति का चुनाव करने के लिए अधिकारप्राप्त सज्जनों और संस्थाओं की सूची तैयार करवाना तथा वार्षिक अधिवेशन के चार मास पूर्व निर्वाचकों के पास उनके निर्वाचक होने की सूचना भेजना तथा समाचार पत्रों में यह घोषित करना कि प्रत्येक मण्डल की निर्वाचक सूची तैयार हो गई है।

प्रबन्धमन्त्री

(क) कार्यालय के काम का यथोचित प्रबन्ध, कर्मचारियों के कार्य का वितरण और उसका निरीक्षण।

(ख) प्रबन्ध सम्बन्धी काग़ज़-पत्र, बही आदि का रखना।

(ग) कार्यालय सम्बन्धी सब निष्पन्न पत्रावली, बही आदि का रखना और समयानुसार उपस्थित करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(घ) प्रधान मन्त्री या अन्य किसी मन्त्री की अनुपस्थिति में उनके सभी कर्तव्यों का पालन।

(च) सौर पौष (दिसम्बर-जनवरी) मास में अपने विभाग का आगामी वर्ष के लिए अनुमान पत्र अर्थ मन्त्री को देना।

(छ) वर्षान्त से एक मास के भीतर सम्मेलन का वार्षिक विवरण तैयार कर प्रधान मन्त्री को देना।

अर्थमन्त्री

(क) आय व्यय का पूरा हिसाब रखना और स्थायी समिति के अधिवेशन में ठीक समय पर उपस्थित करना।

(ख) आय-व्यय का पूरा प्रबन्ध करना, उसके बढ़ाने के लिए उपाय करते रहना और रुपए की वसूली की व्यवस्था उचित रीति पर करते रहना।

(ग) अपने विभाग तथा अन्य विभागों का अनुमान-पत्र प्रधान मन्त्री की सम्मति से तैयार करके प्रधान मन्त्री को कार्य समिति में उपस्थित करने के निमित्त माघ (जनवरी-फ़रवरी) मास के आरम्भ में देना।

(घ) वर्षान्त से १५ दिन के भीतर अपने विभाग का वार्षिक विवरण प्रधान मन्त्री को देना।

(च) कार्य समिति के सम्मुख गत मास के आय-व्यय का ब्योरा उपस्थित करना।

(छ) नए प्रकार के व्यय के लिए कार्यसमिति की आज्ञा प्राप्त करना।

(ज) सम्मेलन के वार्षिक हिसाब की जाँच करवा कर सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन से एक मास पूर्व प्रधान मन्त्री को देना।

परीक्षामन्त्री

(क)—परीक्षाओं का प्रबन्ध करना तथा धारा २ में गिनाए हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्देश (ज) और (झ) की पूर्ति के लिए उपाय तथा उचित व्यवस्था करते रहना।

(ख)—हिन्दीविश्वविद्यालय परिषद् एवं परीक्षासमिति के अधिवेशनों के कार्य का विवरण रखना।

(ग) सम्मेलन में सभापति से उपाधि आदि का वितरण कराना।

(घ) यथासमय परीक्षासम्बन्धी सूचनाएँ प्रकाशित करते रहना।

(च) विवरण पत्रिका का सम्पादन करना।

(छ)सौर पौष (दिसम्बर-जनवरी) महीने में अपने विभाग का अगले वर्ष के आय व्यय का अनुमान पत्र परीक्षा समिति में उपस्थित करना ; स्वीकार होने पर उसे हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् में उपस्थित करना। तत्पश्चात् अनुमान-पत्र अर्थमन्त्री के पास पौष के अन्त तक भेज देना।

(ज) वर्षान्त से १५ दिन के भीतर अपने विभाग का वार्षिक विवरण प्रधान मन्त्री को देना।

(झ) परीक्षासमिति के साधारण अधिवेशन में पिछले महीनों के आय-व्यय का व्यौरा उपस्थित करना।

प्रचारमन्त्री

(क) देश के उन भागों में जो राष्ट्रभाषा-प्रचार-मन्त्री के क्षेत्र के बाहर हैं धारा २ में गिनाए हुए (ग), (ङ), (छ) और (ट) उद्देशों की पूर्ति के लिए उपाय तथा उचित व्यवस्था करते रहना।

(ख) प्रचारसमिति के अधिवेशनों के कार्य का विवरण रखना तथा उचित व्यवस्था करते रहना।

(ग) उपर्युक्त क्षेत्र में प्रचार के कार्य की व्यवस्था और उसका निरीक्षण।

(घ) सम्बद्ध सभाओं की उन्नति का ध्यान रखते हुए उनके कार्य का निरीक्षण करना और उन्हें उत्साहित करना।

(ङ) वर्षान्त से १५ दिनके भीतर प्रधान मन्त्री को अपने विभाग का वार्षिक विवरण देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री

(क) धारा २ में गिनाए हुए (ख), (छ) और (ट) उद्देशों की पूर्ति के लिए उपाय तथा उचित व्यवस्था करते रहना।

(ख) राष्ट्रभाषा-प्रचारसमिति के अधिवेशनों के कार्य का विवरण रखना।

साहित्यमन्त्री

(क) धारा २ में (क), (ग), (घ), (च), (ठ) और (ढ) की पूर्ति के लिए उपाय तथा उचित व्यवस्था करते रहना।

(ख) पुस्तकों के प्रणयन और प्रकाशन का समस्त प्रबन्ध करना।

(ग) बिक्री की पुस्तकों का हिसाब देखना और बिक्री का प्रबन्ध करना।

(घ) साहित्य समिति के अधिवेशनों के कार्य का विवरण रखना।

(ङ) सौर पौष (दिसम्बर-जनवरी) मास में अपने विभाग का आगामी वर्ष के लिए अनुमान-पत्र अर्थ मन्त्री को देना।

(च) वर्षान्त से १५ दिन के भीतर अपने विभाग का वार्षिक विवरण प्रधान मन्त्री को देना।

संग्रहमन्त्री

(क) धारा २ के उद्देश (ङ) की पूर्ति करना।

(ख) संग्रहालय का प्रबन्ध करना।

(ग) संग्रहसमिति के अधिवेशनों के कार्य का विवरण लिखना।

(घ) संग्रहालय में मुद्रित तथा अमुद्रित पुस्तकों, शिलालेख, ताम्र-पत्र, मुद्रा आदि का सङ्कलन कर यथास्थान स्थापित करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ङ) अवैतनिक तथा वैतनिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा खोज तथा सङ्कलन का कार्य कराते रहना।

(च) वाचनालय की व्यवस्था करना।

(छ) प्राप्त पुस्तकों तथा अन्य पुस्तकों की और महत्वपूर्ण साहित्य की विज्ञप्ति सर्वसाधारण में करते रहना।

(ज) सौर पौष (दिसम्बर-जनवरी) मास में अपने विभाग का तैयार कर अर्थ मन्त्री को देना।

(झ) वर्षान्त से १५ दिन के भीतर संग्रहालय का वार्षिक विवरण अनुमान-पत्र प्रधान मंत्री को देना।

आय-व्यय परीक्षक

(क) सम्मेलन सम्बन्धी कार्यों के आय व्यय का हिसाब रखने की प्रणाली निर्धारित करने में मन्त्रियों को सहायता देना।

(ख) सम्मेलन सम्बन्धी आय व्यय का कुल हिसाब समय समय पर जांचते रहना।

(ग) वर्ष की समाप्ति के बाद पिछले वर्ष का सब हिसाब जाँच कर अपनी जाँच का विवरण प्रधान मन्त्री को देना।

उपसमितियाँ

२७—स्थायी समिति अपने प्रथम अधिवेशन में नीचे लिखी समितियों का सङ्गठन करेगी --कार्यसमिति, हिन्दी विश्वविद्यालय-परिषद, साहित्यसमिति, संग्रहसमिति, प्रचारसमिति, राष्ट्रभाषा-प्रचारसमिति।

इसके अतिरिक्त स्थायी समिति को अधिकार होगा कि किसी विशेष अभिप्राय से विशेष समिति का सङ्गठन करे।

सम्मेलन को यह अधिकार होगा कि इन उपसमितियों में से किसी को विशेष समय तक काम करने के लिए नियुक्त करे; किन्तु वह समय तीन वर्ष से अधिक न होगा।

२८—स्थायीसमिति द्वारा सङ्गठित समितियों को अधिकार होगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य की सुविधा के लिए अपना कोई कार्य किसी विशेष उप-समिति या उपसमितियों को सौंप दें।

(१) कार्यसमिति

२९—सम्मेलन के कार्य के सञ्चालन को सुगम बनाने के लिए २१ सदस्यों तक की एक कार्य समिति होगी जिसका सङ्गठन निम्नप्रकार होगा:—

(क) सभापति, प्रधान मन्त्री, अर्थमन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, परीक्षामन्त्री, साहित्यमन्त्री, प्रचारमन्त्री, राष्ट्रभाषा-प्रचार-मंत्री और संग्रहमन्त्री अपने पद के कारण सदस्य होंगे।

(ख) उपसभापतियों में से एक।

(ग) ११ तक निर्वाचित सदस्य।

३०— इस समिति का कोरम ५ होगा, जिसमें मन्त्रियों के अतिरिक्त कम से कम ३ सदस्य अवश्य होने चाहिए।

३१—इस समिति का अधिवेशन साधारणतः प्रत्येक सौर महीने के प्रथम रविवार को हुआ करेगा। विशेष अवस्था में प्रधान मन्त्री अधिवेशन को दूसरे दिन भी कर सकते हैं।

३२—स्थायीसमिति द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणत करना इस समिति का कर्त्तव्य होगा।

३३—कार्य समिति की अनुमति के बिना अर्थमन्त्री नियमित व्यय के अतिरिक्त विशेष व्यय नहीं कर सकेंगे।

(२) हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद

३४—सम्मेल के नियम २ के अन्तर्गत ज और झ के मन्तव्यों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद होगी, जिसका सङ्गठन निम्नप्रकार होगा —

(क) सम्मेलन के सभापति, सभी उपसभापति, प्रधान मन्त्री, परीक्षामन्त्री, साहित्यमन्त्री, प्रचारमन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, संग्रहमन्त्री, राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री एवं अर्थमन्त्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) स्थायी समिति द्वारा निर्वाचित २० सदस्य, जिनमें कम से १० स्थायी समिति के सदस्य होंगे।

(ग) सम्मेलन के रजिस्टर्ड उपाधिधारियों द्वारा निर्वाचित सदस्य जो सैकड़ा पीछे ५ होंगे।

(घ) ऐसी राष्ट्रीय शिक्षासंस्थाओं का एक एक प्रतिनिधि जिनको इस काम के लिए कार्य समिति की सिफारिश पर स्थायी समिति स्वीकार करे।

(च) केन्द्र व्यवस्थापकों द्वारा निर्वाचित १० प्रतिनिधि।

(छ) परीक्षकों द्वारा निर्वाचित १० प्रतिनिधि।

(ज) इनके अतिरिक्त इस प्रकार सङ्गठित परिषद को ५ तक विशेषज्ञ सदस्य सम्मिलित करने का अधिकार होगा।

३५—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद का कोरम ११ होगा।

३६—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद अपने प्रथम अधिवेशन में १५ सदस्यों की एक परीक्षा समिति का सङ्गठन निम्नप्रकार करेगी—

(१) सम्मेलन के सभापति, प्रधान मन्त्री, राष्ट्रभाषा-प्रचार-मन्त्री एवं परीक्षामन्त्री अपने पद के कारण सदस्य होंगे।

(२) हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद द्वारा निर्वाचित ११ प्रतिनिधि।

३७—परीक्षा समिति का कोरम ५ होगा।

३८—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद के निम्नलिखित अधिकार होंगे :—

(क) परीक्षासमिति का सङ्गठन करना और उसके सम्बन्ध में उपनियम बनाना।

(ख) परीक्षाओं और उपाधियों का प्रतिष्ठापन करना तथा तत्सम्बन्धी नियम बनाना।

(घ) भिन्न भिन्न विद्यालयों को सम्बद्ध करना।

(च) परीक्षा के भिन्न-भिन्न विषयों का विभाग करके प्रत्येक वर्ग के लिए साधारणतः ५ सदस्य नियुक्त करना। विशेष अवस्था में किसी वर्ग में ५ से अधिक ११ तक सदस्य नियुक्त हो सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ) परीक्षासमिति के कार्यों का निरीक्षण करना।

३९—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् का अधिवेशन साधारणतः वर्ष में दो बार होगा। किन्तु परीक्षा मन्त्री को आवश्यकता पड़ने अथवा परीक्षा समिति के ५ सदस्य अथवा हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् के ११ सदस्यों के अनुरोध पर हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् का विशेष अधिवेशन करना आवश्यक होगा।

४०—परीक्षासमिति के निम्नलिखित अधिकार होंगे :—

(क) परीक्षाओं का समय, परीक्षकों की नियुक्ति, परीक्षाओं के फल का विवरण और परीक्षा सम्बन्धी अन्य विषयों का प्रबन्ध स्वयं करना अथवा अपनी अधिकृत उपसमिति द्वारा करवाना।

(ख) हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् द्वारा स्वीकृत प्रस्तावों और मन्तव्यों को कार्य रूप में परिणत करना।

(ग) हिन्दी-विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के लिए केन्द्र स्थापित करना अथवा तोड़ना।

४१—परीक्षासमिति का अधिवेशन साधारणतः प्रति दूसरे सौर महीने में प्रथम रविवार को हुआ करेगा। आवश्यकता होने पर परीक्षा मन्त्री विशेष अधिवेशन भी कर सकेंगे।

४२—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् का मुख्य स्थान प्रयाग होगा।

४३—सभी देश, जाति और अवस्थाओं के परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

४४—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् की सब परीक्षाओं में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहार होगा।

४५—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् को अधिकार होगा कि परीक्षाओं के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो उपर्युक्त नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) साहित्यसमिति

४६—सम्मेलन के उद्देश २—(क), (घ), (च), (ठ) और (ढ) की पूर्ति के लिए १५ सदस्यों की एक साहित्यसमिति होगी।

४७—सम्मेलन के सभापति, परिषदों के सभापति, प्रधान मन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, परीक्षामन्त्री, संग्रहमन्त्री और साहित्यमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे और शेष पाँच स्थायी समिति द्वारा चुने जायँगे।

४८—सम्मेलन की ओर से एक मुख पत्रिका निकालने का आयोजन करना इस समिति का एक कर्त्तव्य होगा। इस काम में यह समिति परीक्षासमिति की सम्मति और सहायता लेगी।

४९—साहित्यसमिति की स्वीकृति के विना सम्मेलन द्वारा कोई पुस्तक प्रकाशित न की जा सकेगी।

५०—साहित्यसमिति का कार्य ५ सदस्यों की उपस्थिति होने पर ही हो सकेगा।

५१—साहित्यसमिति को अधिकार होगा कि साहित्यसमिति के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो उपर्युक्त नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

(५) प्रचारसमिति

५२—सम्मेलन के नियम २ के अन्तर्गत उद्देश ग, ङ, छ और ट की पूर्ति के लिए २१ सदस्यों की एक प्रचारसमिति होगी।

(क) सम्मेलन के सभापति, प्रधान मन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, साहित्यमन्त्री, संग्रहमन्त्री, राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री तथा प्रचारमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे।

(ख) इस समिति का कोरम ५ होगा।

(ग) हिन्दीभाषी प्रान्तों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(छ) परीक्षासमिति के कार्यों का निरीक्षण करना।

३९—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद का अधिवेशन साधारणतः वर्ष में दो बार होगा। किन्तु परीक्षा मन्त्री को आवश्यकता पड़ने अथवा परीक्षा समिति के ५ सदस्य अथवा हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद के ११ सदस्यों के अनुरोध पर हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद का विशेष अधिवेशन करना आवश्यक होगा।

४०—परीक्षासमिति के निम्नलिखित अधिकार होंगे :—

(क) परीक्षाओं का समय, परीक्षकों की नियुक्ति, परीक्षाओं के फल का विवरण और परीक्षा सम्बन्धी अन्य विषयों का प्रबन्ध स्वयं करना अथवा अपनी अधिकृत उपसमिति द्वारा करवाना।

(ख) हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् द्वारा स्वीकृत प्रस्ताओं और मन्तव्यों को कार्य रूप में परिणत करना।

(ग) हिन्दी-विश्वविद्यालय की परीक्षाओं के लिए केन्द्र स्थापित करना अथवा तोड़ना।

४१—परीक्षासमिति का अधिवेशन साधारणतः प्रति दूसरे सौर महीने में प्रथम रविवार को हुआ करेगा। आवश्यकता होने पर परीक्षा मन्त्री विशेष अधिवेशन भी कर सकेंगे।

४२—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् का मुख्य स्थान प्रयाग होगा।

४३—सभी देश, जाति और अवस्थाओं के परीक्षार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हो सकेंगे।

४४—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् की सब परीक्षाओं में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का व्यवहार होगा।

४५—हिन्दी-विश्वविद्यालय परिषद् को अधिकार होगा कि परीक्षाओं के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो उपर्युक्त नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) साहित्यसमिति

४६—सम्मेलन के उद्देश २—(क), (घ), (च), (ठ) और (ढ) की पूर्ति के लिए १५ सदस्यों की एक साहित्यसमिति होगी।

४७—सम्मेलन के सभापति, परिषदों के सभापति, प्रधान मन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, परीक्षामन्त्री, संग्रहमन्त्री और साहित्यमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे और शेष पाँच स्थायी समिति द्वारा चुने जायँगे।

४८—सम्मेलन की ओर से एक मुख पत्रिका निकालने का आयोजन करना इस समिति का एक कर्त्तव्य होगा। इस काम में यह समिति परीक्षासमिति की सम्मति और सहायता लेगी।

४९—साहित्यसमिति की स्वीकृति के बिना सम्मेलन द्वारा कोई पुस्तक प्रकाशित न की जा सकेगी।

५०—साहित्यसमिति का कार्य ५ सदस्यों की उपस्थिति होने पर ही हो सकेगा।

५१—साहित्यसमिति को अधिकार होगा कि साहित्यसमिति के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो उपर्युक्त नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

(५) प्रचारसमिति

५२—सम्मेलन के नियम २ के अन्तर्गत उद्देश ग, ङ, छ और ट की पूर्ति के लिए २१ सदस्यों की एक प्रचारसमिति होगी।

(क) सम्मेलन के सभापति, प्रधान मन्त्री, प्रबन्धमन्त्री, साहित्यमन्त्री, संग्रहमन्त्री, राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री तथा प्रचारमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे।

(ख) इस समिति का कोरम ५ होगा।

(ग) हिन्दीभाषी प्रान्तों में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उन्नति के लिए उचित साधनों का अवलम्बन कर प्रचार करना इस समिति का कर्त्तव्य होगा।

५३—इस समिति का अधिवेशन वर्ष में साधारणतः ४ बार होगा, किन्तु आवश्यकता पड़ने पर अथवा ७ सदस्यों के आवेदन-पत्र पर प्रचारमन्त्री के लिए यह आवश्यक होगा कि अधिक बार समिति का अधिवेशन करें।

(६) राष्ट्रभाषा-प्रचारसमिति

५४—सम्मेलन के नियम २ के अन्तर्गत उद्देश (ख), (छ), और (ट) की पूर्ति के लिए २१ सदस्यों की एक राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति होगी। सम्मेलन के सभापति, प्रधान मन्त्री, प्रबन्ध-मन्त्री, प्रचारमन्त्री तथा राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे। शेष में से १० स्थायी समिति द्वारा नियुक्त होंगे और यह सब सदस्य मिल कर अन्य ६ सदस्य सम्मिलित कर २१ की संख्या की पूर्ति करेंगे। इस समिति को अधिकार होगा कि अपने सदस्यों में से अपना मन्त्री चुन ले। यही मन्त्री राष्ट्रभाषा-प्रचारमन्त्री कहलाएगा।

५५—इस समिति का अधिवेशन साधारणतः प्रयाग अथवा वर्धा में होगा। आवश्यकता पड़ने पर किसी अन्य स्थान में भी हो सकेगा।

५६—इस समिति का कोरम ५ सदस्यों का होगा।

५७—आसाम, बंगाल, उत्कल, सिन्ध, पश्चिमोत्तर प्रदेश, गुजरात, बम्बई, महाराष्ट्र प्रान्तों में तथा भारत के बाहर विदेशों में किस रूप में और किस भाँति राष्ट्रभाषा-प्रचार का कार्य किय जाय, इसका निर्णय इस समिति के अधीन होगा।

५८—इस समिति को अधिकार होगा कि राष्ट्र भाषा प्रचार के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो उपर्युक्त नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७ संग्रहसमिति

५९ (क)--सम्मेलन के उद्देश २ (ड) की पूर्ति के लिए २१ सदस्यों की एक संग्रहसमिति होगी।

(ख) सम्मेलन के सभापति, प्रधान मन्त्री, परीक्षामन्त्री, साहित्यमन्त्री, अर्थमन्त्री और संग्रहमन्त्री अपने पद के कारण इस समिति के सदस्य होंगे। शेष का निर्वाचन स्थायी समिति करेगी।

(ग) इस समिति का कोरम ५ सदस्यों का होगा।

(घ) समिति को कार्य की सुविधा और प्रचार की सुलभता के लिये भिन्न भिन्न प्रान्तों में कार्यालय खोलने का अधिकार होगा।

(ङ) इस समिति को अधिकार होगा कि संग्रहालय और वाचनालय के सम्बन्ध में ऐसे उपनियम बनावे जो सम्मेलन के नियमों के विरुद्ध न हों। ये उपनियम बिना स्थायी समिति की स्वीकृति के मान्य नहीं होंगे।

६०--(क) सम्मेलन की स्थायी समिति का यह कर्तव्य होगा कि भिन्न भिन्न प्रान्तों में सम्मेलन के उद्देशों की पूर्ति के लिए प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन और शाखा सभाएँ स्थायी रूप में स्थापित कराने का प्रयत्न करे। इन प्रान्तीय सम्मेलनों और शाखा सभाओं का सम्बन्ध सम्मेलन से हो सकेगा।

(ख) हिन्दी और नागरी के प्रचार का उद्देश रखनेवाली अन्य प्रान्तीय अथवा स्थानीय संस्थाएँ भी सम्मेलन से सम्बद्ध हो सकेंगी।

(ग) स्थायी समिति को अधिकार होगा कि जिस प्रान्त में सम्बद्ध प्रान्तीय सम्मेलन अथवा प्रान्तीय प्रचारसभा हो और प्रबन्ध सन्तोषजनक हो वहाँ की सम्मेलन से सम्बद्ध अन्य संस्थाओं को उक्त सम्बद्ध प्रान्तीय सम्मेलन अथवा प्रचार सभा के शासनाधिकार में दे दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१--(क) सभी संस्थाओं को सम्बद्ध होने समय ५) सम्बन्ध शुल्क और प्रति वर्ष २) वार्षिक शुल्क देना होगा।

(ख) जिस प्रान्त में प्रान्तीय सम्मेलन का कार्यालय हो उसकी कार्यकारिणी अथवा स्थायी समिति को उस प्रान्त के सम्मेलन से सम्बद्ध संस्थाओं से प्राप्त शुल्क का आधा हिस्सा पाने का अधिकार होगा और सम्मेलन से सम्बद्ध संस्थाएँ अपने प्रान्तीय सम्मेलन से भी सम्बद्ध समझी जायँगी।

सम्मेलन का वर्ष

६९—सम्मेलन का वर्ष आय व्यय के हिसाब और अनुमान पत्र तथा वार्षिक विवरण के लिए सौर गणना के अनुसार फाल्गुन प्रतिपदा से आरम्भ होकर माघ ३० को पूर्ण हुआ करेगा। किन्तु स्थायी समिति सम्मेलन अधिवेशन के बाद बदल जायगी तथा उसका संगठन सम्मेलन अधिवेशन के अनुसार होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

२७ वाँ वार्षिक अधिवेशन

१७, १८, १९ सितम्बर १९३८

समस्त हिन्दी प्रेमी जनता तथा सम्मेलन से सम्बद्ध संस्थाओं तथा कार्य-कर्त्ताओं की सेवा में निवेदन है कि सम्मेलन का अगला वार्षिक अधिवेशन ऊपर लिखी तारीख़ों को शिमला में होगा। स्वागत-कारिणी समिति इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए हर तरह से उद्योग कर रही है। हिन्दी प्रेमी जनता का कर्त्तव्य है कि इस अधिवेशन में उपस्थित होकर भाग ले। अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि नियम (८३) और (८४) के अनुसार स्वीकार किए जायँगे जिसकी प्रतिलिपि आप को सुविधा के लिए नीचे दी जाती है। आपसे निवेदन है कि जिन सज्जनों को आप ८३ (ख), (ग) और (घ) के अनुसार प्रतिनिधि होने का अधिकारी न समझते हों किन्तु उनके हिन्दी प्रेम के कारण उनका प्रतिनिधि होना आवश्यक और वांच्छनीय समझते हों उन सज्जनों के नाम मुझे शीघ्रातिशीघ्र सूचित करने की कृपा करें जिसमें नियम ८३ (क) के अनुसार उनको प्रतिनिधि चुनने का उद्योग किया जाय।

सम्बद्ध संस्थाओं तथा अन्य हिन्दी हितैषिणी संस्थाओं से साग्रह निवेदन है कि वे अपने प्रतिनिधियों के नाम इस कार्यालय में भेजने की कृपा करें। यह भी निवेदन है कि स्थायी समिति की ओर से चुने जाने वाले १०० प्रतिनिधियों के लिए जिन सज्जनों को उपयुक्त समझती हों उनके नाम और पते की सूचना दें।

बाबूराम सक्सेना
एम० ए०, डी०-लिट्०,
प्रधान मन्त्री

प्रतिनिधि

८३—निम्नलिखित संस्थाओं को सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(क) सम्मेलन की स्थायी समिति। इसे देश के सब प्रान्तों से नीचे लिखे क्रम के अनुसार कुल मिलाकर १०० प्रतिनिधि तक भेजने का अधिकार होगा :—

संयुक्तप्रान्त	२४,	बिहार	१४,
महाकोशल	८,	राजपूताना	७,
मध्यभारत	७,	बङ्गाल	६,
महाराष्ट्र	४,	नागपुर-बरार	४,
पंजाब	४,	आन्ध्र	३,
बम्बई	३,	तामिल	३,
करनाटक मैसूर और बेंगलोर	३	गुजरात	२,
दिल्ली	२,	आसाम	१,
उत्कल	१,	केरल	१,
सिंध	१,	सीमाप्रान्त	१,
ब्रह्मदेश (बर्मा)	१,		
	१००		

(ख) सम्बद्ध संस्थायें। इनमें से प्रत्येक को ५ प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

(ग) अन्य स्थापित हिन्दी-हितैषिणी संस्थाएँ, जिनमें कम से कम १५ सभासद् हों। इनमें से प्रत्येक को दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

(घ) स्वागत समिति। इसे पच्चीस प्रतिनिधि भेजने का अधिकार होगा।

८४—सम्मेलन के सदस्य और हितैषी तथा स्थायी समिति और हिन्दी-विश्व-विद्यालय परिषद् के सभासद् और सम्मेलन के उपाधिधारी सम्मेलन के अधिवेशन में प्रतिनिधि समझे जायँगे।

सम्मेलन के कोई पूर्व सभापति २ तथा वर्तमान सभापति १० की संख्या तक अपने प्रमाण पत्र द्वारा सम्मेलन के अधिवेशन के लिए प्रतिनिधि बना सकेंगे।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य समिति का अधिवेशन

साहित्य समिति की बैठक रविवार ज्येष्ठ सौर १ संवत् १९९५ तारीख १५ मई १९३८ को ७ बजे प्रातःकाल से सम्मेलन कार्यालय में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:—

१—श्री पुरुषोत्तमदास टंडन
२— " बाबूराम सक्सेना
३— " लक्ष्मीधर वाजपेयी
४— " उदयनारायण त्रिपाठी
५— " श्रीनाथसिंह
६— " रामकुमार वर्मा (साहित्य मंत्री)

१—नियमानुसार श्रीपुरुषोत्तमदास जी टंडन ने सभापति का आसन ग्रहण किया। तत्पश्चात् साहित्य मन्त्री ने गत अधिवेशन की कार्यवाही पढ़कर सुनाई जो स्वीकृत हुई।

२—समिति की गत बैठक में स्वीकृत प्रस्ताव (६) के सम्बन्ध में विचार हुआ और निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

"साधारण रीति से जहां अन्य भाषाओं के उद्धरणों की आवश्यकता जान पड़े वहाँ उनके अनुवाद नागरी लिपि में दिए जायं। किन्तु किसी विशेष अवस्था में यदि अंगरेज़ी भाषा का लम्बा उद्धरण देना हो तो रोमन लिपि में भी दिया जा सकता है। फ़ारसी तथा भारतीय भाषाओं के उद्धरण देवनागरी लिपि में होने चाहिए।"

३—साहित्य मन्त्री ने साहित्य विभाग का आगामी छमाही के आय-व्यय का अनुमान-पत्र उपस्थित किया जो स्वीकृत हुआ।

४—प्रधान मन्त्री जी ने 'हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' के सम्बन्ध में श्री प्रबन्धमन्त्री जी का पत्र तथा साहित्य मन्त्री का वक्तव्य पढ़कर सुनाया और सूचना दी कि उन्होंने पुस्तक श्री रामनारायन लाल को दे दी है। उसकी छपाई आदि का बिल अदा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया है। निश्चय हुआ कि स्थिति को देखते हुए प्रधान मन्त्री जी का यह कार्य स्वीकृत किया जाय।

समिति को इस बात का खेद है कि ठा० श्री नाथसिंह जी ने समिति के सम्बन्ध की इस बात के विषय में सभापति जी को पत्र लिखा। प्रधान मन्त्री जी एक पत्र लिखकर इस विषय में सभापति जी को परिस्थिति से परिचित करावें। यदि ठा० श्रीनाथसिंह जी स्वयं भी उचित समझें तो सभापति जी को इस सम्बन्ध में पत्र लिख दें।

रामकुमार वर्मा
साहित्य मन्त्री

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षा समिति का दसवाँ अधिवेशन

कोरम पूरा न होने के कारण ता० १ जुलाई सन् १९३८ की परीक्षा समिति का स्थगित अधिवेशन आषाढ़ सौर २५ तदनुसार ता० ९ जुलाई सन् १९३८ को प्रातःकाल ७ बजे से निम्नलिखित सदस्यों की उपस्थिति में सम्मेलन के संग्रहालय भवन में हुआ :—

(१) श्री बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन प्रयाग
(२) ,, पं० लक्ष्मीधर जी बाजपेयी ,,
(३) ,, पं० उदयनारायण त्रिपाठी ,,
(४) ,, डा० गोरखप्रसाद जी ,,
(५) ,, प्रो० दया शङ्कर जी दुबे (परीक्षामंत्री) प्रयाग।

१—सर्व सम्मति से बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

२—परीक्षा समिति के नौवें अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया और वह सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

३—परीक्षा मन्त्री ने राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं के टेबुलेटर निर्वाचित करने का विषय उपस्थित किया। सर्व सम्मति से श्री पं० हरिहर शर्मा राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं के टेबुलेटर नियुक्त किये गए और निश्चय हुआ कि राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षा वर्ग के संयोजक और गणक परीक्षा समाप्त होने के १ मास के भीतर परीक्षा-फल प्रकाशित करदें और केन्द्रों में तथा सम्मेलन कार्यालय में भेज दें।

४—परीक्षा मन्त्री ने राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं की नियमावली एवं पाठ्यक्रम विचारार्थ उपस्थित किया। दोनों पर विचार होकर कुछ सिद्धान्त निश्चित हुए और निश्चय हुआ कि इन सिद्धान्तों के अनुसार श्री टण्डन जी और परीक्षा मन्त्री नियमावली में आवश्यक संशोधन और परिवर्तन कर दें। तत्पश्चात् वह पुनः उपस्थित सदस्यों के पास अवलोकनार्थ भेजी जाय। तदनुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवश्यक संशोधन और परिवर्तन के पश्चात् वह पुनः उपस्थित सदस्यों के पास अवलोकनार्थ भेजी गई। सर्व सम्मति से नियमावली और पाठ्यक्रम नीचे लिखे अनुसार स्वीकृत हुआ :—

राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाओं की नियमावली

१—दक्षिण भारत को छोड़कर भारत के उन प्रान्तों में जहाँ की साधारण भाषा हिन्दी नहीं है, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार को बढ़ाने और हिन्दी के अभ्यास को क्रमबद्ध करने के उद्देश्य से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा प्रचार परीक्षाएँ स्थापित की हैं। ये परीक्षाएँ आसाम, बङ्गाल, उत्कल, महाराष्ट्र, बम्बई शहर, गुजरात और सिंध में तथा बिहार के आदिम निवासी भागों में ली जायँगी। भाषा की दृष्टि से उपर्युक्त प्रान्तों से मिली हुई देशी रियासतों में भी ये परीक्षायें ली जा सकेंगी।

२—**राष्ट्रभाषा प्रवेश, राष्ट्रभाषा परिचय और राष्ट्रभाषा कोविद** ये तीन परीक्षायें होंगी। **प्रवेश और परिचय** की व्यवस्था परीक्षा समिति द्वारा नियुक्त प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परीक्षा उपसमितियाँ अपने अपने प्रान्तों में करेंगी। **राष्ट्रभाषा कोविद** परीक्षा का व्यवस्था सीधे परीक्षासमिति स्वयं करेगी।

टिप्पणी—हिन्दीभाषा के प्रारम्भिक ज्ञान कराने के लिए यदि आवश्यकता जान पड़े तो उपर्युक्त उपसमितियाँ एक प्रारम्भिक परीक्षा की व्यवस्था स्वयं कर सकती हैं। उनको प्रबन्ध के बारे में परीक्षा समिति की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है।

३—उपर्युक्त तीनों परीक्षाओं का पाठ्यक्रम राष्ट्रभाषा परीक्षा वर्ग की सिफ़ारिश पर विचार कर परीक्षा समिति निश्चित करेगी।

४—प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परीक्षा उप समितियों में पांच पांच सदस्य होंगे। परीक्षा मन्त्री और राष्ट्रभाषा परीक्षा वर्ग का संयोजक प्रत्येक उप समिति का सदस्य अपने पद के अधिकार से होगा। शेष तीन सदस्यों का निर्वाचन प्रति वर्ष परीक्षा समिति करेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५—**प्रवेश और परिचय** परीक्षाओं के सम्बन्ध में प्रान्तीय राष्ट्र-भाषा परीक्षा उपसमितियों के नीचे लिखे कर्तव्य और अधिकार होंगे :—

(१) नियमानुसार नवीन केन्द्र की स्वीकृति देना।

(२) परीक्षाओं की तिथि निश्चित् करना।

(३) सशुल्क आवेदन पत्र स्वीकार करना।

(४) परीक्षक नियुक्त करना।

(५) केन्द्रों में परीक्षाओं की व्यवस्था करना।

(६) गणक नियुक्त करना और परीक्षाफल का निर्णय कर प्रकाशित करना।

(७) परीक्षाओं के आय-व्यय का पूरा हिसाब रखना।

(८) उपर्युक्त (१) और (२) के सम्बन्ध की सूचना तुरन्त परीक्षा मन्त्री को देना। शेष कर्तव्यों के सम्बन्ध में प्रत्येक परीक्षा के कार्य की समाप्ति पर परीक्षामन्त्री को एक विवरण तथा परीक्षा सम्बन्धी कुल काग़ज़ पत्र भेजना और आय-व्यय का पूरा हिसाब तथा बचत की रक़म हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अर्थमन्त्री को भेजना।

टिप्पणी १—अर्थमन्त्री उपर्युक्त योजना के अनुसार आये हुए आय-व्यय के हिसाब को परीक्षामन्त्री द्वारा परीक्षा समिति में उपस्थित करेंगे।

टिप्पणी २—जब तक प्रान्तीय समितियों का संगठन नहीं होता तब तक उपर्युक्त सब कार्य राष्ट्रभाषा परीक्षा वर्ग की सलाह से परीक्षा समिति करती रहेगी।

६—प्रान्तीय राष्ट्र भाषा परीक्षा उपसमिति अपने सदस्यों में से किसी एक को संयोजक निर्वाचित करेगी। संयोजक अपनी उपसमिति के कार्यों की पूरी कार्यवाही एक कार्यवाही-पुस्तक में लिख कर रखेगा। उप समिति के कर्तव्यों और अधिकारों के पूरा कराने का मुख्य भार उस पर होगा। उप समिति की ओर से पत्र व्यवहार भी वही करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७—परीक्षा मन्त्री का कर्तव्य होगा कि प्रान्तीय राष्ट्र-भाषा परीक्षा उप समितियों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं की व्यवस्था की स्वयं जाँच करें या करावें और अपनी जाँच की रिपोर्ट परीक्षा समिति के सामने उपस्थित करें।

८—साधारणतया ये परीक्षाएँ वर्ष में दो बार होंगी। जब तक प्रान्तीय उप समितियों का संगठन नहीं होता तब तक ये परीक्षाएँ फ़रवरी और सितम्बर में होंगी।

९—**प्रवेश तथा परिचय** परीक्षाओं में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रमाण पत्र दिए जायँगे और **कोविद** परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को **राष्ट्रभाषा कोविद** की उपाधि दी जायगी।

१०—इन परीक्षाओं में हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपि का प्रयोग होगा।

११—इन परीक्षाओं में जाति या धर्म भेद का कोई विचार परीक्षार्थियों के सम्मिलित करने में न होगा किन्तु परीक्षार्थी की उम्र कम से कम १० वर्ष होना आवश्यक समझा जायगा।

१२—साधारण रीति से नीचे की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए बिना कोई भी विद्यार्थी ऊपर की परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया जायगा। अगर कोई योग्य परीक्षार्थी नीचे की परीक्षा में बिना उत्तीर्ण हुए सीधे किसी ऊँची परीक्षा में सम्मिलित होना चाहे तो उसे परीक्षा मंत्री से अधिकार प्राप्त करना होगा।

१३—इन परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिए परीक्षाओं की तारीख़ के कम के कम एक महीना पहिले निश्चित फ़ार्म पर परीक्षार्थी को सशुल्क आवेदन पत्र भेजना होगा।

टिप्पणी—आवेदनपत्र के छपे फ़ार्म प्रयाग के सम्मेलन कार्यालय अथवा प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परीक्षा उपसमिति के संयोजक से बिना मूल्य मिल सकते हैं।

१४—परीक्षा केन्द्र को स्थापना के लिए परीक्षा की तारीख़ से कम से कम दो महीने पहिले आवेदनपत्र आजाना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५—नियम १ में बताए हुए प्रान्तों के किसी गाँव या शहर में परीक्षा केन्द्र की स्थापना हो सकेगी। **प्रवेश तथा परिचय** के केन्द्र स्थापित होने के लिए कम से कम १० आवेदनपत्र केन्द्र से प्राप्त होना आवश्यक होगा। किसी स्थापित केन्द्र से कुल आवेदन-पत्रों की संख्या ५ से कम होजाने पर ही स्थान केन्द्र सूची से हटाया जायगा। **कोविद** के केन्द्र की स्थापना कम से कम ५ आवेदनपत्रों की प्राप्ति पर हो सकेगी। यदि किसी स्थापित केन्द्र से **कोविद** के ४ से कम आवेदनपत्र किसी वर्ष में होंगे तो उस वर्ष उस केन्द्र में परीक्षा न ली जायगी।

१६—किसी भी पुराने केन्द्र से दो मील की दूरी के भीतर नया केन्द्र नहीं बनाया जायगा, न किसी शहर में ही दो केन्द्र स्वीकृत होंगे। विशेष परिस्थिति में किसी शहर में दो केन्द्रों की आवश्यकता पड़ने पर केन्द्र व्यवस्थापक की अनुमति से एक उप केन्द्र स्वीकृत होगा जिसकी व्यवस्था का पूरा भार केन्द्र व्यवस्थापक को ही सौंपा जायगा

१७—**प्रवेश** और **परिचय** के प्रत्येक केन्द्र के लिए प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परीक्षा उपसमिति किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को व्यवस्थापक नियुक्त करेगी। केन्द्र सम्बन्धी सब काम सीधे व्यवस्थापक के द्वारा किये जायँगे।

१८—परीक्षाओं के लिए निम्न लिखित शुल्क लिया जायगा :—

राष्ट्रभाषा प्रवेश—०—८—०

,, परिचय—१—०—०

,, कोविद—२—०—०

१९—**राष्ट्रभाषा कोविद** परीक्षा का शुल्क अर्थ मंत्री, तथा आवेदनपत्र परीक्षामंत्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के पते पर भेजा जायगा। राष्ट्रभाषा की अन्य परीक्षाओं के आवेदनपत्र और शुल्क प्रान्तीय राष्ट्रभाषा परीक्षा उपसमिति के संयोजक के पास परीक्षारम्भ की तिथि से कम से कम एक मास पूर्व भेजे जायँगे। शुल्क भेजते समय मनीआर्डर कूपन में केन्द्र का नाम तथा परीक्षाओं का ब्यौरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखना चाहिये। आवेदनपत्रों के साथ मनीआर्डर रसीद भेजना आवश्यक है। शुल्क तथा, आवेदनपत्र भेजने का ख़र्च परीक्षार्थी को देना होगा। यदि कोई केन्द्र-व्यवस्थापक परीक्षार्थियों की सुविधा के लिए उनसे स्वयं आवेदनपत्र और शुल्क ले लें तो उसका कर्त्तव्य होगा कि उपर्युक्त नियमों का स्वयं पालन करे।

प्रत्येक परीक्षार्थी के पास परीक्षा के कम से कम एक सप्ताह पहले केन्द्र व्यवस्थापक के द्वारा एक प्रवेशपत्र भेजा जायगा। इस प्रवेशपत्र के दिखाने पर ही वह परीक्षा भवन में प्रविष्ट हो सकेगा।

२०—परीक्षा की तारीख़ के बाद साधारणत: एक महीने के अन्दर परीक्षाफल प्रत्येक केन्द्र के व्यवस्थापक के पास भेज दिया जायगा और सम्मेलन पत्रिका में तथा कुछ प्रान्तीय समाचारपत्रों में भी प्रकाशित किया जायगा। परीक्षाफल निकलने के एक महीने के बाद **प्रवेश** तथा **परिचय** के प्रमाणपत्र भेजे जायँगे। **कोविद** की उपाधि सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में दी जायगी किन्तु यदि कोई परीक्षार्थी अधिवेशन में उपस्थित न हो सकेगा तो वह अपना उपाधिपत्र केन्द्र व्यवस्थापक के द्वारा प्राप्त कर सकेगा।

२१—परीक्षायें प्राय: परीक्षाकेन्द्र की किसी प्रतिष्ठित पाठशाला या सार्वजनिक स्थान में होंगी।

२२—प्रवेश और परिचय परीक्षाओं के व्यवस्थापक के निम्न-लिखित अधिकार होंगे:—

(१) परीक्षा सम्बन्धी पत्रव्यवहार प्रान्तीय उपसमिति के संयोजक के साथ करना।

(२) प्रवेशपत्रों को परीक्षार्थियों में वितरित करना।

(३) प्रवेशपत्र देखने के बाद ही परीक्षार्थियों को परीक्षा भवन में प्रविष्ट करना।

(४) आध घण्टे से देर करके आनेवाले परीक्षार्थियों को सम्मिलित न करना।

(५) परीक्षाओं के लिए स्थान आदि का प्रबन्ध करना और परीक्षाओं के निरीक्षण के लिए निरीक्षकों को नियुक्त करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) परीक्षाओं के ठीक ५ मिनट पहले प्रश्नपत्रों का बण्डल परीक्षा भवन में खोलना और परीक्षार्थियों में वितरण करना और परीक्षा के लिए निश्चित समय के ख़तम होते ही उत्तर पुस्तकों को लेना तथा उन्हें बाँधकर प्रान्तीय उपसमिति के संयोजक की सूचना के अनुसार रवाना कर देना।

(७) परीक्षा मंत्री द्वारा नियुक्त किसी निरीक्षक के परीक्षा केन्द्र में आने पर निरीक्षण के लिए आवश्यक प्रबन्ध करना।

(८) परीक्षार्थियों का उपस्थिति पत्र तथा केन्द्र की रिपोर्ट प्रान्तीय उप समिति के संयोजक के पास भेजना।

(९) इस बात का ध्यान रखना कि कोई परीक्षार्थी परीक्षा के समय बेजा काम न करे।

(१०) परीक्षा के लिए जो ख़र्च हुआ हो उसे प्रान्तीय उप समिति के संयोजक के पास बिल भेज कर वसूल कर लेना।

(११) सम्मेलन कार्यालय से प्रमाणपत्र प्राप्त होने पर एक सार्वजनिक सभा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को वितरित करना

(१२) परीक्षा सम्बन्धी अन्य सब कार्य करना जो समय समय पर करने की आवश्यकता पड़े।

२३—प्रत्येक परीक्षार्थी को लिखने के लिए उत्तर पुस्तक बिना मूल्य मिलेगी। परीक्षा के बाद उसकी लिखी हुई उत्तर पुस्तक किसी भी हालत में उसको वापस नहीं मिलेगी। परीक्षार्थी को केन्द्र व्यवस्थापक के द्वारा प्रार्थनापत्र भेजने पर प्राप्ताङ्क मालूम हो सकेंगे।

२४—**प्रवेश** और **परिचय** के किसी भी परीक्षार्थी को अगर अपना केन्द्र परिवर्तन कराना हो तो परीक्षा के कम से कम १५ दिन पहिले प्रान्तीय उपसमिति के संयोजक के पास प्रार्थनापत्र भेजना होगा। केन्द परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक को होगा। इसी प्रकार **कोविद** की परीक्षा के केन्द्र परिवर्तन के लिए प्रार्थनापत्र परीक्षा-मन्त्री हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग के पते पर भेजना होगा।

२५—आसाम, बंगाल उत्कल, महाराष्ट्र, गुजरात, बम्बई शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सिन्ध प्रान्तों में प्रत्येक परीक्षा में उत्तीर्ण सर्व प्रथम तथा द्वितीय परीक्षार्थियों को हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति की तरफ़ से पुरस्कार दिये जायंगे।

२६—इन परीक्षाओं के प्रश्नपत्र नीचे दिये हुए ब्योरे के अनुसार होंगे।

राष्ट्रभाषा प्रवेश—इसमें दो प्रश्नपत्र होंगे। प्रथम प्रश्न-पत्र निश्चित् पाठ्य पुस्तकों पर और दूसरा प्रश्न पत्र सामान्य ज्ञान, निबन्ध तथा प्रान्तीय भाषा से हिन्दी में अनुवाद पर होगा।

२७ **राष्ट्रभाषा परिचय**—

इसमें तीन प्रश्न पत्र होंगे। पहला और दूसरा पाठ्य पुस्तकों पर और तीसरा निबन्ध, अनुवाद तथा व्याकरण पर होगा। अनुवाद प्रान्तीय भाषा से हिन्दी में होगा।

२८ **राष्ट्रभाषा कोविद**—

इसमें चार प्रश्नपत्र होंगे। पहला आधुनिक पद्य, दूसरा नाटक, तीसरा गद्य, चौथा निबन्ध तथा अपठित पुस्तकों पर होगा। इसमें मौखिक परीक्षा भी होगी जिसके द्वारा परीक्षार्थी की भाषा बातचीत करने की शक्ति और उसके उच्चारण की जांच की जायगी।

राष्ट्रभाषा कोविद में प्राचीन पद्य और उर्दू पर एक एक और प्रश्नपत्र भी रहेगा जो अनिवार्य नहीं समझा जायगा। अगर कोई परीक्षार्थी चाहे तो प्राचीन पद्य या उर्दू अथवा दोनों को वैकल्पिक रूप से अध्ययन कर सकेगा और उसमें परीक्षा दे सकेगा। उसमें उत्तीर्ण होने पर उसके प्रमाणपत्र में उसका उल्लेख किया जायगा।

२९—उपर्युक्त तीनों परीक्षाओं में प्रत्येक प्रश्नपत्र १०० अङ्क तथा ३ घण्टे का होगा।

३०—राष्ट्रभाषाप्रवेश तथा परिचय में जो परीक्षार्थी प्रतिशत ३५ अङ्क पायेगा वह उत्तीर्ण समझा जायगा। कोविद में उत्तीर्ण होने के लिए प्रतिशत ४० अङ्क प्राप्त करना आवश्यक होगा। जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षार्थी ६० या उससे अधिक अङ्क पायेगा वह पहली श्रेणी में उत्तीर्ण समझा जायगा।

३१--कोई भी उत्तर पुस्तक दुबारा जाँची नहीं जायगी।

३२--राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थी सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में सम्मिलित हो सकेंगे।

पाठ्य-क्रम की पुस्तकें

राष्ट्रभाषा प्रवेश—

(१) बालकृष्ण (द० भा० हिं० प्रचार सभा, मद्रास) ०-६-०
(२) गुलदस्ता भा० १ (हिन्दी-सा० स० प्रयाग)
(३) कहानी संग्रह या पाठावली भा० ३

द्वितीय प्रश्नपत्र—

अनुवाद और निबन्ध। हिन्दी से अनुवाद के लिए जो अवतरण दिये जायेंगे, वे प्रथम प्रश्नपत्र की पाठ्य-पुस्तकों में से रहेंगे।

नोटः—हिन्दी के अक्षर तथा भाषा रचना की साधारण जानकारी के लिए प्रत्येक प्रांतीय भाषा तथा अँग्रेजी में पुस्तकें मिल सकती हैं। इस सम्बन्ध में परीक्षार्थियों को हिन्दी-प्रचार समिति, वर्धा से पत्र-व्यवहार करना चाहिये।

जिन भाषाओं में हिन्दी का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक पुस्तकें नहीं मिलें, उन भाषा-भाषियों को चाहिये कि वे किसी हिन्दी प्रचारक के द्वारा या हिन्दी जानने वाले व्यक्ति के द्वारा हिन्दी-भाषा की साधारण जानकारी प्राप्त कर लें। इस सम्बन्ध में सब प्रकार की मदद हिन्दी प्रचार समिति, वर्धा या परीक्षा मन्त्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग से मिल सकेगी।

राष्ट्रभाषा परिचय

प्रथम प्रश्न पत्र—

(१) चलती हिन्दी (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) अलीबाबा और चालीस चोर (द० भ० हिं० प्र० सभा मद्रास) ०-६-०

द्वितीय प्रश्न पत्र—

(१) गुलदस्ता भा० २ (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग)
(२) राज मुकुट [नाटक] (पं० गोविंद वल्लभ पन्त) ०-१२-०

तीसरा प्रश्न पत्र—

(अनुवाद, व्याकरण, और निबन्ध)
(१) प्रेम पञ्चमी [अपठित] (द०भा०हिं०प्र०सभा, मद्रास) ०-८-०
(२) निबन्धावली भा० १ (श्याम सुन्दरदास) १-४-०
(३) हिन्दी व्याकरण रत्नाकर (साहित्य मन्दिर, दारागञ्ज, प्रयाग)

नोट:—व्याकरण में हिन्दी के साधारण वाक्यों की रचना, पद विन्यास, वाक्य, वाक्यांश, तथा वाक्य-भेद का सामान्य ज्ञान होना जरूरी है।

राष्ट्र भाषा कोविद

प्रथम प्रश्न-पत्र—पद्य

(१) नवीन पद्य संग्रह (हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग) ०-१२-०
(पद्य सं०—४, ५, १०, ११, १४, १९, ३५, ३७, ४५, ५५, ५७, ५९, ६५, ६७, ६८, ७५, ७६, ८१)
(२) मिलन (रामनरेश त्रिपाठी) ०-८-०
(३) आस्वाद (हिन्दी साहित्य परिषद) ०-६-०

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक

(१) शिवा साधना (हरिकृष्ण प्रेमी)
(२) अजात शत्रु (जयशंकर प्रसाद)
(३) चंद्र गुप्त (डी, एल, राय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा प्रश्न-पत्र--

(१) गल्प रत्न (सरस्वती प्रेस, बनारस) १-०-०
(२) हिन्दी गद्य माला (हिन्दी रत्नाकर कार्य्यालय बंबई)
(३) आत्मकथा (संक्षिप्त) (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

चौथा प्रश्न-पत्र--

(१) गद्य रत्नावली
(२) अभिनव हिन्दी व्याकरण (अंबिका प्रसाद वाजपेयी)
(३) प्रतिज्ञा [अपठित] (प्रेमचंद)
अतिरिक्त प्रश्न-पत्र (ये प्रश्न-पत्र वैकल्पिक होंगे)

प्राचीन साहित्य—

(१) रामायण अयोध्याकांड (प्रथम १०० दोहे)
(२) संतवाणी संग्रह (बेलिवेडियर प्रेस, प्रयाग) १-८-०
(३) प्राचीन पद्य संग्रह (चुने हुए)

उर्दू—

जामिया मिलिया की प्रथम तीन पुस्तकें
उल्था
शीघ्रवाचन

५—परीक्षा मन्त्री ने उप सभापति बाबू पुरुषोत्तमदास जी टण्डन की स्वीकृति के अनुसार शीघ्र लिपि विशारद परीक्षा का शुल्क ६) से ४) कर देने का विषय सूचनार्थ उपस्थित किया गया। निश्चित हुआ कि इसके अनुसार कार्य किया जाय।

६—परीक्षा मन्त्री ने काशी में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र स्थापित करने के सम्बन्ध में प्रिन्सिपल ट्रेनिंग कालेज काशी का प्रार्थनापत्र विचारार्थ उपस्थित किया। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि प्रिन्सिपल महोदय की अध्यक्षता में उत्तमा परीक्षा का केन्द्र रखा जाय।

७—परीक्षा मंत्री ने आगरा, इन्दौर और प्रयाग केन्द्रों के लिए उत्तमा परीक्षा के हिन्दी साहित्य विषय के मौखिक परीक्षकों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचन का विषय उपस्थित किया। सर्व-सम्मति से मौखिक परीक्षकों का निर्वाचन नीचे लिखे अनुसार हुआ :--

इन्दौर केन्द्र- श्री पण्डित उदय नारायण त्रिपाठी एम० ए० प्रयाग
,, पण्डित कमलाशंकर मिश्र एम० ए०, साहित्य-रत्न, इन्दौर।

आगरा केन्द्र--श्री पण्डित जगन्नाथ तिवारी एम० ए०, आगरा कालेज।
,, 'साहित्य रत्न' पं० उदयनारायण त्रिपाठी।

प्रयाग ,, डा० धीरेन्द्र वर्मा, एम० ए०।
,, पं० उदयनारायण त्रिपाठी, एम० ए०।

काशी ,, पं० रामचन्द्र शुक्ल
या
,, पं० केशवप्रसाद मिश्र
,, पं० उदयनारायण त्रिपाठी।

तत्पश्चात् सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

दयाशंकर दुबे एम० ए०, एल०-एल० बी०
परीक्षा मंत्री
हिन्दी-विश्व-विद्यालय, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी संग्रहालय, प्रयाग

(महत्वपूर्ण वस्तुओं की प्राप्ति)

निम्न लिखित वस्तुएँ पं० लोचन प्रसाद पाण्डेय स्थान बालपुर ज़िला बिलासपुर से प्राप्त हुईं। आप मध्यप्रदेश के एक प्रसिद्ध साहित्यिक, कवि और अनुसन्धानकर्त्ता हैं। आशा है आप से समय-समय पर महत्वपूर्ण वस्तुएँ प्राप्त होती रहेंगी। इस कृपा के लिये आप को अनेक धन्यवाद हैं।

(१) १ पोस्टकार्ड तारीख़ ७—५—१९१७ का पं० श्रीधर पाठक का लिखा हुआ। यह पत्र पाठक जी का ही हस्तलिखित है और प्रयाग से उन्होंने पं० लोचनप्रसाद जी के नाम भेजा था।

(२) पं० श्रीधर पाठक का हस्तलिखित कार्ड २३—१२—१६ का प्रयाग से पं० लोचन प्रसाद जी के नाम भेजा हुआ।

(३) पं० बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन जी का हस्तलिखित पत्र जो उन्होंने आनन्दकादम्बिनी प्रेस मिर्ज़ापुर से ९-८—१९०७ ई० को पं० लोचनप्रसाद जी के नाम भेजा था।

(४) पं० बदरी नारायण जी का एक कार्ड २५—२—१९०७ का जो उन्होंने मिरज़ापुर से पं० लोचन प्रसाद जी के नाम भेजा था। दूसरा कार्ड १३-२-१९०८ का तीसरा कार्ड ७ मार्च सन् १९१० का।

(५) एक पत्र बाबू जगन्मोहन सिंह वर्मा (विजय राघवगढ़ नरेश के युवराज कुमार) जी का जो उन्होंने ७-६-१८९४ को यदुनाथ भोगहा जी, शिवरीनारायण छत्तीसगढ़ के नाम उनको आनरेरी मजिस्ट्रेट होने पर धन्यवाद में भेजा था। इसके साथ एक तीन लाइन की छोटी सी कविता भी है।

(६) मल्लार (ज़िला बिलासपुर में) प्राप्त ताम्रलेख मल्लारमें पाया गया था। समय ईस्वी सन् ६०० के आसपास। इस ताम्रलेख से राजा शिवगुप्त का पता लगता है। उनकी राजधानी श्रीपुर ज़िला रायपुर में थी। ताम्रलेख में शिवगुप्त के पिता हर्षदेव का भी नाम आया है।

७—ठकुरदिया ग्राम सारंगगढ़ स्टेटमें प्राप्त महाप्रवरराज का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताम्रलेख और मुद्रा। इसमें गजलक्ष्मी मुद्रा पर का लेख है तथा गज लक्ष्मी मुद्रा की छाप है।

मुद्रा पर के श्लोक की छाप

मानमालसुतस्येदम् स्वभुजोपार्जित क्षितैः ।
श्रीमत्प्रवरराजस्य शासनं शत्रुनाशनम् ॥

८—महा कोशल की राजधानी श्रीपुर (वर्तमान सिरपुर) जिला रायपुर में प्राप्त शिवमूर्ति के बाजू पर बुद्ध धर्म का बीजमन्त्र। लिपि ७०० ई० से ९०० ई० के बीच की।

९—गांगपुर राज्य (उड़ीसा) की गुफ़ाओं परकी चित्रलिपि के नमूने। अनुमानतः ७००० वर्ष प्राचीन। इसीके साथ साथ विक्रमखोल जिला सम्बलपुर की चट्टान पर के अक्षरों के कुछ नमूने (सन ईस्वी के २००० वर्ष पूर्व)।

१०—रायगढ़ के शासक श्रीमान् राजा देवनाथ सिंह जी द्वारा प्रदत्त ताम्रलेख की प्रतिलिपि। यह हिन्दी में नकल की गयी है।

११—आरंग जिला रायपर का ब्राह्मी शिलालेख।

१२—रतनपुर (जिला विलासपुर) के राजा तख्त सिंह के हिन्दी पत्र की नकल। यह पत्र कातिक सुदी सं० १७४५ का लिखा है। इसमें कई गावों के तथा ७ परगनों के नाम आये हैं।

१३—बालागीर में प्राप्त ताम्रलेख की छाप (ई० सन् १००० या ११०० के आस पास का) यह ताम्रलेख बालागीर महाराज के पास है।

१४—त्रिकलिङ्ग तथा महाकोशल के राजा महाभव गुप्त का ताम्रलेख। उसके साथ वृषभांकित मुद्रा है, जिसमें नन्दी वृषभ का चित्र है। यह ताम्रलेख इपिग्रेफिया इण्डिया में छप चुका है।

१५—दो मुद्राओं की छाप (१) रौप्य (२) स्वर्ण। ये ईसा से पूर्व ९०० वर्ष की प्राचीन हैं।

१६—सेमरसाल तहसील मुंगेली (जिला विलासपुर) में प्राप्त ब्राह्मी लिपि की छाप। यह ईसा से ४०० वर्ष पहले की मालूम पड़ती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७—गांव पोड़रावंध, तहसील बलोदा बाज़ार ज़िला रायपुर में प्राप्त ताम्रलेख की छाप तथा मुद्रा छाप लिपि-नागरी चेदि सं० ९६५ विषय—कायठा नामक ग्राम के दान का उल्लेख। दाता-राज श्री प्रताप मल्लदेव रत्नपुर के हैहय वंशी नरेश। इसी के साथ गजलक्ष्मी मुद्रा छाप भी प्राप्त है। दोनों ओर गज हैं बीच में बैठी हुई लक्ष्मी।

१८—एक पत्थर की मुहर की छाप लाख में। इसमें कारक लिपि है। यह ईसा से ५०० वर्ष पूर्व की है। इसमें "अप्रमाद" शब्द खोदा गया है।

१९—आरंग में प्राप्त ताम्रलेख की छाप एवं मुद्रा छाप। यह १९२९ में ज़िला रायपुर में प्राप्त हुआ। यह ईसा से ५०० वर्ष पूर्व का है। इसी की दर्पणी छाप भी है। जिसे भागीरथी सोनकर की विधवा स्त्री से लेकर सरकार ने नागपुर अजायबघर में रख लिया है।

२०—सरखों गांव तहसील जांजगीर ज़िला बिलासपुर में प्राप्त ताम्रलेख चेदि संवत ८८० सन् ई० ११८५ प्राप्ति समय १९७२ संवत। मूल पत्र महाकोशल इतिहास समिति बिलासपुर के अधिकार में है।

२१—शवरी नारायण क्षेत्र जिला बिलासपुर के शिवमन्दिर वाले शिला लेख की छाप चेदि स० ९१९।

२२—बौद्ध कालीन मुद्राएँ ९। प्रताप मल्लदेव की दो, चेदि सं० ९६३ पृथिवी देव द्वितीय की ४, चेदि सं० ९०० बंगला अक्षर युक्त १। फ़ारसी १, फ़ारसी नागरी १। चौकोर गजनाग १।

इन सामग्रियों के अलावा पाण्डेय जी ने निम्नलिखित छपी पुस्तकें भी भेजी हैं—

१—नीति कविता
२—प्रवासी
३—जीवन ज्योति
४—दो मित्र
५—दिल बहलाने की दवा

श्री जगन्नाथप्रसाद शुक्ल
संग्रहमन्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विविध विषय

कार्यालय,
स्वागत कारिणी समिति
शिमला ता० १२ जून १९३८

पंजाब में हिन्दी और उसकी प्रगति

यद्यपि यह ठीक है कि पंजाब में हिन्दी की ओर रुचि बढ़ रही है, लड़के, लड़कियां पहिले से अधिक संख्या में हिन्दी पढ़ने लगे हैं और हिन्दी साहित्य भी सर्व प्रिय हो रहा है, परन्तु यह भी सत्य है कि पंजाब में हिन्दी की गति वैसी नहीं है जैसी हिन्दी प्रेमी चाहते हैं अथवा जैसी राष्ट्रीयता के नाते होनी चाहिये।

जैसे जैसे हिन्दी प्रचार बढ़ता जावेगा वैसे वैसे ही इस प्रान्त में भिन्नता के स्थान पर एकता दिखाई देगी। हमारी कन्याएँ जिस लगन से हिन्दी सीखती और लिखती पढ़ती हैं वैसी लगन युवकों में कम दिखाई देती है। हिन्दी में अब उत्तम साहित्य अच्छी गति से बढ़ रहा है परन्तु हमारे नवयुवक उससे यथोचित लाभ नहीं उठा रहे हैं।

जिस समय तक हिन्दी जानने वाले अपना निजी पत्र व्यवहार हिन्दी में नहीं करते उस समय तक हिन्दी व्यावहारिक दृष्टि से सफल नहीं कही जा सकती। हिन्दी लिखना बहुत सरल है। बातचीत की बोली को देव नागरी लिपि में लिख देने से हिन्दी साधारण कार्य्यवाही लायक हो सकती है परन्तु खेद है कि हमारे युवक हिन्दी में पत्र व्यवहार करने के बजाय अशुद्ध और भद्दी अंग्रेजी व्यवहार में लाना पसन्द करते हैं। पंजाब की लड़कियों ने हिन्दी को अपनाया है और हमें यह सोचकर प्रसन्नता होती है कि जब भावी माताओं की रुचि हिन्दी की ओर बढ़ रही है तो अवश्य ही भावी संतान हिन्दी द्वारा सुशिक्षित होगी। पर इन युवकों को कोई किस प्रकार समझावे जो अपने अँगरेजी ढंग से भद्दी भाषा में भी पत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवहार किये जा रहे हैं। उर्दू से हमारा कोई झगड़ा नहीं क्योंकि इसको यदि देवनागरी लिपि में लिख दें तो वह हिन्दी ही कहलायेगी। हमारी शिकायत तो उन थोड़े लिखे पढ़े युवकों के प्रति है जो हिन्दी लिखते नहीं और शुद्ध महावरेदार अँगरेज़ी लिख सकते नहीं। उनके कारण अँगरेज़ी की हत्या और हिन्दी की अवहेलना हो रही है। क्यों न वे शीघ्र ही हिन्दी में लिखना आरम्भ करके पंजाब को अन्य प्रान्तों के साथ मिलाकर संस्कृति के प्रोत्साहन और देश की जागृति में मदद दें। आजकल हिन्दी और भी सरल हो गई है क्योंकि अब अच्छी हिन्दी वही गिनी जाती है जिसमें कठिन शब्द न हों। क्या हम आशा करें कि हमारे युवक भाषा और देश के प्रति जो उनका कर्त्तव्य है उसको समझेंगे ?

हमारे बड़े आदमी भी अँगरेज़ी में लिखना गौरव की बात समझते हैं हालांकि यह सत्य है कि अँगरेज़ी जैसी कठिन भाषा सुगमता और सरलता से लिखना बहुत कठिन है। यदि वे हिन्दी मे लिखना आरम्भ करें तो जहाँ उनके यत्न से हिन्दी की बढ़ती होगी वहाँ साथ ही उनको भी अपने भाव व्यक्त करने में बहुत सुगमता होगी। इसके अलावा थोड़े पढ़े लिखे व्यक्ति भी जो इनकी देखा देखी अँगरेज़ी ही व्यवहार में लाना पसन्द करते हैं चाहे वह भद्दी और अशुद्ध अँगरेज़ी लिखने में ही समर्थ हों, हिन्दी को अपनाने लगेंगे। इससे देश और जाति दोनों ही का कल्याण होगा।

पंजाब में हिन्दी को शुद्धरूप देने का श्रेय तो प्रातः स्मरणीय श्री नवीनचन्द्र राय जी को ही है जिनके विचार में अब से पचास वर्ष से भी पहिले हिन्दी का विचार आया जब कि वे पंजाब यूनिवर्सिटी में असिस्टैंट रजिस्ट्रार थे। उन्होंने और स्वर्गीय पण्डित भानुदत्त जी ने हिन्दी के लिए जो अपने समय में यत्न किया वह आजकल के हिन्दी-प्रेमी प्रायः भूल चुके हैं। राय जी ने हिन्दी रत्न, हिन्दी भूषण और हिन्दी प्रभाकर की परीक्षाएँ हिन्दी में करवाई और पण्डित भानुदत्त जी ने हिन्दी का उस समय साहित्य निर्माण किया। पण्डित जी के संकलित 'चारुपाठ' हिन्दी के गद्य लेखों के अच्छे संग्रह थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने डी० ए० वी० कालिज सोसाइटी में हिन्दी में पाठ्यक्रम रखकर हिन्दी को जो प्रोत्साहन दिया वह प्रशंसनीय है। सनातन धर्म स्कूल में एक समय हिन्दी आवश्यक थी अब भी यह स्कूल हिन्दी में अच्छी लगन से आगे बढ़ रहा है। अन्य स्कूलों में हिन्दी के प्रति उत्साह नहीं हुआ यद्यपि हिन्दी पढ़ाने का थोड़ा बहुत प्रबन्ध अवश्य किया गया। जो अवस्था विशेषतः लाहौर की है वही सारांश में प्रांत के बहुत से भाग की समझनी चाहिये।

स्वर्गीय पं० दीनदयाल जी ने अपने उपदेशों द्वारा हिन्दी में जनता का उत्साह बढ़ाया। आप फ़िरोज़पुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान भी रहे।

गत वर्षों में हिन्दी में काम करने वालों में स्वामी केशवानंद जी का नाम अग्रगण्य है। उनकी अथक कोशिशों से अबोहर में एक बहुत अच्छा हिन्दी पुस्तकालय है। हिन्दी के प्रसार में कई वर्ष प्रो० जयचन्द्र जी विद्यालंकार ने भी बहुत यत्न किया और अब हिन्दी भवन लाहौर हिन्दी के प्रसार में अच्छी पुस्तकों द्वारा अच्छे उत्साह से काम कर रहा है। हिंदी के प्रचार में डाक्टर लक्ष्मणस्वरूप जी का नाम हम नहीं भूल सकते। आप हिन्दी के प्रेमी हैं और हिन्दी-साहित्य सम्मेलन का काम कई वर्षों तक करते रहे हैं। गुरुकुल के पंजाब निवासी स्नातकों द्वारा भी हिन्दी के काम में अच्छी सहायता मिली है।

हिन्दी की प्रगति अभी तक पंजाब में जैसी आशा की जाती थी वैसी नहीं हुई। आजकल श्रीमती शन्नोदेवी जी ने 'शक्ति' निकालकर और श्रीयुत खुशहालचन्द्र जी ने हिन्दी 'मिलाप' चलाकर हिन्दी में नई जान फूँकी है। हिन्दी प्रेमी उनके आभारी हैं। हिन्दी की मासिक पत्रिका अभी तक पंजाब में सफल कोई नहीं हुई। एक पत्रिका और एक बालकोपयोगी पत्र हिन्दी भवन से निकले थे पर घाटे पर चलकर बन्द हो गये। अभी तक पंजाब में पंजाबियों द्वारा हिन्दी का अच्छा साहित्य नहीं निकला। हिन्दी भवन से कुछ पुस्तकें छपी हैं पर वे भी साधारण ही हैं। हिन्दी की रुचि पंजाब में कैसे बढ़े इस विषय पर हिन्दी प्रेमियों को अब अवश्य लिखना चाहिए। शक्ति ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साप्ताहिक संस्करण में मातृभाषा मन्दिर रूप एक स्तम्भ रखना आरम्भ किया है। यदि सभी हिन्दी प्रेमी पत्र जो उर्दू में ही छपते हैं हिन्दी प्रचार में सहायता करें तो लोगों का ध्यान हिन्दी की ओर अवश्य आकर्षित हो। हमें प्रकाश, प्रताप और अन्य पत्रों से इस बारे में पूरी सहायता मिलने की आशा है। हम तो यह भी आकांक्षा रखते हैं कि मिलाप की तरह प्रताप और प्रकाश साथ ही हिन्दी में छपने लगें। हिन्दी पत्रों में 'विश्वबन्धु' भी अपना स्थान ऊँचा रखता है और उसके योग्य संपादक माधव जो से हमें बहुत आशाएँ हैं।

हिन्दी लेखकों में आजकल श्रीयुत पण्डित उदयशंकर जी भट्ट ने अपनी पुस्तकों तथा फुटकर कविताओं द्वारा अच्छी ख्याति लाभ की है। पंजाब के गल्प लेखकों में श्रीयुत सुदर्शन तथा पंडित चन्द्रगुप्त विद्यालंकार सारे भारतवर्ष में मशहूर हो चुके हैं।

हिन्दी की रुचि बढ़ रही है। अब सब सज्जनों के अनुरोध और यत्न से हिन्दी में अच्छा साहित्य पंजाब में भी होने की आशा की जाती है। लाहौर का हिन्दी समाज हिन्दी के प्रसार में अपनी लगातार बैठकों द्वारा अच्छा यत्न कर रहा है।

इस वर्ष अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन शिमला में सितम्बर मास में होगा। इस स्वर्ण-अवसर से हमें लाभ उठाना चाहिये और प्रयत्न करना चाहिये कि जिससे हिन्दी पंजाब में स्थायी रूप ग्रहण करती हुई उन्नति होवे। आशा है कि यह सम्मेलन इस प्रान्त में जातीयता और संस्कृति की हिन्दी द्वारा अच्छी उन्नति करने में समर्थ होगा। हिन्दी किस प्रकार पंजाब में सर्व प्रिय बन सकती है, ऐसी बातों पर विशेष सम्मेलन में विचार किया जावेगा। हम प्रत्येक हिन्दी प्रेमी से आशा करते हैं कि वे सम्मेलन से पूर्व अपने शुभ विचार इन आवश्यकीय विषयों पर हिन्दी पत्रों में लिखते रहें ताकि हिन्दी विस्तार का वायु-मंडल तैय्यार हो जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब में हिन्दी अवश्य बढ़ेगी पर इस समय यत्न करना प्रत्येक हिन्दी प्रेमी का कर्तव्य है। वह कर्तव्य वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन शिमला की स्वागत कारिणी के सदस्य बनकर निभा सकते हैं; चन्दा केवल ५) है।

रामगोपाल गुप्त,
संयुक्त प्रधान मन्त्री
अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन
२७ वाँ अधिवेशन, शिमला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

[समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजने की कृपा करें।]

—सम्पादक

फूल मंजरी तथा अन्य प्रकाशित ग्रंथ—सम्पादक श्री० पं० व्रज-किशोर मिश्र एम० ए०।

प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित करके मिश्र जी ने हिन्दी साहित्य का जो हित किया है वह प्रशंसनीय है। इस जिल्द में ६ प्राचीन कवियों के ग्रंथ हैं जिनकी नामावलि इस प्रकार है

१—फूल मंजरी—मतिराम कृत
२—बारवधू विनोद—कालिदास त्रिवेदी कृत
३—अलंकार चन्द्रोदय—रसिक सुमति कृत
४—भूपति सतसई—गुरुदत्त सिंह भूपति कृत
५—नवीन संग्रह - रहीम मतिराम कृत और नवीन कवि संगृहीत
६—काव्याभरण—चन्दन कृत

उपर्युक्त ग्रंथ यद्यपि मिश्र जी के पूज्य पिता श्री० पं० कृष्ण बिहारी मिश्र द्वारा सम्पादित साहित्य समालोचक में प्रकाशित हो चुके थे किन्तु समालोचक के ग्राहकों को छोड़कर सर्व साधारण को सुलभ नहीं थे तथा उनका परिचयात्मक विवरण भी एकत्र प्राप्य नहीं था। इस ग्रंथ के द्वारा मिश्र जी ने इस कमी को पूरा कर दिया है। इन ग्रंथों को हिन्दी संसार को समर्पित करने का सर्व प्रथम श्रेय मिश्र जी को ही है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

फूल मंजरी ग्रंथ के लेखक के विषय में बहुत वाद विवाद रहा है। प्रायः लोग इसके रचयिता काई दूसरे ही मतिराम को मानते हैं किन्तु मिश्र जी ने ऐतिहासिक युक्ति पूर्वक इसको महाकवि मतिराम ही कृत प्रमाणित किया है जो अयुक्त नहीं प्रतीत होता है। वास्तव में शिथिल होते हुए भी फूल मंजरी की रचना सरस है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारवधू विनोद का नाम खोज रिपोर्ट में वधू विनोद ही मिलता है किन्तु मिश्र जी की प्रति का नाम जैसा वे स्वयं कहते हैं, बारवधू विनोद है। संभवतः यह इसी कारण है कि इसमें बारवधू वर्णन की प्रमुखता है। मिश्र जी ने इस ग्रन्थ के पिंगल पर विशेष प्रकाश डाला है

अलंकार चन्द्रोदय किस प्रकार संस्कृत ग्रन्थ कुवलयानन्द के आधार पर बना है, यह मिश्र जी के सदृश भावों के आधार से स्पष्ट हो गया है।

भूपति सतसई के रचयिता अमेठी के राजा गुरुदत्तसिंह भूपति हैं। मिश्र जी ने 'बंधन गोतियों' की उत्पत्ति पर ऐतिहासिक प्रकाश डाला है और इसी प्रकार भूपति जी के पूर्वजों का भी कुछ विवरण दिया है। कविता की समालोचना में मिश्र जी ने सरस दोहों का चयन किया है जो बड़ा ही सुन्दर है। वास्तव में कहीं कहीं पर भूपति जी ने कमाल किया है और उनके दोहे बिहारी की टक्कर के कहे जा सकते हैं। मिश्र जी की राय में कविवर कालिदास त्रिवेदी भी अमेठी के राजवंश के आश्रित थे क्योंकि उनके पुत्र कवीन्द्र जी बराबर वहीं रहे थे। बहुत सम्भव है कि यह सत्य हो। आशा है मिश्र जी इस विषय पर कुछ अधिक प्रकाश डालने की कृपा करेंगे।

नवीन संग्रह के रचयिता रहीम और मतिराम हैं। इसके संग्रहकार के विषय में भी बड़ा मतभेद है। याज्ञिक जी ने इस विषय पर अपनी रहीम-रत्नावली की भूमिका में विस्तृत विवेचना की है। मिश्र जी इस ग्रन्थ को नवीन कवि संगृहीत मानते हैं। ये नवीन नाभा के राजकवि थे। वास्तव में यह बात उचित जान पड़ती है किन्तु यह विषय विचारणीय है।

काव्याभरण कविवर चन्दन क रचना है और चन्द्रालोक के आधार पर रचित है। यह बात सदृश भावों द्वारा स्पष्ट है। मिश्र जी ने कविवर चन्दन का जो सवैया अपने परिचयात्मक लेख में उद्धृत किया है वह बड़ा ही सुन्दर है और मिश्र जी के कविता प्रेम का परि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चायक है। हम उसे यहां उद्धृत कर देने का लोभ संवरण नहीं कर सकते:—

ब्रजबारी गँवारी दै जानैं कहा,
यह चातुरता न लुगायन मैं,
पुनि बारिनी जाति अनारिनी है,
रुचि एती न चन्दन नायनि मैं।
छबि रङ्ग सुरङ्ग के बिन्दु बने,
लगे इन्दु बधू लघुतायन मैं,
चित जो चेहदी यकिसी रेहदी,
केहदी मेहदी इन पायन मैं॥

यद्यपि ग्रन्थ के कुछ भाग की छपाई आदि अस्पष्ट और भद्दी हो गई है और छापे की भी अशुद्धियाँ वर्तमान हैं किन्तु ये बातें विशेष महत्व नहीं रखतीं। आशा है अगले संस्करण में ये सब सुधार दी जायँगी।

मिश्र जी ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित करके हिंदी संसार की एक ठोस सेवा की है और उनके पूर्वजों की हिन्दी संसार के प्रति जो सेवाएँ कर रही हैं उनको देखते हुए यह स्वाभाविक ही है। हमको आशा है कि भविष्य में मिश्र जी अपने विस्तृत पुस्तकालय की सहायता से—जो इसी प्रकार के अप्रकाशित ग्रन्थों से परिपूर्ण है—हिन्दी संसार की सेवा करते रहेंगे।

स०

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय दृष्टिकोण

१—यह प्रसन्नता की बात है कि मांडले (बर्मा) में एक हिन्दी-प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई है। जिसका विशेष उद्देश्य 'बर्मा में हिन्दी प्रचार करना' होगा। इस सम्बन्ध में श्रीयुत लछमनदास जी वर्मा के सभापतित्व में ता० १७ जुलाई १९३८ को आर्य समाज मांडले में एक सभा हुई थी। श्री वर्माजी ने कहा "चाहे बर्मा में भारतवर्ष से एक आदमी भी न आए मगर जब तक बर्मा में एक भी बौद्ध अनुयायी रहेगा तब तक बर्मा निवासियों का भारत एक तीर्थ तो रहेगा ही। ऐसी हालत में हर एक बर्मा निवासी का कर्तव्य है कि वह हिन्दी भाषा सीखे।

.....मुझे तो अफ़सोस होता है कि हिन्दू जाति ने कभी भी इसके परिणाम को नहीं सोचा—अगर हिन्दू जाति अपने अंग बौद्ध अनुयायियों को अपनी भाषा का ज्ञान कराकर अपने मन का हाल उनको बताती और स्वयं उनके विचार सुनती तो आज यह दुष्परिणाम न होता जो दोनों जातियों के बीच में फैला हुआ है।

चाहे जिस उद्देश्य से बर्मा में हिन्दी प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई हो, हम ऐसी संस्था का अभिनन्दन करते हैं और आशा करते हैं कि उस सभा से हिन्दी का प्रचार होकर हमारी भाषा और संस्कृति का विस्तार होगा।

२—अहमदाबाद आयुर्वेदिक फ़ारमेसी एसोसियेशन के सेक्रेटरी श्री गोपीनाथ गुप्त ने हमारे पास इस आशय का पत्र भेजा है कि बम्बई सरकार ने मद्य-निषेध प्रगति को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए आयुर्वेद के आसवों पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया है। आयुर्वेद के अनुसार आसव तो केवल ओषधि के रूप में ही प्रयुक्त होते हैं और उनमें मादकता की मात्रा भी नहीं होती। इस प्रतिबन्ध से हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयुर्वेद की ओषधियों के निर्माण में बाधा पड़ेगी। जो विद्या लुप्तप्राय होती जा रही है, उसके पुनरुद्धार का मार्ग एकदम ही बन्द हो जावेगा। अतः इस प्रकार का प्रतिबन्ध आयुर्वेद के लिए किसी प्रकार भी हितकर न होगा। हम बम्बई सरकार से प्रार्थना करेंगे कि वह इस प्रश्न पर अधिक गंभीरता से विचार करे।

३—आगामी श्रावणी पूर्णिमा, ११ अगस्त ३८, वृहस्पतिवार से पंडित लक्ष्मीधर वाजपेयी के सम्पादकत्व में सचित्र राष्ट्रमत साप्ताहिक प्रकाशित होगा। वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित सिर्फ़ २) रु०, छै महीने के लिए १।) मनीआर्डर से भेजना होगा। पत्र का उद्देश्य निर्भीकता-पूर्वक "भारत के विभिन्न दलों का राष्ट्रीय दृष्टि से सामञ्जस्य" और "पूर्ण स्वराज्य के लिए ब्रिटिश साम्राज्यशाही से संघर्षण" करना होगा। हम अपने सहयोगी की सफलता चाहते हैं।

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियमावली

१—सम्मेलन पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होगी।

२—हिन्दी सा० स० के आदर्शों की पूर्ति में सहायक होना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

३—पत्रिका का वार्षिक मूल्य १) तथा एक अङ्क का =) होगा।

४—पत्रिका के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार साहित्य मन्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के पते से करना चाहिए।

५—पत्रिका-सम्बन्धी पत्र-व्यवहार में जवाब के लिए टिकट आने चाहिए अन्यथा आवश्यक, अनावश्यक का विचार कर पत्रोत्तर दिया जायगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२९

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा
प्रकाशित पुस्तकों की सूची

१ सुलभ-साहित्य-माला:--

१ भूषण ग्रन्थावली २) ११ हिन्दी-भाषा सार ।।।)
२ हिन्दी साहित्य का सं० इतिहास ।।) १२ सूरदास की विनय पत्रिका =)
३ भारत गीत =) १३ नवीन पद्य संग्रह ।।।)
४ राष्ट्र भाषा ।।) १४ कहानी-कुञ्ज ।।=)
५ शिवा बावनी =) १५ बिहारी संग्रह =)
६ सरल पिंगल) १६ कवितावली १)
७ भारतवर्ष का इतिहास २) १७ सुदामा चरित्र ।)
८ ब्रजमाधुरी सार ३) १८ कबीर पदावली ।।।=)
९ पद्मावत पूर्वार्द्ध १) १९ हिन्दी गद्य निर्माण १।।)
१० सत्य हरिश्चन्द्र ।-) २० हिन्दी साहित्यकी रूप रेखा ।)
२१ सती कर्णाकी ।)

२ साहित्य रत्नमाला

२२ हिन्दी पर फ़ारसी का
१ अकबर की राज्य व्यवस्था १) प्रभाव ।।=)

३ वैज्ञानिक पुस्तक माला

२३ पार्वती मङ्गल ।)
१ सरल शरीर विज्ञान ।।), ।।।) २ प्रारम्भिक रसायन १)

४ बाल साहित्य माला

३ सृष्टि की कथा १)
१ बाल पद्य रत्न ।।) २ वीर सन्तान ।=)

५ ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ १६) ३ बिजली =)

६ विविध पुस्तकें

१ महात्मा गाँधी के निजी पत्र ।-) ५ संजीवनी ।-)
२ टालस्टाय के विचार ।-) ६ नीति दर्शन ।।।)
३ इतना तो जानो ।-) ७ लाजपतराय की
४ सनयाट सेन ।) जीवनी ।।।)

मुद्रक—गिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी-साहित्य प्रेस, प्रयाग।
प्रकाशक—साहित्य मंत्री, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग १२ } फाल्गुन, संवत् १९८१ { अङ्क ७

वसन्तोत्सव

खेलत बसंत राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुर-समाज॥
सोहैं सखा अनुज रघुनाथ साथ। झोलिन्ह अबीर, पिचकारि हाथ॥
बाजहिं मृदंग डफ ताल बेनु। छिरकैं सुगंध-भरे मलय-रेनु॥
उत जुवति-जूथ जानकी-संग। पहिरे पट-भूषन सरस रंग॥
लिए छरी बेंत सोंधैं बिभाग। चाँचरि झूमक कहैं सरस राग॥
नूपुर-किंकिनि-धुनि अति सोहाइ। ललना-गन जब जेहि धरइँ धाइ॥
लोचन आँजहिं फगुआ मनाइ। छाँड़हिं नचाइ हाहा कराइ॥
चढ़े खरनि बिदूषक स्वाँग साजि। करैं कूटि, निपट गइ लाज भाजि॥
नर-नारि परसपर गारि देत। सुनि हँसत राम भाइन समेत॥
बरसत प्रसून बर-बिबुध-बृन्द। जय जय दिनकर-कुल-कुमुद-चंद॥
ब्रह्मादि प्रसंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुलसिदास॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतों की होली

(होली)

हमरी उमिरिया होरी खेलन की,
पिय मोसों मिलि के बिछुरि गयो हो ॥
पिय हमारे, हम पिय की पियारी,
पिय बिच अंतर परि गयो हो ॥
पिया मिलैं तब जिऊं मोरी सजनी,
पिय बिन जियरा निकरि गयो हो ॥
इत गोकुल उत मथुरा नगरी,
बीच डगर पिय मिलि गयो हो ॥
'धरमदास' बिरहिनि पिय पाये,
चरन कँवल चित गहि रहो हो ॥१॥

होरी पिया बिन मोहिं न भावै, घर आँगन न सुहावै ॥
दीपक जोय कहा करूं हेली, पिय परदेस रहावै।
सूनी सेज जहर ज्यूं लागै, सिसक सिसक जिय जावै,
नींद नैन नहिं आवै ॥
कब की ठाढ़ी मैं मग जोऊं, निसिदिन बिरह सतावै।
कहा कहूं, कछु कहत न आवै, हिवड़ो अति अकुलावै,
पिया कब दरस दिखावै ॥
ऐसा है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावै।
वा बिरियां कब होसी मोकूं, हँस करि निकट बुलावै।
मीरा मिलि होरी गावै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हौं तो खेलौं पिया सँग होरी।
दरस-परस पतिबरता पिया की, छबि निरखत भई बौरी॥
सोरह कला सँपूरन देखौं, रबि ससि भे इक ठौरी।
जबतें दृष्टि पखो अबिनासी, लागी रूप-ठगौरी॥
रसना रटत रहति निसि बासर, नैन लगे इहि ठौरी।
कह 'यारी' भक्ती करु हरि की, कोई कहै सेा कहौ री॥

सतगुरु सँग होरी खेलो, अनहद तूर बजाई॥
काया-नगर में होरी खेलो, प्रेम कै परल धमारी।
पाँच पचीस मिलि चाचरि गावहिं, प्रभुजी की बलिहारी॥
सहज कै फाग पर्‌यो निसि बासर, भरि छूटै पिचुकारी।
नाद-बिंदहीं गांठि परी जब परलि परसपर मारी॥
तारी दै दै भाँवरि नावहिं, एकतें एक पियारी।
तत्त अबीर उड़ावत कर धरि, काहू कोउ न सँभारी॥
अब खेलो मन महा मगन है, तन मन सर्बस वारी।
कह 'गुलाल' हम प्रभु सँग खेलल, पूजलि आस हमारी॥

चिन्ह

इस अनन्त पथ के कितने ही, छोड़-छोड़ विश्रामस्थान
आये थे हम विकल देखने नव वसन्त का सुन्दर भान॥
मानवता के निर्जन वन में जड़ थी प्रकृति, शून्य था व्योम।
तपती थी मध्यान्ह-किरण सी प्राणों की गति लोम विलोम॥
आशा थी परिहास कर रही, स्मृति का होता था उपहास।
दूर क्षितिज में जाकर सोता था जीवन का नव उल्लास॥
द्रुत गति से था दौड़ लगाता, चक्कर खाता पवन हताश।
विह्वल सी थी दीन वेदना, मुँह खोले मलीन अवकाश॥
हृदय एक निःश्वास फेंक कर खोज रहा था प्रेम-निकेत।
जीर्ण काण्ड वृक्षों के हँस कर रूखा सा करते संकेत॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिखर चुकी थी अम्बर तल में, सौरभ की शुचितम सुख-धूल।
पृथ्वी पर थे विकल लोटते शुष्क पत्र मुरझाये फूल॥
गोधूली की धूसर छवि ने चित्रपटी ली सकल समेट।
निर्म्मल चिति का दीप जलाकर छोड़ चलो यह अपनी भेंट॥
मधुर आँच से गला बहावेगा शैलों से निर्झर लोक।
शान्ति सुरसरी की शीतल जल-लहरी को देता आलोक॥
नव यौवन की प्रेम-कल्पना, और विरह का तीव्र विनोद।
स्वर्ण रत्न की तरल कान्ति, शिशु की स्मिति या माता की गोद॥
इसके तल के तम अञ्चल में, इनकी लहरों का लघु मान।
मधुर स्मिति से अस्तव्यस्त हो, हो जायगी फिर अवसान॥

जयशंकर प्रसाद

अनुराग-वाटिका

पद

चलु भमरी! जहँ मुकुलित नूतन प्रेम-सरोज-कली।
ललकि-ललकि करु पान परम-पद-रस, रसराज लली!
जहँ निकुंज सुख-पुंज बेलि चहुँ, मंजुल केलि-थली।
बहति मोद-मलयानिल नित नव रति-रस-रंग-रली॥
मुक्ति-मानसर बिच बिहरति अति मन-मराल-अवली।
गूँजत कल कलिकान बैठि जहँ पुलकित मत्त अली॥
उदित कोटि रवि नित, निकुंज सो अमरत-फलनि-फली।
छाँड़ि बिषय-बन नीरस एरी! धरि लै नेह-गली॥ १॥

हौं अनुराग-रँगीली तेरी।
मोल लई बिन दामनि की पिय, तो चरननि की चेरी॥
चाखि-चाखि कै चख-प्यालें भरि तेरी नैन-खुमारी।
भई बावरी बन-बन डोलति बिरह-बिथा की मारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबतें तेरे स्याम-रंग में यह दृग-कोर रँगाई।
तबहीतें छवि-छाक-छकी हौं जोरि सनेह-सगाई॥
तू सिरमौर प्रानधन मेरो, हौं तेरी पग-धूरी।
यह अभिमान जाय जनि कबहूँ मेरी जीवनमूरी॥
नैक दरस-रस दै पियाय पिय, ठाढ़ी कबतें दासी!
ढूंढ़ेहू पुनि नाहिं मिलैगी मो-सी प्रेम-पियासी॥

❀❀❀

कैसेहुँ जो अपबस करि पाऊँ।
जीवनधन, तौ तुम्हैं खोलि हिय जिय कौ मरम सुनाऊँ॥
या उर अंतर प्रेम-कुटी रचि पल-पाँवड़े बिछाऊँ।
भाव-सेज सजि अति मृदु, तापै नाथ! तुम्हैं पौढ़ाऊँ॥
तहँ पलोटि पद-पदुम तुम्हारे ललकि-ललकि बलि जाऊँ।
लाय-लाय सीतल रज नैननि जिय की जरनि सिराऊँ॥
बूड़ि तुम्हारे स्याम-रंग मधि मानस-पटहिं रँगाऊँ।
सहज पखारि पुरातन कारिख पल में धवल बनाऊँ॥
ललित त्रिभंगी गति नट नागर! डमँगि-डमँगि उर ध्याऊँ।
कठिन कुटिल गति या चित की प्रभु कोमल सरल सधाऊँ॥
बँधिकै तुम्हरी अलक-डोरि सों हरि, भव-फंद छुड़ाऊँ।
लहि मुसकान-माधुरी मोहन, पट नव रसनि भुलाऊँ॥
सींचि-सींचि तुव कृपावारि नित करम-कुखेत सुखाऊँ।
लाल, तुम्हारे चपल चखनि बिच रमि इत-उत नहिं धाऊँ॥
वेद-वाद ज्ञानादि बादि कै प्रेम-प्रथा प्रगटाऊँ।
लै कर बीन, लीन ह्वै तुव छबि, नित नव गुन-गन गाऊँ॥

❀❀❀

तुमसों जबतें लगन लगी।
तबतें, ना जानें, केहि रँग में सुरत हमारि रँगी॥
झरत रहत मद इन अँखियनतें, रूप-दवारि जगी।
हिलग-रँगीली आय समानी मूरति प्रेम-पगी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीठी-सी रसमसी कसक इक हिय बिच रहति खगी।
सुध बुध नाहिं कछू तन मन की ऐसी ठगनि ठगी॥

हेरत कहा रँगीले मो तन ?

चाखि रही तेरो ही प्यारे, रूप-माधुरी-रस स्यामलघन॥
तूही तो पिय चख-चकोर हित डारत है मुख-चंद-सुधा-कन।
क्यों न प्रेम-प्यासी यह दासी जावै या सुख पै बलि छन-छन॥

(क्रमशः)

वि० ह०

अन्योक्तियां

(कुसुम)

कुसुम, लखिकैं यह दसा तुम्हारी।
आवतु तरस सुमिरि वै बातें, होतु दुक्ख अति भारी॥
सुभग सुगन्धमयी शोभा अरु निरखि तुम्हारो साज,
आवत हुते नित्य नव मधुकर, तुमहिं मिलन के काज॥
निरखि तुम्हारी गिरी दशा अब करत न मधुकर प्रेम।
सब ही सुख-सम्पति के साथी, यही जगत को नेम॥
आवति उक्ति यही पुनि मन में, निरखि तुम्हें मुरझानो।
जाको है उत्थान पतन हू वाको निहचै जानो॥

(कमल)

कमल, यह कैसी उलटी रीति !
अतिसय रुचिर ससिहिं जो तजिकैं करत भानु सों प्रीति॥
कहा भयो जग माहिं भये तें सुन्दर रूप तुम्हारो।
जब है बन्यो नित्य यह मधुकर मीत तुम्हारो कारो॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि पंकहि सों जन्म तुम्हारो, प्यारी तुमहिं न रैन ॥
सांच मांच जो लिख्यो भाल में, मेटनहारो है न ॥

(मृग)

सुनि सुनि कै मीठी तान ।
कहा प्रसन्न होत हौ हे मृग, जानि सुरीलो गान ॥
जाके गान सुनत तुम बबकत, लैहै प्रान तुम्हारे ।
तुमहि चित्र सम सुनत देखिके खैंचत तीर संभारे ॥
दुष्ट न कबहुँ दुष्टता छाँड़त, करत कपट की घातैं ।
तुम स्वभाव के भोरे भारे, का जानौं प बातैं ॥
तुमहिं भुलावन हेतु सुनावतु तान लुभावन हारी ।
तुम चौकड़ी भूलि जो जैहौ, लैहै जान तुम्हारी ॥

(व्याध)

व्याध, तोहि लागति नैक न लाज ।
क्यों मृग सरिस सरल चित हनिकैं, करतु पाप कौ काज ॥
का सामर्थ्य-हीन या मृग पै, रे धिक ! जोर जनावै ।
क्यों या भोरे भारे लगि तू, कपट अनेक बनावै ॥
जो कछु जोर होइ मृगपति कों क्यों नहिं जाइ दिखावतु ।
जानि निबल सीधे-साधे कों, पुनि पुनि आइ सतावतु ॥
तेरो ही का दोष, जगत में सब की ऐसी रीति ।
निर्बल जन कों जाइ सतावत, करत सबल सों प्रीति ॥

चतुर्वेदी लक्ष्मीनिधि विशारद, हिन्दी-प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-विद्यापीठ के लिए शिक्षण-पद्धति

(गतांक के आगे)

इतिहास—शिक्षकों को सच्चे और अच्छे राष्ट्रीय इतिहास-ग्रन्थ पढ़ कर लड़कों को अधिकांश ज़बानी इतिहास सुनाना चाहिये। पोथी पढ़ा कर याद कराने की अथवा परीक्षा के लिये रटवाने की प्रथा निकम्मी है। अभी इतिहास-सम्बन्धी अच्छी पोथियाँ बनी नहीं हैं। हर कक्षा के उपयुक्त ग्रन्थ भी नहीं हैं। जो हैं, वे प्रायः नौकरशाही के मतलब के इश्तिहार के साथ हैं जिनसे इतिहास का उद्देश्य अराष्ट्रिय हो जाता है। उनका पढ़ना-पढ़ाना राष्ट्र की आत्म-हत्या के उपाय हैं। सच्ची और अच्छी शिक्षा के लिये उनका बहिष्कार आवश्यक है। ज्ञानमंडल के छपे भारतवर्ष के इतिहास को राष्ट्रिय इतिहास का नमूना समझना चाहिये। शिक्षकों को पुराणादि अनेक ग्रन्थों से अध्ययन कर के, श्रेणी के परिमाण के अनुसार, क़िस्से-कहानी के रूप में ही इतिहास बतलाना चाहिये।

भूगोल—भूगोल की पढ़ाई में अङ्गरेज़ी नामों के बदले अपने नाम बतलाने चाहिये। छोटे बच्चों को वही भौगोलिक परिभाषा बतलानी चाहिये जो उन के अनुभव में आयी हो या शीघ्र ही आ सके। शिक्षक पुस्तकों से ज्ञान सम्पादन करे, परन्तु लड़कों को भूगोल कहानी कथा के रूप में बताना चाहिये। स्थानों का नाम रटाने के बदले उन स्थानों की विशेषता रोचक रीति से बताना भूगोल को हृदय पर अधिक अंकित कर देता है।

गणित—जो गणित सम्प्रति सिखाया जाता है उस का रूप अलौकिक होता है। साधारणतया केवल व्यवहार की दृष्टि से ही इन श्रेणियों में गणित की शिक्षा होनी चाहिये। लक्ष्य व्यवहार-गणित ही होना चाहिये। महाजनी गुरु और जबानी हिसाब का ऐसा अभ्यास कराना चाहिये कि बालक मुनीबी या कारिन्दगरी के काम के लिये तय्यार रहे। ज़मींदार के कारिन्दे को पैमाइश जानने की भी ज़रूरत पड़ा करती है। पटवारी को तो सिखाया ही जाता है। क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

सम्मेलन
की
मुख पत्रिका

भाग १३ अङ्क ८, चैत्र सं० १९८३ वि०

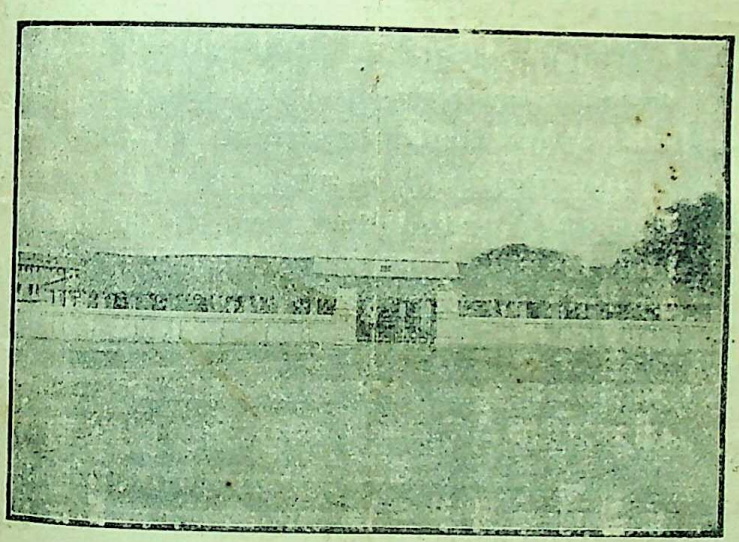

सम्पादक
भगीरथप्रसाद दीक्षित 'विशारद'

प्रकाशक
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

वार्षिक मूल्य २) प्रत्यंक =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

१—प्रार्थना—[श्रीयुत वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल' प्रयाग] ... ३०५
२—पद—[महात्मा सूरदास] ३०६
३—हिन्दी-पत्रों की हीनावस्था—[श्रीयुत रुद्रदत्तजी बी० ए०] ३०७
४—हिन्दी-कविता और उसके अभ्यास की आवश्यकता—[श्रीयुत पं० गणेशी लाल सारस्वत] ३०९
५—चार्वाक—[श्रीयुत भरद्वाज] ३१५
६—हरप्रसाद कवि—[भगीरथ प्रसाद दीक्षित] ... ३१८
७—सरसुति कवि—[श्रीयुत अयोध्या प्रसाद शर्मा 'विशारद'] .. ३२३
८—क्या गोस्वामी तुलसीदास जी के सोरठों में भूल है—[श्रीयुत राम जी वाजपेयी 'वसन्त'] ३३०
९—लाहौर में प्रान्तीय हिन्दी-साहित्यसम्मेलन की तैयारियां—[श्रीयुत म० हंसराज का भाषण] ३३६
१०—संपादकीय—[वज्रपात पर वज्रपात; वज्रपात; हिन्दी-सेवियों पर दैवीकोप; बाबूजी पर आपत्ति; स्टाम्पों में हिन्दी; बोधी कवि पर विद्वानों की राय; मध्य-प्रदेशीय, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन; हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन; भरतपुर, कान्य-कुब्ज सभा और हिन्दी; जीवन के चिह्न; देवनागरी पर घोर अत्याचार; १, २] ३४१
११—हिन्दी-जगत्—[हर्ष समाचार; मद्रास में हिन्दी; विहार प्रांतीय कवि-सम्मेलन; बम्बई में राष्ट्र-भाषा के लिए उद्योग; राजस्थान में प्रचार कार्य; विहार प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन] ... ३५०
१२—पुस्तकावलोकन—[हिन्दुत्व; चित्र-माला द्वितीय खंड; मनोरमा; भारतवर्ष; बालक; काव्य सुधाधर; शृंगार; देश] ... ३५२
१३—नम्र-निवेदन—[श्रीयुत साहित्य-मंत्री] ... ३५६
१४—आवश्यकता ३५७

प्रकाशक—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।
मुद्रक—दीवानवंशधारीलाल हिन्दी-साहित्य-प्रेस, इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुलभ-साहित्य-माला की पुस्तकें

हिन्दी-साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

[लेखक—श्री० मिश्रबन्धु]

हिन्दी भाषा और साहित्य का क्रमशः विकास कैसे हुआ, उसने कौन-कौन से रूप पकड़े, किन-किन बाधाओं एवं साधनों का उसे सामना करना पड़ा, वर्त्तमान परिस्थिति क्या है, आदि गम्भीर विषयों का पता इस पुस्तक से भलीभाँति चलता है। अपने ढङ्ग की यह पहली पुस्तक है। "मिश्रबन्धु-विनोद" रूपी महासागर से मथनकर यह इतिहासामृत निकाला गया है। यह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा में स्वीकृत है। तृतीय संस्करण, पृष्ठ-संख्या १०८, मूल्य ।=)

भारतगीत

[लेखक—पं० श्रीधर पाठक]

पाठकजी की रसमयी रचना से किस सहृदय साहित्य-रसिक का हृदय रसप्लावित न होता होगा? आपकी गणना वर्त्तमान हिन्दी-साहित्य के महारथियों में है। आपकी राष्ट्रीय कविता नव-युवकों में जातीय जीवन सञ्चार करनेवाली है। प्रस्तुत पुस्तक पाठकजी के उन गीतों का संग्रह है, जिन्हें उन्होंने समय-समय पर स्वदेश-भक्ति की उमङ्ग में आकर लिखा है। इसकी प्रस्तावना साहित्य-मर्मज्ञ बाबू पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने लिखी है। यह पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के बड़े काम की है। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य =)

भारतवर्ष का इतिहास [प्रथम खण्ड]

[लेखक—श्री० मिश्रबन्धु]

यह इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन काल से सम्बन्ध रखता है। इसमें पूर्व वैदिक काल से सूत्र काल तक अथवा ६०० संवत् पूर्व से ५०० संवत् पूर्व तक की घटनाओं का उल्लेख है। अबतक

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी में भारतवर्ष का सच्चा इतिहास एक भी नहीं था। विदेशियों के लिखे हुए अपूर्ण और पक्षपातयुक्त इतिहासों के पढ़ने से यहाँ के नवयुवकों को अपने देश के प्रति अश्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। ऐसे समय में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मिश्रबन्धुओं ने बड़ा काम किया है। मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय में यह पुस्तक निर्दिष्ट है। जिल्दवाली पुस्तक का, जिसकी पृष्ठ-संख्या ४०६ है, मूल्य केवल १॥) है।

राष्ट्रभाषा

[सम्पादक—श्री 'भारतीय हृदय']

कुछ समय हुआ, महात्मा गांधी ने यह प्रश्न उपस्थित किया था कि, क्या हिन्दी राष्ट्रभाषा हो सकती है? इसके उत्तर में भारत के प्रत्येक प्रान्त के बड़े-बड़े विद्वानों और नेताओं ने पक्षपात-रहित सम्मतियाँ दी थीं कि निःसन्देह हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होने योग्य है। उन्हीं सब अमूल्य सम्मतियों का संग्रह इस पुस्तक में किया गया है। इसके विरोधियों का भी यथेष्ट खण्डन हुआ है। इस विषय के व्याख्यानों का भी इनमें सङ्कलन कर दिया गया है। हिन्दीभाषा के प्रेमियों के लिए यह पुस्तक प्राणस्थानीय नहीं तो क्या है? पृष्ठ-संख्या २००, मूल्य ॥)

शिवा-बावनी

महाकवि भूषण के वीररस सम्बन्धी ५२ कवित्तों का उत्तम संग्रह। इन कवित्तों के टक्कर के छन्द शायद ही वीररस के साहित्य में अन्यत्र कहीं मिलें। महाराष्ट्रपति शिवाजी की देशभक्ति और सच्ची वीरता का यदि चित्र देखना हो, तो एक बार इस छोटी सी पोथी का पाठ अवश्य कर जाइये। शब्द एवं भाव-काठिन्य दूर करने के लिये कवित्तों की सुबोधिनी टीका, टिप्पणी और अलङ्कार आदि साहित्य से सम्बन्ध रखनेवाली आवश्यक बातों का इसमें उल्लेख कर दिया गया है। साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा परीक्षा में यह पुस्तक रखी गयी है। पृष्ठसंख्या ५४, मूल्य =)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरल पिङ्गल

ले०— { श्री पुत्तनलाल विद्यार्थी विशारद
श्री लक्ष्मीधर शुक्ल विशारद

इस पुस्तक में पिङ्गलशास्त्र के गूढ़ रहस्यों को सरल और सुन्दर भाषा में समझाने का प्रयत्न किया गया है। छन्दों के उत्तम उदाहरण भी दिये गये हैं। अन्त में संस्कृत छन्दों का भी संक्षेप में दिग्दर्शन करा दिया गया है। यह पुस्तक सम्मेलन की प्रथमा-परीक्षा के साहित्य विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है पृष्ठ-संख्या ५८ मूल्य ।)

सूरपदावली (सटिप्पण)

श्री सूरदासजी के १०० अत्युत्तम पदों का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ।)

भारतवर्ष का इतिहास [द्वितीय खण्ड]

[लेखक—श्री मिश्रबन्धु]

इसमें ५०० संवत् पूर्व से १२५० संवत् तक की घटनाओं का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष के उत्थान-पतन के क्रम का पता इस पुस्तक से जैसा कुछ चलता है, यह पढ़ने से ही मालूम होगा। हिन्दू-समाज की उन्नति और अवनति, इस देश में स्वदेशी और विदेशी भावों का आविर्भाव तथा धार्मिक जीवन की महत्ता आदि जानने योग्य आवश्यक विषयों का ज्ञान इससे पूर्णतः प्राप्त हो सकता है। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा की इतिहास-विषयक पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। सुन्दर छपाई, कपड़े की जिल्द, पृष्ठ-संख्या ४४० मूल्य २।)

संक्षिप्त सूरसागर

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

सूरदासजी-रचित सूरसागर से ५०० पद-रत्न चुनकर इसमें एकत्र किये गये हैं। जहाँ तक हो सका है, कई प्रतियों से पदों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठ शुद्ध किया गया है। प्रत्येक पद की पाद-टिप्पणी भी लगा दी गयी है। अब तक सब के अनुशीलन करने योग्य सूरसागर का सुन्दर और सुलभ संस्करण नहीं निकला था। लोग इसके रसास्वादन के लिये लालायित हो रहे थे। सम्मेलन ने इस अभाव को दूर कर हिन्दी-साहित्य-रसिकों की पिपासा शान्त करने की यथाशक्ति चेष्टा की है। पुस्तक के अन्त में लगभग १०० पृष्ठ की सूरदासजी की जीवनी तथा काव्य-परिचय जोड़ा गया है। उनकी जीवनी की मुख्य मुख्य घटनाओं का पूरा-पूरा उल्लेख आगया है। पदों में आई हुई अन्तर्कथाएँ भी लिखी गयी हैं। यह पुस्तक हिन्दी-साहित्य सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा में स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ का जिल्ददार संस्करण, पृष्ठसंख्या ४२५, मूल्य २)

विहारी-संग्रह

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

कविवर विहारीलाल की सतसई से प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए यह छोटा सा संग्रह तैयार किया गया है। जहाँ तक सम्भव हुआ है, इसमें शृंगाररस के दोहों का समावेश नहीं किया गया है। किन्तु ऐसे दोहों का संग्रह किया गया है, जो बिना किसी सङ्कोच के बालक-बालिकाओं को पढ़ाये जा सकते हैं। पृष्ठ-संख्या ६४, मूल्य ≡)

ब्रज-माधुरी-सार

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

इस पुस्तक का विषय इसके नाम ही से प्रकट होता है। इसमें ब्रजभाषा की कविता का सार सङ्कलन किया गया है। इस संग्रह में चार विशेषताएँ हैं:—

(१) इसमें सूरदासजी से लेकर आधुनिक काल के स्वर्गीय सत्यनारायणजी तक की भावपूर्ण कविताओं का संग्रह किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२) इसमें कुछ ऐसे कवियों की रचनाओं का रसास्वादन भी कराया गया है जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुई थीं।

(३) इस ग्रन्थ में यथेष्ट पाद-टिप्पणियाँ लगा दी गयी हैं, जिनकी सहायता से साधारण पाठक भी लाभ उठा सकते हैं।

(४) इसके प्रारम्भ में प्रत्येक कवि का संक्षिप्त जीवनचरित और उसकी कविता की संक्षिप्त आलोचना भी की गई है।

पृष्ठसंख्या ६३२, मूल्य जिल्दवाले संस्करण का केवल २)

पद्मावत (पूर्वार्द्ध)

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन]

यह हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत का पूर्वार्द्ध है। इस भाग में पहले खण्ड से लेकर ३४वें खण्ड तक का समावेश हुआ है। सम्पादक महोदय ने इस ग्रन्थ में इतनी पादटिप्पणी लगा दी हैं कि अब इस प्राचीन काव्य का रसास्वादन करना प्रत्येक कविता-प्रेमी के लिए सुलभ हो गया है। अन्त में एक संक्षिप्त शब्द काश भी जोड़ दिया गया है। पृष्ठ-संख्या लगभग २००; मूल्य साधारण जिल्द का १) और जिल्दवाली का १।)

सूरदास की विनयपत्रिका

[सम्पादक—श्री वियोगी हरि]

यद्यपि 'विनय-पत्रिका' नाम का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ महात्मा सूरदासजी का नहीं है तथापि सूरसागर में विनय-सम्बन्धी जो पद मिलते हैं, उन्हीं के आधार पर सौ उत्तमोत्तम एवं मनोरम पदों का संकलन करके इसका 'विनय-पत्रिका' नाम दिया गया है। क्रम तुलसीदासजी की विनय-पत्रिका का रक्खा गया है। अन्त में संक्षिप्त शब्दार्थ भी दे दिया है। पृष्ठ-संख्या ७४, मूल्य केवल ≡)

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहित्य-रत्न-माला

१—अकबर की राज्य-व्यवस्था

[लेखक—साहित्य-रत्न श्री० शेषमणिजी त्रिपाठी, बी० ए०]

इसमें सम्राट अकबर की राज्य-व्यवस्था को बड़ा ही मनोहर चित्र अंकित किया गया है। अकबर के राज्य-काल में भारतीय समाज, धर्म-नीति तथा जीवन की क्या अवस्था थी, वर्तमान राज्य प्रणाली, तत्कालीन व्यवस्था के मुक़ाबले में कैसी है आदि बातों का पता इस पुस्तक से भली भाँति लगता है। इतिहास, राजनीति तथा अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत लाभदायक है। पृष्ठसंख्या २८०, मूल्य १)

२—हिन्दी-काव्य में नवरस

[लेखक—साहित्य रत्न श्रीयुत बाबू रामवित्थरिया]

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। यह पुस्तक लेखक ने सम्मेलन की उत्तमा परीक्षा देने के लिए निबन्ध (Thesis) रूप में लिखी थी। पुस्तक कितने महत्त्व की है, यह इसी से प्रकट है कि सम्मेलन की परीक्षा-समिति ने इसे मध्यमा परीक्षा के साहित्य विषय के पाठ्यग्रन्थों में चुना है। लगभग ३५० पृष्ठ की होगी। छप रही है। जल्द तैयार होगी।

सम्मेलन की अन्य पुस्तकें

सूर्य सिद्धान्त

[सम्पादक—श्री० इन्द्रनारायणजी द्विवेदी]

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य-सिद्धान्त अपने ढँग का एक ही है। इसे देखने से यह पता भली भाँति चल जाता है कि आर्यों ने उन सिद्धान्तोंका बहुत पहले साक्षात्कार कर लिया था, जिन्हें जानकर पश्चिमी पंडित आज डींग हाँक रहे हैं। इसमें खगोलविषयक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभी बातें आ गयी हैं। सौर जगत् का पूरा-पूरा विवरण इस अपूर्व ग्रन्थ में दरशा दिया गया है। इस पर संसार की प्रायः सभी भाषाओं में टीका-टिप्पणी हो चुकी है। हिन्दी में दो तीन और टीकाएँ मिलती हैं, पर उनसे ठीक-ठीक भाव समझ में नहीं आता। श्री द्विवेदीजी ने इसके गूढ़ से गूढ़ विषय भी सरल और स्पष्ट भाषा में समझाने की पूर्ण चेष्टा की है। मध्यमा के ज्योतिष विषय में यह स्वीकृत है। सजिल्द, पृष्ठ-संख्या २३२, मूल्य १।)

इतिहास

[ले०—स्वर्गीय श्रीविष्णु शास्त्री चिपलूणकर]

यह श्री चिपलूणकर जी के निबन्ध का अविकल है। इतिहास सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य बातें इसमें आ गयी हैं। यह पुस्तक सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा के इतिहास विषय की पाठ्य पुस्तकों में स्वीकृत है। मूल्य ≡)

हिन्दी-भाषा-सार

[सम्पादक—श्री लाला भगवानदीन
अध्यापक बाबूरामदास गौड़ एम० ए०]

हिन्दी में क्रमशः गद्य का विकास किस-किस प्रकार हुआ, इसका पता इस पुस्तक से चल सकता है। इसमें सुयोग्य सम्पादकों ने हिन्दी के प्राचीन उत्तमोत्तम गद्य लेखकों के चुने हुए लेख दिये हैं। नीचे टिप्पणी भी लगा दी है। गद्यात्मक निबन्धों का यह एक आदर्श संग्रह है। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। एण्टिक काग़ज़ पर सुन्दर छपाई, पृष्ठ-संख्या २००; मूल्य ।॥)

प्रथमालंकार-निरूपण

[ले०—साहित्याचार्य्य श्री चन्द्रशेखरजी शास्त्री]

प्रथमा परीक्षा के विद्यार्थियों के लिए अलंकार विषयक ज्ञान करा देने के लिए यह 'निरूपण' बड़े काम का है। अलंकारों के लक्षण और उनके उदाहरण बड़ी ही सरलता से समझाये गये हैं। प्रथमा परीक्षा में यह स्वीकृत है। मूल्य =)

पता—हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, पोस्टबाक्स नं० ११, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलकत्ते के नामी डाक्टर एस्० के० वर्म्मन का

कोला टानिक

(अफ्रिका देश के कोला फलसे बनी हुई पुष्टई)

पके शरीर में बल देने का व सूखे शरीर को हरा बनाने का दावा रखताहै। बहु हरिश्रम व अर्थ-व्यय से अनेक वर्षों तक सैकड़ों रोगियों द्वारा परीक्षित यह—

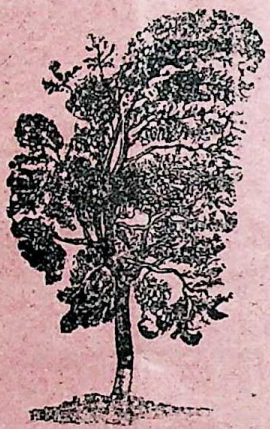

पुष्टकारक:—

"कोला टानिक"

फल भारत वर्ष भर में विख्यात है।

कोला टानिक से कलेजे की कमज़ोरी हौलदिल, धड़कन आदि मिटकर दिमाग़ पुष्ट होता है।

कोला टानिक

कड़ी मेहनत के बाद कोला टानिक पीने से थकावट मिटकर दिमाग़ तर हो जाता है। कोला, बालक, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी ख़ुशी से पी सकते हैं।

मूल्य ३२ ख़ुराक की पूरी एक शीशी का १।) डा० म० ।=)

केश-राज

अपनी अनुपम सुगन्ध व गुणों से निराला है। इससे बाल घुंघुरवाले, चमकीले, लम्बे व भौंरों की तरह काले हो जाते हैं।

केश-राज

सिर के लिए, बालों के लिए, आँखों के लिए मीठे सुगन्ध के लिए, दिमाग़ तरावट के लिए और सच्चे गुणों में सब तेलों का राजा है। मूल्य फ़ी शीशी १) एक रुपया, डा० म० ॥) आठ आने।

डा० एस० के० वर्म्मन, पोष्टबाक्स नं० ५५४, कलकत्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

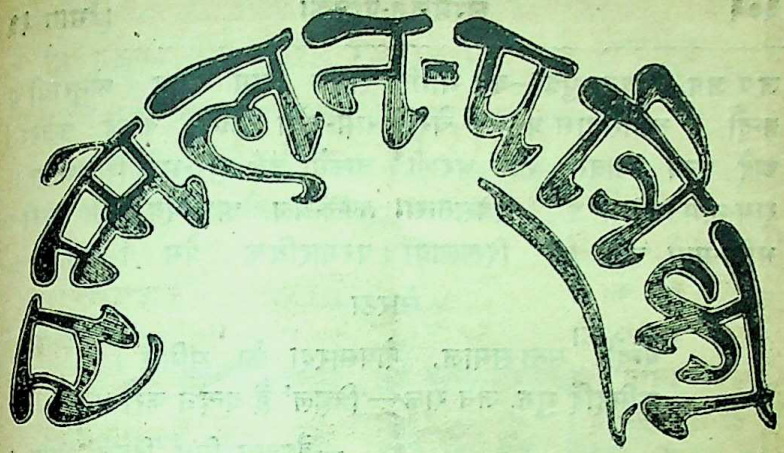

भाग १३ } चैत्र संवत् १९८३ वि० { अङ्क ८

प्रार्थना

दोहा

सर्व भूत परमात्मा—निराकार, साकार।
प्रथम ताहि पद-पद्म में—प्रणवहुँ बारम्बार॥

चौपाई

जय कमलापति जय जगदीश्वर। जगहित जन्म लियो धरणी पर॥
दुष्ट विनाश, भक्त-हितकारी। नर-तनु धरि धनु, गिरिवर-धारी॥
बन्दौं दसरथ अवध-भुआलू। नीति-मान, मतिमान, कृपालू॥
धन्य मातु जिन कोषहि जाये। राम सरिस-सुत गोद खिलाये॥
बन्दौं प्रणत-पाल दुःख-भंजन। जय जय जगत्कार रघुनन्दन॥
जय जय जगतमातु-वैदेही। तुअ समान को राम-सनेही॥
लछमन, धन्य! हरषि बन गयऊ। भ्रातृ-प्रेम-हित मुरछित भयऊ॥
बन मँह निसा, दिवस सम जानी। तव महिमा नहिं जाय बखानी॥
चौदह-भुवन, लोक-त्रय माहीं। तुअ समान भ्राता कोउ नाहीं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जय जय पवन पुत्र—बड़ भागी। सेवक राम नाम अनुरागी॥
बन्दौं तुलसिदास प्रभु चेरा। राम-कथा जग कीन्ह उजेरा।
अहै धन्य पावन वह धरणी। जन्म्यो जहँ हरि-भक्त-शिरोमणि॥
राम-नाम-महिमा बिसतारा। कलि-मल, अघ-भव मेटन हारा।
भक्ति-मार्ग जग को दिखलावा। परमारथिक प्रेम सिखलावा॥

सोरठा

बन्दौं सन्त-समाज, शेषसारदा को सुमिरि।
क्षमिहहिं गुरु, जन राज—'विह्वल' ह्वै बन्दन करौं॥

—वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल' प्रयाग

पद

नचत सुढंग, एएए, नचत सुढंग,
एनँद नंद बिंद्रावन यमुन तट, अमित मन मधु मद निमर्दन,
सघन कुञ्जन मञ्ज अभिनव, जलद सुन्दर अंग॥ १॥ नचत सुढंग०।

मन दीप्ति दामिनि दिपनि कारी, मुख सुधाकर मानहारी, कुटिल
भृकुटि, कटाक्ष संयुत चपल नयन कुरंग॥ २॥ नचत०

सँग गोपियन के बीच थिरकत, भूषण मणिमय किरण झलकत,
श्रवण कुण्डल गण्ड मंडित, शुभग वसन सुरंग॥ ३॥ नचत०

बिच बिच बिराजत श्याम, बिच बिच तरुणि शोभित गौरछवि
हमि, नील कमल सुवरण केतकि, माल रचत अनंग॥ ४॥ नचत०

संगीत उघटित मधुर पिकरव, गावहीं यश नारदादिक, सजत
नूपुर किंकनी कटि, बजत शुभग मृदंग॥ ५॥ नचत०

करतार औ मंजीर वांसुरि, मुरज वीन रबाब, ढप वाढंप हुड़क
उपंग, झांझरि खंजरी मुंह चंग॥ ६॥ नंचत०

नोट—सूरदास का यह पद अब तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ। श्री वियोगी-हरिजी की कृपा से प्राप्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तत तदिक दिक, दिक दिक दियक दिय, झांझ गिन गिन गिन गिन, थेई तता थेई तदिक दिग दिग दंग ॥ ७॥ नचत०

सुर गण विमानन चढ़े, ब्रह्मा रुद्र नारद छकत, पुलकत "सूर" जय जय जयति, जय जय जयति, नवल त्रिभंग ॥ ८॥ नचत सुढंग०

—महात्मा सूरदास

हिन्दी-पत्रों की हीनावस्था

इसमें सन्देह नहीं कि अब हिन्दी भाषा की सन्तोष-जनक उन्नति हो रही है; नित नये पत्रों के जन्म लेने का समाचार सुनाई पड़ता है; पिछले कुछ ही वर्षों में उसका समाचार-पत्र-सम्बन्धी अंश पहले की अपेक्षा बहुत कुछ पुष्ट हो गया है। जहां पहले कोई दैनिक नहीं था और, निकाला भी जाता था तो, चलता नहीं था; वहां अब ६।७ दैनिक पत्र सफलता-पूर्व्वक चल रहे हैं। अभी तीन वर्ष हुये, हमारी सब से बड़ी मासिक पत्रिका केवल ६४ पृष्ठों की निकलती थी और अब वह अवस्था उत्पन्न हो गई है कि इतनी पृष्ठ संख्या पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता। देश के विश्व-विद्यालयों में भी हिन्दी को आदर-पूर्व्वक स्थान मिला है, यह भी उन्नति-सूचक है। यहां पत्रों से सम्बन्ध रखने वाली उन्नति ही के सम्बन्ध में हम विचार करेंगे और यह दिखलाने की चेष्टा करेंगे कि हमारी सफलता अभी कितनी कम है और उसके कम होने के कारण क्या हैं?

हम हिन्दुओं के घरों में बहुत से बुज़ुर्गों का यह ख़्याल है कि लड़का पैदा होना आवश्यक है, वंश किसी न किसी तरह चलना चाहिए, फिर चाहे वह नालायक़ हो या लायक़, अगर लायक़ हो तो बहुत अच्छा, और अगर नालायक़ हो तो मजबूरी है, बेबसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। ठीक यही बात हमारे अख़बारों और मासिक पत्रों के विषय में भी है। हम यह देख कर सन्तुष्ट हैं कि १५० अथवा १०४ पृष्ठों के मोटे-ताज़े मासिक-पत्र निकल रहे हैं; उनकी चित्र-संख्या-वृद्धि को देखकर हम फूल के कुप्पा बन जाते हैं, पर इस तथ्य की ओर गंभीरता-पूर्वक ध्यान ही नहीं देते कि मोटे किन्तु पोपले पेड़ों की अपेक्षा पतले किन्तु ठोस पेड़ कहीं अच्छे हैं। हमारा आशय यह है कि पृष्ठ-संख्या की अधिकता तब तक सन्तोष-दायिनी नहीं हो सकती जब तक लेखों, कविताओं, गल्पों, सम्पादकीय-टिप्पणियों आदि का स्टैण्डर्ड ऊँचा नहीं होता।

प्रत्येक पत्र के सञ्चालक को दो बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक है। पहली बात यह कि पत्र के लिए अच्छा काग़ज़, अच्छी छपाई, अच्छे चित्रों आदि का सुप्रबन्ध है या नहीं; वह निश्चित तिथि पर प्रकाशित होकर पाठकों के पास पहुँच जाता है या नहीं; उसका अख़बार या मासिक पत्र अपने क्षेत्र के समस्त पत्रों से बढ़िया छपता है या नहीं। दूसरी बात यह कि पत्र का सम्पादकीय विभाग प्रौढ़ है या नहीं, सम्पादकों के ऊपर जनता की श्रद्धा है या नहीं।

हमारे अनेक पत्रों के सञ्चालक पत्र निकालने का विचार करते समय काग़ज का दाम, प्रेस की छपाई, टिकटों का मूल्य आदि जोड़ कर पत्र के मासिक व्यय का तख़मीना लगाते हैं। सम्पादक के वेतन तथा लेखकों के पुरस्कार को वे आवश्यक ख़र्च में सम्मिलित ही नहीं करते। वे बहुधा आनरेरी सम्पादकों से अपना काम चलाते हैं। वे इस बात को भूल जाते हैं कि सेवा-भाव की प्रेरणा से सञ्चालित पत्रों को ही यह अधिकार है कि वे किसी श्रमी से निस्स्वार्थ सेवा की आशा करें; जिन पत्रों का जन्म वाणिज्य में सहायता देने के लिये हुआ है उनके लिए यह महान् स्वार्थ-परायणता की बात है कि वे किसी साहित्य-सेवी की सरलता, सहृदयता, और निस्वार्थता से अनुचित लाभ उठावें तथा इस प्रकार किसी परोपकारिणी संस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उसकी सेवाओं से वञ्चित होने दें। फिर, अवैतनिक सम्पादन से व्यवसाय-प्रधान पत्र को पूरी सफलता नहीं प्राप्त हो सकती, क्योंकि ऐसे सम्पादक में प्रायः उत्तरदायित्व का भाव उदित नहीं होगा। सच बात यह है कि मनुष्य या तो ईश्वर के सामने अपने को उत्तर-दायी समझता है या अपने अन्न-दाता स्वामी के सामने। जहाँ सेवा-भाव नहीं है वहाँ ईश्वर का पूर्ण-रूप प्रकट नहीं होता; अन्नदाता स्वामी के रूप में, कम से कम उसकी कुछ कला दृष्टि-गोचर होती है, किन्तु, जहां अन्नदाता स्वामी भी नहीं है, जहाँ कि अपने श्रमी की शक्ति को निचोड़ कर स्वार्थ-साधन करने वाला निशाचर मात्र है वहां तो किसी प्रकार के कर्त्तव्य की उत्पत्ति ही नहीं होती। इस दशा में पत्र-सञ्चालक को अपने सम्पादकीय विभाग को पुष्ट, वैतनिक, और सन्तुष्ट रखना चाहिए।

हमारे अधिकांश पत्र इन्हीं त्रुटियों के कारण या तो नष्ट हो रहे हैं, या जीते हुए ही मृतक-तुल्य बने हैं। ❀

—रुद्रदत्त बी० ए०

हिन्दी कविता और उसके अभ्यास की आवश्यकता

विता और काव्य एक ही वस्तु के दो नाम है, अथवा यों समझिये कि इन दोनों नामों से एक ही नामी का बोध होता है, अतः यदि मैं अधिक अभ्यस्त होने के कारण इस अपने लेख में उस वस्तु विशेष के एक "काव्य" नाम का ही बहुधा प्रयोग करूँ तो कोई अड़-चन न पड़ेगी।

काव्य से जो अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है वह सहृदय संवेद्य ही है; कहने में नहीं आ सकता, उसकी प्राप्ति के साथ-साथ अन्य आवश्यक वस्तुओं की भी प्राप्ति होती है।

नोट—* यह लेख 'लेखक मण्डल', प्रयाग से प्राप्त हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय में सर्व विद्या-पारावार-पारीण कवि पण्डितवर श्री मम्मटाचार्य अपने "काव्य-प्रकाश" ग्रंथ में लिखते हैं कि "काव्यं यशसेऽर्थ कृते व्यवहार विदे शिवेतरक्षतये, सद्यः पर निर्वृतये कान्ता सम्मिततयोपदेशयुजे" अर्थात् काव्य यश के लिये, प्रयोजन की सिद्धि करने के लिये, व्यवहार के जानने के लिये, अमङ्गल के विनाश के लिये, शीघ्र ही लोकोत्तर आनन्द के लिये, और कान्ता के समान मनोहर और ग्राह्य उपदेश के देने के लिये है, साहित्य दर्पण कार कवि पण्डित श्रीमान् विश्व नाथ जी काव्य से ही अल्प बुद्धियों को भी सुख से चतुर्वर्ग की प्राप्ति बताते हैं, फिर ऐसे लौकिक और पारलौकिक सुखों के साधक काव्य की रचना के लिये कौन बुद्धिमान् प्रयत्न न करेगा ?

काव्य प्रकाश के मत से काव्य रचना के लिये आवश्यकता है काव्य के स्वरूप के जानने की, शक्ति की, निपुणता की तथा काव्यज्ञ की शिक्षा से काव्य रचना के अभ्यास की।

१—कविवर जयदेव ने अपने चन्द्रालोक ग्रंथ में काव्य का यह लक्षण लिखा है "निर्दोषा लक्षणवती सरीतिर्गुणभूषिता। सालङ्कार-रसाऽनेकवृत्तिर्वाक्काव्य नाम भाक्" अर्थात् जो वाणी पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष और रस-दोष नाम के पांचो प्रकार के दोषों से रहित हो, चारों रीतियों से संयुक्त हो, गुणों से भूषित हो शब्दार्थालङ्कारों से अलंकृत हो, रसवती हो, अनेक वृत्तियों से परिपूरित हो, वह वाणी काव्य नाम को प्राप्त करती है।

२—शक्ति तो एक संस्कार विशेष है; जिसके बिना मनुष्य काव्य की रचना कर ही नहीं सकता, यदि कर सकता है तो वह रचना सहृदयों के हृदयों को लोकोत्तरानन्द-दायिनी नहीं हो सकती, शक्ति किसी को लिखने पढ़ने से नहीं प्राप्त होती, किन्तु इस पर किसी-किसी महानुभाव का जन्म सिद्ध ही अधिकार हो जाता है, तभी तो अँगरेज़ी विद्वान् कहा करते हैं कि कवि बनता नहीं किन्तु उत्पन्न होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३—निपुणता लौकिक व्यवहारों के जानने से, शास्त्र और काव्यादि ग्रन्थों के विचार-पूर्वक भली भाँति मनन करने से प्राप्त होती है।

४—अभ्यास काव्य के जानने वालों की शिक्षा से निरन्तर काव्य-रचना करने का नाम है।

जिस भाग्य-शाली को ये चारों विषय प्राप्त होगये हों वही उत्तम कवि कहा जा सकता है और उसी को कविता करने का अधिकार है।

परन्तु महा कवि दण्डीजी हम शक्ति हीनों को भी काव्य रचना का उत्साह दिलाते हैं, उनका कथन है कि "न विद्यते यद्यपि पूर्व वासना, गुणानुबन्धि प्रतिभा न मुत्तमम्। श्रुतेनयत्नेनच वागुपासिता, ध्रुवं करोत्येव कमप्यनुग्रहम् ॥१॥ तदस्ततन्द्रैः रनिशं सरस्वती, श्रमादुपास्या खलु कीर्ति मीप्सुभिः। कृशेकवित्वेऽपिजनाः कृतश्रमा, विदग्धगोष्ठीषु विहर्तुमीशते ॥२॥" "अर्थात् यदि पूर्व वासना के गुण से सम्बन्ध रखने वाली उत्तम प्रतिभा अर्थात् कवित्व शक्ति नहीं है तो भी लोक शास्त्रादि से उत्पन्न हुई निपुणता और अभ्यास से उपासित वाणी निश्चय ही अनिर्वचनीय अनुग्रह को करती है ॥१॥ इस कारण से कीर्ति के पाने की इच्छा रखने वाले पुरुषों को आलस्य रहित होकर परिश्रम से सरस्वती की दिन-रात्रि उपासना करनी उचित है, क्योंकि काव्य-रचना के अभ्यास में परिश्रम किये हुए पुरुष कविता के कृश होने पर भी चतुरों की सभा में विहार करने के लिये समर्थ हो जाते हैं ॥"

बस इन्हीं वचनों का हमारे सदृश शक्ति हीन पुरुषों को सहारा है, इस सहारे को पाकर ही हम अपनी टूटी फूटी काव्य रचना करते रहते हैं और विद्वन्मण्डली में सुनाते रहते हैं।

देख लीजिये महा कवि दण्डी ने काव्य रचना के अभ्यास पर कितना ज़ोर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु आजकल तो गड्डरिका-न्याय ज़ोर पर है। रस-सिद्ध प्रसिद्ध कवियों की स्पर्धा के लिये अवि (भेड़) रूप कवि, समस्या रूप गर्तों में चारों ओर से बे तरह गिर रहे हैं; मुझे बहुधा आगरा नगर के कवि सम्मेलनों में सम्मिलित होने का अवसर पड़ता रहता है, जो भली भांति हिन्दी लिख पढ़ भी नहीं सकते, वे इधर उधर से कवियों की पूरी रचनाओं की चोरी कर के अपना नाम करने के लिये सभाओं में सुनाया करते हैं, "कवि रनुहरतिच्छाया-मर्थं कुकविः पदं चौरः, सर्वस्य रुपहर्त्रे साहस कर्त्रे नमस्तस्मै" इस वचन के अनुसार मैं तो उनको दूर से ही नमस्कार करने के लिये संयोजकों को सम्मति देना पसन्द करता हूं, क्योंकि मातृ भाषा नागरी का इस प्रकार तिरस्कार हमसे सहा नहीं जाता; इस लिये इस पद्धति की निन्दा किये बिना भी हमसे रहा नहीं जाता। आगरे के कवि सम्मेलनों में कोई कोई रचनाएँ तो ऐसी आती हैं कि उन्हें फाड़ कर फेंक देना ही उचित प्रतीत होता है।

अवश होकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के महारथियो से इस घनाक्षरी के रूप में प्रार्थना करता हूं—

घनाक्षरी

कवि अवि विकल, समस्या गर्त माँहि गिरें,
नियम लकुट लैकें, तिन कों निवारिये।
जासों डारैं काँचन में, हीरा, लाल, मोतिन कौं,
ऐसे अविवेक तें, विवेक कों उवारिये॥
भूषण डकारें नाहिं, दूषण विसारें गुण,
रीति नाहिं धारें का, अनीति न निहारिये।
कविता रूप वनिता के, केश धरि खेंचत,
या नागरी गरीबी पै, दया उर धारिये॥ १॥

आप को विदित होगा, कि काशी में संस्कृत की तीन परीक्षाएं होती हैं, प्रथमा, मध्यमा और उत्तमा; प्रथमा एक, मध्यमा चार, तथा उत्तमा छः परीक्षाओं के उत्तीर्ण करने पर समाप्त होती है, साहित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की उत्तमा परीक्षा के छठे वर्ष की परीक्षा में जब कि परीक्षार्थी व्याकरण, काव्य, कोष, अलंकारों के समस्त ग्रन्थों को पढ़कर सुयोग्य हो जाता है, तब वर्ष भर काव्य रचना के अभ्यास के अनन्तर काव्य-रचना-परीक्षा ली जाती है।

इस प्रकार से परीक्षार्थी काव्य के स्वरूप को तो जान ही जाता है, शक्ति न हो तो निपुणता तो प्राप्त कर ही लेता है, फिर काव्यज्ञ विद्वान् से निरन्तर वर्ष भर काव्य रचना का अभ्यास करने से परीक्षा देने का अधिकारी हो जाता है।

आज कल के हिन्दी के कवि-सम्मेलन काव्य-रचना के अभ्यास के मार्ग नहीं हैं, प्रत्युत धृष्टता सिखाने वाले हैं।

एक कवि सम्मेलन में एक महानुभाव अपनी रचना को गाकर पढ़ रहे थे और उनकी रचना पर जनता लट्टू हो रही थी, इसलिये अथवा न जाने किस लिये सभापति महोदय चुप थे, रचना में गड़बड़ी यहाँ तक थी कि आठ सगण के सवैया में "भाथे" और "घट-पट" पद भी प्रयुक्त थे जिनके कारण से सगण तीनों कालों में भी सिद्ध नहीं हो सकता।

हमें इस अवसर पर आगरे के प्रसिद्ध कवि स्वर्गवासी मुंशी पन्नालालजी के इस दोहे का स्मरण होआता है:—

"पुज सदा द्वै भाँति तें, होत कवित अपमान।
सुनत सराहें मूढ़ जो मौन गहैं विद्वान॥"

आप भली भाँति समझ लें कि जिनकी ऐसी रचनाएँ सम्मेलनों में पास कर दी गयी हों वे जगत् को तृण के समान समझने लगेंगे।

इसलिये इसके कुछ नियम आपको बनाने होंगे।

मैं इस बात को भली-भाँति जानता हूं कि किसी कवि सम्मेलन में रचना सुनाने के समय किसी की रचना में अशुद्धियाँ निकाली जावेंगी तो उसका चित्त दुःखित हुए बिना कदापि न रहेगा। इस लिए ऐसा करना तो किसी प्रकार से भी उचित नहीं है; परन्तु शिक्षा के समय यह बात न होगी, काव्य मर्मज्ञ गुरु अपने शिष्यको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ वर्णनीय विषय वा समस्याएं देकर उनका वर्णन वा पूर्ति करावेगा, उन वर्णनों में वा उन पूर्तियों में जो अशुद्धियाँ होंगी उनको कारण सहित शुद्ध करेगा, यदि अशुद्धियां न होंगी तो सब को शुद्ध बता कर शिष्य के उत्साह को बढ़ावेगा, परन्तु यह प्रणाली तबही चलेगी जब आप काव्य रचना को परीक्षाओं का एक अङ्ग बना देंगे।

काव्य रचना की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए पुरुषों की रचनाओं में ऐसी अशुद्धियों का होना बहुधा असंभव हो जावेगा; फिर कवि सम्मेलनों में यदि पहले से घोषणा कर दी जावेगी कि कविता करने का वही अधिकारी है जो काव्य रचना की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गया हो, ऐसे ही सज्जन अपनी रचनाओं को लावें; अथवा वे लावें, जिनकी सुन्दर रचनाओं को सुयोग्य-पत्र सम्पादकों ने अपने पत्रों में आदर के साथ स्थान दे कर अपनाया है।

तब ऐसी गड़बड़ी न होगी और न सभापति महोदयों को कवियों पर इस प्रकार दफ़ा १४४ ही लगानी पड़ेगी।

मुझे हर्ष है कि कानपुर के कवि मण्डल के कवि काव्य रचना के अभ्यासी हैं।

क्या मैं आशा करूँ कि आप काव्य रचना के विषय को सम्मेलन परीक्षाओं में सम्मिलित कर देंगे और परीक्षार्थी उसका अभ्यास काव्य-मर्मज्ञ गुरुओं की शिक्षा के सहारे से करने लगेंगे?

—गणेशीलाल सारस्वत, साहित्योपाध्याय

नोट —[यह लेख यद्यपि कुछ तीव्र भाषा में लिखा गया है, परन्तु साहित्य का हित ध्यान में रखते हुए; अतः विद्वानों के विचारार्थ पत्रिका में प्रकाशित है। उर्दू के शायर अबभी गुरु-मुख से काव्य रचना सीखते हैं; इससे उर्दू की शायरी हिन्दी कविता से कहीं उत्तम और सुश्रंखलित होती है। क्या हिन्दी में इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार्वाक

चार्वाक वैदिक धर्म का सर्व प्रथम विरोधी माना जाता है। सम्भव है कि चार्वाक से पहले अन्य लोगों ने भी वैदिक-धर्म का विरोध किया हो, पर इस समय हमें उनमें एक का भी नाम उपलब्ध नहीं है। बौद्ध-धर्म और जैन-धर्म के प्रवर्तक बुद्धदेव और महावीर स्वामी का जन्म चार्वाक के बाद हुआ है। चार्वाक का नाम इस कारण और भी अधिक महत्त्व पूर्ण है, कि वेदों पर जो आक्षेप उसने किये हैं, उसके बाद के विरोधी उनसे अधिक कुछ नहीं कर सके। सभी ने उसके तर्क का आश्रय लिया है। यहाँ तक आज भी उसी के कहे हुए दोषों का उल्लेख कर खण्डन करने वाले वेदों पर आक्षेप किया करते हैं। चार्वाक के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है। पर यह नास्तिक-शिरोमणि चार्वाक कौन था, कहाँ का निवासी था, इसकी शिक्षा-दीक्षा कैसी थी, वेदों का विरोधी कैसे और क्यों होगया; इस सम्बन्ध में इसनेकौन कौन कैसे ग्रन्थ लिखे ? आदि बातों का पता नहीं।

संस्कृत साहित्य में चार्वाक का उल्लेख जहाँ तहाँ हुआ है। पर उनसे तो यह सूचित होता है कि भारत में चार्वाक नाम धारी भिन्न भिन्न समयों में भिन्न भिन्न व्यक्ति थे। अतएव उनमें से किस समय के चार्वाक ने वेदों का खण्डन किया था, इसका पता नहीं मिलता। कहीं कहीं वह बौद्ध या जैन बताया गया है। पर बौद्ध और जैन साहित्य इन उल्लेखों का समर्थन नहीं करते।

पूकार के नियंत्रण की आवश्यकता नहीं है? हिन्दी में जितनी उच्छृंखलता है उतनी शायद ही कहीं अन्यत्र दिखलायी दे। इस में जो कुछ लिखा गया है एक विद्वान द्वारा शुद्ध-हृदय और निष्पक्ष भावसे, अतः आशा है विद्वत्समाज इस पर सहानुभूति पूर्ण और गंभीरता से विचार प्रकट करेगा। संम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाभारत में चार्वाक नाम के एक राक्षस का उल्लेख हुआ है। इस चार्वाक ने ठीक विजय के समय पाण्डवों को भीम की मृत्यु हो जाने का मिथ्या समाचार देकर उन्हें विनष्ट करने का उपक्रम किया था।

पर अधिकांश उल्लेखों से तो यह प्रकट होता है कि चार्वाक शब्द व्यक्ति वाचक नहीं है, किन्तु वह एक सम्प्रदाय विशेष का सूचक है, जिसके प्रवर्तक बृहस्पति थे। इन बृहस्पति का चरित विष्णु-पुराण, मत्स्य-पुराण और हरिवंश-पुराण में वर्णित है। इनमें लिखाहै, कि दैत्यों को धर्म-भ्रष्ट करने के लिए देव-गुरु बृहस्पति ने नास्तिक-शास्त्र की रचना की थी।

यहाँ हरिवंश से उस वर्णन का सारांश दिया जाता है—

चन्द्रवंशी पुरूरवा के पुत्र आयुस के पाँच पुत्र थे। नहुष, वृद्धशर्मा, रम्भ, रजी और अमेनस उनके नाम थे। इनमें रजी के ५०० पुत्र थे। देवासुर संग्राम होनेवाला था और ब्रह्मा ने कह दिया था कि रजी जिसका पक्ष ग्रहण करेगा उसी की जीत होगी; दोनों पक्षों ने रजी को अपनी अपनी ओर खींचना चाहा। पर रजी ने कहा कि जो पक्ष मुझे इन्द्र का पद प्रदान करेगा उसी की ओर से मैं लड़ूँगा। दैत्यों ने कहा कि हमारे इन्द्र तो प्रहलाद हैं। पर देवों ने रजी को इन्द्र-पद देना स्वीकार कर लिया। अतएव उनकी ओर होकर उसने असुरों को पराजित कर दिया। फलतः वह इन्द्र बना दियागया। पर उसकी मृत्यु के बाद उसके ५०० पुत्रों ने इन्द्र-पद का दावा किया। देवराज इन्द्र उनका विरोध करने में असमर्थ थे। यही नहीं, उनकी अवस्था यहाँ तक दीन हो गयी थी कि 'पुरोडास' की भिक्षा माँगने के लिए उन्हें अपने गुरु, बृहस्पतिके घर जाना पड़ा। उनकी दैन्यावस्था पर देव-गुरु को दया आगयी और उन्होंने उनका राज्य फिर दिला देने की प्रतिज्ञा की। इसके लिए उन्होंने एक नया नास्तिक शास्त्र बनाया। इस शास्त्र के प्रभाव से पूर्वोक्त राजकुमार धर्म च्युत हो गये और इन्द्र को उनका राज-सिंहासन अनायास ही मिल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर इस शास्त्र के प्रवर्तक देव-गुरु, बृहस्पति हैं, यह बात मन में नहीं बैठती हैं। हाँ, असुर-गुरु शुक्र हों तो जँच भी जाता। छान्दोग्य-उपनिषद में एक उल्लेख प्रकारान्तर से इस की पुष्टि भी करता है। उस में लिखा है कि देव-राज इन्द्र और दैत्य-राज विरोचन आत्म-ज्ञान सीखने के लिए प्रजापति के पास गये। विरोचन ने आत्मा-सम्बन्धी ज्ञान की अधिक जिज्ञासा नहीं की। जो थोड़ा बहुत सुना उसी से सन्तुष्ट हो गया। लौट कर उसने असुरों को बताया कि एक मात्र आत्मा ही उपासनीय है, इस संसार में आत्मा की ही पूजा करनी चाहिए। अपनी आत्मा की सेवा-पूजा करने से ही इह लोक और परलोक बनते हैं। इस शिक्षा को ग्रहण कर असुरों ने दान-पुण्य, यज्ञ-यागादि करना सब बन्द कर दिया।

कहीं कहीं यह भी लिखा है कि बृहस्पति ने नास्तिक-धर्म की शिक्षा अपने शिष्य चार्वाक को दी। परन्तु यत्र-तत्र इस सम्बन्ध के जो अवतरण उद्धृत मिलते हैं उनसे तो यह प्रकट होता है कि बृहस्पति-शास्त्र नास्तिक-सम्प्रदाय का प्राचीन काल से सिद्धान्त ग्रंथ रहा है, जिस की अब कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। तो भी उस के जो अवतरण भिन्न भिन्न ग्रन्थों में उद्धृत मिलते हैं उन से सहजमें इस सम्प्रदाय के सिद्धान्तों का थोड़ा-बहुत ज्ञान हो ही जाता है।

चाहे जो हो, वास्तव में इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक ईरानी उमर-ख़ैय्याम एवं रोमन लूक्रीटियस की भाँति मिथ्या विश्वासों का घोर रूप से खण्डन करना जानता था, पर जो धार्मिक भावना उनके पीछे छिपी थी, उसका ज्ञान उसे नहीं था।

—भरद्वाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरप्रसाद कवि

भी हाल ही में मुझे रीवाँ राज्य में पर्यटन करने का अवसर मिला था, वहाँ से कई उत्तम कवियों का जिनसे हिन्दी संसार नितान्त अपरिचित है, वृत्त ज्ञात हुआ; उन्हीं में से एक 'हरप्रसाद' उपनाम 'हरिचन्द' नामक कवि हैं; उनका रचा हुआ 'साहित्य-सुधा-निधि' ग्रन्थ भी उपलब्ध हुआ है। यह एक उच्च कोटि का साहित्यिक ग्रन्थ है। इसमें रस-भेद, नायका-भेद, काव्यगुण-दोष, और अलङ्कारों का बड़ी उत्तमता से विशद वर्णन किया गया है। हरिप्रसाद रीवाँ नगर निवासी जाति के कायस्थ थे; इनका जन्म कार्तिक सं० १८७६ वि० में हुआ था और मृत्यु वैसाख सं० १९३५ में।

इनके पुत्र का नाम गोविन्द प्रसाद और भतीजे का गयाप्रसाद था। गया प्रसाद के पुत्र का नाम भास्करप्रसाद है जो अभी वर्तमान और अच्छे कवि हैं; इन्हीं भास्करप्रसाद के पास हरिप्रसाद रचित सब ग्रंथ प्रस्तुत हैं जिनके नाम ये है :—

(१) कालिका-नख-शिख
(२) काली-पट
(३) शृंगार-चन्द्रोदय
(४) मालिन-भेष
(५) साहित्य-सुधा-निधि

ये महाशय, रीवा नरेश महाराजा विश्वनाथ, सिंह के कनिष्ट भ्राता रावेन्द्र सा० बलभद्र सिंहजी के आश्रय में रहते थे।

साहित्य-सुधा-निधि-नामक ग्रन्थ महाराज रघुराजसिंह के लिये रचा गया था।

आपकी कविता के कुछ उदाहरण पाठकों के मनोरंजनार्थ प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं; जिससे अनुमान किया जा सकता है, कि आपकी कविता कितनी उच्च कोटि की है :—

(१) काली-पटन से दुर्गा महारानी का राक्षसों से युद्ध का वर्णन सुनिये, कितनी वीर व रौद्ररस पूर्ण भावमयी कविता है—

भुजंग-प्रयात छंद

गजे जुद्ध में क्रुद्ध सामंत सूरं ।
बजे दुंदुभी ढोल करनाल तूरं ॥
सजे कत्ति औ सेल्ह तुन्नीर सारं ।
लजे क्रूर संग्राम पेखंत झारं ॥
तजे प्राण चिक्कार कै शोर घोरं ।
भजे डारि शस्त्रादिकै देत जोरं ॥
भयो जुद्ध में क्रुद्ध संघट्ट एवं ।
विलोकंत त्रैशुद्ध ब्रह्मादि देवं ॥१॥

इसके देखने से चन्द कृत रासे के युद्ध वर्णन का स्मरण हो आता है; यह कविता कितनी ओजस्वनी और प्रसाद गुणपूर्ण है ? कि पढ़ते-पढ़ते हृदय वीर भाव पूरित हो जाता है ।

(२) अब कालिका-नख-शिखसे भी कुछ बानगी लीजिये—और कालिका देवी की गराज का वर्णन सुनिये —

सुर दल काजैं जोम जगती दराज ताजै,
करत पराजै पेखि पाली खलगन की ।
भाजैं मौज अजब अवाजैं अरि लाजैं सुनि,
साजैं दीन तरल तराजैं पैज पन की ॥
भनि 'हरिचन्द' भरी बल की जहाजैं कीधौं,
राजै रोष रन में न राजैं दनु तन की ।
दुंदुभी तैं गजब गराजैं कालिका की ग्राज
गाजकी गराजैं की गराजैं प्रलै घन की ॥

अब छातीका वर्णन और सुनिये; यह वर्णन नायका रूप में न होकर, सिंह-वाहिनी अम्बिका के अनुरूप ही है —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैधौं काल सदन कपाट की कला है दीह,
असम सिला है अरि उर उतपातु की।
कैधौं भव-सिंधु पाटिवे की पाटिका है मंजु,
जन मन वाटिका है पद जल-जातु की॥
भनि 'हरिचंद' कैधौं तामस रसा है तोम,
तम की तुरूस कैधौं तमक अघातु की।
बीर-रस राती रन रोष की सँघाती महा,
मोद मद-माती धन्य छाती जगत् मातु की॥३

(३) ये तो वीर रस के वर्णन आपने देखे, अब कुछ शृंगार रस की छटा भी अवलोकन कीजिये—कैसी मनोहरणी कविता है; मालिन भेष में श्री कृष्ण जी का राधा के यहाँ जाने और ललिता से संवाद होने का वर्णन सुनिए—

ललिता कहति सुनौ हो सजनी हौ बसती केहि गाऊं।
कौन वंश कौ माय-बाप है कहा तिहारौ नाऊं॥
है सासुर केहि देस लाड़िली कहा ससुर कौं कहिये।
जनि सकुचौ कहु कुंवरि लाड़िली मन मानैं तौ रहिये॥
कहत लाल जी सुनौ लाड़िली तुमसे नाहि दुराऊं।
अपने दिल की बात आपनी सादर प्रकट सुनाऊं॥
बसती हैं हम नन्द-पुरा में मथुरा जनम हमारौ।
छत्री वंस विदित है हमरौ दिसि भूतल में चारौ॥
कहत पिता बसुदेव सबै मिलि मातु देवकी जानौ।
कृष्ण सखी है नाम हमारौ ये सब सत्य बखानौ॥
कुंडन पुर सासुर है मेरौ भीसम ससुर कहावै।
पति कौ नाम लेति नहि कबहूं सो हम कहा बतावै॥
है कदीम रुजिगार हमारौ फूल माल कौं करिये।
हौं लाई तुव भेंट कारने नजर नेंकु धौं धरिये॥
सुनत हती बहुतक दिन हीतें श्री वृषभानु दुलारी।
बाढ़ी अभिलाषा देखन की आई अवसि सिधारी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कविता भी माधुर्य और प्रसाद गुण पूर्ण तथा हृदय ग्राहिणी है। यद्यपि यह विषय नया नहीं तथा इस पर कविता भी अत्यधिक पायी जाती है, परन्तु फिर भी इसके पढ़ने में आनन्द प्राप्त होता है।

(४) अब शृंगार-चन्द्रोदय से भी कुछ दोहे पाठकों की भेंट किये जाते हैं—नायका का लक्षण हरि प्रसाद के ही शब्दों में सुनिये—

सील सुमति सुंदरि सुघर, पिय हिय को सुख दानि।
हरिप्रसाद कवि नायका, तासौं कहत बखानि ॥ १ ॥
जामें पति-पद प्रेम अति स्वकिया कहियत सोय।
मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ तिय तीन भेद करि होय ॥ २ ॥

(५) अब साहित्य-सुधानिधि की चासनी भी अपने पाठकों को चखाना युक्ति-युक्त प्रतीत होता है; यह एक बड़ी सांची के २०८ पृष्ठों में ३७५० श्लोकों का बहुत बड़ा ग्रंथ सं० १९३३ वि० में रचा गया था; यह ग्रंथ आपकी रचना में सर्वोत्तम है; इसके वर्णन बड़े ही विशद और उत्तम हैं। माधुर्य कूट कूट-कर भरा है, पदावली ललित, कोमल, काँतिमय है, सुनिये और दाद दीजिये—

सवैया

सीतलता मृदुता सुचि सीलता, सोधिपति-व्रत सीधे सुभाइन।
त्यों धमिता समिता सिगरी गुनि, राखे गरू गति चाहि के चाइन॥
माधुरता निरखे 'हरिचन्द' जू को न लट्टू भयौ हेरि हहाइन।
जानति हौ तुम हीं ते मनौं विधि, सीखे सबै गुन गौरि गुसाइन॥

इसको पढ़ कर 'देव' के ललित सवैयों का स्मरण हो आता है।

कवि ने 'तद्गुण' अलङ्कार का कैसा सुन्दर वर्णन किया है कि चकृत हो जाना पड़ता है, शायद ही कोई कवि इस वर्णन में उक्त कवि की समता करने में समर्थ हुआ हो।

लीजिये और रसास्वादन कर आनन्द पान कीजिये—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई एक ललना जवाहिर ख़रीदिवे कों,
आई हुती सुभग सुहाई हाट बारे की।
करके लिये तें भये मुकुता प्रबाल फेरि,
गुञ्ज से भये ते परे दीठि दृग-तारे की॥
भनि 'हरिचन्द' मोती चूर से दिखाने पुनि,
हास्य के परे ते भये लोल रंग भारे की।
बीजक, नफा की औ खरीद की बतावै कौन,
खबरि हेरानी हेरि जौहरी बिचारे की॥

देखिये न जौहरी बिचारे को सुधि बुधि ही जाती रही व्यापार कैसे करे ?

और सुनिये,

मनहरण (घनाक्षरी)।

कैसो अरविंद जैसो चन्द्र चन्द्रिका को बिन्दु,
बिन्दु चन्द्रिका को कैसो जैसो घन सारो है।
कैसो नर सार जैसो मल्लिका को हार कहौं,
मल्लिका को हार कैसो जैसो सिंधु पारो है॥
पारो सिंध कैसो गंध-सार जैसो 'हरिचन्द,'
कैसो गंध सार जैसो तुहिन कतारो है।
तुहिन कतार कैसो धवल धरा में चाहि,
जैसो रघुराज सिंह सुजस तिहारो है॥

यह छंद भी 'प्रसाद' गुण युक्त अलङ्कार का उत्तम उदाहरण है; महाराजा रघुराजसिंह, रीवाँ नरेश के सुयश का कैसा विशद वर्णन है!

अब संयोग शृङ्गार का एक उदहरण देकर इस लेख को समाप्त कर दिया जायगा; आपके कथन शृङ्गार युक्त होने पर भी अश्लीलता से परे हैं, सुनिये यह वर्णन भी कितना उत्तम और भाव पूर्ण है—

सवैया

भोर भये दिन लौं इक ठौर ही ह्वै अनिमेख न कै हूं अघातु है।
सांझहीं तें सिगरी निसि लौं, मुख की सुखमा सुख-सिंधु सिहातु है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम पगे परसै 'हरिचंद' जू छूटि जुपै छिनकौ न बिहातु है।
नेह भरे लखैं दोऊ दुहूंन तऊ दुवौ देखिबे कों ललचातु हैं ॥ ३ ॥

इस वर्णन में प्रेमाधिक्य सीमा को पार करता सा प्रतीत होता है। रात दिन साथ रहने और क्षण मात्र को भिन्न न रहने पर भी एक दूसरे को देखने के लिये ललचाते हैं। कैसा गंभीर और भाव पूर्ण वर्णन है, आनन्द सिंधु में सदैव गोते लगाने पर भी तृप्ति न होना, अपूर्व वर्णन है। मेरे विचार से 'हरिप्रसाद' बहुत उच्च कोटि के कवि थे, इनका साहित्य जगत में परिचय तो क्या नामोल्लेख तक नहीं हुआ। हम साहित्य प्रेमियों से सानुरोध निवेदन करते हैं; कि वे कवि हरिचन्द्र के ग्रन्थों का अनुशीलन करें और प्रकाशकों से भी निवेदन है कि वे 'साहित्य-सुधानिधि' का उत्तम सम्पादन करा कर प्रकाशित करने का प्रयत्न करें; मेरी धारणा है, कि हिन्दी-संसार इस ग्रंथ का समुचित आदर करेगा।

—भगीरथ प्रसाद दीक्षित

सरसुति

स कवि का 'मधुकर-कलानिधि' नाम का एक ग्रंथ खोज में मिला है। ग्रंथ में नायिका भेद का वर्णन विशदरूप से किया गया है। इसमें लक्षण, 'अलंकार-कलानिधि', 'शृंगार-रस-माधुरी,' 'रसराज,' 'रसिक-प्रिया,' 'रस-रत्नावली,' 'रस-मंजरी,' 'सुन्दर-शृंगार,' 'भाषा-भूषण' और 'रस-विलास' से दिये गये हैं और उदाहरण विशेषतया कवि के ही हैं।

कवि ने अपना परिचय कुछ भी नहीं दिया है। केवल पुस्तक से यही ज्ञात होता है; कि इस कवि ने यह ग्रंथ जयपुर नरेश माधौसिंह जी के, जिन्होंने संवत् १८०८ से १८२५ तक राज्य किया था, आश्रय में रहकर उन्हीं के निमित्त रचा है। ग्रन्थ पूर्ण होने का समय कवि ने इस प्रकार दिया है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"संवत अठारह सै बाईसा पहिल दिन, चैत सुदि शुक्रवार ग्रंथ उलह्यो सही। महाराज माधवेश मन के विनोद हेत, 'सरसुति' कीन्हों यह दूध ज्यों जमै मही॥"

इस से ज्ञात होता है कि संवत १८२२ चैत्र सुदि १ शुक्रवार को ग्रन्थ सम्पूर्ण हुआ था।

इस कवि ने 'कवीन्द्र' उप नाम से कविता की है।

ग्रंथ के प्रारंभ में ही कवि सरस्वती की प्रार्थना करता हुआ कहता है, कि जो तेरा ध्यान धरते हैं, वही मृदु काव्य करके यशस्वी होते हैं और सभाओं में कवीन्द्र पद पाते हैं। देखियेः—

"बानी जू हौ जगरानी सही, पद पंकज रावरे जे नर ध्यावैं।
ते नर ऊख, महूख पियूष सनी मृदु काव्य-कला बरसावैं॥
मान भरे गुन ज्ञान भरे पुहमी,-मघवानन कों ते रिझावैं।
कीरति चन्द्रिका चन्द्र समान सभान में तेई कवीन्द्र कहावैं॥"

इसके पश्चात् कवि अपने आश्रयदाता से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि—

"अरथ अमोल मनि सुबरन अलंकार,
ग्रंथन कौं राज ही के गुननि गह्यौ करै।
मानि सनमानि दान दुजनि सुदाम किय,
रुकमनि लच्छि लखि सदा उलह्यौ करै॥
सरस सिंगार कल पद जमकनि बनि,
राजै छबि छाजै छत्र चौरनि लह्यौ करै।
साधु-बंधु कृपा-सिंधु सत्यसिंधु माधव जू,
रावरे कौं 'सरसुति' सेइबैंचह्यौ करै।"

दोहा—सब्द अरथ जीरन वसन, लखि तंदुल गुन-गाथ।
माधव मोऽब सुदाम सों, कह्यो द्वारिका नाथ॥
गुन रत्नाकर नृप मुकुट, विलसत मधुकर भूप।
निज मति उल्लस करन मैं, कियो ग्रंथ रसरूप॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पश्चात् काव्य का कारण व लक्षण 'अलंकार-कलानिधि' से बताता हुआ काव्य का विशेष स्वरूप इस प्रकार वर्णन करता है। कि : —

काव्य पुरुष आनन्द वपु, सबद अरथ अँग कोउ।
गुन गुन, भूषन भूषनै, दोष दोष रस जीउ ॥

पुनः भूमिका रूपमें अलंकार-कलानिधि आदि ग्रंथों से भाव, रसादि का संक्षिप्त परिचय कराता हुआ ग्रंथारंभ की संगति इस प्रकार वर्णन करता है। कि : —

याहीतैं शृंगार-रस, बरनौं पहिल बनाइ।
अब विभाव याके कहौं, लक्षण लक्ष सुनाइ ॥

इस कथन के पश्चात् शृंगार रस का आधार नायक और नायिका को बता कर नायक के भेद निरूपण करता है। लेख बढ़ने के भय से उदाहरण यत्र-तत्र से ही दिये जा सकेंगे।

दक्षिण नायक का सभी नायिकाओं पर सम-प्रेम होता है। ऋतुराज को कवि ने दक्षिण नायक माना है; ठीक भी है क्योंकि उसके आते ही उसकी सभी नायिकायें (लता, वेलादि) अपने-अपने हाव,भाव कटाक्ष से मोहित करने लगती हैं और वह भी एक साथ ही सब के साथ रंगरेलियाँ व अठखेलियाँ करने लगता है। पाठक देखें कवि ने अपने आश्रयदाता को किस प्रकार ऋतुराज बनाकर दक्षिण नायक के उदाहरण में ला रक्खा है—

कैऊ नैन जोरि कैऊ सैननि निहोर कैऊ,
पैनी भौंह कोरि चित चातुरी सकेली सी।
कैऊ अंगराइ स्वेद पुलक रचाइ कैऊ,
मृदु मुसुकाय मचै राखी रँगरेली सी।
कैऊ भुज लाइ छिन छतियाँ छुवाइ रस,
बतियाँ सुनाइ करि रही कल केली सी।
मधुकर-राज मन भावन के काज आज,
राजैं नवबाला ऋतुराज नव बेली सी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानी नायक को मनाने के लिये सखियाँ सतत-परिश्रम करती हैं; उनकी युक्तियाँ विचित्र ही होती हैं। पाठक देखें 'सरसुती कवि' की सखी की कितनी उचित और प्रशंसनीय युक्ति सूझी है। मानी नायक एक राजा है। सखी कहती है महाराज! आप रूठे हो! और सो भी अबलाओं पर !! ग़ज़ब हो गया अजी आप तो अबलाओं के बल कहलाते हो फिर उनसे रूठना कैसा!

"बिहँसौंहीं जबते रुखौंहीं अँखियानि करि,
कीने तुम कौंल-दल नख विदलन के।
रूप कीसी वेली अलवेली मुरझानी जाति,
परी तला-बेली चित तब ते ललन के।
भामिनी हू होत पिया मानी हू रसिक होत,
पै न ऐसे सुने बैन प्रीति सों छलन के।
मधुकर-राज अवलन सों इतीब कहा,
तुम तौ कहावत हौ बल अबलन के"॥

कवि की अज्ञात-यौवना की अज्ञानता मनन करने ही योग्य है। यौवनांकुर उसे आश्चर्य-चकित कर देता है; अतः वह उन्हें बार-बार निरखती है इसी भाव पर कवि कहता है कि:—

"दीप की सिखा से अंग दमकैं नवेलिया के,
जोबन अँकुरवानि और उलहानि कै।
लखियै रसिक-अलि ओटि लै सहेलिन कै,
केते तऊ कौतुकनि लरकाई बानि कै।
मुख अवरेखि परिवेख रेख दीपति की,
चौंकि परै भौंर चँचला की चमकानि कै।
देखि दृग डरनि अचंभ भरी बार-बार,
देखै खोलि पिंजरा चकोर चकवानि कै॥"

इतना ही नहीं ज़रा और देखिये:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बूझत सहेलिन सों दर्पन देखि-देखि,
काहे भई आँखैं कौंल पांखैं रंग रूरी की।
मानि कर-कंजन कौं सूँघति अचानक ही,
जानि चकरानि उर आँगी चक चूरी की।
देखो अलि केते करै कौतुक नवेली बाल,
नैकहू न जानैं अंग जोबन जहूरी की।
पोंछति, तिलोंछति, अँगौछति अँगौछनि सों,
जानि रोम-राजी कहूँ लीक कस्तूरी की" ॥

आगे चल कर कवि परकीया के विषय में कहता है कि:—

परकीया नहिं लोक में, अरु नृप धर्म अधार।
परकीया यातें कही, औरै जुगति विचार ॥

पाठक! परकीया विषयक कवि की उक्ति भी देखते चलिये—

"समर अभंग माधवेस तुम्हैं सुनि-सुनि,
देखि सपने में अनुराग उमगानी हैं।
पते पर कित्ति मई दूतिका दरस लहि,
तीछन प्रताप बिरहागि पजरानी है।
दुरग उरज मरदन अभिलाष उर,
रूप भरी कंचन से अंग अकुलानी है।
रावरो मिलन विजै मंगल महूरत को
पूरन सनेह सों विपच्छ रजधानी हैं" ॥

इस में कवि ने विपच्छियों की राजधानियों को ही परकीया बताया है; जो माधवेश से मिलने के लिये अकुला रही हैं। यह तो हुआ ऊढ़ा का उदाहरण अब ज़रा अनूढ़ा के उदाहरण का भी मुलाहिज़ा फ़रमा लीजिये—

"साजैं अंग अंग नित मांजै सुवरन रुचि,
राजैं रूप उमदनि नैननि की तारिका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतिन के आभरन जोतिन के जाल जगी,
होतिन सम्हारि ऐसी अति सुकुमारिका ॥
रावरे प्रताप रवि-तावरैं-इवारि जैसी,
भाँवरे भरन जे वे अब लौं कुमारिका।
मान-कुल मंडन महिन्द्र माधवेस तुम्हैं,
बैरिन की संपति मिलत अभिसारिका" ॥

इसके पश्चात् 'गणिका' का वर्णन कर के कवि ने कहा है—

"गुप्ता बहुरि विदग्ध, लच्छिता, मुदिता, अनुसयनादिक बाम।
भेद कहे ये परकीया के बरनि-बरनि सुकविनि अभिराम ॥"

ये परकीया के भेद हैं परन्तु कवि ने परकीया को माना ही नहीं है, अतः कहा है कि:—

"ह्याँ ये भेद संभवै नाहीं लोक-वेद-पालक नरवर में।
ताते सुकिया ही में आनौं उक्ति-युक्ति कर रसके भरमें ॥"

अतः स्वकीया ही में ये भेद दिखाये हैं।

कवि 'खंडिता' का लक्षण इस प्रकार कहता है—

"आन तिया रति-रंग कै, चिन्ह चुहचुहे अँग।
पति आवै जिहिं घर सुवह, खंडित दुखित अनंग ॥"

खंडिता-नायिका पति में ऋतुराज का रूपक बाँधकर कैसा अद्भुत व्यंग कर रही है—

"अधर अरुन दल कज्जल झलक अलि,
नख-छत किंसुक सुमन सरसाये हैं।
कलँगी झुकनि मंजु मंजरी सुहाति अति,
पियरे से बसन पराग परसाये हैं ॥
बोलनि मधुर पिक-वचन रचन नैन,
कोकनद सोभरस-लोभ दरसाये हैं।
लीयैं रतिराज कौ समाज पर-काज आज,
मधुकर-राज ऋतुराज दरसाये हैं ॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठक ! वासक सज्जा की प्रसन्नता में भी सम्मिलित होते चलिये। आज स्वामी गृह पधारेंगे; उनका अवाई है; अतः आज सभी प्रसन्न होंगे। क्या क्या होगा सुनिये—

"प्रफुलित ह्वै है सूखी बेलि रस-केलिन सों,
रहसि-रहसि पिक पंचम उचारेंगे।
ज्वालनि पजरि हैं बिरह-घाम सौति-मही,
नेह-मेह आली सुख अंकुरनि धारेंगे॥
अंग-अंग चंदन सिसिर तर ह्वै हैं अति,
मंदहास चाँदनी के जाल बिस्तारेंगे।
पलक बिछावने करौंगी धनि-धनि आज,
मधुकर-राज मेरे भवन सिधारेंगे॥"

इस प्रकार आलम्बन भाव का वर्णन किया है; उद्दीपन के भाव का वर्णन किया है; उद्दीपन के पश्चात् अनुभाव, संचारी भाव और हाव आदि का वर्णन किया है; फिर रस-वर्णन के पश्चात् पुस्तक समाप्त होती है। रसों के दो एक उदाहरण देकर मैं भी पाठकों से बिदा लेता हूँ।

वीर-रस के तीन भेद दयावीर, दानवीर और युद्धवीर करके कवि ने प्रत्येक रूप में अपने आश्रयदाता को दिखाया है। युद्धवीर का उदाहरण देखिये :—

"सत्रुन के सिरनि निसान पचरंगन की,
लागी फहरान काल जीभ सी लहलही।
'सरसुति' छाये रण-सिंहन के सिंहनाद;
मारू राग गाये बाजी नौबत बहबही।
निकसि दलन ते चलन लागे बीर दुहुँ,
माची मार तीर तुपकन की गहगही।
अलस डगन जौ लौं देखैं तेग माधवेस,
तौ लौं हर मुंड-माल पहरैं डहडही॥"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब वीभत्स रस का उदाहरण भी लीजिये :—

"कोटा पै कुपित माधवेस असवार होत,
लच्छ कछवाहे वीर-रस अभिलाषे हैं।
धाये धूत धींग धीर धौंसनि धमकैं धरा,
धूरे धूरि सूर-ससि गगन गवाषे हैं॥
उप्परी उड़त वैरि खुप्परी कराकन सों,
भभकत लोहू मुंड झुंड काटि नाखे हैं।
मानहुँ मतंग रंग काली-काल खेलन को,
फागु समैं कंचन-कचोरे भरि राखे हैं।"

कोटा और जयपुर के दर्मियान संवत् १८२२ में जो युद्ध भटवाड़े के मैदान में हुआ था कवि का संकेत उसी की ओर है। इसके बाद अद्भुत, रस का वर्णन करके कवि निम्नप्रकार कहता हुआ ग्रंथ समाप्त करता है कि:—

"ये कीने हैं रस-कवित, अपनी बुधि अनुसार।
सोधि लीजिये छमा करि, माधवेस अवतार॥"

—अयोध्या प्रसाद शर्मा 'विशारद'

क्या गोस्वामी तुलसीदासजी के सोरठों में भूल है?

स्वामी तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस के लंकाकाण्ड में एक सोरठा दशानन की जड़ता के विषय में लिखा है; वह नीचे दिया जाता है—

"फूलै फरै न बेत, जदपि सुधा बरषहिं जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं बिरंचिसत॥

बाबू श्याम सुन्दर दासजी ने हाल में जो 'साहित्यालोचन' नामक एक आलोचनात्मक ग्रन्थ लिखा है। उसमें कविता का विवेचन करते हुए आपने तुलसी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दासजी के इस सोरठे पर भी टिप्पणी की है। बाबू साहब का कहना है कि 'वेत' फूलता-फलता है यह जानते हुए भी गोस्वामी तुलसीदासजी ने कवि-प्रथानुसार बेंत का न फूलना-फलना ही लिखा है, यह कविता का दोष है।

इस विषय पर प्रकाश डालने के अभिप्राय से यद्यपि कई लेख निकले हैं और उनमें लेखकों ने भिन्न भिन्न विचार प्रकट किये हैं। पर वास्तविक अर्थ की सत्यता को सप्रमाण सिद्ध करने के ही अभिप्राय से मैं इस विषय पर लेख लिख रहा हूँ। कुछ लोग 'वेत' को 'बेंत' ही मानते हैं और कुछ लोग उसे 'वियत्' का विकृत रूप।

झगड़े की जड़ 'वेत' शब्द है। इस सम्बन्ध में मैं ने कई प्राचीन और प्रामाणिक टीकाएँ देखीं; तथा कई 'रामचरित मानस' के विद्वानों से भी इसका अर्थ पूछा और स्वयं भी विचारने का प्रयत्न किया, सब के द्वारा यही निष्कर्ष निकला कि इस सोरठे में आया हुआ 'वेत' शब्द वस्तुतः 'वियत्' का 'विकृत रूप' ही है। लोग कह सकते हैं कि क्या आकाशवाची दूसरा शब्द नहीं था कि 'वियत्' को तोड़-मरोड़ कर 'वेत' किया, इसका उत्तर यही है कि 'वेत' शब्द का तुकान्त मिलाने के लिए आवश्यक था कि 'वियत्' को 'वेत' किया जाय। यदि कोई भ्रम-वश कहे कि "तुलसी दासजी की प्रांजल भाषा में 'वियत्' का 'वेत' नहीं होता।" तो यह उस की भूल है।

तुलसी दासजी ने बहुत से शब्दों को अपने अनुकूल विकृत किया और तोड़ा-मरोड़ा है। किन्तु इस के लिये उन्हें दोष देना भी कविता-पद्धति न जानने का पक्का प्रमाण है। मुख्यतः हिन्दी के प्राचीन कवियों को अधिकार था कि वे शब्द को अपने अनुकूल बिना किसी अड़चन के बना लें। तुलसी दासजी के 'रामचरित मानस' में ही देखिये प्राकृत के नियमानुसार संस्कृत के शुद्ध शब्दों का क्या रूप हो गया है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तपु बल तेहि करि आपु समाना।
रखिहैं इहाँ बरष परवाना॥

प्रभु ब्रह्मन्य देव मैं जाना।
मोहि निति पिता तजेउ भगवाना॥

का छति-लाभ जून धनु तोरे।
देखा राम नये के भोरे॥

बिधु बिष चवै स्रवै हिम आगी।
होइ वारि-चर वारि बिरागी॥

आनन अनल अम्बु पति जीहा।
उतपति पालन प्रलय समीहा॥"

उद्धृत चौपाइयों के रेखाङ्कित पदों पर ध्यान दीजिये क्या ये अपने शुद्ध रूप में हैं? प्राकृत के नियम के अनुसार शब्दों को विकृत कर लिया है। ठीक इसी प्रकार 'वियत्' शब्द के 'वि' में 'य' मिलकर 'वीत' हुआ और फिर दीर्घ 'ई' 'ए' होकर 'वीत' से 'वेत' हो गया।

तुलसी दासजी ने 'रामचरित मानस' में एक स्थल पर और 'वियत्' को 'बेत' लिखकर आकाश का ही अर्थ लिया है। अयोध्या-कांड के अन्त में—

"नित नव राम पेम-पनु पीना।
बढ़त धरमु दल मन न मलीना॥

जिमि जल निघटत सरद प्रकासे।
बिलसत 'बेत' सुबनज बिकासे॥"

इस स्थल पर तो स्पष्ट 'बेत' का अर्थ 'वियत्' (आकाश) के ही हैं। अतएव सोरठे में आये हुए 'वेत' शब्द का असली रूप 'वियत्' है और अर्थ है आकाश।

अब प्रश्न यह रहा कि आकाश का फूलना फलना कैसा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्कृत में 'ख पुष्पं' एक शब्द है यह उस स्थान पर प्रयुक्त होता है जहाँ 'असम्भावना' का भाव होता है। जैसे कहा जाय कि—

"मृग-तृष्णा-सरोवर में स्नान किये हुए, बाँझ का पुत्र मस्तक पर आकाश-पुष्प धारण किये आ रहा है।"

इस वाक्य में प्रत्येक बात असम्भव है। न तो मृगतृष्णा का सरोवर होता है, न बांझ के पुत्र और न आकाश में पुष्प। तुलसीदास जी ने भी इस शब्द का प्रयोग 'रामचरित मानस' के आरण्यकाण्ड में किया है—

"भयदायक खल कै प्रियबानी।
जिमि अकास के कुसुम भवानी॥"

'रामचरितमानस' ही नहीं तुलसीदास जी विनय-पत्रिका में भी 'नभ-बाटिका' प्रयोग करते हैं—

"जग-नभबाटिका रही है फूलि फबि रे।
धुवाँ के से धौरहर देखि तू न भूलि रे॥"

कहने का भाव यह कि असम्भव बात के लिए "नभपुष्पम्" "ख पुष्पम्" "आकाश के कुसुम" आदि शब्दों का प्रयोग होता है। आकाश नहीं फूलता-फलता लिखकर तुलसीदास जी ने यह स्पष्ट दिखाने का प्रयत्न किया है कि जिस प्रकार आकाश का फूलना-फलना असम्भव है उसी प्रकार यदि सौ ब्रह्मा भी मूर्ख को चैतन्य करने आवें तो उसे बोध नहीं हो सकता। क्योंकि आकाश की भाँति मूर्ख का हृदय भी शून्य है।

कुछ लोगों का कहना है कि "आकाश तो शून्य है वह कोई स्थान है कि वहाँ बादल बरसे? तथा बादल स्वयं आकाश के वायु-मंडल में रहते हैं तो क्या आप तुलसीदास पर अप्रयुक्त दोष लगावेंगे?"

किन्तु सोचने की बात है कि समताभाव दिखाने के लिये तीन बातों का सहारा लिया जाता है—आकार वर्ण और गुण यहाँ पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शून्यता का भाव लेकर मूर्ख के हृदय को आकाश के समान दिखाया गया है। यह हमने माना कि बादल आकश के ही वायु-मंडल में रहते हैं। पर जब उनके द्वारा वर्षा होने लगती है तो पानी कहां से होकर पृथ्वी पर गिरता है? पहले आकाश में आता है पर वहां शून्यता के कारण ठहरता नहीं; पृथिवी पर आकर गिर पड़ता है। ठीक इसी प्रकार लोग मूर्खों को उपदेश देते हैं पर वह उपदेश उनके हृदय में नहीं ठहरता।

× × × × ×

कुछ लोग यह कहते हैं कि "शेख़सादी ने भी एक शेर लिखा है जिसमें उसने लिखा है कि अमृत बरसने पर भी 'बेंत' फूलता-फलता नहीं है। सम्भव है कि तुलसीदास जी ने इसका ही अनुवाद कर दिया हो।" प्रमाण में निम्नलिखित शेर लिखते हैं—

"अब्र गर आबे ज़िन्दगी बारद।
हरगिज़ अज़ शाख़ बेद बर न ख़ुरी॥"*

सम्भव है कि फ़ारस में कोई इस प्रकार का 'बेंत' हो जो केवल फूलता हो, फलता न हो; इसके विषय में कवि ने लिख दिया हो पर भारत का बेंत' तो फूलता-फलता है; इसके प्रचुर प्रमाण हैं; वैद्यक में 'बेत-बीज' को कफ नाशक बताया गया है। दूसरे जो लोग श्री जगन्नाथ जी (पुरी) में दर्शनादि या तीर्थ करने के अभिप्राय से गये हैं, वे भली भांति जानते हैं कि वहाँ पर 'बेत' के फलों की माला एक आने में मिलती है और वह जगन्नाथ जी को चढ़ाई जाती है।

शेख़ सादी के ग्रन्थ तुलसीदास जी को यदि सुलभ हो गये थे तो मैं नहीं समझता कि उन्हें भवभूति का 'उत्तर-रामचरित' क्यों नहीं सुलभ हुआ होगा? जिस में भवभूति ने स्पष्ट 'वानीर-प्रसव' लिखा है—

---

*यदि बादल अमृत भी बरसावे तो भी 'बेत' की शाख़ से फल नहीं मिल सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इह समरहुकुन्ता क्रांत वानीर मुक्त, प्रसव सुरभि शीत स्वच्छ तोया वहन्ति। फल भर परिणाम श्याम जम्बू निकुञ्ज, स्खलन मुखर भूरि स्रोत सो निर्झरिण्यः॥

अमर कोष जो संस्कृत का प्रसिद्ध ग्रन्थ है उसमें स्पष्ट लिखा है—

"वेत से स्थाऽभ्र पुष्पं विदुर शीत वानीर वंजुलाः"

क्या इसे भी तुलसी दासजी ने न देखा होगा? जिस में प्रत्यक्ष लिखा है "अभ्र पुष्प" (बादल के समय अर्थात् वर्षारम्भ के प्रथम मेघ के समय पुष्प हों जिसमें)!

तुलसी दासजी की कविता पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे 'वेत' से अधिक परिचित थे, क्योंकि 'विनय-पत्रिका' में उन्होंने बड़ा सुन्दर वर्णन किया है—

"हरित गंभीर वानीर दुहुँतीर वर,
मध्य धारा विशद विश्व अभिरामिनी।
नील पर्यंक कृत शयन सर्पेश जनु,
सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी।"

एक सज्जन ने अपने लेख में यह लिखा था कि "वेत दो प्रकार के होते हैं, एक 'स्थल' दूसरा 'जल'। 'स्थल-वेत' नहीं फूलता-फलता और 'जल वेत' फूलता फलता है। तुलसीदासजी चित्रकूट के पर्वतीय देश में रहते थे वहाँ का वेत नहीं फूलता-फलता था; इसी कारण उन्होंने अपनी बढ़िया उक्ति उसके सहारे रची है।" यदि लेखक महोदय की बातें मान ली जायं कि 'वेत' दो प्रकार के होते हैं तो तुलसी दासजी ने केवल 'स्थल-वेत' का ही अनुभव किया हो, वह बात भी नहीं है; ऊपर का अवतरण चिल्ला कर कह रहा है कि 'जल-वेत' का अनुभव भी तुलसी दासजी को खूब था; जो लेखक के कथनानुसार फूलता-फलता है। अतएव फूलने-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फलने की सच्ची खबर जानते हुए, कभी भी तुलसीदासजी ऐसा नहीं लिख सकते थे कि 'वेत' फूलता-फलता ही नहीं।

कहने का अभिप्राय यही है कि तुलसीदासजी ने उक्त सोरठे में 'वेत' शब्द 'वियत्' का ही अपभ्रंश रखा है; उन्होंने इस में 'वेत' का न फूलने-फलने वाला भाव लिख कर भूल नहीं की है। आशा है आगामी 'सम्मेलन' के अवसर पर भरतपुर में ही साहित्य-प्रेमी विद्वज्जन इसका निपटारा कर डालेंगे? मेरे विचार से 'सम्मेलन' के अधिवेशनों में इस बात को भी सम्मिलित करना विशेष उपकारी और उपयोगी है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि 'वेत' 'वियत्' का ही अपभ्रंश है; यह विश्वास मैं तब तक नहीं त्याग सकता, जब तक कोई मुझे अच्छी तरह यह न समझा दे कि वहां पर 'वेत' का अर्थ 'वेंत' होना ही विशेष सुन्दर और मनोरंजक है। आशा है। लोग इस ओर विशेष रूप से अवश्य ध्यान देंगे।

—रामजी बाजपेयी 'बसन्त'

लाहौर में प्रान्तीय हिन्दी-सम्मेलन की तैयारियां

म० हंसराज का भाषण

पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के तीसरे अधिवेशन के संबंध में महात्मा जी ने कहा, इसमें सन्देह नहीं कि पंजाब में हिन्दी-प्रेमियों, हिन्दी-लेखकों और हिन्दी-साहित्य के रसिकों की संख्या कम है। इसके बहुत से कारण हैं। सब से बड़ा यह कि पंजाब पर उत्तर पश्चिम से लगातार चढ़ाइयां होती रहीं, जिनके बीच में अपनी सभ्यता और संस्कृति को बचाये रखना बहुत कठिन था। पंजाब की क्या हालत थी सो इस कहावत से मालूम होता है।

जो खाया, जो पहना सो अपना, जो बचा वह अहमदशाह अब्दाली का; ऐसी स्थिति में हिन्दी कहाँ बचती? लेकिन पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस बरस में उसका फिर से उद्धार होने लगा है। आर्य समाज और सनातन-धर्म आन्दोलनों से, विशेष कर उनके शिक्षणालयों से हिन्दी का प्रचार हुआ है। स्त्री-शिक्षा का प्रचार हिन्दी-प्रचार में सबसे बड़ा सहायक हुआ है। यू० पी० का पड़ोस होने से उसमें मदद मिली है। पर अभी तक जो कुछ हुआ है वह ना काफ़ी है। हमें अभी बहुत काम करना है। बेशक, हमारे रास्ते में बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ हैं। हिन्दी पंजाब की अदालती भाषा नहीं है। दूसरे हमारे सिक्ख भाइयों का यह ख़याल है कि उनकी भाषा पंजाबी और लिपि गुरुमुखी है। गुरुमुखी भी देवनागरी का दूसरा रूप ही है। पर क्योंकि हिन्दू और सिक्ख इस विषय में समझौता नहीं कर सकते; इस कारण न हिन्दुओं की चलती है और न सिक्खों की और उर्दू आसानी से अदालती भाषा बनी रह सकती है। पर इन कठिनाइयों के बावजूद हमें काम करना है। अपनी भाषा के बिना हमारा सामाजिक और राजनीतिक उद्धार नहीं हो सकता। राजनीतिक नेता इस बात को समझते हैं। एक भाषा के बिना कोई देश एक नहीं हो सकता। आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य में कई भाषायें थीं। लड़ाई के समय वह साम्राज्य बना न रह सका, टुकड़े-टुकड़े हो गया। हमारे देश के राजनीतिक नेताओं ने भी यह तत्व अब समझ लिया है। महा० गांधी ने कांग्रेस के काम-काज में हिन्दी को लाकर बड़ा उपकार किया है; चालीस साल पहिले स्वामी दयानन्दजी ने इसी तत्व को पहचाना था और इसकी घोषणा की थी।

यह प्रश्न टल नहीं सकता, बहुत लोग टालना चाहते हैं, किन्तु इसे हल किये बिना देश भक्त देश को स्वतंत्र नहीं करा सकते। प्रश्न यह है कि कौन सी भाषा हमारी राष्ट्र भाषा हो सकती है। स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी कहते हैं—हिन्दी। हिन्दी ही राष्ट्र भाषा हो सकती है; इसके कारण स्पष्ट हैं। पहिली बात यह कि हिन्दी को बोलने वाले सब से अधिक हैं। दूसरी यह कि जिन प्रान्तों में हिन्दी नहीं बोली जाती वहां भी उनकी प्रान्तिक भाषाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सिवाय और सब से अधिक हिन्दी समझी जाती है। तीसरी यह कि इसकी देवनागरी लिपि भारत वर्ष में सब से अधिक प्रचलित है। पंजाब में उर्दू जानने वाले लाखों हैं; यू० पी० में भी कुछ लाख हैं; उसके परे फारसी अक्षरों का नाम निशान भी नहीं है। किन्तु देव नागरी जानने वालों की संख्या करोड़ों है। बंगला, और गुजराती, सब देवनागरी के ही रूपान्तर हैं। इस बात को हमें ख़ास तौर से समझ लेना चाहिये। कि देवनागरी लिपि हिन्दी-भाषा से भी अधिक प्रचलित है।

जो लोग अँगरेज़ी को राष्ट्र-भाषा और रोमन लिपि को राष्ट्र लिपि बनाने की बात करते हैं, वे इतिहास नहीं जानते। एक हज़ार बरस तक भी मौजूदा हालात जारी रहे तो भी ऐसा नहीं हो सकता। कई पण्डितों का विचार है कि संस्कृत देश की भाषा हो सकती है। संस्कृत पर हमारी बड़ी श्रद्धा है। वह हमें प्राणों से भी प्रिय है, किन्तु आज वह राष्ट्र-भाषा नहीं हो सकती।

देश की राष्ट्र-भाषा क्या हो—यह एक राजनैतिक प्रश्न हमारे सामने है। और इसका निश्चित उत्तर है—हिन्दी।

हिन्दी प्रचार में अनेक शक्तियां सहायक का काम कर रही हैं। सब से पहले देश-भक्ति और राष्ट्रीयता के भावों की शक्ति हिन्दी के साथ है। दूसरी बात यह कि यदि देश में दो राष्ट्र-भाषा और दो राष्ट्र लिपियां हों—उर्दू और नागरी दोनों—तो उर्दू वालों की संख्या दो अढ़ाई करोड़ से अधिक नहीं हो सकती। बाकी जनता में फ़ारसी लिपि का नामोनिशान भी न होगा। उर्दू को चाहने वाले यदि यह दावा कर सकें कि वे सारे भारतवर्ष से देवनागरी अक्षरों को निकालकर उर्दू के द्वारा लिपि की एकता स्थापित कर सकते हैं; तो वे बेशक ऐसा करें। किन्तु यदि वे अपने दिलों में जानते हैं कि ऐसा हो नहीं सकता। और फिर भी वे देवनागरी के साथ-साथ उर्दू को रखने का हठ करते हैं। तो हमें कहना होगा कि केवल देश के जीवन में एक दुविधा उपस्थित कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरी शक्ति जो हिन्दी के प्रचार में बड़ी सहायक है वह स्त्री शिक्षा का प्रचार है; किन्तु एक बात और। आप लोग हिन्दू हैं, चाहे सनातन धर्मी हों चाहे आर्य समाजी। आपका धर्म देव-नागरी अक्षरों में है वेदों और शास्त्रोंको किसी विदेशी भाषा में अनुवाद करना बहुत ही कठिन है। आर्य भाषाओं में उनके शब्द ज्यों के त्यों रक्खे जा सकते हैं, उनका भाव ज्यों का त्यों बना रहता है। आप लोगों की धर्म-शक्ति भी हिन्दी भाषा और साहित्य के प्रचार में सहायता देगी।

ये चार अखिल भारतीय-सार्वदेशिक शक्तियां हैं जो प्रान्तीयता की कठिनाइयों को दूर करेंगी। हम नहीं चाहते कि बंगाली बंगला को और गुजराती गुजराती को छोड़ दें। हमारा केवल यह कहना है कि देश की एक साहित्यिक राष्ट्र-भाषा होनी चाहिये; जिसमें भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग अपने विचार एक दूसरे तक पहुँचा सकें।

आगे चलकर महात्मा जी ने कहा कि पंजाब की कठिनाइयों को देखकर आप लोग घबड़ायें नहीं। इन कठिनाइयों के बावजूद पंजाब में हिन्दी ने उन्नति की है। ऐसे बहुत लोग हैं जो हिन्दी का गला घोंटना चाहते हैं। पर वे घोंट नहीं सकते। लेकिन हिन्दी के प्रचार के लिये आपको प्रयत्न करना होगा। वह प्रयत्न बड़ा आसान है हिन्दी भाषा और लिपि बड़ी पूर्ण हैं। उसमें एक अक्षर; की एक ही आवाज़ होती हैं, और एक आवाज़ का एक ही अक्षर; मुझे दुःख होता है जब किसी पंजाबी के मुँह से यह बात सुनता हूँ कि हम हिन्दी नहीं पढ़ सकते। अन्त में महात्मा जी ने उपस्थित जनता से अपील की कि मई के अन्त में लाहौर में जो प्रान्तीय हिन्दी-सम्मेलन होने वाला है, इसको पूरी तरह कामयाब बनावें। आपने कहा यह हमारा सौभाग्य है कि हमें प्रो० जयचन्द्र जैसे लगन वाले और पुरुषार्थी युवक इस काम को चलाने के लिए मिले हैं। जिनके पुरुषार्थ से जगह-जगह देव-नागरी-प्रचारणी संस्थायें बन रही हैं। दोहराते हुए आपने फिर कहा कि जो लोग अपनी मातृ-भाषा पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार नहीं रखते, चाहे वे कितने ही विद्वान दिखायी दें; मैं उन्हें शिक्षित नहीं समझता। आप में से जो हिन्दी जानते हैं उन्हें मिशनरी का काम करना चाहिए। हम लोगों का यह बेपरवाही का भाव बहुत ही बुरा है; कि हमें क्या चाहे हिन्दी हो या उर्दू। कठिनाइयों से मत डरो। लोग कहते हैं पंजाब में हिन्दी का क्या बनेगा—यहाँ तो सरकार भी इसे नहीं चाहती, सिक्ख भी नहीं चाहते, और मुसलमान तो इसके विरुद्ध ही हैं। पर क्या हममें कोई शक्ति नहीं कि अपने सिक्ख और मुसलिम भाइयों के विचार बदल सकें ? सार्व देशिक शक्तियां हमारे साथ हैं। सिक्खों और मुसलमानों का भी इसमें लाभ है कि वे हिन्दी सीखें। हम नहीं कहते कोई उर्दू, गुरू मुखी या अंग्रेज़ी को छोड़ दे; हम सिर्फ़ यह कहते हैं कि वे हिन्दी को दूसरी भाषा के रूप में सीख लें; क्योंकि यह सारे देश की भाषा है, किसी सूबे य फिरके की नहीं।

अन्त में महात्माजी ने उपस्थित जनता से अपनी सभ्यता, अपने इतिहास और अपने पूर्वजों के नाम पर अपील की और हिन्दी-प्रचार में योगदेने को कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादकीय

वज्रपात पर वज्रपात !!!

हा ! सप्रेजी !!

अत्यन्त दुख के साथ हम श्रीयुत पं० माधवरावजी सप्रे बी० ए० की असामयिक मृत्यु का शोक-प्रद संवाद अपने पाठकों को देने के लिये क्रूर नियति की निष्ठुर-नीति के कारण बाध्य हुए हैं। सप्रेजी प्रथम महाराष्ट्र सज्जन थे जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के रूप में लाने के लिये अनवरत परिश्रम किया। मध्य-प्रदेश में आपके कारण जो जागृति हुई, वह किसी से अप्रकट नहीं है। आप हिन्दी के अनन्य भक्त थे। जिन्होंने 'हिन्दी-केसरी' को आपके सम्पादकत्व-काल में देखा है; उनसे कुछ छिपा नहीं है। प्रचार करते हुए, ग्रन्थमाला के रूप में तथा पत्रों द्वारा आप जीवन भर राष्ट्र-भाषा हिन्दी की सेवा करते रहे। लोकमान्य तिलक कृत 'गीता-रहस्य' का उत्तम हिन्दी अनुवाद करके आपने सब से प्रथम हिन्दी-भाषियों को उसका रसास्वादन कराया। आप सं० १९२१ वि० के पन्द्रहवें सम्मेलन देहरादून में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति चुने गये थे, उस समय का तात्कालिक प्रस्तुत किया हुआ भाषण, श्रवण करने योग्य वस्तु है। आप बराबर सम्मेलनों में उपस्थित होते रहते थे। और अपने सदुपदेशों से सञ्चालन में सदैव सहायता देते रहे। जीवन भर सम्मेलन के हित का आपको ध्यान रहा और जो कुछ किया हिन्दी के कल्याण के लिये। कहना न होगा कि आपका जीवन और मरण सब कुछ हिन्दी के लिये था। आपकी मृत्यु से हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगत् का एक सुदृढ़ स्तंभ टूट गया। हिन्दी-प्रेमियों के हृदय पर इसका जो आघात हुआ इसको वे ही अनुभव कर सकते हैं।

'भारतीय-आत्मा' के शब्दों में "अहह !! बिना बादल बिजली गिर पड़ी ! निष्ठुर व्यापार हुआ !!!"

* हम शोक-संतप्त हृदय से सप्रेजी के वृद्ध भाई पं० बाबूरावजी सप्रे, तीनों पुत्रों, परिवार और प्रेमियों के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते है तथा परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह सप्रेजी की आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

❧ ❧ ❧

वज्रपात !

इस वर्ष सम्मेलन पर जैसी आपत्तियां आयीं हैं अवर्णनीय है। अभी श्रद्धेय पं० राधाचरणजी गोस्वामी के वियोग के शोकाश्रुभी न सूखने पाये थे कि वयो-वृद्ध सम्मेलन के प्राचीन कर्णधार सतना (रीवा) निवासी राय बहादुर लाल बिहारीजी की मृत्यु का दुखद समाचार मिला।

आप सम्मेलन के जन्मकाल से ही आय-व्यय निरीक्षक रहे। और मरण-पर्यन्त आपने बड़ी ख़ूबी के साथ इसे निबाहा। प्रति वर्ष कई-कई दिन लगातार परिश्रम कर के इस वृद्ध अवस्था में भी सम्मेलन के आय-व्यय को जांच कर रिपोर्ट देते रहे।

अभी हाल ही में मुझे सतना में आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सम्मेलन के साथ आपने पूर्ण सहानुभूति दिखायी थी।

आप बड़े ही मिलनसार और सज्जन पुरुष थे। आपकी गणना वहाँ के बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियों में थी। राजा और प्रजा दोनों में आपका अच्छा सम्मान था। यह स्वप्न में भी ध्यान नहीं था कि

---

* सप्रेजी का जन्म ता० १९ जून सन् १८७१ को पथरिया ग्राम (दमोह) में उच्च महाराष्ट्र ब्राह्मण कुल में हुआ था और १८९८ ई० में बी० ए० पास किया। आपके प्रभाव से मुख्यतः छत्तीसगढ़ प्रान्त में और साधारणतः मध्य-प्रदेश भर में अच्छी जागृति हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपसे इतनी जल्दी विछोह हो जायगा। बहुधा आप सम्मेलनों में सम्मिलित होते रहे। आप वृद्ध होते हुए भी मातृ-भाषा हिन्दी की बराबर सेवा करते रहे। आपकी मृत्यु से एक वृद्ध हिन्दी-प्रेमी और उसका अनन्य भक्त हमारे बीच से उठ गया। हम उनके सुयोग्य पुत्र बाबू शारदा प्रसादजी वकील तथा अन्य परिवार के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं, और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि मृतात्मा को शान्ति प्रदान करे।

हिन्दी सेवियों पर दैवी कोप !

इस मास में हिन्दी-सेवियों पर दैवी विपत्ति की जैसी बिजलियाँ गिरीं; वह पाठक ऊपर पढ़ चुके होंगे।

हमारे सुयोग्य मित्र साहित्य सेवी, स्थायी-समिति के सदस्य पं० गोकुलचन्द्र शर्मा बी. ए. (कवि) भी इन अपत्तियों से नहीं बच सके।

आप पर तो आपत्तियों के पहाड़ टूट पड़े। प्रथम आपकी धर्म पत्नी का शरीरान्त हुआ फिर एक नन्हा सा बच्चा भी चलता बना; अन्त में आपकी लड़की ने भी आपका साथ छोड़ दिया इस प्रकार आपत्तियों पर आपत्तियाँ आयीं इनका जैसा असहनीय दुख हुआ होगा वाणी से परे है। हमारे पास शब्द नहीं है कि जिनसे आपको ढाढ़स बँधावें। परमात्मा से प्रार्थना है वह आपको धैर्य और मृतात्माओं को शान्ति प्रदान करें।

बाबूजी पर आपत्ति

हमें यह जानकर अत्यन्त दुख हुआ कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान ना० प्र० सभा, काशी के सर्वस्व श्रीमान् बाबू श्याम सुन्दर दासजी के बड़े पुत्र कन्हैयालालजी का कलकत्ते में स्वर्गवास हो गया। आप वहाँ इलाहाबाद बैंक की शाखा में कार्य करते थे एक दिन यकायक गुर्दे में दर्द हुआ और उसी से धड़कन बन्द हो गयी। आप बड़े सुशील और मातृ-पितृ भक्त थे। आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असामयिक मृत्यु से बाबू साहब तथा उनके अन्य परिवार को जो दुख हुआ, वर्णनातीत है। किन शब्दों में हम आपके साथ सहानुभूति प्रकट करें। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह उक्त बाबू साहब तथा उनके परिवार को धैर्य प्रदान करें और मृतात्मा को शान्ति दें।

स्टाम्पों में हिन्दी

नासिक में आगामी जुलाई से अदालती स्टाम्प छपने प्रारंभ हो जायेंगे। प्रत्येक स्टाम्प पर, अंग्रेज़ी के साथ, देवनागरी अक्षरों में भी, मूल्य छपा रहेगा। जब तक नये स्टाम्पों के साँचे नहीं बन जाते; तब तक पुराने ढंग के ही स्टाम्प छपेंगे; पर उनमें भी छपे टिकट के ठीक नीचे, सफेद ज़मीन पर हिन्दी में मूल्य छपा रहेगा। तदर्थ अधिकारी वर्ग धन्यवाद के पात्र हैं।

बोधी कवि पर विद्वानों की राय

फाल्गुन की पत्रिका में 'बोधी' कवि कृत रामसागर-ग्रन्थ पर एक लेख पं० विश्वनाथसिंहजी शर्मा का प्रकाशित हुआ था उसमें लिपि कर्ता ने भूल से 'संवत् सहस्र सै सत्तासी' कर दिया था। शर्माजी ने इसी आधार पर इसे सं० ११८७ का रचा बतलाया था।

मेरी धारणा थी कि यह अठारहवीं शताब्दी का रचा हुआ है। जिसका उल्लेख भी कर दिया था। और विद्वत्समाज से सम्मति देने की प्रार्थना की थी। हर्ष की बात है कि प्रार्थना व्यर्थ नहीं गयी श्रीमान् श्रद्धेय रायबहादुर हीरालाल साहब रिटायर्ड डिप्टी कमिश्नर महोदय जबलपुर के पत्र से मेरी यह धारणा निश्चित रूप में परिणत हो गयी। आपकी सम्मति यह है—

"अशुद्ध प्रतिलिपि के कारण यह भ्रम उत्पन्न हुआ है। यथार्थ में लेखनकाल की तिथि निम्नलिखित होनी चाहिये :—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत् सत्रह सै सत्तासी ।
अगहन मास कथा परकासी ॥

नक़ल करने वाले ने सत्रह की जगह सहस्र लिख मारा है; इससे पाठक चक्कर में पड़ गये हैं, भाषा स्पष्ट बता रही है कि यह कविता तुलसी काल के कुछ पीछे की है। शैली में तुलसीदास का अनुकरण किया गया है।"

श्रीयुत बाबू रामानन्द प्रसादसिंह साहीजी छपरा निवासी सज्जन ने भी यही संवत ठीक माना है।

मध्य-प्रदेशीय, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

इस वर्ष छिन्दवाड़ा में, प्रान्तीय-डिस्ट्रिक्ट-कौंसिल-परिषद् तथा उसके साथ प्रान्तीय-शिक्षक-परिषद् होने वाली है। इस अवसर पर बहुत से साहित्य-सेवी तथा हिन्दी-प्रेमी सज्जन पधारेंगे।

अच्छा हो प्रान्त के हिन्दी-प्रेमी सज्जन इसी अवसर पर प्रान्तीय-साहित्य-सम्मेलन भी कर डालें। यद्यपि सप्रेजी के कुसमय देहावसान से प्रान्त के हिन्दी प्रचार को गहरा धक्का लगा, परन्तु फिर भी प्रान्त-वासियों को अपने कर्तव्य का पालन अवश्य करना चाहिये। और जिस प्रकार भी हो सके सम्मेलन अवश्य कर डालना चाहिये।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, भरतपुर

सम्मेलन की तैयारियां फिर ज़ोरों से होने लगी हैं। अभी हाल में विज्ञप्ति संख्या छठवीं प्रकाशित हुई है। जिस से विदित हुआ कि विषय सूची तय्यार हो गयी। वह सम्मेलन में आ गयी है। लाला बिहारी लाल जी चौधरी अर्थ-मंत्री नियुक्त हुए हैं। श्री युत पं० नरदेव शास्त्री जी के प्रयत्न से वहाँ सम्मेलन के साथ-साथ सम्पादक-सम्मेलन भी होने वाला है। जिसकी स्वागत-समिति बनने वाली है। प्रदर्शिनी की व्यवस्था की जारही है। इसकी व्यवस्था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये एक समिति भी बन गयी है; जिसके संयोजक अधिकारी जगन्नाथ दास जी हैं। अधिकारीजी, और पं० बालकृष्णजी दुबे राजपूताने में भ्रमण के लिये अजमेर पहुँच गये हैं; वहाँ पर राहतजी को साथ लेकर राज्यों में भ्रमण-कार्य प्रारंभ कर दिया गया है। कार्य फिर तीव्रता से चलने लगा है। आशा है राज्यों में बहुत अच्छी सफलता प्राप्त होगी।

प्रत्येक राजपूताना निवासी को मुक्त-हस्त से सहायता प्रदान करना चाहिये।

समाचार मिले हैं कि श्रद्धेय पं० गौरीशंकर-हीराचन्द जी ओझा के नेतृत्व में अजमेर में सम्मेलन के लिये अच्छी सफलता मिल रही है। आर्य समाज से भी अच्छी आशा हो रही है। जोधपुर में डाक्टर ओंकारसिंहजी के नेतृत्व में सम्मेलन की वास्तविक सहायता करने का प्रयत्न किया जा रहा है। राहत जी ने सम्मेलन के हितार्थ मध्यभारत का दौरा स्थगित कर दिया है; डेपूटेशन नसीराबाद की ओर भ्रमण कर रहा है।

❧ ❧ ❧

कान्य-कुब्ज सभा और हिन्दी

हर्ष का विषय है कि श्री कान्यकुब्ज महती सभा ने प्रयाग के अधिवेशन में अन्य कई उपयोगी प्रस्तावों के साथ हिन्दी-भाषा और नागरी-लिपि को भी प्रोत्साहन देने के लिये एक प्रस्ताव पास किया है :—

प्रस्ताव यह है :—

"—हिन्दी-भाषा एवं नागरी-लिपि की उन्नत करने की आवश्यकता समझती हुई, यह सभा कान्यकुब्ज वकीलों से आदेश करती है कि जिन जिन स्थानों में वे हिन्दी में काम कर सकते हैं, करें, और व्यवस्थापक सभाओं के सदस्यों तथा स्थानीय स्वराज्य-संस्थाओं के सदस्यों एवं अन्य सरकारी कर्मचारी कान्यकुब्जों से आशा करती है कि वे यथासाध्य नागरी-लिपि तथा हिन्दी-भाषा का प्रचार करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सभा प्रत्येक कान्यकुब्ज से आदेश करती है कि वे अपने बालक, बालिकाओं को सबसे प्रथम हिन्दी-भाषा पढ़ावें।

प्रस्तावक—पं० सद्गुरु शरण अवस्थी, कानपूर
अनुमोदक—पं० वैद्यनाथ मिश्र 'विह्वल', प्रयाग

यह कितना उपयोगी, सामयिक, हितकर तथा श्रेष्ठ प्रस्ताव है कि इसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं रह जाती है। आशा है, कान्य-कुब्ज मात्र, इस प्रस्ताव को पूर्ण-रीत्या कार्य में परिणत करने का प्रयत्न करेंगे।

साथ ही अन्य जातीय संस्थाओं से भी हम सानुरोध निवेदन करते हैं कि वे भी अपनी जातीय सभाओं में इस प्रस्ताव को स्वीकृत कर हिन्दी को विस्तार देने का प्रयत्न करें।

जहां हम एक ओर प्रोत्साहित होकर इसे उन्नति देने का प्रयत्न कर रहे है वहां कुछ हमारे मित्र! इसकी जड़ में कुल्हाड़ी मार रहे हैं। यदि अभी हम सावधान न हुए तो स्थिति और भी गिर जायगी। आशा है हिन्दी प्रेमी वकील, अधिकारी तथा अन्य सज्जन कुछ साहस से कार्य लेंगे।

❧ ❧ ❧

जीवन के चिह्न

ना० प्र० सभा काशी ने, अलीगढ़ में किये गये आल-इंडिया मुस्लिम लीग के उस प्रस्ताव के विरोध में, जिसमें उसने बिहार-उड़ीसा की अदालतों में, वहाँ के मुसलमानों के लिये उर्दू में अर्ज़ी दावे पेश किये जाने की आज्ञा चाही है; घोर विरोध करके सर्वत्र सूचना प्रकाशित की है।

सभा का यह कार्य सामयिक और अनुकरणीय है। आशा है प्रत्येक स्थान में इसी प्रकार के प्रस्ताव पास कर के मुसलमानों के इस अनुचित कार्य का तीव्र विरोध किया जायगा।

सरकार ने अभी तक पंजाब में हिन्दी को स्थान नहीं दिया जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वहाँ की आधी जनता की भाषा है। और विदेशी लिपि को ही आश्रय दे रही है।

दोष पूर्ण उर्दू लिपि का बढ़ाना कर्मचारियों के हाथ में ऐसी शक्ति का दे देना है, जिससे रिश्वत ख़ोरी आदि बढ़ने की ही संभावना है। संयुक्त-प्रदेश की अदालतों का नमूना प्रत्यक्ष है। अतः इस देश के लिये उर्दू कदापि हितकर नहीं।

देवनागरी पर घोर अत्याचार

(१)

ज़िला बदाऊँ के भूतपूर्व तअस्सुबी डिप्टी इन्स्पेक्टर काज़ी नसीरुद्दीन ने वहाँ के डिस्ट्रिक बोर्ड में एक प्रस्ताव पास करवा लिया है, कि चौदह मिडिल स्कूलों में से केवल ५ में ही हिन्दी पढ़ायी जाय। ज्ञात नहीं ऐसा क्यों किया गया? हम इस मामले में उस काज़ी को इतना दोषी नहीं पाते; जितना हिन्दुओं को। हिन्दुओं की कायरता, अनैक्यता, अज्ञानता और असमर्थता ही उनका पतन करा रही है। यदि हम में जीवन हो, उत्साह हो, एकता हो और कार्यपटुता हो; तो कोई शक्ति नहीं है, जो हम को झुका सके और ऐसे काम करा सके। परन्तु दुर्भाग्य से प्रत्येक बोर्ड में कुछ न कुछ संख्या विभीषणों की दिखलायी देती है।

अभी काशी की घटना नहीं भूले थे, कि बदाऊँ से ऐसे भयंकर समाचार आ रहे हैं; जो राष्ट्र भाषा के लिये अत्यन्त हानिकारक तथा हिन्दू जाति के लिये घोर अपमान जनक हैं। मुसलमानों द्वारा प्रत्येक प्रकार से हिन्दुओं को हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया जा रहा है। हमें जल्द सावधान हो जाना चाहिये। हम में इतनी शक्ति संघटित हो जानी चाहिये, कि किसी दुष्ट को प्रान्त की मातृ-भाषा पर आक्रमण करने का साहस न हो। जिस क़लम से ऐसे शब्द लिखे जावें उन्हें तोड़ने, उस दावात को फोड़ने और यदि आवश्यकता हो तो राष्ट्र भाषा और मातृ भाषा का अपमान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वाली उन उँगलियों के कुचलने की शक्ति होनी चाहिये ताकि भविष्य में ऐसे कुत्सित दृश्य देखने का अवसर न आवे। हम इस संबंध की जांच विशेष प्रतिनिधि द्वारा करा रहे, तब हम पुनः विचार प्रकट करेंगे।

(२)

सुल्तानपुर—से भी इसी प्रकार के समाचार आ रहे हैं। वहाँ का मुसलमान सब डिप्टी-इन्स्पेक्टर हिन्दू अध्यापकों को वाध्य करता है, कि वे उर्दू में अपने रजिस्टर आदि भरें, कभी-कभी इसी कारण उन अध्यापकों पर जुर्माना भी किये जाने के समाचार सुने गये हैं।

हम पूछना चाहते हैं कि यह किस नियम के अधार पर किया जाता है?

साथ में सुल्तानपुर के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने इस प्रकार की अंधेर गर्दी क्यों मचवा रक्खी है? ऐसे व्यक्ति क्या किसी सरकारी पद पर कभी भी रहने चाहिये जिनमें तअस्सुब की मात्रा इतनी अधिक हो। आशा है कोई डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का मेम्बर इस पर अधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न करेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी-जगत्

हर्ष समाचार

हिन्दी प्रेमियों को यह जान कर हर्ष होगा, कि हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी, विद्वान श्रद्धेय पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी का स्वास्थ्य सुधर रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह द्विवेदी जी को शीघ्र रोग मुक्त करे। द्विवेदीजी हिन्दी-संसार के गौरव-स्वरूप हैं।

मद्रास में हिन्दी

अनन्तापुर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने, अपने हाई स्कूलों व मिडिल स्कूलों में, हिन्दी भाषा को एक इच्छित विषय बनाने का प्रस्ताव पास किया है।

विहार प्रान्तीय कवि-सम्मेलन

१४ और १५ अप्रैल को विहार प्रान्तीय कवि-सम्मेलन गया में श्रीयुत पं० अक्षयवट मिश्र के समापतित्व में सानन्द समाप्त होगया। पं० कालीप्रसाद सिंहजी चौधरी स्वागताध्यक्ष थे। आनरेबल बा० अनुग्रह नारायणसिंहजी मेम्बर कौंसिल आफ़स्टेट, पं० जानकी शरण आदि सज्जन और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान् लाला भगवान दीनजी भी सम्मेलन में उपस्थित थे। गया की हिन्दी-साहित्य-सभा का वार्षिक अधिवेशन समयाभाव से स्थगित कर दिया गया।

बम्बई में राष्ट्र-भाषा के लिये उद्योग

अभी हाल में बम्बई के मारवाड़ी विद्यालय में सेठ आनन्दी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल जी पोद्दार जे० पी० के सभापतित्व में वहाँ के नागरिकों की एक सभा हुई। जिसमें म्यूनिस्पल स्कूलोंके विद्यार्थियोंके खेल तथा वाद-विवाद हुए। उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पदक व पारितोषिक दिये गये। फिर म्यूनिस्पल गुजराती स्कूलों के सुपरिण्टेण्डेंट श्री युत हिम्मतलाल गणेश जी अंजारिया एम. ए. एल. एल. बी, का हिन्दी भाषा पर प्रभावशाली भाषण हुआ। नरसिंह दास जोगराज फर्म के मालिक सेठ रामचन्द्रजी बी. ए. ने अगले वर्ष प्रथम रहने वाले स्कूल को चांदी की ढाल विजय-चिह्न स्वरूप देने का वचन दिया। अन्य भी कुछ भाषण हुए और सभापति को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

राजस्थान में प्रचार कार्य

श्रीयुत क्षेमानन्द जी राहत राजपूताने में हिन्दी के लिये बहुत उद्योग कर रहे हैं। वहाँ की एक डाइरेक्टरी तय्यार करायी जा रही है जिसका कार्य बड़ी तीव्रता से हो रहा है।

अभी इस विभाग की ओर से विज्ञप्ति संख्या नं० ३ प्रकाशित हुई है। जिसमें राज्यों से शिक्षा-संबंधी सूचियां माँगी गयी हैं। आशा है, प्रत्येक राज्य इस संबंधमें उदारता से इस प्रकार की सहायता प्रदान करेगा।

विहार-प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

दरभंगा में प्लेग फैल जाने के कारण विहार-प्रान्तीय, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ज्येष्ठ शुक्ल ११ और १२ (२१—२२ जून) को होना निश्चित हुआ है। एक उपसमिति कार्य-सूची और प्रस्ताव-सूची तय्यार करने के लिये बनायी गयी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकावलोकन

हिन्दुत्व—पृष्ठ संख्या १७० मूल्य ।।।) छपाई- सफाई, और काग़ज सब अच्छा है।

यह पुस्तक देश भक्त सावरकर कृत अंग्रेज़ी 'हिन्दुत्व' का हिन्दी अनुवाद है। अनुवाद कर्त्ता पं० लक्ष्मण नारायण गर्दे, सम्पादक 'श्रीकृष्ण-संदेश' हैं।

पुस्तक बड़े ही महत्व की है। प्रारंभ में १३ पृष्ट की अनुवादक कृत उत्तम भूमिका है; जिस में हिन्दुओं की प्राचीनता, शुद्ध रक्त, और आपत्ति पड़ने पर संगठित हो रक्षा करने की शक्ति का अच्छा ऐतिहासिक विवेचन किया गया है। लेखक ने प्रारंभ में हिन्दू नाम की महत्ता और इसके विकाश का दिग्दर्शन बड़ी ही उत्तमरीति से किया है।

आर्यावर्त, सप्त सिंधु, भरतखंड और हिन्दुस्थान आदि नामों के संबंध में ऐतिहासिक आधार पर बड़े ही गंभीरता-पूर्ण, प्राञ्जल विचार प्रकट किये हैं; जिससे हिन्दू भाव का प्राकृतरूप स्पष्टाक्षरों में हृदयङ्गम हो जाता है।

सावरकर महोदय ने हिन्दुस्थान और म्लेच्छ-स्थान की सीमा सिंधुनद को बतलाते हुए, बौद्ध धर्म की विश्व-बंधुता से भारत पर जो प्रभाव पड़ा, वह भी बड़े ही अच्छे ढंग से वर्णन किया है।

आप इसे ही भारत के शक्ति-हीन होने का कारण बतलाते हैं। आपने यह भी ऐतिहासिक आधार पर बतलाया; कि जब बौद्ध-धर्म लोप हो रहा था; इन लोगों ने विभीषण का कार्य किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विदेशियों को सहायता देते रहे। इसके आपने कई उदाहरण भी दिये हैं।

फिर सिन्धु-स्थान को जिस का अपभ्रंश हिन्दुस्थान हुआ; सब नामों से मुख्य और राष्ट्रीय भाव का द्योतक सिद्ध किया, हिन्दुआने की ढाल का बड़ा ही भाव-पूर्ण, हिन्दू जाति में जीवन फूंकने वाला और उत्साह वर्द्धक वर्णन किया है। जिसका अनुसरण कर जाति पुनः अपने पूर्व पद को प्राप्त कर सकती है।

इस में विक्रमादित्य, शालिवाहन, शिवाजी, बाजीराव, चिमणा जी (चिन्तामणि), सवाई जयसिंह, राणा जयसिंह, और छत्रशाल बुँदेला को हिन्दुआने की ढाल कह कर विस्तार से वर्णन किया है।

भूषण की भी बहुत प्रशंसा की है उन्हें राष्ट्रीय-कवि, जाति का संगठन कर्ता और रक्षक कहा है। यह भी आपने उल्लेख किया है कि भूषण ने शिवा जी और बाजीराव पेशवा की राष्ट्रीय-भाव से ही प्रशंसा की है।

हिन्दू जाति का लक्षण बतलाते हुए जातीय, राष्ट्रीय, और संस्कृति को ही मुख्यमाना है; अन्य धर्मी इस परिभाषा के भीतर नहीं आते।

आपने बतलाया कि तीर्थ, धर्म-भाव और अवतार सबके एक हैं।

हिन्दू की परिभाषा आपने बतलायी, कि जो भारतवासी और इसी देश को पित्र-भूमि समझे, संस्कृति यहीं की हो वही हिन्दू हैं। सिक्ख, जैन आदि इसी कारण हिन्दू हैं।

अन्त में आपने बतलाया कि देश को इसी हिन्दुत्वभाव से जीवन मिल सकता है। यही कल्याण-कर्ता और शक्ति प्रदाता है।

पुस्तक बड़े ही काम की है इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। प्रत्येक हिन्दू को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये और इसी के बताए मार्ग का अनुसरण कर अपनी जाति, धर्म, और देश का कल्याण करना चाहिये।

यह पुस्तक जाति में भरे हुए अनेक सामाजिक वा राष्ट्रीय रोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये अमृत-बूटी का काम देगी। आशा है हिन्दी-प्रेमी इसे अवश्य अपनावेंगे।

चित्र-माला द्वितीय खंड—मूल्य ॥।) बेलवेडियर-प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित।

मनोरमा में प्रकाशित चित्रों में से, उत्तम-उत्तम १२ चित्रों को चुनकर यह चित्र-माला का द्वितीय खंड गूंथा गया है।

रंगीन-चित्रों का अच्छा संग्रह है, कई चित्र इसमें बहुत सुन्दर और मन-मोहक हैं; मुख्यतः अज्ञान-हस्ती, अनुसुइया-उपदेश, राज-तिलक, और चित्रकूट-आश्रम के चित्र बहुत ही मनोहर हैं। चित्र-कला के प्रेमियों को इसे अवश्य अपने संग्रहालय में स्थान देना चाहिये।

मनोरमा—एक सचित्र मासिक पत्रिका बेलवेडियर प्रेस, प्रयाग से प्रकाशित; वार्षिक मूल्य ५) रु० पृष्ठ संख्या १२० सम्पादक पं० ज्योति प्रसाद जी मिश्र 'निर्मल'; हमें हर्ष है कि मनोरमा दिन-प्रति दिन उन्नति-पथ पर अग्रसर हो रही है। अप्रैल की पत्रिका हमारे सामने है; इसमें कविता व लेख सभी उत्तम हैं; सम्पादकीय टिप्पणियाँ विचार-पूर्ण, किसी मासिक और उच्च-कोटि की पत्रिका के अनुरूप ही हैं।

विषय-वैचित्र्य भी अधिक है; प्रत्येक प्रकार के पाठकों के लिये पठन-सामिग्री पर्याप्त है। निम्न लिखित लेख बहुत ही उत्तम हैं—

(१) सत्य केतु विद्यालङ्कार का 'मौर्यकाल में आवागमन के साधन।

(२) प० रमाकान्त त्रिपाठी का 'साहित्य में अहंकार-वाद।

(३) मिश्र बन्धु महोदय का 'धर्मलिङ्ग और धर्म।

(४) ठा० धनराजसिंह का 'सची पति इन्द्र'।

हम इस पत्रिका की उन्नति पर सम्पादक और मैनेजर दोनों को बधाई देते हैं !!!

अपनी कोटि की पत्रिकाओं में यह सब से सस्ती पत्रिका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा है हिन्दी-प्रेमी इस पत्रिका का समुचित आदर कर सञ्चालकों के परिश्रम को सफल बनावेंगे।

भारतवर्ष—नामक सचित्र साप्ताहिक पत्र बाबू दीनदयाल श्री वास्तव बी. ए. के संपादकत्व में पुस्तकाकार स्यावरी (झाँसी) से प्रकाशित हुआ है; इसके अभी दो अंक निकले हैं; सरस्वती के आकार में पृष्ट संख्या २८ है; पत्र होनहार प्रतीत होता है।

एक साधारण ग्राम से इस प्रकार के पत्रों का प्रकाशित होना हिन्दी के लिये परम गौरव की बात है; हम हृदय से इस पत्र की उन्नति चाहते हैं। लेख, टिप्पणियां सभी सुपाठ्य हैं।

बालक—इस नाम का मासिक पत्र, हिन्दी-पुस्तक भंडार, लहरिया सराय से पं० रामवृक्ष शर्मा के सम्पादकत्व में माघ से प्रकाशित होने लगा है। फूलस्केप ½ साइज़ के ४८ पृष्टों में सचित्र निकला है। वार्षिक मूल्य ३) रु० है। पत्र अच्छा है।

बालकों के लिये बहुत उपयोगी सामयिक और होनहार है।

छपाई, सफाई, काग़ज़ सभी उत्तम है। लेख बालकों के लिये बहुत उपयुक्त हैं। हम हिन्दी-पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे अपने बालकों के पढ़ाने के लिये इस पत्र के ग्राहक बन कर, प्रकाशकों को प्रोत्साहन प्रदान करें।

काव्य सुधाधर—हिन्दी कविता सम्बन्धी त्रैमासिक पत्र दो उत्साही नवयुवकों अनूप शर्मा बी. ए. एल. टी. और ठाकुर त्रिभुवनसिंह 'सरोज' ताल्लुकेदार बिसवां (सीतापुर)—के सम्पादकत्व में अभी थोड़े ही दिनों से प्रकाशित होने लगा है। पृष्ठ संख्या ४८ और वार्षिक मूल्य २) रु० है।

शृंगार—नामक मासिक-पत्रिका गत ३ मास से, पं० देवकीनन्दन शर्मा ब्रह्म भट्ट 'अनंग' के संपादकत्व में, वैद्यधाम से, सरस्वती के आकार के ३२ पृष्ठों में, प्रकाशित होती है।

पत्रिका उपयोगी, सामयिक और पाठकों के लिये सदाचार की शिक्षा देने वाली है। वार्षिक मूल्य ३) रु०

देश—विहार के प्रसिद्ध राष्ट्रीय-पत्र 'देश' का वार्षिक विशेषांक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत उत्तम निकला है। टाइटिल पेज पर महात्माजी का चित्र दिया हुआ है, अन्य भी कई नेताओं के चित्र हैं।

प्रताप के आकार के ५२ पृष्ठ हैं। इसमें २० लेख और ४ कविताएँ दी गई हैं।

सभी कविताएँ तथा लेख सुपाठ्य और देश के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध महानुभावों द्वारा लिखाये गये हैं।

इस विशेषांक का मूल्य केवल ।) है; इस पत्र से मातृ-भाषा, देश तथा जाति की बड़ी सेवा हो रही है। और भविष्य में भी होने की आशा है।

नम्र-निवेदन

सम्मेलन-पत्रिका लगभग १३ वर्ष से लगातार हिन्दी-मातृ-भाषा और साहित्य की यथाशक्ति सेवा कर रही है। इसके द्वारा लगभग १०००) रु० प्रति वर्ष सम्मेलन को घाटा भी उठाना पड़ रहा है। जो भाषा १५ करोड़ मनुष्यों के मुखों से उच्चारण की जाती है और ३१ करोड़ मनुष्य जिसे राष्ट्र-भाषा स्वीकार कर चुके हैं।

महात्मा गांधी और मालवीयजी जैसे नेताओं ने जिस संस्था को अपनाया हो तथा बड़े-बड़े राजा-महाराजा जिसके संरक्षक हों, जिस समाज में लाखों रईस, धनी-मानी और विद्वान् विद्यमान हों उस संस्था की पत्रिका कैसी होनी चाहिये यह प्रत्येक भाषा-भाषी को भली प्रकार गंभीरता से विचार करना चाहिये।

यह पत्रिका अन्य प्रान्तीय भाषाओं की पत्रिकाओं से बहुत पिछड़ी हुई है। अतः हिन्दी प्रेमियों, ग्राहकों, पाठकों और हितैषियों से सानुरोध निवेदन है कि अपनी इस सम्मेलन-पत्रिका को पूर्णतया अपनाने का प्रयत्न करें।

इसका यह कारण नहीं है कि हिन्दी-भाषियों में अपनी मातृ-भाषा और राष्ट्र-भाषा से प्रेम नहीं है मेरे विचार से उनका इधर ध्यान ही नहीं गया और न आकर्षित करने का प्रयत्न ही किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हिन्दी-भाषी जनता ने इस ओर कुछ भी ध्यान दिया तो पत्रिका के २००० ग्राहक ३ मास के भीतर सुगमता से हो सकते हैं।

यदि हिन्दी प्रेमियों ने इस सम्बन्ध में कुछ भी उत्साह दिखलाया तो आगामी वर्ष (भाद्रपद) से इसमें निम्नलिखित सुधार कर दिये जावेंगे—

१—इसका साइज़ सुपर रोयल ८ पेजी अर्थात् नागरी-प्रचारणी-पत्रिका के आकार का कर दिया जायगा।

२—काग़ज़ इससे बढ़िया लगाया जायगा।

३—४८ पृष्ठ के स्थान में ६४ पृष्ठ कर दिये जावेंगे।

४—सम्मेलन की कार्यवाही जो प्रकाशित हुआ करेगी वह अतिरिक्त पृष्ठों पर प्रकाशित की जाया करेगी।

५—इस मे विद्वानों के लेख साहित्यिक, अन्वेषण-सम्बन्धी, गम्भीर और विवेचना पूर्ण भिन्न-भिन्न विषयों के रहा करेंगे। विचार विभिन्नता पर विशेष ध्यान रक्खा जायगा।

६—कभी-कभी चित्र भी दिये जाया करेंगे।

७—पत्रिका सदैव समय पर निकालने का प्रयत्न किया जायगा।

८—नागरी व हिन्दी सम्बन्धी भारत भर की इतनी उत्तम सूचनायें अन्य किसी पत्र से प्राप्त ही नहीं हो सकती।

इतने पर भी वार्षिक मूल्य ३) रु० मात्र रखने का विचार है इस दशा में यह हिन्दी की सब से सस्ती और अपने ढंग की अनोखी पत्रिका होगी।

पाठक इस अङ्क से ही इसकी वृद्धि का अनुमान कर सकते हैं। आशा है पाठक गण व साहित्य-सेवी मेरे तुच्छ निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे।

साहित्य-मंत्री

आवश्यकता

चुरू के ब्रह्मचर्याश्रम के लिये सम्मेलन की मध्यमा परीक्षोत्तीर्ण ऐसे एक हिन्दी अध्यापक की आवश्यकता है जो अनुभवी, सदाचारी और परिश्रमी, सनातनधर्मानुयायी जातिका ब्राह्मण या वैश्य हो वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा; प्रार्थना-पत्र, प्रमाण पत्रों सहित इस पते से आने चाहिये—

अधिष्ठाता—ब्रह्मचर्याश्रम चुरु राज्य बीकानेर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यापारियों के लिये सुअवसर

साहित्य सम्मेलन के साहित्य विभाग ने सम्मेलन पत्रिका में विज्ञापन लेने का निश्चय कर लिया है; अतः जो सज्जन इसमें विज्ञापन देना चाहे, सम्मेलन के साहित्य-मंत्री से पत्र व्यवहार करें। यह पत्रिका बड़े बड़े रईस, राजा, सेठ, साहूकारों, अधिकारियों, महाराजों और विद्वानों के हाथ में जाती है, अतः इसमें विज्ञापन देने से बहुत लाभ हो सकता है। अश्लील और कुरुचि पूर्ण विज्ञापन प्रकाशित नहीं किये जावेंगे।

व्यापारियों को चाहिये कि इस सुअवसर को हाथ से न जाने दें और इससे यथोचित लाभ उठावें। पुस्तक विक्रेताओं के लिये तो यह अपूर्व अवसर है। यह एक मानी हुई रजिस्टर्ड अखिल भारत-वर्षीय संस्था का मुख-पत्र है।

अतः इसमें प्रकाशित बातों का मान भी अधिक है; सर्व साधारण इसे आदर की दृष्टि से देखते हैं। इसमें विज्ञापन देने से विक्री की अधिक आशा है।

लक्ष्मीधर बाजपेयी,
साहित्य-मन्त्री
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

चैत्र, वैशाख २०००

उत्तराखण्ड
ज्ञान गंगोत्री
१८ — ६
२०००
उत्तराखण्ड
ज्ञान गंगोत्री

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन
प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका : चैत्र, वैशाख २०००

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रान्तीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की समस्या पर कुछ विचार— डा० धीरेन्द्र वर्मा - - - - १

२. द्विवेदी युग और उसका निर्माता—श्री रामचंद्र टंडन - - ९

३. राष्ट्र निर्माण में हिन्दी का हाथ—श्री औटमी चौफीन बी० ए०; शंभुप्रसाद बहुगुना, एम्० ए० - - - - ११

४. कार्य समिति की ग्यारहवीं बैठक - - - १६

५. समालोचना - - - - १६

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द' लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल ह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३० : : संख्या ८, ९ : : चैत्र, वैशाख—२०००

सम्मेलन-पत्रिका

भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रांतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने की समस्या पर कुछ विचार[1]

[डा० धीरेन्द्र वर्मा]

जिस प्रकार हम लोगों को सदा यह बतलाया गया है कि भारत को स्वराज्य ना ही ब्रिटिश सरकार का चरम ध्येय है, उसी प्रकार भारतीय शिक्षा संस्थाओं में ंग्रेजी के स्थान पर मातृभाषा को माध्यम बनाने के संबंध में भी आदर्श की दृष्टि से ी विशेष मतभेद नहीं रहा है। किंतु दोनों ध्येयों की पूर्ति गत सवा सौ वर्ष के राज-ीतिक तथा शिक्षा संबंधी विकास के उपरांत आज भी मृगतृष्णा मात्र ही दिखलाई ती है। राजनीति के क्षेत्र में स्वाभाविक परिस्थिति न हो सकने के कारणों पर विचार ना यहाँ हमारा उद्देश्य नहीं है। परंतु शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान अत्यंत अस्वाभाविक स्थिति को कैसे हटाया जावे और शिक्षा के माध्यम की दृष्टि से स्वाभाविक परिस्थिति ो लाने के क्या उपाय हो सकते हैं, यही इस समय विचारणीय विषय हमारे ामने है।

अपने देश की शिक्षा-संस्थाओं में अंग्रेजी शिक्षा का माध्यम क्यों बनी व अपनी ातृभाषाओं को यह स्थान क्यों नहीं मिल सका, इसका मूल कारण हमारी राजनीतिक तंत्रता ही को मानना पड़ेगा। हम लोगों ने राजनीतिक स्वतंत्रता को खोने के साथ ही ज्ञानार्जन संबंधी तथा अर्थ-संबंधी स्वतंत्रता भी खो दी। राजभाषा का असाधारण ल होना स्वाभाविक ही है। सच तो यह है कि जब तक विदेशी राज्य अपने देश में म है तब तक विदेशी शासकों की भाषा का महत्त्व कम नहीं हो सकता।

कभी कभी लोग इस बात पर आश्चर्य करते हैं कि अपनी शिक्षा-संस्थाओं के

---

१. हिंदी विश्वविद्यालय परिषद् के प्रथम वार्षिक अधिवेशन में पठित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबंधकर्ता तथा अध्यापक वर्ग लगभग शत प्रतिशत भारतीय हैं। अपने प्रांत के इंटर-मीडियट बोर्ड में कदाचित् सभापति को छोड़ कर कोई भी अंग्रेज नहीं है। प्रांतीय सरकारों, विश्वविद्यालयों में अध्यापकगण, कार्यसमिति आदि के सदस्यों की बात तो क्या, वाइस-चांसलर तक हिंदुस्तानी हैं। हिंदू यूनिवर्सिटी जैसी संस्थाएँ लगभग राष्ट्रीय संस्थाएँ समझी जाती हैं। ऐसा होते हुए भी बिना किसी अंग्रेज की उपस्थिति के हम लोग जहाँ किसी सभा-समिति के रूप में एकत्रित हुए कि यकायक अंग्रेजी बोलने लगते हैं। क्लास-रूम के बाहर भले ही प्रोफेसर साहब अपने विद्यार्थी से दो बातें अपनी मातृभाषा में कर लें, किंतु क्लास के अंदर पैर रखते ही, चाहे वहाँ केवल अपना सगा भाई ही श्रोता के रूप में सामने उपस्थित क्यों न हो, धाराप्रवाह अंग्रेजी में भारतीय आर्थिक समस्या, प्राचीन भारत के इतिहास, देश के राजनीतिक पतन आदि विषयों पर व्याख्यान देना हर तरह धर्म हो जाता है। यह क्यों ? एक भारतीय के शिक्षा-सचिव अथवा एडुकेशनल एडवाइजर होने पर भी शिक्षा के माध्यम के संबंध में यह आवश्यक सुधार क्यों नहीं हो पा रहा है ? इंटरमीडियट बोर्ड में लगभग समस्त सदस्य हिंदुस्तानी हैं, किंतु अपने बच्चों और भाइयों के शिक्षा के संबंध में विचार करते समय उनकी मनोवृत्ति एक अंग्रेज की मनोवृत्ति से मिलती-जुलती क्यों हो जाती है ? मालवीय जी की हिंदू यूनिवर्सिटी तक में यह आवश्यक सुधार क्यों नहीं हो पाया है ? नेशनल कांग्रेस के हाथ में अधिकांश प्रांतों की बागडोर आ जाने पर भी पहले ही दिन इस आवश्यक सुधार की घोषणा क्यों नहीं की जा सकी ?

जब तक अपने देश में विदेशी राज्य किसी न किसी रूप में चल रहा है और उसके उपरांत भी जब तक इस राज्य द्वारा शिक्षित हम भारतीयों की पीढ़ियाँ चलेंगी, तब तक देश के जीवन में विशुद्ध भारतीयता को स्थानापन्न कराना संभव नहीं प्रतीत होता। तो भी परिस्थिति में शीघ्रता से परिवर्तन उपस्थित करने के लिये व्यवहार के क्षेत्र में यदि संभव नहीं है तो कम से कम विचारों के क्षेत्र में आन्दोलन करना निष्फल नहीं होगा।

विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी के स्थान पर आधुनिक भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के संबंध में सबसे पहली कठिनाई यह बताई जाती है कि भारतीय भाषाओं में भिन्न-भिन्न विषयों से संबंध रखने वाली पुस्तकों का अभाव है। जब यह कहा जाता है कि यदि ऐसा है तो इस प्रकार की साहित्य-रचना का प्रयत्न गवर्नमेंट, विश्वविद्यालयों तथा साहित्यिक संस्थाओं को करना चाहिये, तब यह तर्क दिखाया जाता है कि इस प्रकार की पुस्तकों में विशेष पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग की आवश्यकता होगी और आधुनिक ज्ञान तथा विज्ञान से संबंध रखने वाले पारिभाषिक शब्दों के अभाव में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार के साहित्य की रचना संभव नहीं। इसके उत्तर में जब यह समाधान उपस्थित किया जाता है कि तब पारिभाषिक शब्दकोष बनाने का कार्य ही पहले हाथ में ले लिया जावे, तब यह दलील पेश की जाती है कि यह काम विशेषतया हिंदी प्रदेश में इतना सरल नहीं है। इस प्रदेश के लिये यह सिद्धांत तय करना पड़ेगा कि पारिभाषिक शब्दों का मूलाधार संस्कृत हो, अरबी हो या दोनों की खिचड़ी, और बाजारू शब्दों की मदद से हिंदुस्तानी भाषा में पभिाषाएँ गढ़ी जावें, या ऊपर की समस्त उलझनों से बचने के लिये अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों को ही ज्यों का त्यों ले लिया जावे, और उर्दू या हिंदुस्तानी के वज़न पर एक नवीन शैली इंगलिस्तानी की नीव डाल दी जावे। इन समस्त कठिनाइयों को पेश करके यह समस्या जहाँ की तहाँ छोड़ दी जाती है, क्योंकि इसके सुलझाने की वास्तविक इच्छा किसी को भी नहीं है।

मेरी धारणा तो ऐसी है कि यदि विश्वविद्यालयों के संचालक इस निश्चय की घोषणा कर दें कि अमुक वर्ष से विद्यार्थियों की पढ़ाई प्रांतीय भाषाओं में होगी, तो उत्साही प्रकाशकों और टैक्स्ट-बुक लेखकों के अध्यवसाय के फलस्वरूप बी० ए० तक की पाठ्यपुस्तकों के भारतीय भाषाओं में रूपांतर दो साल के अंदर ही प्रकाशित हो जावेंगे। इसके अतिरिक्त भिन्न भिन्न विषयों के अध्यापक दो वर्ष में अपने क्लास लेक्चरों के हिंदी, उर्दू, बँगला, मराठी आदि रूपांतर आसानी से तैयार कर सकते हैं। इन पुस्तकों की रचना के साथ-साथ पारिभाषिक शब्द आप ही गढ़ते जावेंगे, आगे चलकर इनकी काट-छाँट हो सकती है। यह हो सकता है कि संधिकाल में हिंदी आदि के पारिभाषिक शब्दों के साथ, पुस्तकों में तथा व्याख्यानों में अंग्रेजी का शब्द भी दे दिया जावे। अपने शब्दों के हो जाने पर अंग्रेजी के शब्द हटाये जा सकते हैं।

पारिभाषिक शब्दों की रचना के सिद्धांत की समस्या भी इतनी जटिल नहीं है जैसी समझी जाती है। हिंदी, उर्दू तथा संस्कृत अरबी का झगड़ा विशेषतया पश्चिमी हिंदी प्रदेश तक सीमित है। यह कठिनाई बंगाली, मराठी, गुजराती, आन्ध्र, तामिल आदि भाषाओं की शैली तथा शब्द-समूह के संबंध में नहीं है। भारतवर्ष की लगभग एक दर्जन साहित्यिक भाषाओं में ११ भाषाएँ शब्द-भंडार की दृष्टि से संस्कृत को मूल भाषा मानती हैं और इन ११ में हिंदी भी शामिल है। यदि कोई अपवाद है तो वह उर्दू है। उर्दू भाषा पारिभाषिक शब्दों के लिये अरबी की तरफ आँख उठाती है। उचित तो यह था कि इस एक भाषा को अन्य ११ भाषाओं का साथ देना चाहिये, किंतु यदि यह संभव नहीं हो सके तो ११ भाषाएँ अपना एक रास्ता बना लें और यह एक भारतीय भाषा अपने निराले रास्ते पर कायम रहे। मुझे व्यक्तिगत रूप से इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी। किंतु हिंदी के संबंध में मेरे हृदय में किसी भी प्रकार की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्विविधा नहीं है। उसे शेष १० भारतीय भाषाओं के साथ परम्परागत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के हज़ारों वर्ष पुराने संबंध को नहीं तोड़ना चाहिये।

व्यावहारिक दृष्टि से यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि फिर हिंदी प्रदेश की यूनिवर्सिटी कक्षाओं में पढ़ाई हिंदी उर्दू में से किस भाषा में और पारिभाषिक शब्दों में से संस्कृत या अरबी में से किनकी सहायता से होगी। हिंदुस्तानी या अंग्रेजी पारिभाषिक शब्दों के स्थायी रूप चल सकने की संभावना विशेष नहीं दिखलाई पड़ती। मेरी समझ में इस समस्या को सुलझाने के दो उपाय हैं। एक उपाय तो यह है कि हिंदी प्रदेश में एक या दो विश्वविद्यालय उर्दू के माध्यम से शिक्षा दें और शेष में प्रादेशिक भाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षा दी जावे। दूसरा अस्थायी उपाय यह हो सकता है कि प्रत्येक अध्यापक को उर्दू या हिंदी पारिभाषिक शब्दों को प्रयुक्त करने की स्वतंत्रता दे दी जावे, किंतु साथ में अंग्रेजी पारिभाषिक शब्द का प्रयोग भी वह कर दे जिससे दूसरी भाषा जानने वाले विद्यार्थी अपनी भाषा के पारिभाषिक शब्द का स्मरण कर सकें। टेक्स्ट बुक्स में भी इस उपाय का अवलम्बन हो सकता है।

वास्तविकता यह है कि आवश्यकता एक बार निश्चय कर लेने की है, उसके बाद मार्ग निकलने में कठिनाई नहीं पड़ेगी। यदि पंचवर्षीय योजनाओं की सहायता से जर्मनी, रूस आदि अनेक देशों में समस्त राष्ट्रीय जीवन में पलट की जा सकी तो क्या हम लोग ४, ५ वर्ष में केवल शिक्षा-संबंधी गुत्थियों को नहीं सुलझा सकते? किंतु मूल प्रश्न तो यह है कि क्या हम सचमुच सुलझाना भी चाहते हैं?

पुस्तकों तथा परीक्षाओं में दो लिपियों की समस्या भी इसी तरह सुलझाई जा सकती है। यदि हिंदी और उर्दू माध्यम वाले विश्वविद्यालय अलग हुए तब तो कोई कठिनाई ही नहीं होगी; किंतु यदि प्रत्येक विश्वविद्यालय में दोनों का प्रबंध करना पड़ा तब भी अधिक से अधिक प्रत्येक प्रश्नपत्र में दो परीक्षक रखने पड़ सकते हैं। इससे अधिक और कोई विशेष व्यय नहीं होगा।

इस परिवर्तन का स्वागत न करने वालों में हिंदी प्रदेश के विश्वविद्यालयों में ऐसे अध्यापकों का वर्ग हो सकता है जिनकी मातृभाषा हिंदी या उर्दू नहीं है, जो अन्य प्रांतीय भाषाओं के बोलने वाले हैं। स्वार्थ की दृष्टि से इस सुधार में उन्हें थोड़ी सी कठिनाई दिखलाई पड़ सकती है। इस संबंध में यह स्मरण रखना चाहिये कि भविष्य में हिंदी प्रदेश के विश्वविद्यालयों में बहुत बड़ी संख्या में अन्य प्रान्तों के नये अध्यापकों के आने की अब संभावना नहीं है। रही उन लोगों की बात जो आ चुके हैं और अपना पूरा या आधा जीवन या कदाचित् कई पीढ़ियाँ मध्यदेश में बिता चुके हैं। मेरी समझ में इन्हें भाषा-संबंधी विशेष कठिनाई नहीं पड़ सकती है। बोलचाल की हिंदी या उर्दू से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचित हैं ही। पारिभाषिक शब्दों के संबंध में किसी भी बंगाली, मराठी, गुजराती या अन्य विद्वान् के लिये हिंदी में प्रयुक्त संस्कृत उद्गम के पारिभाषिक शब्द कोई विशेष कठिनाई नहीं उपस्थित कर सकते। साधारण हिंदी भाषी से इन अन्य प्रान्तों के विद्वानों की कठिनाई विशेष समझना वास्तव में भ्रममात्र है।

मेरी समझ में यदि इच्छा हो तो अपने प्रान्त के विश्वविद्यालयों में प्रांतीय भाषा को शिक्षा का माध्यम दो वर्ष में बनाया जा सकता है, किंतु इसके लिए निम्नलिखित उपायों की आवश्यकता होगी।

१. विश्वविद्यालयों के द्वारा इस बात का निश्चय तथा घोषणा कि अमुक वर्ष से, उदाहरणार्थ जुलाई १९४५ से, शिक्षा का माध्यम प्रांतीय भाषा हो जावेगा।

२. एक कमेटी द्वारा हिंदी या उर्दू में उपलब्ध ऐसे समस्त उपयोगी साहित्य की जाँच जिसकी आवश्यकता विश्वविद्यालयों को हो सकती है। विशेष इस कार्य को तीन महीने में कर सकते हैं और साथ ही इस बात का निर्देश भी कर सकते हैं कि अमुक-अमुक विषयों पर साहित्य-रचना की आवश्यकता है। ऐसे विषयों पर पुस्तकें लिखवाने तथा प्रकाशित कराने की ओर वे प्रकाशकों का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। जैसा मैं ऊपर कह चुका हूँ, अधिकांश ऐसे विषयों पर पुस्तकें प्रकाशकों के द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित हो जावेंगी।

३. एक या अधिक अनुवाद का कार्य करने वाले मंडलों की स्थापना कर अत्यंत आवश्यक अंग्रेजी या अन्य यूरोपीय भाषाओं के ग्रन्थों का अनुवाद हिंदी या उर्दू में कर डालें। आवश्यक अनुवाद एक वर्ष में तैयार हो सकते हैं और दूसरे वर्ष के अंत में पहले ही वे छप कर प्रकाशित किए जा सकते हैं। इस कार्य में विश्वविद्यालय अन्य साहित्यिक संस्थाओं, जैसे नागरी प्रचारिणी सभा, हिंदुस्तानी एकेडेमी, भारतीय-हिंदी परिषद्, आदि का सहयोग ले सकते हैं। ये ही बोर्ड आवश्यक कोष तथा अन्य सहायक ग्रंथ आदि भी तैयार कर सकते हैं।

इस कार्य में यदि विश्वविद्यालय अपनी समस्त शक्ति लगा दें तो कार्य बिलकुल भी कठिन नहीं है। उदाहरण के लिये, प्रयाग विश्वविद्यालय में १५० अपने अपने विषयों के विशेषज्ञ अध्यापक हैं और दर्जनों रिसर्च स्कालर हैं। यदि दो वर्ष के लिये यह सामूहिक शक्ति बी० ए० और एम० ए० तक की पढ़ाई की आवश्यक हिंदी पुस्तकें तैयार करने में लग जावे तब क्या इस काम में कुछ भी विलम्ब हो सकता है?

अंत में मैं फिर यही कहूँगा कि वास्तव में यह समस्या बिलकुल भी कठिन नहीं है। सच यह है कि हम ही लोग अभी इस परिवर्तन को करने के लिये अपना दिल पोढ़ा नहीं कर पाए हैं। इस मनोवृत्ति के मूल में हमारी शिक्षा, हमारा आलस्य और हमारा क्षणिक स्वार्थ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस असाधारण परिस्थिति के कदाचित् अनेक कारण बनलाये जावेंगे, किंतु मेरी समझ में तो इसका मूल कारण एक है। भारत में कुछ लोग नसल की दृष्टि से ऐंग्लो इण्डियन हैं, किंतु लोग भूल जाते हैं कि उनसे कहीं अधिक संख्या में अपने यहाँ विचारों की दृष्टि से ऐंग्लो इण्डियन वर्ग है। मेरा तात्पर्य अंग्रेज़ी पढ़े, अपने को शिक्षित समझने वाले भारतीयों से है, जो शरीर से तो भारतीय अवश्य हैं, किंतु विदेशी शिक्षा के फल-स्वरूप उनके मस्तिष्क अंग्रेज़ी लिपि, भाषा, साहित्य, राजनीतिक व सामाजिक आदर्शों आदि से इतने प्रभावित हो गए हैं, उस ढाँचे में ऐसे ढल गए हैं कि इनको स्वदेशी वस्तुओं, संस्थाओं तथा आदर्शों की ओर झुका सकना एक दो पीढ़ी तक संभव नहीं प्रतीत होता। शिक्षा से ही मनुष्य बनता है। हमने जैसी शिक्षा पाई वैसे ही हम बन गए हैं।

द्विवेदी युग और उसका निर्माता[1]

[श्रीरामचन्द्र टंडन]

(१)

आज चार साल हुए कि हिंदी साहित्य ने अपना एक महारथी खो दिया। यह सही है कि आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का काम उनकी मृत्यु से एक पीढ़ी पहले समाप्त हो चुका था, फिर भी भारतेंदु हरिश्चन्द्र के बाद कोई भी ऐसा लेखक नहीं बताया जा सकता जिसने हिंदी पर, विविधि दिशाओं में, इतना असर डाला हो। लगभग २० वर्ष तक, जिस बीच उनका 'सरस्वती' पत्रिका से घना संबंध रहा, हिंदी संसार उनका लोहा मानता रहा। अपने अंतिम दिनों में भी हिंदी साहित्य की उन्नति में वह दिलचस्पी लेते थे और साहित्य-सृजन की जो नींव उन्होंने डाली थी, उस पर एक विशाल भवन खड़ा होते देख कर, उन्हें बड़ी प्रसन्नता होती थी। आचार्य द्विवेदी आधुनिक हिंदी के निर्माताओं में एक गौरव का स्थान रखते थे। आज का शायद ही कोई वयस्क लेखक ऐसा हो जिसने किसी-किसी समय आचार्य द्विवेदी से प्रभाव न ग्रहण किया हो।

यों तो हर एक युग में किसी भी भाषा में अनेक लेखक होते हैं, लेकिन ऐसा लेखक बिरला होता है जो अपने युग को अपना नाम दे सके। आचार्य द्विवेदी इन बिरले

---

[1]यह लेख आल इंडिया रेडिओ, दिल्ली से २० दिसंबर, १९४२ को पढ़ा गया था और रेडिओ विभाग के अनुग्रह से प्रकाशित हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों में ही थे। मोटे ढंग से हम इस सदी के पहले पचीस वर्ष को द्विवेदी युग मान सकते हैं। क्या कविता क्षेत्र में और क्या गद्य में, क्या विषय और शैली की दृष्टि से और क्या छंद और भाषा को लेकर, इस बीच में जो प्रयोग हुए हैं उन्होंने हमारे साहित्य को बहुत आगे बढ़ाया है। साहित्य के विकास का रास्ता सहज नहीं रहा है। इस पथ पर साहस के साथ आगे बढ़ने का और दूसरों को आगे बढ़ाने का श्रेय किसी भी दूसरे व्यक्ति की अपेक्षा आचार्य द्विवेदी को अधिक है।

(२)

द्विवेदी जी का जन्म रायबरेली (अवध) के दौलतपुर नाम के, गंगातट पर बसे हुए, गाँव में सन् १८६४ में हुआ था। वह कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। कहा जाता है कि उनके जन्म के आधे घंटे के भीतर किसी ज्योतिषी ने, जो वहाँ पर मौजूद था, इनकी जीभ पर सरस्वती का बीज मंत्र लिख दिया। यह संस्कार एक आशीर्वाद बन गया। क्योंकि यह कहा जा सकता है कि सरस्वती ने उन पर विशेष रूप से कृपा की।

अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में उन्होंने बड़ी सरलता से यह लिखा था:—

"मैं एक ऐसे देहाती का आत्मज हूँ जिसका मासिक वेतन १० रु० था। अपने गाँव के देहाती मदरसे में थोड़ी सी उर्दू और घर पर थोड़ी संस्कृत पढ़ कर १३ वर्ष की उम्र में मैं ३६ मील दूर रायबरेली के जिला स्कूल में अंग्रेजी पढ़ने गया। आटा दाल घर से पीठ पर लाद के ले जाता था। दो आने महीना फ़ीस देता। दाल ही में आटे के पेड़े या टिकियाएँ पका कर पेट पूजा करता था। रोटी बनाना तब मुझे आता ही न था.....एक वर्ष किसी तरह वहाँ कटा। फिर पुरवा, फ़तेहपुर और उन्नाव के स्कूलों में ४ वर्ष काटे। कौटुम्बिक दुरवस्था के कारण मैं उससे आगे नहीं पढ़ सका। मेरी स्कूली शिक्षा यहीं ख़त्म हो गई।"

उन दिनों किसी देहाती बालक के लिये अंग्रेज़ी शिक्षा हासिल करने की इच्छा रखना एक हौसले की बात थी। और जिस मिहनत से, कठिनाइयों का सामना करते हुए, द्विवेदी जी ने इसके लिये कोशिश की वह सराहनीय थी। जिस समय उनकी स्कूली शिक्षा का यह सिलसिला टूटा, द्विवेदी जी की उम्र सिर्फ १७ साल की थी।

(३)

इसके बाद के २२ साल द्विवेदी जी ने नौकरी में काटे। जिनमें से २० साल जी० आई० पी० रेलवे की नौकरी के थे। यह तार-विभाग में एक छोटे से पद से अफ़सरों के दर्जे तक पहुँचे थे। इस बीच, अवकाश के समय, वह अंग्रेजी का अभ्यास बढ़ाते रहे, और गुजराती, मराठी, और बँगला भाषा और साहित्य से भी अच्छी तरह परिचित हो गए। वह शिक्षा जो इन्होंने अपने आप को दी, स्कूली तालीम के मुक़ाबले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कहीं ज्यादः मूल्यवान थी। सन् १९०३ में ४० वर्ष की उम्र में जब आचार्य द्विवेदी हिंदी साहित्य-सेवा में रमे तब वह कोई नौसिखिए न थे। उनकी कल्पना ऊँची थी। मराठी, गुजराती, और बँगला भाषाओं की जानकारी उनके काम में बहुत सहायक हुई। इन भाषाओं के साहित्य की प्रगति जानते हुए उनकी इच्छा हुई कि हिंदी इनमें से किसी से भी पीछे न रहे। बल्कि सबसे आगे निकल जाय। वह केवल स्वप्न नहीं देख रहे थे। पहले से ही वह उस समय की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में लेख लिखने लगे थे। विशेषकर 'हिन्दोस्तान', 'भारतमित्र', 'हिंदी बंगवासी', 'रसिक-वाटिका' और 'सरस्वती' में। इनकी कुछ संस्कृत रचनाएँ भी 'संकृतचंद्रिका' में निकलती थीं।

(४)

वह २० वर्ष जिनमें आचार्य द्विवेदी का 'सरस्वती' के संपादक की हैसियत से संबंध रहा, आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में यादगार रहेंगे। यह पत्रिका दूसरी सामयिक पत्रिकाओं के लिये आदर्श रही। अनेक हिंदी के लेखकों की यह सबसे बड़ी लालसा रहती थी कि उनके लेख इस पत्रिका के पृष्ठों में जगह पा सकें। आचार्य द्विवेदी सरस्वती को न केवल हिंदी की सब से प्रतिष्ठित पत्रिका बनाना चाहते थे, बल्कि और भारतीय भाषाओं की सम्मानित पत्रिकाओं में उसे उचित स्थान दिलाना चाहते थे। जहाँ तक भाषा का सवाल था, वह चाहते थे, कि हिन्दी गद्य ऐसा बन जाय कि वह आधुनिक विचारों को जनता तक सुगमता से पहुँचा सके। यह कहना अनुचित न होगा कि हिंदी-भाषी जनता को अच्छी कोटि की साधारण शिक्षा दे सकने के उद्देश्य को 'सरस्वती' ने अपनाया, और काल और परिस्थितियों को देखते हुए यह कहा जायगा कि इस प्रकार की शिक्षा प्रस्तुत करने में जैसी यह पत्रिका समर्थ हुई वैसे दूसरे कोई साधन न हुए। संपादक के रूप में आचार्य द्विवेदी ने कुछ सिद्धान्त बना लिए थे और इनसे वह टलते न थे। उनकी सफलता का रहस्य इस बात में छिपा हुआ है कि न केवल वह यह जानते थे कि उनसे पाठक क्या चाहते हैं, बल्कि वह यह भी जानते थे कि पाठकों के लिये क्या सचमुच हितकर होगा।

आचार्य द्विवेदी की सेवाओं में एक मूल्यवान सेवा यह रही है कि उन्होंने लेखकों का एक दल उत्पन्न किया। कितनों को लिखना सिखाया या लिखने के लिये उत्साह दिलाया। उन्होंने यह अनुभव किया कि हिंदी में नए विचार उन्हीं लोगों के उद्योग से आ सकते हैं जिन्होंने ऊँची शिक्षा हासिल की हो। इस शिक्षा का अब भी ज़्यादातर माध्यम अंग्रेज़ी है, और उस समय तो विशेष रूप से वही था। आचार्य द्विवेदी ने यह भी देखा कि ऊँची शिक्षा पाए हुए हिंदुस्तानी हिंदी के प्रति अधिकांश उदासीन रहते हैं। उन्होंने पढ़े-लिखों की रुचि हिंदी की ओर फेरने की कोशिश की;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके लेखों को बहुत कुछ सुधार कर वह उन्हें निजी तौर पर भी उत्साह दिलाते थे। उन्हें बराबर सलाह देते, और पत्र-व्यवहार द्वारा उनसे संपर्क बनाए रहते।

(५)

द्विवेदी जी ने अपने संपादकीय कर्तव्य को इतनी लगन से निबाहा कि उन्हें रचनात्मक साहित्यिक काम के लिये ज़्यादा मौक़ा न मिला। फिर भी गद्य और पद्य दोनों में ही उन्होंने जो पुस्तकें छपाईं, यह देखते हुए कि वह आधुनिक हिंदी भाषा और साहित्य की बहुत शुरू की चीज़ें हैं, ऊँचे दर्जे की हैं। द्विवेदी जी की शुरू की कविताएँ पुरानी परंपरा और शैली के अनुसार ब्रजभाषा में हैं। कुछ संस्कृत में भी हैं। लेकिन जल्द ही उन्होंने इस बात का अनुभव कर लिया कि गद्य और पद्य की भाषाएँ अलग-अलग रास्तों पर नहीं चल सकतीं। और अगर हिंदी को दौड़ में पिछड़ना नहीं है, तो उसे पद्य की भाषा को ब्रजभाषा से बदल कर खड़ी बोली करना होगा। एक बार यह विश्वास उनके मन में जम गया, फिर तो आचार्य द्विवेदी जी ने अपनी पूरी ताक़त से खड़ीबोली की कविता का समर्थन किया। 'सरस्वती' में प्रायः खड़ीबोली की कविताओं को ही जगह मिलती। 'सरस्वती' की इस नीति का उस समय घोर विरोध भी हुआ था। 'ब्रजभाषा बनाम खड़ीबोली' का विवाद वर्षों तक चला है। अंत में द्विवेदी जी का ही पक्ष जीता, जो कि स्वाभाविक था। आज भी इने-गिने ब्रजभाषा के समर्थक मिलेंगे। लेकिन खड़ीबोली की प्रधानता को अब किसी तरह भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

द्विवेदी जी के जीवन-काल में उनकी कविताओं के दो संग्रह प्रकाशित हुए। 'काव्यमंजूषा' और 'सुमन'। उनकी कुछ कविताएँ अन्य और कवियों की रचनाओं के साथ 'कविता-कलाप' में भी संग्रहीत हुई हैं। अब उनकी कविताओं का एक बड़ा संग्रह भी निकल गया है। हमें यह न भूलना चाहिये कि यह कविताएँ वास्तव में प्रयोगात्मक हैं। खड़ीबोली सुथरी नहीं बन पड़ी है। बीच-बीच में ब्रजभाषा का रूप रखने वाले शब्द आ गए हैं। फिर भी यह कविताएँ इतनी सफल ज़रूर हैं कि औरों के लिये, जिन के पास कविता के अभ्यास के लिये अधिक समय था, मार्ग प्रदर्शन कर सकें। नतीजा यह हुआ कि अनेक हिंदी कवि खड़ीबोली में कविताएँ रचने लगे। 'कुमारसंभवसार' में आचार्य द्विवेदी ने कालिदास के इसी नाम के महाकाव्य के पाँच सर्गों का सार पेश किया है। इसमें उनकी खड़ीबोली में विशेष प्रवाह है। द्विवेदी-युग की कविता के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी के प्रयास का मूल्य इस बात में है कि उन्होंने खड़ीबोली कविता को प्रचार दिया और उसके हामी बने। हम लोग उन कवियों के नामों से खूब परिचित हैं जिन्होंने खड़ीबोली कविता के विकास में मदद दी। यह कहना अनुचित न होगा कि इनमें से अधिकांश ऐसे हैं जिन्होंने सब से पहले अपनी प्रेरणा द्विवेदी जी द्वारा ही प्राप्त की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६)

द्विवेदी जी ने गद्य में जो ग्रन्थ निकाले उनमें से ज़्यादातर या तो अनुवाद हैं या दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का सहारा लेकर लिखे गए हैं। मिल की 'लिबर्टी', स्पेंसर के 'एडूकेशन' तथा बेकन के निबंधों के सफल अनुवाद उन्होंने 'स्वधीनता', 'शिक्षा' और 'बेकन विचार-रत्नावली' नामों से निकाले। उनका 'संपत्तिशास्त्र', जो आधुनिक अर्थशास्त्र का विषय लेकर लिखा गया है और एक अंग्रेजी ग्रन्थ के आधार पर लिखी हुई रचना है, अपने विषय पर हिंदी में पहली पुस्तक है। उनका लिखा हुआ महाभारत एक बँगला ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत हुआ है, और इसका प्रचार अच्छा हुआ है। उनकी और पुस्तकों में कालिदास के 'राघुवंश' का गद्यानुवाद, 'चरित्र-चित्रण', 'भामिनीविलास' का भाषानुवाद, 'नैषधचरितचर्चा', 'कालिदास की निरंकुशता', 'हिंदी भाषा की उत्पत्ति' आदि हैं। इनके अलावा ऐसे और कई संग्रह-ग्रन्थ छपे हैं जिनमें कि द्विवेदी जी के 'सरस्वती' में समय-समय पर छपे हुए लेख इकट्ठा किये गए हैं। 'विचार-विमर्श', 'संकलन', 'प्राचीन पंडित कवि', 'अद्भुत आलाप', 'साहित्य संदर्भ', 'आध्यात्मिकी', 'प्राचीन चिह्न', 'समालोचना-समुच्चय', 'साहित्य-सीकर' के नाम विशेष रूप से लिये जा सकते हैं।

उनके प्रिय विषय संस्कृत साहित्य और भारतीय पुरातत्व थे। लेकिन समालोचक के रूप में उनका जो कार्य है उसे हम सबसे अधिक याद रक्खेंगे। आचार्य द्विवेदी ने अपने समय में आलोचना की शैली को एक नया रूप दिया। इसे उन्होंने रूढ़ियों और परंपरा के गड्ढे से निकाला। यह सच है कि द्विवेदी जी आप ही सदा पुराने प्रभावों से नहीं बच सके हैं। फिर भी समालोचना के क्षेत्र में उन्होंने नया मार्ग दिखाया और जिस रास्ते पर उसे उन्होंने चलाया उस रास्ते पर वह प्रायः अब भी चल रही है।

अगर हम आचार्य द्विवेदी को एक शैलीकार की दृष्टि से देखते हैं तो हम उन्हें ऊँचे आसन का अधिकारी पाते हैं। वह शब्दाडंबर से घृणा करते थे। भाषा के विषय में वह विशुद्धता के हामी न थे। वह निरंतर उसे सरल बनाने की कोशिश में रहे, जिससे वह ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की समझ में आ सके। अगर उनकी शैली में कोई विषमताएँ मिलेंगी तो उसका कारण यह है कि उन्होंने अनेक विषय पर लेखनी चलाई है, और विषयों के साथ ही भाषा की शैली थोड़ी बहुत बदलेगी। लेकिन जान-बूझ कर उन्होंने अपनी भाषा को क्लिष्ट बनाया, ऐसा उनके संबंध में नहीं कहा जा सकता। उनकी शैली की नकल करने वाले बहुत उपजे और यह कहना ग़लत न होगा कि किसी न किसी अंश में उसका द्विवेदी-युग के सभी लेखकों पर असर पड़ा।

द्विवेदी जी सीधे-सादे हिंदू गृहस्थ और सच्चे ब्राह्मण थे। उनका आजन्म विद्या-प्रेम, उनकी अत्यंत विनम्रता, उनका संतोष—यह ऐसे गुण हैं जिनकी तारीफ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना उचित ही है।

स्वभाव के वह बड़े सरल थे। यह ठीक है कि तीखी आलोचना करने में कभी भी न हिचकते, लेकिन अपने मन में तनिक भी मैल न रखते! वह एक हद तक विनोदी भी थे। लोभ उन्हें छू नहीं गया था। अपनी कमाई का बहुत सा धन उन्होंने हिंदू यूनिवर्सिटी को दान कर दिया था। अपना बड़ा पुस्तकालय उन्होंने काशी की नागरी प्रचारिणी सभा को दे दिया था। साथ ही उन्होंने अपने बहुत से काग़ज़-पत्र भी सभा को प्रदान किए थे। प्रतिष्ठा के भूखे वह कभी नहीं थे। कई यूनिवर्सिटियों की ओर से उन्हें डाक्टर की उपाधि प्रदान करने की चर्चा उठी, लेकिन वह इसके प्रति विरक्त रहे। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने सभापति बना कर उनका सम्मान करना चाहा। परंतु उन्होंने अपनी मजबूरी पेश कर दी। हिंदुस्तानी एकेडेमी का फेलोशिप भी उन्होंने न चाहा। केवल नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से उन्होंने अपनी ७०वें जन्म-गाँठ के अवसर पर सन् १९३३ में एक अभिनंदन ग्रन्थ स्वीकार किया। उसी वर्ष इलाहाबाद में उनके नाम पर एक साहित्यिक मेला हुआ, जो कि अपने ढंग का पहला जलसा था। इलाहाबाद से जो उनका घनिष्ठ संबंध रहता था उसे देखते हुए उन्होंने अपने जीवन के संध्याकाल में इस मेले में शरीक होना स्वीकार किया था।

हिंदी साहित्य के इतिहास में उनका नाम उसके निर्माताओं के रूप में अमिट रहेगा।

राष्ट्र-निर्माण में हिन्दी का हाथ

[श्री ओटमी चौफीन बी० ए०]

[शंभुप्रसाद बहुगुना, एम० ए०]

साहित्य के क्षेत्र में हिन्दी चाहे किसी सीमित क्षेत्र की ही भाषा का नाम हो, किन्तु व्यवहार से वह अति प्राचीन काल से ही भारत के जीवन को एकता के सूत्र में ग्रथित करने वाली भाषा रही है। आठवीं शताब्दी के सिद्धों की भाषा केवल बिहार, आसाम और बंगाल तथा नैपाल की तराई की ही भाषा नहीं थी, वरन् उसका प्रचार सुदूर सिंहलद्वीप तक भी हो चला था। योगियों के सिंहल जाने की कथा प्रतीक-मात्र नहीं हो सकती। हमारे पहाड़ी जिलों (गढ़वाल, अलमोड़ा और नैनीताल) में इन सिद्धों की परंपरा अति प्राचीन काल से मान्य है और वहाँ इनका प्रचार आज से नहीं, १०वीं ११वीं शताब्दी से है। नवीं शताब्दी के आचार्य चिह्नोद्योतन की कुवलय-कथा की भाषा में आए हुए हिन्दी के शब्द उस समय की बोल-चाल की भाषा के हैं। बुर्जविन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहरयार के लिखे 'सफरनामा' में सन् ८७० के लगभग बहुत भाषाओं के विद्वान् अब-दुल्ला ऐराकी द्वारा कुरान का हिन्दी अनुवाद किए जाने का उल्लेख है। क्या इससे यह नहीं प्रकट होता कि हिन्दी उस समय प्रचलित बोलचाल की भाषा रही होगी? कालिंजरा के राजा नंद ने सुलतान महमूद के यहाँ एक दूत एक हिन्दी कविता सहित भेजा था। उस कविता की खूब प्रशंसा हुई थी, जिससे स्पष्ट है कि महमूद के दरबारी भी हिन्दी भली भाँति समझते थे। बारहवीं शताब्दी में वामदेव, तेरहवीं में ज्ञानेश्वर तथा उनकी बहन मुक्ताबाई पश्चिमी भारत अथवा महाराष्ट्र में हिन्दी-कविता कर रही थीं। तेरहवीं शताब्दी में मसऊद साद सलमा ने हिन्दी में एक दीवान लिखा था। इसके पश्चात् तो हिन्दी-साहित्य की परंपरा बराबर चलती ही रही। जब साहित्य में हिन्दी का स्थान था तो यह निश्चय है कि हिन्दी उस समय सर्वसाधारण के आदान-प्रदान की भाषा अवश्य रही होगी। जनसाधारण की भाषा होने के कारण ही मध्य-युग में संतों को इसे अपनाने में सुविधा रही और जब धारा प्रबल हो चली तो संस्कृत के हामी पंडितों को भी (जिनमें केशवदास प्रधान थे) बाध्य होकर हिन्दी में ही रचना करनी पड़ी। १८वीं शताब्दी में अंग्रेज पादरियों को हिन्दी में बाइबिल अनुवाद करने की आवश्यकता इसलिये पड़ी कि वह उस समय बोलचाल की, सर्व-साधारण की, भाषा थी। आज हिन्दी का प्रवाह इस वेग से बह रहा है कि उसकी उन्नति तथा प्रसार की गति को देख कर चकित रह जाना पड़ता है। साहित्य की कोई भी ऐसी बारीकियाँ नहीं, जीवन की कोई भी विचारधाराएँ ऐसी नहीं, जिन्हें हिंदी आज अपने ढंग से व्यक्त करने में समर्थ न हो। जिस हिंदी की इतनी शक्ति-संपन्न, सप्राण तथा साहित्यमय धारा हो, क्या वह राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती? क्या उसकी शक्ति जीवन को दीप्त करने वाली नहीं है? क्या उसका संपन्न साहित्य भारतीय संस्कृति का गौरव-पूर्ण अंग नहीं है? यदि है, तो उसका विरोध क्यों?

राष्ट्र की सभी विचारधाराओं पर हिंदी का प्रभाव पड़ा है। वीरगाथा-काल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल पर हिंदी साहित्य का प्रभाव उन युगों की प्रत्येक विचारधारा में विद्यमान मिलेगा। साहित्य-निर्माण देश, काल और वातावरण से अलग रहकर कभी नहीं होता। वीरगाथा-काल ही में प्रायः मुसलमानों का पहले-पहल भारत में आना हुआ और इनके पैर राजनीतिक लूटपाट अथवा धर्मप्रचार की दृष्टि से यहाँ जमे। व्यापारिक संबंध तो अरब और भारत का ईसा के एक हज़ार वर्ष पूर्व से चला आता रहा है। हिंदी को अपनाने वाले खुसरो, कबीर, जायसी, रहीम, रसखान आदि अनेक मुसलमान कवि हुए। मुसलमान फ़कीरों तथा कवियों के साहित्य-द्वारा राष्ट्र में वेदान्त तथा औपनिषदिक अद्वैत-वाद से मिलता-जुलता निर्गुण एकेश्वरवाद का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रचार हुआ, जिसे भारतीय अद्वैतवाद ही का मुसलमानी संस्करण अथवा रूपांतर समझना चाहिये।[1] सामाजिक क्षेत्र में भी इन फ़कीरों और कवियों ने हिन्दू-मुसलमानों में एकता स्थापित करनी चाही और अपनी उन भावनाओं को, जिन में वह हिन्दू-मुसलमानों की ऊपरी विषमताओं को हटाकर जनता को मनुष्य का असली रूप दिखाना चाहते थे, जनवाणी हिंदी द्वारा ही व्यक्त कर सके। हिंदी के प्रवाह-सौंदर्य से मुग्ध कबीर ने कहा भी था—"संस्कीरत है कूप-जल, भाषा बहता नीर", आडंबर और असत्य के विरोधी सत्य-प्रचारक कबीर ने मुसलमानों को बतलाया—

"काँकर पाथर जोरि के मसजिद लई चुनाय,
ता पर मुल्ला बाँग दे, बहरा हुआ खुदाय।"

और हिन्दुओं को सुझाया—

"दुनिया ऐसी बावरी, पाथर पूजन जाय,
घर की चकिया कोई न पूजे, जेहि का पीसा खाय"

इस प्रकार के विचारों से एक जागृति, एक चेतना समाज में उत्पन्न हुई; राष्ट्र आगे बढ़ा और परिवर्तित परिस्थितियों की प्रतिक्रिया के रूप में भक्ति-धारा का प्रभाव फूट आया।

प्रत्येक नया युग पुराने युग के दोषों के कारण प्रकाश में आने का प्रयत्न करता है। जब तुलसी का उदय हुआ तो साहित्य द्वारा समाज की धार्मिक विचारधाराओं में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। समाज के गुण-दोष तुलसी के आलोक में स्पष्ट रूप से दृष्टिगत हुए, और तुलसी ने अपने समय की सब परिस्थितियों को समझ कर राष्ट्र को उन्नत करना चाहा। समाज के दोषों को दिखा कर तुलसी चुप नहीं हो गए, उन्होंने हिंदी भाषा द्वारा जन-साधारण के सामने एक आदर्श-मार्ग भी रखा जो उनके अनुसार निस्वार्थ विवेकयुक्त 'श्रुति-सम्मत हरि-भक्त' पथ ही था। इस समय हिंदी साहित्य की प्रवृत्ति आदर्शवाद की ओर थी। और तुलसी के मर्यादा-पुरुषोत्तम राम एक आदर्श के रूप में राष्ट्र-निर्माण करने आए।

फिर साहित्य की धारा के साथ ही, भक्तिकाल की इस पराकाष्ठा से, राष्ट्र विलासिता के अंधकारमय गर्त में गिरा। रीतिकाल के शृंगारी साहित्य ने राजा-प्रजा सभी को ज्ञानांध बना दिया और राष्ट्र अधोगति को प्राप्त हुआ।

गद्यकाल (आधुनिक काल) में फिर हिंदी साहित्य ऊपर उठा और प्रसाद, गुप्त

---

[1] इस विषय के विस्तार के लिए काक की लिखी पुस्तक 'इंडिया इन ग्रीस' देखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथा प्रेमचंद आदि उसको आगे ले जाने वाले—अगुवा—बने। समाज की सारी विषमताओं—जो अनेक कारणों से भारत में आ गई थीं—को इन नेताओं ने पहिचाना और उन्हीं को साहित्य के द्वारा परिष्कृत कर भारत को फिर से आशा की झलक दिखाई।

पर इससे पहले कि साहित्य द्वारा उन नेताओं के राष्ट्र-निर्माण करने के विषय पर विचार किया जाय यह समझ लेना आवश्यक है कि अंग्रेज़ों के आने से राष्ट्र की क्या दशा हुई। अंग्रेजों के आने से भारत में दो विचार-धाराओं का आगमन हुआ, विशेष कर उस समय जब भारत में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी बनाई गई। एक तो वह धारा थी जो पूर्ण रूप से पाश्चात्य भाषा तथा साहित्य के साथ साथ उनकी वेश-भूषा आदि को भी अपनाना चाहती थी और दूसरी वह जो भारतीय संस्कृति, रहन-सहन तथा सभ्यता को ही यहाँ रखना चाहती थी। अँग्रेजी भाषा के एक बड़े पक्षपाती राजा राममोहन राय हुए और भारतीय सभ्यता की ओर महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने जनता को आकर्षित किया। किसी भी स्वतंत्र देश में किसी और देश की भाषा को अपनाना हास्यास्पद जान पड़ता है, परन्तु दुर्भाग्यवश भारत ने विदेशी भाषा को अपनाना अपना गौरव समझा और हिन्दी ने वह घुमाव लिया कि उसके साहित्य पर विदेशी भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा। पराधीन देश होने के कारण भारत के मत्थे अंग्रेजी भाषा एक प्रकार से मढ़ दी गई; उसके अध्ययन से जो लाभ हुआ वह तो हुआ, परन्तु उसने भारतवासियों को ऐसा जकड़ा कि वह उसके अध्ययन के साथ ही साथ 'साहब' हो गए और विदेशी का अंधानुकरण कर अपनी सुंदर से सुंदर वस्तुओं को बुरा समझने लगे। अंग्रेजी वेष धारण करना, अंग्रेजों की भाषा बोलना और उनकी सभ्यता के अनुसार समाज में प्रवेश करना 'फैशन' हो गया। राष्ट्रीय सभ्यता को इस आचरण से जो धक्का लगा उसको देखने वाले इने गिने 'मूर्ख' कुछ भी न कर सके। भारतवासियों की नींद गहरी थी, वह शीघ्र न टूटी। वे रात-दिन कार्य-क्षेत्र में ही नहीं सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में भी शासक-वर्ग का अनुकरण करते रहे और उनके नचाने वाले उन्हें आनन्द से नचाते रहे। यह पाश्चात्य रंग ईसाइयों पर और भी अधिक चढ़ा और इस प्रकार अंग्रेजों को जड़ जमाने के लिये अच्छा आधार मिल गया। इस समाज ने पाश्चात्य अंधानुकरण क्यों अधिक किया, यह एक अवांतर विषय है, जिसका स्वतंत्र ही विवेचन अच्छा है। यहाँ पर भारतीय ईसाइयों का पूर्वोक्त वर्ग, जिसने धर्म को विदेशी कपड़ों आदि में ही देखा, अपने हृदय में नहीं, यह न समझ पाया कि ईश्वर को भारतीय कपड़े भी अच्छे लगते हैं और वह हिन्दुतानी भाषा भी समझता है। इतना ही नहीं, हिन्दू समाज पर भी यह रंग चढ़ा। तब—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"छूमंतर हिन्दुत्व हो गया कोट-पैंट-बूटों में मिल कर,
फिर भारत को स्वराज्य का मंतर आया तो क्या आया।"

कहने का मतलब यह है कि भारत पतन की ओर बढ़ा, पर उसके निवासियों को पता न चल पाया। पर जब सब ओर अंधकार सा छा गया, तो साहित्य ने आशा के तारे जगमगाए, जो लेखकों, नाटककारों और कवियों आदि के रूप में प्रकट हुए। प्रसाद, गुप्त तथा प्रेमचंद का आलोक सब से अधिक फैला। राष्ट्र की भावनाओं से पूर्ण ये लेखक तथा कवि साहित्य द्वारा समाज को उसकी गहरी नींद से जगाने में समर्थ हुए, प्रेमचन्द ने वास्तविक भारत (जो गाँवों में है) की आवश्यकताओं को पहिचाना, और गाँवों की एक एक समस्या का सूक्ष्म चित्रण करके हमें अपनी कमियों को पूरा करने के लिए उत्तेजित किया। प्रसाद ने अपनी रचनाओं में प्राचीन गौरव के भव्य चित्रों सहित जीवन के सभी क्षेत्रों की विषमताओं की ओर हमारी दृष्टि खींची और हमें साहित्य के द्वारा ऐसे चरित्रों से परिचित कराया जो अपने पाँव पर स्वयं कुल्हाड़ी मार कर गर्व करते हैं। साथ ही ऐसे भी चरित्र उन्होंने दिखाए हैं जो कर्तव्य की बलि-वेदी पर राष्ट्र के हित के लिये, मानवता की शांति-रक्षा के लिये अपने स्वार्थों को छोड़ प्राणों तक को उत्सर्ग करने में हिचकते नहीं, वरन् बड़ी गौरवपूर्ण शांति और प्रसन्नता से उस त्याग की ओर अग्रसर होते हैं। जो भारतीय संस्कृति के मूल में सब से बड़ी विशेषता बन कर रही है। गुप्त जी ने अपनी भारतीय संस्कृति तथा राष्ट्रीय भावनाओं को, सरल एवं भावपूर्ण काव्य रचनाओं द्वारा, भारत के प्रत्येक हिन्दी-भाषी व्यक्ति तक पहुँचा दिया।

सभी कलाकारों ने इस प्रकार जीवन में अनेक द्वन्द्व-प्रतिद्वन्द्व को दिखाकर, समाज की भावनाओं को साहित्य का रूप देकर राष्ट्र के निर्माण में सहायता की और आज देश के न जाने कितने प्राणी हिन्दी-साहित्य द्वारा जनता की सोई हुई भावनाओं को जगाकर कर्तव्य-पथ पर खड़े हैं, और राष्ट्र का निर्माण करने के लिये अग्रसर हैं। केवल राजनीतिक उन्नति ही नहीं, वरन् धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा मानसिक स्वतंत्रता उनका लक्ष्य है। एक बार यदि निश्चय हो गया और यह वीर आगे बढ़े तो इनको विश्व की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती और उद्देश्यपूर्ति अनिवार्य है।

समय भी बढ़ता चला जा रहा है। अतीत में हिन्दी ने जो कुछ किया वह तो गौरव का विषय है ही, पर हिन्दी द्वारा देश का भविष्य भी उज्ज्वल होगा, यह निश्चित है। अनेक विघ्नबाधाओं के होने पर भी जब हिन्दी देश के रंग-मंच पर इतना अधिक भाग ले सकी है, तो यह निश्चय है कि यदि वह राष्ट्र-भाषा हो गई, तो वह भारतीय इतिहास के पूर्ण नाटक में अत्यन्त सफल सूत्रधार भी बन सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी राष्ट्र भाषा बनने का अन्य भाषाओं से कहीं अधिक अधिकार रखती है। राष्ट्र-भाषा होने के लिये उसमें सभी गुण विद्यमान हैं। भाषा, भारत में कई भाषाएं प्रचलित हैं जिन के कारण किसी एक को राष्ट्र-भाषा नियत करना कठिन है, पर क विदेशी भाषा अंग्रेज़ी हमारी राष्ट्रीय-भाषा बनने का दावा कर सकती है, तब अपने बिखरी शक्तियों को साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक एकरूपता की ओर ले जा सकने वाली हिन्दी क्यों नहीं राष्ट्र-भाषा बन सकती ? अन्य भारतीय भाषाओं में भी संपन्न साहित्य है। किंतु उन भाषाओं में से किसी का भी उतना व्यापक क्षेत्र भारत में नहीं है जितना हिन्दी का। पुनः हिन्दी के राष्ट्र-भाषा बन जाने से हिन्दी उन भाषाओं के स्वाभाविक विकास में बाधक नहीं वरन् साधक ही सिद्ध होगी। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अन्य भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय-भाषा के केन्द्र में इस प्रकार सजाने की बात कही थी जिस प्रकार कमल की पंखड़ियाँ कमल के केन्द्र से संबंध रखती हुई भी स्वतंत्र सत्ता की शोभा रखती हैं; किन्तु सारे फूल की एकच्छत्र शोभा उनके केन्द्र से समन्वित होने से ही अधिक हो पाती है। हिंदी का भी यही संबंध अन्य भारतीय भाषाओं के साथ परंपरा से रहा है। हिन्दी को किसी अन्य अकृत्रिम रूप से ढालने का प्रयत्न अत्याचार ही नहीं पाप है। कृत्रिमता कभी भी किसी का स्वाभाविक विकास नहीं होने देती। इसलिये हिंदी को अपने स्वाभाविक विकास के साथ चलने दें, तो उसकी नैसर्गिक शोभा में बढ़ेगी और समाज तथा राष्ट्र की सभी चेतनाओं तथा विचारधाराओं का पूर्ण सामंजस्य भी उसमें स्वच्छन्द रूप से हो सकेगा। उसके रूप को विकृत कर हम अपनी प्राचीन संपत्ति से ही हाथ नहीं धो बैठेंगे, वरन् वर्तमान और भविष्य की अमूल्य राशियों का भी स्थिर संचय न हो सकेगा, और तब व्यामोह से जगने पर अपनी भूल का पता जब लगेगा तब हाथ मलकर पछताने के अतिरिक्त कुछ हाथ न आवेगा।

कार्यसमिति की ग्यारहवीं बैठक

कार्यसमिति की बैठक रविवार; १६ फाल्गुन, ता० २८ फरवरी १९४२ को सायंकाल ४ बजे से सम्मेलन के संग्रहालय भवन में हुई। निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:—

सर्वश्री १. अमरनाथ झा; २. दयाशंकर दुबे; ३. अमरनाथ शुक्ल; ४. रामनाथ 'सुमन'; ५. उदयनरायण तिवारी; ६. रमाशङ्कर उपाध्याय; ७. रामचंद्र टंडन ८. लक्ष्मीनारायण दीक्षित; ९. चन्द्रशेखर वाजपेयी; १०. रामलखन शुक्ल।

१. नियमानुसार श्री अमरनाथ जी झा ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और स्वीकृत हुई।

२. श्री प्रबन्ध मंत्री जी ने पंजाब प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री वशिष्ठ शर्मा का सहायता सम्बन्धी पत्र विचारार्थ उपस्थित किया और बताया कि वे पंजाब में प्रचार कार्य करने के लिए दो प्रचारक ५०)-५०) मासिक पर चार माह के लिए रखना चाहते हैं। श्री शर्मा जी का अनुरोध है कि इस कार्य में जो ४००) व्यय होगा उसका भार सम्मेलन स्वीकार करे।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सम्मेलन पंजाब-काश्मीर प्रचार में २०००) वार्षिक खर्च कर रहा है तथा इसके अतिरिक्त अबोहर विद्यालय को भी इस वर्ष १००) सहायता-स्वरूप देना निश्चय हुआ है; अतएव अनुमान-पत्र में प्रचार-कार्य के लिए अतिरिक्त पद न होने के कारण सम्मेलन सहायता देने में असमर्थ है।

३. श्री प्रबन्ध मंत्री जी ने नियम ३६ (क) के अनुसार प्रतिनिधियों के चुनाव का विषय उपस्थित किया और बताया कि ११ माघ १९९९ की स्थायी-समिति ने कार्य-समिति को प्रतिनिधि चुनने का आदेश दिया है। सर्वसम्मति से प्रतिनिधि चुने गए।

४. श्री प्रबन्ध मंत्री जी ने श्री इन्द्रसिंह चक्रवर्ती, मंत्री स्वागत समिति, भेणी साहब का पत्र विचारार्थ उपस्थित किया और बतलाया कि वे चाहते हैं कि अधिवेशन की तिथियाँ ईस्टर से बदल कर होली पर कर दी जायं। २४, २५, २६ अप्रैल को गेहूँ की कटाई होती है, अतएव अधिवेशन का होना संभव नहीं है। इस सम्बन्ध में श्री रामनाथ सुमन जी का प्रस्ताव आया है कि तिथियाँ न बदली जायँ। इस सम्बन्ध में आए हुए श्री किशोरीदास वाजपेयी तथा स्वामी केशवानन्दजी के पत्र भी पढ़े गए। सर्वसम्मति से निम्नांकित प्रस्ताव स्वीकार हुआ—

कार्य समिति स्थायी समिति से सिफारिश करती है कि सम्मेलन की तिथियाँ पूर्ववत् रहने दे। भेणी साहब में २४, २५, २६ अप्रैल को अधिवेशन करना संभव नहीं है, अतएव अधिवेशन उक्त तिथियों पर प्रयाग में हो।

५. विशेष सदस्य—श्री शारंगधर शर्मा जी पहलवान, बम्बई, साधारण सदस्य—श्री कैकेयी नंदन सहाय बरेली। सर्वसम्मति से उपर्युक्त सज्जनों की सदस्यता स्वीकार की गई।

६. श्री प्रबंध मन्त्री जी ने बतलाया कि शब्द संचय के लिए दो लेखकों की नियुक्ति तीन माह के लिए की गई थी। २८ फरवरी को नियुक्ति समाप्त हो रही है। श्री साहित्य मंत्री जी की सिफारिश है कि इन लेखकों की नियुक्ति तीन-तीन माह और बढ़ा दी जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७. श्री प्रबन्ध मन्त्री जी ने २८-२-४३ की परीक्षा-समिति द्वारा स्वीकृत यह प्रस्ताव विचारार्थ उपस्थित किया—

परीक्षा समिति कार्य समिति से सिफ़ारिश करती है कि वह एक डेपुटेशन सम्मेलन की वैद्यक परीक्षाओं के संबंध में श्री पन्नालाल जी के पास ले जाय, और उन्हें परिस्थिति का दिग्दर्शन कराये।

सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि श्री सभापति जी डा० पन्नालाल को पत्र लिखें तथा उनको सम्मेलन कार्यालय में आमन्त्रित करें।

रामलखन शुक्ल, प्रबन्ध मंत्री

सिक्किम में हिंदी-प्रचार

राष्ट्रभाषा प्रेमी सज्जनों को यह समाचार जानकर हर्ष होगा कि यहाँ गत वर्ष से हिन्दी का प्रचार हो रहा है। इस वर्ष एक हिन्दी पुस्तकालय तथा वाचनालय का भी प्रबन्ध किया गया है। परन्तु यह प्रचार कार्य तभी सफल हो सकता है जब सर्व साधारण इस महत्त्वपूर्ण कार्य में सहायता प्रदान करें। हमारी विनम्र प्रार्थना है कि राष्ट्रभाषा-प्रेमीगण यथाशक्ति हमें अवश्य प्रोत्साहित करें। नयी-पुरानी पुस्तकें, समाचार पत्र, पुरानी फाइलें आदि सभी हम धन्यवादपूर्वक ग्रहण करेंगे।

शशिनाथ चौधरी,
मंत्री हिंदी-भवन, पो० गैंटोक, सिक्किम।

गोपाल कृषि-पुरस्कार

राजपूताने की खेती की उन्नति के समस्त अंगों पर उपयोगी सिद्धांतों से पूर्ण सर्वोत्तम ग्रंथ लिखने वाले को बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन की ओर से श्रीमान् सेठ रामगोपाल जी मोहता द्वारा प्रदत्त ५००) का गोपाल कृषि पुरस्कार दिया जायगा। ग्रंथ ३० अक्टूबर सन् १९४३ तक कार्यालय में आ जाना चाहिये। अप्रकाशित ग्रंथ भी भेजे जा सकते हैं। विशेष जानकारी के लिए सम्मेलन कार्यालय, सरदारशहर से पत्र व्यवहार करें।

आचार्य ओङ्कारनाथ शास्त्री
प्रधान मंत्री बी० रा० सा० सम्मेलन सरदारशहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

विद्रोही। संपादक—विद्याभूषण पंडित मोहन शर्मा 'विशारद', प्रकाशक—प्रकाशमन्दिर, काशी आर० एस० (बनारस)। मूल्य १।)

इस पुस्तक में मध्यप्रांत के कुछ प्रमुख कहानी-लेखकों की चुनी हुई कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह में भावों और शैली की विविधता का ध्यान रखा गया है। प्रारंभ में प्रत्येक लेखक का संक्षिप्त परिचय दिया है।

सब कहानियाँ पढ़ चुकने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इस संग्रह के अधिकांश कहानी लेखक वास्तविक जीवन की मिट्टी के स्पर्श से बहुत दूर रहकर एक ऐसी भावुकता की हवाई उड़ान भरते हैं, जिसका महत्व साबुन के बुलबुलों से अधिक नहीं है। वे लोग ऐसी खयाली तरंगों में डूबना-उतराना पसंद करते हैं जिनका संबंध न जीवित लोक से है न मृत लोक से।

उदाहरण के लिये पहली कहानी 'कलाकार' को लीजिए। इस कहानी के ग्रामीण नायक श्रीनाथ को एक महान शिल्पकार के रूप में दिखाया गया है जो पत्थरों पर आश्चर्यजनक कलामूर्तियों को खोदकर तैयार करता है। एक लड़की से उसका प्रेम हो जाता है। पर सामाजिक विषमता के कारण इन दोनों का विवाह नहीं हो पाता। नायिका का विवाह एक ज़मींदार से होता है। फलस्वरूप 'महान् शिल्पकार' का सारा जीवन अपनी प्रेयसी के वियोग की गहरी वेदना से रंग जाता है। उसने एक पत्थर पर अपनी उसी प्रेमिका की मूर्ति खोदना आरंभ कर दिया; मूर्ति तैयार हो जाने पर प्रतिदिन अपने आँसुओं से उस मूर्ति को तर करके, आँसुओं के सूख जाने पर उनकी चिकनाई से उसे पालिश करता। मूर्ति को चट्टान से काटकर उसने एक पेड़के सहारे खड़ा कर दिया, और एक दिन उसी मूर्ति के पैरों के पास उसने प्राण छोड़ दिए। कुछ वर्षों बाद कलकत्ते की एक प्रदर्शनी में वह मूर्ति प्रदर्शनार्थ और विक्रियार्थ रखी गई। संयोग से श्रीनाथ की वही प्रेमिका, जिसकी वह मूर्ति थी, अपने पति के साथ प्रदर्शनी देखने गई। वहाँ उस मूर्ति को देखकर उसकी कुछ ऐसी विचित्र दशा हुई कि वह उसी दम वहीं पर मृत अवस्था में नीचे गिर पड़ी।

सस्ती भावुकता और निराधार हवाई उड़ान की भी एक सीमा होती है। आश्चर्य है कि कठोर-वास्तविकता के इस ज़माने में भी हमारे तरुण कहानी-लेखक गण इस प्रकार के अलौकिक प्रेमोन्माद और अघटनीय घटनाओं से पूर्ण, जीवन की मार्मिकता से भागनेवाली कहानियों की ओर रुचि रखते हैं। दूसरी कहानी 'प्रेम की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाधि' भी बहुत कुछ इसी ढंग की है, जीवन के किसी आधार के बिना साबुन घुले हुए पानी के 'टब' के ऊपर तैरनी वाली एक ओछी भावुकतापूर्ण प्रेम कथा। अन्य कहानियाँ इन दो कहानियों से अधिक सुसंस्कृत नहीं हैं।

हमारा ऐसा विश्वास है कि जिन लेखकों की कहानियाँ इस संग्रह में संकलित हुई हैं केवल उन्हीं तक मध्यप्रान्त के 'दिग्गज' साहित्यिकों की संख्या समाप्त नहीं हो जाती होगी, क्योंकि इन कहानियों का आदर्श बहुत ही नीचा है। हम विनम्रतापूर्वक मध्यप्रान्तीय तरुण कहानी लेखकों से यह प्रार्थना करते हैं कि वे सस्ती भावुकता का मोह माया त्याग कर वास्तविक जीवन की मार्मिकता की ओर ध्यान दें। सिनेमा-जगत के व्यामोह में न पड़कर जीवन की सच्ची और गहरी अनुभूतियों को कला का रूप देने का प्रयत्न करें। उनके भीतर कला के बीज वर्तमान अवश्य हैं, पर उन बीजों के पोषण का ढंग हमें तनिक भी नहीं जँचता।

द० अ०

राजस्थान के रमणी-रत्न। लेखक-श्री जगदीशप्रसाद माथुर, 'दीपक', प्रकाशक—'मीरा' कार्यालय, अजमेर, मूल्य १)

इस पुस्तक में राजस्थान के इन नारी-रत्नों के चरितों को कहानियों का रूप दिया गया है—करणी माता, पल्लू सती, गेंदाबाई, मानसिंह की मँझली रानी, कर्मैती, जोधा जी को उपदेश देनेवाली जाटनी, सीसोदणी कुंवराणी, मीनल देवी, सती राणक देवी, कवयित्री भीमा चारणी, सती कोड़मदे, पतिव्रता कलावती, आदि-आदि। इनमें दो एक को छोड़कर-शेष सब रमणियों को ऐतिहासिक ख्याति प्राप्त नहीं है। पर कीर्ति का गौरव प्राप्त न होने पर भी उनके चरित्र बहुत उज्ज्वल हैं, और उन्हें प्रकाश में लाकर लेखक ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

क्षत्रज्ञ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदी में अपने ढंग की पहली पुस्तक

कैलास-मानसरोवर

पवित्र कैलास-शिखर की १५ और पुनीत मानसरोवर की १७ परिक्रमाएँ किये हुए श्री कैलास-मानस-तीरवासी

श्री १०८ प्रणवानंद जी महाराज

लिखित

स्वामी जी ने घोर शीतकाल में भी पुनीत मानसरोवर के तट पर निवास करके श्री कैलास और पुनीत मानसरोवर संबंधी जिन बातों का परिचय इस पुस्तक में कराया है वे एकदम नयी, आश्चर्यजनक, आनंददायक और रोमांचकारी है। पुस्तक इस मास के अंत तक छप कर तैयार हो जायगी। प्रतीक्षा कीजिए।

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख को निकलता है।

इसमें

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनाएँ और राष्ट्र-भाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा एक रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिये।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार', वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

संवत् २००० के पुरस्कार

उपयुक्त पुस्तकें प्राप्त होने पर संवत् २००० में सम्मेलन की ओर से निम्नलिखित पुरस्कार दिए जायँगे :—

१. मंगलाप्रसाद पारितोषिक

१२००)—व्यावहारिक-विज्ञान [वैद्यक, गृह-निर्माण, कृषि-शास्त्र, यंत्र-शास्त्र आदि] विषयक पुस्तक पर।

२. सेकसरिया महिला पारितोषिक

५००)—महिला-रचित किसी मौलिक रचना पर।

३. मुरारका पारितोषिक

५००)—समाजवाद-विषयक पुस्तक पर।

४. जैन पारितोषिक

५००)—ग्रामोद्योग-विषयक पुस्तक पर।

५. राधामोहन गोकुल जी पुरस्कार

२५०)—समाज-सुधार विषयक पुस्तक पर।

६. नारंग पुरस्कार

१००)—भारतीय संस्कृति-विषयक कविता-पुस्तक पर [केवल पंजाब निवासी हिन्दी कवि को]।

७. गोपाल पुरस्कार

५००)—किसी खोजपूर्ण मौलिक अद्वैत सिद्धांत के आधार पर लिखी हुई आचार-शास्त्र रचना पर।

उपर्युक्त सभी पुरस्कारों के लिए केवल जीवित लेखकों की रचनाओं पर विचार किया जायगा। मंगलाप्रसाद पारितोषिक के लिए पुस्तकों की आठ प्रतियाँ तथा अन्य सभी पुरस्कारों के लिए सात-सात प्रतियाँ आनी चाहिएँ। सभी पुरस्कारों के लिए पुस्तकें ३१ वैशाख (सौर) सं० २००० तक सम्मेलन कार्यालय में अवश्य पहुँच जानी चाहिए। पुरस्कारों की अलग-अलग नियमावलियाँ सम्मेलन कार्यालय से मँगाई जा सकती हैं।

रामप्रसाद त्रिपाठी
एम० ए०, डी० एस-सी०,
प्रधान मंत्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवीन वर्ष से नवीन परिवर्तन में

'जीवन-साहित्य'

[गांधीजी की रचनात्मक प्रवृत्तियों का मुखपत्र]

सम्पादक

काका कालेलकर

हरिभाऊ उपाध्याय

महावीरप्रसाद पोद्दार

पृष्ठ संख्या ३२ से ४८ : : वार्षिक मूल्य १॥)

एक प्रति का ≡)

* श्री काका सा० कालेलकर तथा श्री महावीरप्रसाद पोद्दार के सहयोग से 'जीवन-साहित्य' नवीन रूप में आपकी सेवा में उपस्थित हो रहा है।

** महात्माजी की देशव्यापी रचनात्मक प्रवृत्तियाँ जैसे खादी, ग्रामोद्योग, गो-सेवा, हरिजन सेवा, बुनियादी तालीम, हिन्दुस्तानी-प्रचार आदि कैसी चल रही हैं, उनके कार्य-कर्त्ताओं को कैसे अनुभव हो रहे हैं और इन सब क्षेत्रों में देश-हित की कितनी गुंजाइश है यह सब देश के सामने रखना अब से जीवन साहित्य का प्रधान काम होगा।

*** जीवन-शुद्धि, जीवन-विकास और जीवन-समृद्धि के प्रत्यक्ष प्रयत्नों में से पैदा हुआ साहित्य जीवन-साहित्य माना जायगा।

**** ऐसे 'जीवन-साहित्य' के नये वर्ष से अगस्त में ही ग्राहक बन जाते हैं तो आप से—

केवल १) ही लिया जायगा।

नहीं तो बाद में १॥) देना होगा। अतः

आप शीघ्रातिशीघ्र ग्राहक बनकर देश की रचनात्मक प्रवृत्ति में अपना हिस्सा अदा कीजिए

व्यवस्थापक

'जीवन-साहित्य', कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

संपादकीय पत्र व्यवहार निम्न पते से करें:

संपादक, 'जीवन-साहित्य', गोरखपुर (यू० पी०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी दो नई पुस्तकें

मेरी असफलताएँ

[हास्य-मिश्रित आत्मकथा]

'साहित्य-सन्देश' के सम्पादक श्री गुलाबरायजी एम० ए०, ने आत्मकथा के रूप में इस पुस्तक में उच्चकोटि के साहित्यिक हास्य का ऐसा सुन्दर प्रदर्शन किया है जैसा अन्यत्र कम मिलता है। हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान्, प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० धीरेन्द्र वर्मा लिखते हैं :

"बहुत दिनों बाद ऐसी रोचक साहित्यिक पुस्तक हाथ लगी। जहाँ तक मुझे स्मरण पड़ता है आधुनिक हिन्दी साहित्य की यह पहली पुस्तक है जिससे मेरे घर की तीन पीढ़ियों ने आनन्द उठाया—मेरी माताजी, मैं तथा मेरी लड़की।"

दिल्ली रेडियो से श्री स० ही० वात्स्यायन ने समालोचना करते हुए इसकी जो प्रशंसा की थी वह शायद ही किसी पुस्तक को मिली हो। अगर आपने अभी तक इस पुस्तक को नहीं देखा हो तो अब मँगा कर देख लें। मूल्य १) मात्र।

आधुनिक हिन्दी नाटक

लेखक—प्रो० नगेन्द्र, एम० ए०

'सुमित्रानन्दन पन्त' और 'साकेत एक अध्ययन' लिख कर नगेन्द्र जी ने हिन्दी संसार में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है। उसी का यह परिणाम है कि आपकी यह तीसरी नवीन कृति 'आधुनिक हिन्दी नाटक' छपते ही आगरा विश्व-विद्यालय की एम० ए० परीक्षा के लिए स्वीकृत हो गई। इस पुस्तक में नगेन्द्र जी ने नाटकों का वर्गीकरण एक नए ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण से किया है और विश्लेषण इतना मार्मिक है कि पढ़ते ही बनता है। नाटकों पर आलोचना की कई पुस्तकें हिन्दी में निकल चुकी हैं पर यह अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य १) मात्र।

हिन्दी पुस्तकों के लिये सदैव हमें लिखिये :—**साहित्य-रत्न-भण्डार, आगरा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भारत-गीत	≡)
२ राष्ट्रभाषा	॥)
३ शिवाबावनी	≡)
४ पद्मावत पूर्वार्द्ध	१), १।)
५ सूरदास की विनयपत्रिका	≡)
६ नवीन पद्यसंग्रह	।॥)
७ विहारी-संग्रह	≡)
८ सती-करणकी	॥)
९ हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव	॥≡)
१० ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार	१।)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था	१)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर-विज्ञान	॥), ॥)
२ प्रारम्भिक रसायन	१)
३ सृष्टि की कथा	१)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला	।)
२ बाल-कथा भाग २	।≡)
३ बाल विभूति	≡)
४ वीर पुत्रियाँ	।≡)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र	३)
२ कृषि प्रवेशिका	१)
३ विकास (नाटक)	॥≡)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र	३॥)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति	१।≡)
६ गावों की समस्यायें	१)
७ मीराँबाई की पदावली	२॥)
८ भट्ट निबंधावली	१॥)
९ बंगला-साहित्य की कथा	१।)
१० शिशुपाल वध	२)
११ ऐतिहासिक कथायें	।॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर	॥)

१—मैथिली लोकगीत—रामइक़बालसिंह 'राकेश', भूमिका लेखक—पण्डित अमरनाथ झा ३)

२—गोरखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल ३)

३—दीवाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी १॥)

४—महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन ३)

५—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ३॥)

६—स्त्री का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट १॥)

७—राजस्थानी लोकगीत—स्व० सूर्यकरण पारीक १)

८—सामान्य भाषाविज्ञान—डा० बाबूराम सक्सेना ४)

९—काव्यप्रकाश—मम्मटाचार्य, अनुवादक स्व० हरिमंग मिश्र ६)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। वे बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०—५५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)
द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४—२४ डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा

२. श्री सुमित्रानन्दन पंत ३. श्री रामकुमार वर्मा

४. श्री गोपालशरण सिंह

प्रत्येक का मूल्य १॥)

मिलने का पता :

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक— मापप्रसाद घिल्डियाल, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।
मुद्रक— श्रीनिवासप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।
CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष २०००

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन
प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. स्वर्गीय प्रेमचन्द जी की एक योजना—
२. हमारे संग्रह के हिन्दी के अपूर्ण-ग्रन्थ—श्री अगरचन्द नाटहा, बीकानेर ११
३. कथाकार निराला—श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम्० ए०
४. 'साकेत' की उर्मिला—श्री भागीरथचंद बी० ए०, डी० टी०
५. जाँच उपसमिति का विवरण
६. महादेवी जी का आलोचना साहित्य
७. श्रीकृष्ण किंकर जी की चीन-यात्रा—श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र
८. समालोचना

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द'-लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

भाग ३१ : संख्या ३-५ :: कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष २०००

सम्मेलन-पत्रिका

स्वर्गीय प्रेमचंद्र जी की एक योजना

[१]

दो शब्द

कुछ दिन हुए पुराने काग़ज़-पत्रों की सफ़ाई करते हुए मुझे एक फ़ाइल मिली जिसके अस्तित्व को मैं भूल चुका था। इस फ़ाइल में प्रेमचंद जी की अनुवादक-मंडल संबंधी एक योजना को लेकर मेरा-उनका पत्र-व्यवहार है। फ़ाइल पर कुछ अंशों में दीमकों की कृपा हो चुकी है। इस पत्र-व्यवहार पर फिर से नज़र डालते हुए, इसे प्रकाशित कर देने का विचार हुआ—वह इस उद्देश्य से कि संभवतः साहित्यिक मित्रों को इस योजना में दिलचस्पी उत्पन्न हो और वह इसे अग्रसर करना चाहें। प्रेमचंद जी वास्तव में बहुधंधी आदमी थे और उस समय मेरे पास भी उतना अवकाश नहीं था जितना कि इस योजना को सफल बनाने के लिए अपेक्षित था। इसलिए हम लोगों ने आपस में विचार करके इसे 'किसी आगे के समय' के लिए स्थगित कर दिया था। खेद है कि वह 'आगे' का समय उनके जीवनकाल में न आया। प्रेमचंद जी के स्मारक के रूप में यह योजना आगे बढ़ाई जाय तो भी अनुचित नहीं।

प्रेमचंद जी का और मेरा पत्रव्यवहार अंग्रेज़ी में है। इसका अनुवाद कृपा करके श्री इलाचंद्र जोशी जी ने हिंदी में कर दिया है। मैंने फ़ाइल ज्यों-की-त्यों सम्मेलन-संग्रहालय को भेंट कर दी है, जिसमें कि सुरक्षित रह सके।

—रामचंद्र टंडन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[२]

'जागरण' कार्यालय
सरस्वती प्रेस, काशी
ता० १८-५-३३

प्रिय रामचन्द्र जी,

धन्यवाद। मैंने 'अर्जुन' के द्वारा अपना जो सुझाव उपस्थित किया था, उसकी एक 'कापी' भेज रहा हूँ। यदि इसे कार्यान्वित किया जा सके तो निश्चय ही इससे हमारे संवादपत्रों का आदर्श ऊँचा हो सकेगा। इसके लिये विशेष परिश्रम की आवश्यकता है। यदि आप ग्राहकों को जुटा सकें तो कार्य प्रारंभ किया जा सकता है। योग्य व्यक्ति प्राप्त हो सकते हैं। हमारे संवादपत्र दीर्घकालीन आर्थिक दुर्दशा से ग्रस्त हैं, और इस कारण किसी नयी योजना के लिये संभवतः सम्मत न होंगे। फिर भी प्रयत्न तो करना ही चाहिये। हवा चल पड़ने से संभव है कुछ सुफल निकल आवे।

आशा करता हूँ आप सानंद होंगे।

मौलाना असग़र साहब से मेरा सलाम कह दीजिएगा।

आपका—
धनपतराय

[३]

अनुवादक मंडल की आवश्यकता

(लेखक, उपन्यास सम्राट् श्रीयुत प्रेमचंद)

हिन्दी में दैनिक पत्रों का मूल्य दो पैसे से अधिक नहीं है। जब अङ्गरेजी पत्र १६, २० पृष्ठों के चार पैसे में मिलते हैं तो हिन्दी के आठ पृष्ठों के पत्र के लिये दो पैसे से ज्यादा जनता क्यों खर्च करने लगी।

बिक्री का दाम तो है दो पैसे लेकिन कठिनाइयां कितनी हैं? 'रूटर' 'असोसियेटेड' 'फ्री प्रेस' सभी खबर पहुँचाने वाली संस्थायें तार द्वारा खबरें भेजती हैं। अङ्गरेजी पत्र तार पाते ही उसको देख भाल कर, कुछ विराम चिन्ह घटा बढ़ाकर, या जरूरत के मुताबिक तार को काट छांटकर कम्पोज करने के लिये भेज देते हैं। हिन्दी पत्रों में इन तारों का हिन्दी में तरजुमा होना चाहिए। इसके लिये ४ से ६, ८ तक अनुवादक रखे जाते हैं। तार मिला है १० बजे या ११ बजे रात को। उसे १ बजते बजते कम्पोजिंग में चला जाना चाहिए, नहीं तो वह छप न सकेगा। इसी घन्टे दो घन्टे में अनुवादक को तेजी के साथ अपना काम करना पड़ता है। खबर छोटी सी हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो कोई बात नहीं। लेकिन कहीं वह वायसराय या गवर्नर या महात्मा गांधी की स्पीच हुई या असेम्बली या कौंसिल के बैठक की रिपोर्ट हुई तो एक, दो, तीन, चार कालमों की खबर हो सकती है, और एक घन्टे के अन्दर उसका अनुवाद होना परमावश्यक है, नहीं वह खबर रह जायगी। ऐसी हड़बड़ी में अनुवाद कैसा होगा, इसका अनुमान किया जा सकता है। वाक्य के वाक्य और पैरे के पैरे छोड़ देने पड़ते हैं और भाषा इतनी उलझी हुई, इतनी बेसिर पैर की हो जाती है कि बहुधा उसका मतलब समझने के लिये अनुमान से काम लेना पड़ता है। यह कठिनाई सभी भाषा-पत्रों के सामने है। एक तो हिन्दी पत्र दो पैसे में बिके, दूसरे अनुवादकों का वेतन दे। तो वह क्यों न घाटे पर चले और क्यों न उसका जीवन संकटमय हो। दरिद्रता के कारण पत्रों को सुयोग्य अनुवादक भी नहीं मिलते। जब ४०) से लेकर ५०, ६०, ७०, ८०) तक अनुवादकों का वेतन होगा तो फिर ऐसे आदमी कहां से आएँगे जो सुन्दर अनुवाद कर सकें। अनुवाद करना आसान काम नहीं है। एक एक शब्द के लिये घन्टों दिमाग खोलना पड़ता है और दिमाग के काम न चलने पर कोष के वरके उलटने पड़ते हैं। मेरा विचार है कि स्वयं कोई लेख लिखना आसान है, अनुवाद करना कठिन है और यह काम हम थोड़े वेतन के कर्मचारियों से लेने पर मजबूर हैं।

किन्तु आजकल कोई समाचार पत्र केवल खबरों ही के बल पर सफल नहीं हो सकता। उसमें जनता और भी चीजें चाहती है, जिससे उसका विचार फैले, उसकी जानकारी बढ़े, उसके भावों का परिष्कार हो। वह संसार के विचार प्रवाह में मिल सके। ऐसे लेख दो पैसे के पत्र में कहां से आवें। उनकी सारी शक्ति खबरों के अनुवाद सुनने में ही खर्च हो जाती है। इसलिये यह आम शिकायत सुनने में आती है कि हिन्दी पत्रों में कुछ होता नहीं। हिन्दी पत्र वही पढ़ता है जो अङ्गरेजी नहीं जानता, और आजकल जो कुछ पढ़ा लिखा है, वह कुछ अङ्गरेजी भी जानता है। ऐसे हिन्दी जानने वाले जो अङ्गरेजी बिलकुल न जानते हों अधिक नहीं हैं। और जो सम्पन्न हैं वह तो अङ्गरेजी अवश्य ही जानते हैं। जनता को हिन्दी पत्रों से प्रेम है अवश्य, मगर जब उसे उनमें सन्तोषजनक मसाला नहीं मिलता तो वह विवश होकर अङ्गरेजी पत्र खुलता है। अंगरेजी व्यापक भाषा है। उसके द्वारा आप संसार की सैर कर सकते हैं। रूस, जर्मनी, फ्रांस आदि देशों के विचारक और विद्वान क्या कहते हैं यह जानने के लिये आपको अङ्गरेजी पत्र पढ़ना अनिवार्य है। अगर हम इन लेखों को हिन्दी पत्रों में दे सकें तो इन पत्रों की उपयोगिता, मनोरञ्जकता और व्यापकता बहुत बढ़ जाय। मगर ऐसे लेखों का अनुवाद करना हिन्दी पत्रों के सामर्थ्य के बाहर है। खबरों का भी सीधा अनुवाद कर देने से भी काम चल जाता है, लेकिन एक कन्वोकेशन ऐड्रेस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अनुवाद तो सोच समझ कर ही करना पड़ेगा। इसीलिए हमें एक अनुवादक मंडल की आवश्यकता है। इस मंडल का यह काम हो कि वह पच्छिमी पत्रों से विचारपूर्ण, ज्ञानवर्धक लेखों का अनुवाद करके हिन्दी पत्रों को दे। यह जरूरी नहीं कि मंडल के सभी काम करने वाले अपना पूरा समय दें। अपने मुख्य काम के साथ वे मंडल में कुछ सहयोग दे सकते हैं। लेकिन कुछ ऐसे आदमियों की जरूरत तो होगी ही जो अपना पूरा समय दे सकें। अगर मंडल को ऐसे आदमियों की सहायता मिल सके जो फ्रेञ्च, जर्मन और अङ्गरेजी आदि जानते हों तो क्या कहना। मंडल संसार भर के मुख्य पत्र मंगवाये, यह निश्चय करे कि कौन-कौन से लेख अनुवाद के योग्य हैं। पत्रों से पत्र-व्यवहार करके वह निर्धारित करे कि कौन-कौन से पत्र कौन-कौन से लेख स्वीकार करते हैं। या यह हो सकता है कि मंडल पत्रों से मासिक चन्दा तय कर ले और रोज-रोज की अनुवाद सामग्री पत्रों के पास भेज दें। पत्र अपनी सुविधा अवकाश और रुचि के अनुसार जो अनुवाद चाहें प्रकाशित करें। इस तरह की सामग्री देने में हिन्दी पत्रों की खपत बढ़ सकती है और सम्भव है कि वे भी अपना मूल्य एक आना कर सकें। तभी वे अङ्गरेजी पत्रों का सामना कर सकते हैं और तभी उनका आदर होगा।

(अर्जुन)

[४]

१० साउथ रोड, इलाहाबाद
२०-५-३१

प्रिय प्रेमचंद जी,

आपने हिन्दी अनुवादक-मण्डल के संगठन की योजना के साथ जो पत्र भेजा उसके लिये धन्यवाद। मैंने यह अनुमान किया था कि आपकी योजना का उद्देश्य कुछ दूसरा ही—अर्थात् पुस्तकों का अनुवाद—होगा। पर अब मालूम हुआ कि यह संवाद-पत्रों से संबंध रखता है। आपकी यह योजना जिस क्षेत्र तक सीमित है वहाँ तक वह बहुत सुन्दर है, और उसके भीतर बहुत-सी सद्-संभावनाएँ निहित हैं। इसे कार्यान्वित करने की चेष्टा अवश्य की जानी चाहिये।

आपने अपने विषय को जिस रूप में उपस्थित किया है उससे कहीं अधिक विस्तार के साथ आपने उस पर विचार कर लिया होगा, ऐसा लगता है। आपके लेख में एक विशेष कार्यक्रम की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया है, पर उसके संगठन की रूप-रेखा के संबंध में उसमें कुछ भी नहीं कहा गया है। क्या आप कृपा करके अपनी योजना के संगठन का स्वरूप मुझे बता सकेंगे? उसमें काम करनेवाले किस प्रकार के कार्यकर्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त हो सकते हैं ? कार्य का सीमा-क्षेत्र क्या रहेगा, कार्यकर्ताओं को पारिश्रमिक क्या मिलेगा और कार्य-विभाजन किस रूप से होगा ?

आपका उत्तर मिलने पर मैं चाहूँगा कि इस कार्य में दिलचस्पी रखनेवाले कुछ सज्जनों को एकत्र किया जावे, ताकि आपकी योजना की एक निश्चित रूपरेखा तैयार हो सके। यदि समिति का संगठन हो जावेगा, तो निश्चित योजना के विस्तृत विवरण और कार्यक्रम पर विचार किया जावेगा। मैं और यहाँ के कुछ मेरे मित्र इस कार्य में पूर्ण रूप से सहयोग देने के लिये तैयार हैं। कृपया उत्तर में विलंब न करें।

इस बीच मैं स्वयं भी आपकी योजना की एक रूपरेखा आपके विचार के लिये तैयार कर रहा हूँ।

आशा करता हूँ आप सकुशल होंगे।

आपका—
रामचंद्र टंडन

[५]

सरस्वती प्रेस, काशी
२३-५-३३

प्रिय भाई साहब,

धन्यवाद। वह योजना हिन्दी के साप्ताहिक तथा दैनिक पत्रों के लाभार्थ—उनकी उपयोगिता, प्रचार तथा महत्त्व बढ़ाने के उद्देश्य से—तैयार की गई थी। तब मेरे मन में उसके विस्तार का कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं था। पर हमें पहले अपनी संभव शक्तियों का अंदाज लगा लेना होगा—एक ऐसा खाका तैयार कर लेना होगा, जिससे यह पता चल सके कि कौन-कौन सी पत्र-पत्रिकाएँ हमारी योजना को स्वीकार करने के लिये तैयार हैं, कितनी सामग्री की आवश्यकता उन्हें प्रतिदिन, प्रति सप्ताह अथवा प्रतिमास पड़ेगी। इस संबंध में पत्र-पत्रिकाओं के नाम एक प्रचार-पत्र भेज देने से काफी दिलचस्पी पैदा की जा सकती है। हिन्दी में इस समय पत्रों की संख्या अच्छी है, यद्यपि बहुत से पत्र समुचित ख्याति न पाने के कारण दिन पर दिन क्षीणावस्था को प्राप्त होते चले जा रहे हैं; फिर भी यह आशा की जा सकती है कि वे अपने पत्रों को चमकाने के उद्देश्य से, विशुद्ध व्यावसायिक दृष्टिकोण से, इस योजना के पीछे कुछ रुपया लगाने को तैयार हो जावेंगे। यह मालूम हो जाने पर कि कितने पत्र हमारी योजना से सहमत हैं, तीन आदमियों की एक समिति का संगठन करना होगा। इस समिति का काम अनुवाद के लिये उपयुक्त सामग्री जुटाने का होगा। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ या तो खरीदनी पड़ेंगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

या किसी दूसरे रूप से प्राप्त करनी होंगी, और उनमें से महत्त्वपूर्ण तथा ज्ञानवर्द्धक सामग्री चुनकर इकट्ठा करनी पड़ेगी। इसके अतिरिक्त अनुवादकों की एक समिति की भी आवश्यकता है—ऐसे अनुवादक जो अलग-अलग विषयों के विशेषज्ञ हों। प्रबंध-समिति अनुवादकों को बराबर-बराबर काम बाँट देगी और तब अनुवादित सामग्री को पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज देगी। प्रबंध-समिति को बहुत-से काम करने पड़ेंगे। बहुत-से पत्रों को पढ़कर उनमें से अनुवाद-योग्य सामग्री चुनना कोई आसान काम नहीं है, पर अभ्यास हो जाने से काम बहुत कुछ आसान हो जावेगा। यदि सौ पत्र-पत्रिकाएँ भी इस काम के लिये १०) प्रति मास खर्च करने को तैयार हो जावें, तो काम को आगे बढ़ाने के लिये नींव तैयार हो सकती है। लेखों का चुनाव करनेवाली समिति को निश्चय ही पुरस्कार दिया जावेगा, यद्यपि पुरस्कार सामान्य ही रहेगा। इस काम के लिये ५० अनुवादक नियुक्त किये जा सकते हैं, जिनके पारिश्रमिक के संबंध में यह तय कर लेना होगा कि एक रुपये पर कै पंक्तियाँ उन्हें लिखनी होंगी। यदि कुछ पत्र एक ही प्रकार की सामग्री चाहने लगें तो वितरण में कुछ गड़बड़ी पैदा हो सकती है। ऐसी हालत में उन पत्रों के वितरण का पूरा भार हम लोगों के हाथ छोड़ देना होगा या और कोई दूसरा उपाय खोज निकालना होगा। मेरा विश्वास है कि इस योजना को बढ़ाया जा सकता है और यदि कोई व्यक्ति लगन के साथ इस पर जमा रहे, तो उसे हमारे पत्रकार-जगत् की स्थिति को ऊँचा करने का श्रेय और सन्तोष प्राप्त होगा। आप निश्चय ही इस काम के लिये योग्य व्यक्ति हैं। मैं तो एक हरकारा मात्र हूँ, और सदा ऐसे कामों में हाथ डालने की चेष्टा करता रहता हूँ जिनके लिये मैं नहीं बनाया गया। पत्रकार-कला से मेरा स्वभावगत विरोध है, पर परिस्थितियों से विवश होने के कारण मैं उसे स्वीकार करने को बाध्य हुआ हूँ। मेरी यह अनुभूति कि मैं किसी क्षेत्र में कोई स्थायी चिह्न अंकित करने में असमर्थ हूँ, मुझे मूर्खतापूर्ण कामों के लिये उसकाती रहती है। पर अंगरेजी में एक कहावत है—"जीओ और सीखो।"

यदि मेरी योजना को कोई योग्य व्यक्ति हाथ में ले ले, तो इससे अधिक प्रसन्नता मुझे और किसी बात से हो नहीं सकती।

आपका भाई—
धनपतराय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[६]

१०, साउथ रोड, इलाहाबाद
२७-५-१९३३

प्रिय प्रेमचंद जी,

आपके कृपापत्र के लिये धन्यवाद। मैं योजना तैयार कर रहा हूँ, जिसे दो दिन के भीतर मैं आपके पास भेज दूँगा। योजना की सफलता के लिये मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा करूँगा। मुझे विश्वास है कि अंत में निश्चय ही सफलता मिलेगी। पर प्रारम्भ यदि सामान्य भी हो तो हमें घबराना नहीं चाहिये।

मेरे पास हिंदी के दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों की सूची बहुत अधूरी है। यदि आपके पास कोई सूची हो तो भेजने की कृपा करें, ताकि एक पूरी सूची तैयार की जा सके।

मैं आपकी सम्मति के लिये पत्रों में प्रचारार्थ एक मसविदा भी भेजूँगा।

आपका—
रामचंद्र टंडन

[७]

१०, साउथ रोड, इलाहाबाद
१-६-३३

प्रिय प्रेमचन्द जी,

मुझे इस बात के लिये खेद है कि मैंने आपको जिस योजना के भेजने का वचन दिया था उसे इसके पहले न भेज पाया। मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं था और इस बीच मेरा आफिस जाना भी बंद रहा। इस समय भी मैं आपको अनुवादक-मंडल के संगठन से संबंधित वैधानिक मसविदा नहीं भेज रहा हूँ; इस संबंध में मैंने अपने जो विचार नोट कर रखे हैं, केवल उन्हीं को भेज रहा हूँ। अंतिम मसविदा तब तैयार किया जावेगा जब आप मेरे सुझावों के संबंध में अपनी सम्मति देंगे।

मैं यह पसंद करूँगा कि एजेन्सी का अंगरेजी नामकरण किया जाय, अर्थात् उसका नाम 'हिन्दी ट्रान्सलेशन बोर्ड' रहे, न कि 'अनुवादक-मंडल'।

इसका उद्देश्य हिन्दी के दैनिक तथा साप्ताहिक पत्रों को विभिन्न विषयों पर अनुवादित लेख भेजते रहने का होना चाहिये। संवाद तथा राजनीतिक लेखों से कोई संबंध नहीं रखना चाहिये। ऐसा होने से मासिक तथा पाक्षिक पत्र भी उक्त एजेन्सी द्वारा लाभ उठा सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोर्ड का हेड आफिस बनारस में होना चाहिये। उसकी शाखाएँ दिल्ली, इलाहाबाद, लखनऊ, कलकत्ता और जबलपुर में खोली जा सकती हैं। फिलहाल लखनऊ और जबलपुर को छोड़ा भी जा सकता है, और प्रारंभ में केवल चार आफ़िसों से काम चलाया जा सकता है।

प्रत्येक आफिस, चाहे वह प्रधान आफिस हो या उसकी शाखा, किसी एक संचालक के व्यक्तिगत निरीक्षण के अधीन रहे।

संचालक के ऊपर इन बातों का उत्तरदायित्व होगा—(१) भारतीय तथा विदेशी संवाद-पत्रों तथा मासिक पत्रों से लेख अथवा लेखांशों का चयन करना और उन्हें अपने आफिस से संलग्न अनुवादकों को अनुवाद के लिये दे देना; (२) पत्र-व्यवहार द्वारा प्रधान कार्यालय के संसर्ग में रहना, और उसके साथ परामर्श करके अनुवादित सामग्री को प्रत्येक पत्र की विशेष आवश्यकता के अनुसार भेजते रहना; (३) आवश्यकता पड़ने पर अनुवादों का संपादन करना अथवा अपने नोट उनके साथ जोड़ देना; आफ़िस से संबंधित विभिन्न अनुवादकों को जो पारिश्रमिक दिया जाय, उसके बिलों की जाँच करना; किसी एक विशेष शाखा में विशेषज्ञता प्राप्त करना, और एक ऐसी फ़ाइल रखना जिसमें बोर्ड से संलग्न अनुवादकों की योग्यताओं का विस्तृत ब्यौरा रहे।

डाइरेक्टर को कुछ और भी जिम्मेदारियाँ सौंपी जा सकती हैं, पर इस समय मैंने केवल उन्हीं बातों का उल्लेख किया है जो बिना किसी प्रयास के मुझे सूझ गईं।

बोर्ड को निम्नलिखित विषयों को अपने हाथ में लेना चाहिये—(१) राजनीति (सैद्धान्तिक), (२) साहित्य तथा शिक्षा, (३) लोक-प्रचलित विज्ञान, (४) स्वास्थ्य-सुधार, (५) कहानियाँ, (६) साधारण ज्ञान।

जो पत्र-पत्रिकाएँ मासिक चंदा देना स्वीकार करें वे उक्त विषयों में से अपनी आवश्यकता के विषयों को चुन लें।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रत्येक केन्द्र को किसी एक शाखा के संबंध में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिये, यद्यपि प्रत्येक शाखा के अनुवादकों का कार्य एकांगीय होना ठीक न होगा। कुछ विशिष्ट शाखाओं को अपने विशेष विषय-संबंधी सामग्री इकट्ठा करके बोर्ड के ग्राहकों के पास भेजते रहना चाहिये।

संचालकों को ५०) प्रतिमास वेतन मिलना चाहिये। उन्हें बोर्ड के लाभांश का अधिकार रहेगा। संचालक समिति की वार्षिक बैठक में इस बात की घोषणा कर दी जायगी कि बोर्ड को कितना लाभ हुआ है। कार्यालयों को चलाने, विभिन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-पत्रिकाओं को प्राप्त करने, तथा डाक टिकट आदि के लिये संचालकों को प्रतिमास २५) से लेकर ५०) तक भत्ता दिया जाना चाहिये। प्रधान कार्यालय को ५०) प्रतिमास इसके अतिरिक्त देना होगा। उसे शाखा-कार्यालयों को आफिस-संबंधी आवश्यक चीजें पहुँचाते रहना होगा।

एक लेख में औसतन् ७०० शब्द रहने चाहिये। ५०० से १००० शब्द तक के लेख चल सकते हैं।

यदि कोई पत्र किसी विशेष विषय पर लेख चाहे तो उसके लिये विशेष दर भी तय की जानी चाहिये।

अनुवादकों को ७०० शब्दों के लिये १॥) पारिश्रमिक दिया जाना चाहिये। विशेष-विशेष अवस्था में इस दर में परिवर्तन किया जा सकता है।

ऐसे लेखों पर जो आशयमात्र लेकर लिखे गए हैं ७०० शब्दों के लिये १) दिया जाना चाहिये।

अनुवादकों की योग्यता सहित उनके नामों की एक सूची प्रत्येक आफिस में रहनी चाहिये। प्रत्येक आफिस के पास बोर्ड के समस्त ग्राहकों की पूरी सूची रहनी चाहिये, जिसमें प्रत्येक ग्राहक की आवश्यकता का भी उल्लेख रहे।

बोर्ड को यह अधिकार होना चाहिये कि वह अपने ग्राहकों को जो कोई भी सामग्री भेजे उसे पुस्तक-रूप में संगृहीत कर सके।

छपे हुए लेखों की दो 'कटिंग' प्रधान कार्यालय को भेजी जावें, एक प्रधान कार्यालय के लिये और एक शाखा-कार्यालय के लिये।

ग्राहकों को क्रम से तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है— ३०) प्रति मास देनेवाले ग्राहक, १५) प्रतिमास देनेवाले ग्राहक और १०) प्रतिमास देनेवाले ग्राहक।

प्रथम श्रेणी के ग्राहकों को प्रतिमास ८ लेख ऐसे मिलेंगे जो केवल उन्हीं के लिये अनुवादित किये गए हों; द्वितीय श्रेणी के ग्राहकों को प्रतिमास ४ लेख ऐसे दिये जावेंगे, और तृतीय श्रेणी के ग्राहकों को केवल दो विशेष लेख दिये जावेंगे।

यह आशा की जाती है कि प्रथम श्रेणी के १५ ग्राहक प्राप्त हो जावँगे, द्वितीय श्रेणी के २० और तृतीय श्रेणी के ५० ग्राहक प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार बोर्ड को कुल १२५०) मासिक आय हो सकेगी।

यह मोटे तौर पर तैयार की गई योजना है। मेरी राय है कि आप प्रधान कार्यालय का भार ले लें। इलाहाबाद के कार्यालय का प्रबंध मैं कर लूँगा। बनारसीदास चतुर्वेदी कलकत्ते का, और 'अर्जुन' के प्रोफेसर इन्द्र दिल्ली का भार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सँभाल लेंगे। इस बात को ध्यान में रखते हुए आप स्वयं उन लोगों से पत्र-व्यवहार चला सकते हैं।

यदि आगामी जुलाई से इस कार्य का श्रीगणेश हो सके तो बहुत अच्छा हो, बहुत संभव है प्रारंभिक व्यवस्था में एक पूरा महीना बीत जावे। पर समय नष्ट नहीं होना चाहिये।

मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि मैंने इलाहाबाद आफ़िस के लिये अनुवादकों की सूची तैयार कर ली है। एक प्रचार-पत्र संचालकों के हस्ताक्षर सहित शीघ्र ही तमाम पत्रों को भेज दिया जाना चाहिये जिसमें योजना समझा दी जावे। प्रचार-पत्र के साथ चंदे का फार्म भी रहे। प्रचार-पत्र तब तैयार किया जाय जब श्री बनारसीदास जी तथा इन्द्र जी के उत्तर आपको मिल जावें। इस बीच आप— और मैं भी—इस बात पर विचार कर लें कि प्रचार-पत्र में क्या क्या बातें रहेंगी।

आपने अभी तक मेरे पास हिन्दी के दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों की सूची नहीं भेजी।

एक बात अभी तक छूटी रह गई है; वह है कानून-संबंधी विवेचना। यह तो स्पष्ट ही है कि हम लोगों की संस्था का उद्देश्य चाहे कैसा ही क्यों न हो, वह व्यावसायिक ही होगी, और केवल व्यावसायिक ढंग से उसे चलाया जा सकता है। पाश्चात्य देशों में इस प्रकार की बहुत-सी एजेन्सियाँ हैं। हम लोग एक ऐसा प्रयोग करने जा रहे हैं जो मेरी राय में केवल हिन्दी-क्षेत्र के लिये ही नहीं, बल्कि भारत के लिये नया है। कुछ भी हो, आपसे प्रार्थना है कि आप एजेन्सी के क़ानूनी पक्ष पर विचार करके अपनी सम्मति की सूचना मुझे भी दीजिएगा।

पत्र काफ़ी लम्बा हो गया है। अधिक आपका पत्र मिलने पर।

आपका—
रामचंद्र टंडन

[८]

'जागरण' कार्यालय, बनारस
३-६-१९३३

प्रिय भाई साहब,

आपका पत्र मिला। धन्यवाद। आपकी योजना मुझे बहुत उपयुक्त जँचती है। कार्यालय से ही काम चल जायगा। शाखाओं की आवश्यकता ही क्या है? प्रधान कार्यालय किसी एक ऐसे केन्द्रीय स्थान में होना चाहिये जहाँ अँगरेजी पत्र-पत्रिकाएँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसानी से प्राप्त हो सकें। इलाहाबाद इसके लिये आदर्शस्वरूप है। प्रधान कार्यालय में एक संचालक तथा एक या दो क्लार्क रहें। 'अर्जुन' और चतुर्वेदी जी दो छोरों से क्या कर सकते हैं? संचालक ऐसे व्यक्ति को होना चाहिये जो पठनीय ज्ञानवर्द्धक और विचारोत्तेजक सामग्री का अच्छा चुनाव करने की योग्यता रखता हो। वह स्वयं इस बात का निर्णय करेगा कि अनुवाद के लिये कौनसी सामग्री किस व्यक्ति को दी जावे। वह इस बात पर ध्यान रखेगा कि किस अनुवादक की योग्यता किस हद तक है और कौन इस संबंध में कितनी सहानुभूति रखता है। अनुवादकों के चुनाव का आधार यही होना चाहिये। पक्षपात से बचने के लिये एक प्रकार की वृत्तानुक्रमिक व्यवस्था होनी चाहिये। बाकी सब बातें ठीक हैं। यदि संचालकों की संख्या बढ़ाकर रखी जावे तो प्रारंभिक भार के निर्वाह का प्रबंध नहीं हो सकेगा। कार्यालय का प्रारंभिक व्यय प्रति मास ५० + ३० + २० + ४० + १० + १५ + १००) रु० से अधिक नहीं होना चाहिये। संचालक को प्रतिमास ५०), दो क्लार्कों को क्रम से ३०) और २०), आफिस का किराया ४०), एक चपरासी का वेतन १०), रोशनी १५) और १००) पत्र पत्रिकाओं के लिये। इस प्रकार कुल मिलाकर प्रायः ३००) का खर्च बैठता है। बाकी रुपया आपकी योजना के अनुसार अनुवादकों में बाँट दिया जा सकता है। अनुवादक विश्वसनीय होने चाहिये। प्रचार-पत्र में अनुवादकों के नामों का उल्लेख रहना चाहिये। यदि हम लोग उर्दू संसार को भी लें तो आपकी योजना का क्षेत्र विस्तृत हो जावेगा। किसी लेख का अनुवाद हिंदी में हो जाने पर उर्दू में वह बड़ी आसानी से रूपान्तरित किया जा सकता है। जो सूची आपने माँगी थी मैं उसे भेज रहा हूँ। वह पूरी नहीं है, पूरी के करीब है। यदि जनता सहयोग दे तो सब कुछ हो सकता है। कुल बातें सहयोग पर निर्भर हैं। जब कार्यालय का व्यय ३००) है तो अनुवादकों का पारिश्रमिक १ और ५ के अनुपात में होना चाहिये। यदि हमें प्रतिमास १०००) भी प्राप्त हो जायँ, तो योजना बड़े मज़े में चलाई जा सकती है। ५००) भी कोई निराशाजनक रकम नहीं है। ऐसी हालत में हमें कार्यालय का व्यय घटाना होगा। फिलहाल मकान के भाड़े का कोई प्रश्न नहीं उठेगा। इस संबंध में कुछ अनुभवी व्यक्तियों, जैसे श्री कृष्णाराम मेहता अथवा श्री विश्वनाथ प्रसाद, से बात करने में क्या हर्ज है? दो-एक व्यक्तियों ने इस विषय में मुझे पत्र लिखे हैं। प्रचार-पत्र इस रूप में तैयार किया जाना चाहिये जिससे लोगों पर प्रभाव पड़ सके, और वे यह अनुभव करें कि उन्हें सेवा के बतौर नहीं बल्कि स्वयं अपने हित में सहयोग देना है। प्रारंभ में निम्न व्यक्तियों को हमें अपने साथ लेना होगा—(१) प्रोफेसर इन्द्र, (२) बनारसीदास जी, (३) डा० हेमचन्द्र जोशी, (४) मिस्टर श्रीप्रकाश (५) आगरा के श्रीदालीवाल जी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारंभिक अवस्था में जमीन को तैयार करने के लिये बहुत परिश्रम-साध्य काम करना पड़ेगा। व्यय भी काफ़ी करना पड़ेगा, टिकटों का खर्च ख़ास तौर से रहेगा। प्रायः आधे दर्जन योग्य व्यक्ति यदि हमारा साथ देने को तैयार हो जायँ, तो प्रचार-पत्र तैयार करके विस्तृत योजना और सम्मतियों के साथ समस्त संवाद-पत्रों के सम्पादकों तथा मालिकों के पास भेज दिया जाय। यदि योजना का स्वागत हुआ, तो समझ लेना चाहिये कि हम लोगों ने बाज़ी मार ली, अन्यथा नहीं। प्रारंभ में यदि सामान्य परिमाण में कार्य चलाया जा सके तो मुझे कोई आपत्ति न होगी।

उर्दू संवादपत्रों की सूची मुंशी दयानारायण निगम से प्राप्त की जा सकती है। मेरा ऐसा ख़याल कि असग़र साहब को सब पत्रों के नाम याद नहीं होंगे। मुंशी दयानारायण तथा और दो एक सज्जनों की भी सम्मतियाँ इस योजना के संबंध में जान लेनी चाहिये। उर्दू का क्षेत्र काफ़ी बड़ा है, और अगर वे लोग सहयोग दें तो यह बधाई का विषय होगा, प्रारंभिक व्यय के लिये आप मेरा कमीशन काट सकते हैं, जो (हिन्दुस्तानी) एकेडेमी से मुझे प्राप्य है। प्रायः २०) मुझे पाने हैं। फ़िलहाल इस रक़म से काम किसी तरह चालू किया जा सकता है।

यदि आप समय निकाल सकें तो आपसे अच्छा संचालक दूसरा नहीं मिल सकता। अभी किसी योग्य व्यक्ति को पूरे समय के लिये नियुक्त नहीं किया जा सकता। आप पहले योजना के संबंध में कुछ लोगों से वार्तालाप कर लें। उसके बाद मुझे बुला लें। मैं आपके साथ आपके घर पर भोजन करते हुए योजना के संबंध में विस्तार से बातें करूँगा। इसके लिये मैं एक दिन का समय दे सकता हूँ।

शेष सब ठीक है।

आपका स्नेही—
धनपतराय

[६]

पत्र पत्रिकायें

१. विशाल भारत, कलकत्ता; २. जयाजी प्रताप, ग्वालियर; ३. विश्वमित्र, कलकत्ता; (दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक) ६. लोकमान्य, कलकत्ता; ७. विजय, कलकत्ता; ८. अभ्रवाल, कलकत्ता; ९. माधुरी, लखनऊ; १०. सुधा, लखनऊ; ११. यूनाइटेड जरनल्स, लखनऊ; १२. अवध समाचार, लखनऊ; १३. सेवा, इलाहाबाद; १४. सरस्वती, इलाहाबाद; १५. चाँद, इलाहाबाद; १६. भारत, इलाहाबाद; १७. बालक, लहरियासराय (बिहार); १८. खिलौना, इलाहाबाद १९. अभ्युदय, इलाहा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद; २०. वीणा, इन्दौर; २१. वाणी, खरगोंद (इंदौर) २२. वैद्य, मुरादाबाद; २३. सहेली, इलाहाबाद, २४. हिन्दी प्रचार ट्रिप्लीकेन, (मद्रास); २५. कल्पवृक्ष, उज्जैन; २६. आज, बनारस; २७. हंस, बनारस; २८. जागरण, बनारस; २९. आर्य महिला, बनारस; ३०. केसरी, बनारस; ३१ क्षत्रियमित्र, बनारस; ३२. गंगा, भागलपुर; ३३. कृष्ण संदेश, पटना; ३४. माया, इलाहाबाद; ३५. भारत, इलाहाबाद; ३६. हलधर, भागलपुर; ३७. आर्यमित्र, आगरा; ३८. युगान्तर, लाहौर; ३९. हिन्दी मिलाप, लाहौर; ४०. दलितोदय, कानपुर; ४१. हरिजनसेवक, देहली; ४२. वर्तमान, कानपुर; ४३. भारतमित्र, कलकत्ता; ४४. अर्जुन, देहली; ४५. चित्रपट, देहली; ४६. रंगभूमि, देहली; ४७. वैंकटेश्वर समाचार, बंबई; ४८. बंगवासी, कलकत्ता; ४९. राजस्थान, अजमेर; ५०. स्वाधीन भारत, बंबई।

[१०]

१० साउथ रोड, इलाहाबाद
६-६-३३

प्रिय प्रेमचंद जी

आपके पत्र के लिये बहुत धन्यवाद। मैं आपकी सावधानी से पूर्णतया सहमत हूँ। प्रान्तीय शाखाओं के खोलने के संबंध में मैंने जो प्रस्ताव किया था उससे मेरा उद्देश्य विभिन्न केन्द्रों के कार्यकर्ताओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त करना था। हम लोग अब उस स्थिति पर पहुँच गए हैं जब कि इस विषय पर बातचीत करके कुछ निश्चित निर्णयों पर पहुँच सकते हैं। यदि आप अगले सप्ताह के अंत में इलाहाबाद आ सकें तो रविवार ११ जून को हम लोग योजना को निश्चित रूप देकर कार्यवाही शुरू कर सकते हैं। कृपया अपने आने की सूचना मुझे पहले से दे दें, ताकि यहाँ दो-एक व्यक्तियों को भी समय पर सूचना मिल जावे।

आपका—
रामचंद्र टंडन

[११]

सरस्वती प्रेस, काशी

प्रिय भाई साहब,

आपका कार्ड, कई दिन हुए, मिला था, पर मेरी तबीयत इस बीच ठीक नहीं रहती है, और इस समय भी कुछ विशेष अच्छी नहीं है। मैं उम्मीद करता हूँ कि शनिवार या इतवार को मैं इलाहाबाद पहुँचूँगा। एक तो अजीर्ण रोग, तिसपर दाँत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दर्द, इन दो कारणों से आपके यहाँ आने का प्रलोभन बहुत कुछ नष्ट हो गया। मैं आपके यहाँ के सुस्वादु व्यंजनों का रस लेने से वंचित ही रह जाऊँगा। यदि इस बीच कोई विशेष कारण न आ खड़ा हुआ तो मुझे उम्मीद है कि इलाहाबाद आ पहुँचूँगा।

आपका—
धनपतराय

[कार्ड पर १५ जून १९३३ की डाक-मुहर है]

हमारे संग्रह के हिन्दी के अपूर्ण ग्रन्थ

[ले० अगरचंद नाहटा, बीकानेर]

हमारे संग्रह के कतिपय अप्रसिद्ध हिन्दी ग्रन्थों का परिचय मैंने सम्मेलन-पत्रिका के गत (भा० २४ सं० ६-७) अंक में दिया है। इस लेख में अपूर्ण ग्रन्थों का परिचय दिया जा रहा है। साहित्य प्रेमी सज्जनों से अनुरोध है कि इनकी पूर्ण प्रतियाँ उनके अवलोकन में आवें तो मुझे अवश्य सूचित करें।

१ वसंतलतिका आख्यान (आदि अंतत्रुटित)

मध्य—मालिन सुथरी सामुहैं बैठि विहसि भरि चाय।
फूल कली बनमाल तन स्याम देत पहिराइ।६५।

कवित्त—हरित हरित पात संपुट खुलत तट नागर को मनसुखसागर सों बढ़िगौ।
परसत फूल हरि फूले न समात गात पावत सुवास आनि विरह लौ कढ़िगौ।
खुरसत कलिकाल आन छविछई आनि पंचम प्रसून लेत हेत हिए मढ़िगौ।
प्यासी की बनाई बनमाल गरै लपटत गोप के किसोरे आली ओप चढ़िगौ।

(पत्र १७ से ४८, प्रथम स्तवक, द्वितीय कलिका पद्य ८३, तृतीय कलिका पद्य ६४, चतुर्थ कलिका पद्य ६१, पंचम कलिका पद्य ६४, द्वि० स्तवक प्रथम कलिका पद्य ४३ तक फिर प्रति त्रुटित (आगे के पृष्ठ गायब) हैं।

२ वचनविलास

आदि—जगत गुरु जगदीस, ताकौ बंदन केहौ।
तीन कर जानो सील, प्रभु कृपा मय होय तै।१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर आज्ञा पाय कर, कीनौ वचन विलास ।
श्रवन सुनत आनंद बढ़ै, मिट धैत जुभास ।

(त्रुटित प्रति सं० २४)

३ इश्क दरियाव—रस राशिकृत उर्दू मिश्रित

अंत—इश्क दरियाव तिरने को सनम् का विरह बेड़ा है ।
चलै फरियाद चंद सौ फरामोसी बखेड़ा है ।
उलीचै आब आँखों से करे अपनों नवेड़ा है ।
उसी रसरासि आसिक से, खड़ा महबूब नेड़ा है ।

(गुटका नं० ४० आदि त्रु०)

४ भावशतक—सारंगधर रचित (सं० १६७२ पूर्व रचित)

अंत—पिय तिय के हिय रे विषें ज्यों ज्यों कियो प्रवेश ।
आसन तजि बाहिरै भये, निरखि नैन बलवेस ।१२३।
होहि अजान सुजान सुनि, रीझैं राज समाज ।
सारंगधर सुनि भावशत मनहि खिलावन काज ।१२४।
जाको मनरथ ते विरस, सरस करय की आस ।
सारंगधर ता तोष कौ, विरचित विविध विलास ।१२५।
दुखगंजन हृदय रंजन, भंजन नित चित ताप ।
सारंगधर सुनि भावशत, विविध विचारतु आप ।१२६।

इति भावशत दूहा सं० १६७२ श्रावण कृष्ण १, पं० मोहन लिखितं पश्चात्

(अंत पत्र हमारे संग्रह में, इसकी एक पूर्ण प्रति भी अवलोकन में आई थी अब वह कहाँ है, अज्ञात है ।)

५ जेमल रचित विविध ग्रन्थ संग्रह, पद्य १८०० के लगभग ।

प्रथ—अनंत कोटि जम के दल सूरा, बचि न सकै कोइ कहीं दूरा ।
मैंगल काल महा मै मता बसि कुण विदारण लो अनंता ।६७।
ब्रह्मा विष्णु काल बसि होई, सुर नर इंद्र न छूटे कोई ।
जासमरथ के ऐसे बंदा, सो मैं गाउं परमानंदा ।६८।
घट धरि आवै जोणि मुखि सो वहि सिरजनहार ।
ज्यूं था त्यूं ही है तहां, जेमल अपरंपार ।

(त्रुटित प्रति (आदि अंत रहित) अनेक पत्र)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ योगवशिष्ठ भाषा—पद्य

अंतः—सहज सुनेम नु लावही, उपजे सहज विचार।
भाषा जोगवशिष्ठ की सून दिखावे सार।१।
जन्म मरण तें छूट ही, सब दुख कबहुँ न होइ।
सहजि तसु पिछानि लै, हरिपदु पावै सोई।

(प्रथम पत्र कम, गुटका नं० ११)

७ वैतालपचीसी

दोहा—श्री गणपति प्रथमै नमो, फुन श्रीकृष्ण मुरार।
विक्रम जोगी श्रमकथा, ते कवि कहो विचारि।१।

(अपूर्ण, गुटका नं० ११)

८ ब्रह्मजिज्ञास—

आदि—ऊँ ब्रह्म एक सुध चेतन माया अचेतन जड़ माया बह्म कौ संजोग्य जैसे ब्रिछ (वृक्ष) की छाया ब्रिछ मसर जीव, छाया सरजीव नाहि, ब्रिछ बिना छाया होय नांही, माया की ओट ब्रह्म नहीं सूझै, बह्म की ओट माया नहीं सूझै, बहुत माया को ऐसो संजोग।

(अपूर्ण, गुटका नं० ११)

९ भगवद्गीता भाषाटीका—महाराजा जसवंत सिंह जी रचित

आदिः—धरम को छेत्र एसो जो कुरुछेत्र ना दिषै समवेत एकत्र भए, एसे जे मैं अरु पांडु कै पुत्र कैसे हैं जुद्ध की इच्छा धरत हैं। हे संजय! ते कहा करत भए।

(अपूर्ण, गुटका नं० ५८)

उपरोक्त नं० ८-९ ग्रन्थों की पूर्ण प्रतियाँ बीकानेर स्टेट लायब्रेरी में उपलब्ध हैं।

१० मेघदूत भाषाटीका—

आदिः—कश्चित यक्षः—नाम कोइ यक्ष है सो रामगिरि जो पर्वत तिसका जो आश्रम तिनों के विषे, वसति नाम वासकुं, चक्रे नाम करते भयो।

११ सारंगधर (वैद्यक ग्रन्थ) भाषा—

मध्यः—आगुंतक ज्वर तिसके तेहरा भेदा हर' टोणा टोणे होवही, गुहातइ होवइ! ताप तइ डरा तीन प्रकार होयइ श्रम तइं खेद तइं।

(त्रुटितप्रति नं ३५)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथाकार निराला

[श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०]

प्रसाद की भाँति निराला भी आधुनिक साहित्य की महान शक्ति हैं। उनकी प्रतिभा विविधतामयी है। नाटक छोड़कर साहित्य के सभी अंगों को निराला जी ने अपनी प्रतिभा का दान दिया है। निराला का मूल संस्कार सांस्कृतिक है। वे साहित्य-सृजन के साथ उसकी विवेचना में भी अभिरुचि रखते हैं। आत्मबल की दृढ़ता और भारतीय दर्शन की सूक्ष्मता उनके साहित्य का स्वभाव है, किन्तु ज्ञानी दार्शनिक की अपेक्षा वे भावात्मक आकर्षण के अधिक निकट हैं। उनके साहित्य का यह जीवनोपयोगी आकर्षण उन्हें कोमलता और मधुरता की अपेक्षा शक्ति का उपासक बनाने में सहायक हुआ है, इसमें संदेह नहीं।

शक्ति-संगठन में भावना की अपेक्षा बुद्धि अधिक महत्त्व रखती है। स्वभावतः निराला का साहित्य बुद्धि की विशिष्टता से सुसज्जित है। इसका यह आशय नहीं कि उनके साहित्य में भावना का उत्कर्ष नहीं। दार्शनिकता के विस्मरण में निराला भावना के जिस मार्मिक स्पर्श का उद्घाटन करते हैं वह अन्यत्र दुर्लभ है। भावना की उच्चता के लिये उनका काव्य और बौद्धिक जिज्ञासा के लिये उनका गद्य पाठनीय है। करुणा निराला के साहित्य की चिरसंगिनी है, जो उनके व्यक्तित्व की तटस्थता से और भी अधिक करुण बन गई। जीवन-सौन्दर्य की कल्पना ने करुणा से घुलकर निराला के साहित्य में जितना निखार पाया है उतना अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। सम्भवतः इसी कारण उनके पूरे साहित्य में पाठकों को रंग कम और प्रकाश अधिक मिलता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि उनके साहित्य का यह प्रकाश ओज और सौहार्द से समन्वित है।

निराला के कथा-साहित्य की ओर अभी तक लोगों ने कम ध्यान दिया है, शायद इसका कारण उनके साहित्य-क्षेत्र की अपरिमितता है। यों भी इधर कुछ वर्षों से कवि और काव्य का ही हमारे साहित्य में महत्त्व रहा है और कथा-साहित्य एक उपेक्षणीय अवस्था का शिकार। संतोष का विषय है कि अब इस ओर भी लोगों का ध्यान गया है। कल्पना से जीवन की ओर, भावना से विचारों की ओर बढ़ना स्वाभाविक भी है। 'अप्सरा', 'अलका', 'प्रभावती', 'निरुपमा', 'कुल्लीभाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा' आदि निराला की औपन्यासिक रचनाएँ हैं। 'चमेली' उपन्यास का एक परिच्छेद 'रूपाभ' में निकला था। इसके अलावा उनकी कहानियों के भी कई संग्रह निकल चुके हैं। 'चतुरी चमार' की बीवी' तथा 'गजानन्द शास्त्रिणी' उनके सफल व्यंगमय जीवन-चित्र हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निराला जी के सभी उपन्यासों में नारी-चित्रण एक विशेषता है। वर्तमान युग के नारी-जागरण को निराला ने अपनी औपन्यासिक ममता दी है। इस जागरण (क्रान्ति) की आवेग-अन्धता को छोड़कर निराला ने उसके स्थायी तत्त्व की अच्छी छान-बीन की है। प्रेम के आधार-स्वरूप आत्म-समर्पण ही नारी-जीवन की सार्थकता रही है। नारी-प्रकृति-परिचालित इसी प्रेम के निराला चित्रकार हैं। शिक्षा, संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ प्रेम को सुदृढ़ स्वरूप देने का निराला ने प्रयत्न किया है। यही कारण है कि प्रेम की आधुनिक दुर्बल विकलता और विह्वलता की अपेक्षा उनकी कृतियों में हमें प्रेम की सौम्यता (आध्यात्मिकता) का आग्रह अधिक मिलता है, और अन्य विषय केवल अप्रासंगिक बनकर अपनी उपस्थिति देते से जान पड़ते हैं। उनका उद्देश्य जीवन-व्यापी स्नेह-भावना का संगठन है, न कि उसकी विकृतियों का उल्लेख; वे जीवन की मूल चेतना का उत्कर्ष चाहते हैं, उसके अपकर्ष की व्याख्या से उनका संबंध नहीं। निराला की सबसे बड़ी विशेषता उनकी शृंगारिक शिष्टता है, क्योंकि शृंगार के जिस स्वरूप में हमें उनके मानसिक दौर्बल्य के दर्शन नहीं होते—वासना की मुक्ति-मुक्त त्याग में तागी दिखाई पड़ती है। निराला की सभी नायिकाएँ उनके भाव-जगत की प्रतिमाएँ हैं, इसीलिये वे रोमान्टिक भी हैं। अपने भाव के इसी विस्तार के लिये निराला ने कुछ विशेष घटनाओं की भी योजना की है, जो प्रतिदिन की घटनाओं से कुछ भिन्न और विचित्र सी भी लगती है, किन्तु जीवन के रहस्यमय विकास की उनमें कमी नहीं। प्रसिद्ध रोमान्टिक लेखक स्टीवेन्सन का जो महत्त्व है, निराला का उससे कम नहीं, क्योंकि भावना की उसी मृदुता का मोह उन्हें भी है। निराला के उपन्यासों को पढ़ते समय हमें स्मरण रखना होगा कि वे कवि पहले हैं, उपन्यासकार बाद में। कवि की सामाजिक तथा राजनीतिक भावनाएँ कविता में अपनी प्राण-प्रतिष्ठा कर सकीं वे एक समस्या के रूप में उपन्यासों में उतर आई हैं।

समाज-सुधार के प्रश्न को लेकर वेश्या की मार्मिक करुण स्थिति और उसके उत्थान का चित्र निराला ने 'अप्सरा' में खींचा है। राजनीति के क्षेत्र में वे गांधी को आदर्श अनुपयुक्त समझते हैं। उससे उन्हें किसानों के हितसाधन की संभावना नहीं दिखाई देती, जनता के उत्कर्ष का विश्वास नहीं होता, क्योंकि नेताओं में उन्हें आडंबर, आधिक्य और सत्य की क्षीणता दिखाई पड़ती है। उनके सामने एक दूसरे प्रकार के किसान कार्यकर्त्ताओं का आदर्श है जिसके दर्शन हमें 'अलका' में मिलते हैं। गांधी की महानता और उनके देश-प्रेम से किसी का कोई विरोध में नहीं हो सकता, किन्तु मानवता के कल्याण के लिये अन्य मार्गों का संकेत कोई अपराध भी नहीं है, क्योंकि उद्देश्य की ही का अच्छा करना है, न कि वैय विशेष की उपेक्षा करना। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेतना बढ़ाने वाली संस्था कहने वाले को हम शिक्षा का विरोधी नहीं कह सकते। इसी प्रकार देश-हित की, गांधीवादी भावना के अतिरिक्त अन्य भावना को हेय नहीं कहा जा सकता, क्योंकि किसी भावना के भीतर प्रवाहित प्राण-चेतना ही परीक्षणीय होती है, वाद विशेष नहीं।

हिंदी साहित्य में प्रसाद और निराला अतीतकालीन भारतीय संस्कृति के बहुत बड़े हिमायती हैं। वास्तव में कलाकार को अतीत के ज्ञान और भविष्य के उत्थान-अनुमान के साथ वर्तमान का संचालन करना पड़ता है। निराला ने अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'प्रभावती' में भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान का दिशा-निर्देश करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि आज का युगधर्मी साहित्यकार एक आवेग की आकुलता में अतीत के प्रति उदासीन-सा हो रहा है, तथापि यह स्मरण रखना होगा कि कोई भी मानवीय भव-विधान अपने अतीत की उपेक्षा नहीं कर सकता। अतीत की त्रुटियों और विवशताओं की पृष्ठिका पर ही तो वर्तमान का संशोधित निर्माण होता है। धनुष पर चढ़ा बाण जितना ही अधिक पीछे खींचा जावेगा उतना ही अधिक गतिशील होकर वह लक्ष्य की ओर अग्रसर होगा। युग-साहित्य भी अतीत की सीमा-रेखा से ही अपनी गति का संचालन करेगा। साहित्य में जीवन-प्रद तत्त्व कभी पुराने नहीं पड़ते। भारत का एक सांस्कृतिक, उज्ज्वल अतीत है, जो वर्तमान की गतिविधि में सहायक हो सकता है। निराला ने इस तत्त्व का प्रभावपूर्ण उद्घाटन किया है। भारतीय संस्कृति के प्राणों का एकत्व, समत्व और प्राणी-मात्र के प्रति ममत्व का भाव उनकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। निराला जी के उपन्यासों में उनके कवि का ही प्राधान्य है, क्योंकि उनमें वे प्रेम की गाथाओं का ही अनुसंधान करते हैं। कमल-पत्र में जल की भाँति उनका निर्लिप्त-सौन्दर्यान्वेषण उनके उपन्यासों में भी परिव्याप्त है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में सौन्दर्य के अनेकों चित्र, कल्पना के अनेकों रंगमय रूपक और दृश्यों के अनेकों भावनात्मक स्वरूप देखने को मिलते हैं। अनेक सामाजिक राजनीतिक तथा साहित्यिक आघातों के पश्चात् भी निराला ने अपने व्यक्तित्व की कोमलता को नहीं छोड़ा, यह उनके हृदय की विशालता का प्रमाण है। स्नेह की स्निग्धता और कोमलता के बीच में निराला ने आधुनिक जीवन की विपन्नता और कृत्रिमता के लिये जिन व्यंगों का व्यवहार किया है, उनका इतना स्वस्थ और निरपेक्ष प्रयोग अन्य किसी साहित्यकार से नहीं बन पड़ा। उनके व्यंग अपने प्रभाव और मार्मिकता में अद्वितीय होते हैं। व्यंगों के द्वारा जीवन और जगत की वास्तविक और स्वाभाविक स्थिति का स्पष्टीकरण निराला की महत्त्वपूर्ण देन है। निराला ने इन व्यंगों में अपनी विद्रोह-शक्ति का समन्वय करके उनकी सार्थकता को और अधिक बढ़ा दिया है, विशेषता यह है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनकी चोटें राग-द्वेष से अछूती, शुद्ध सुझाव से हैं।

निराला जी के उपन्यासों की दो कोटियाँ हैं। एक की दिशा जीवन की सरलता के माध्यम से उसकी काव्योचित (रोमान्टिक) स्थापना और दूसरे की चेतना भारतीय जीवन की समष्टिगत यथार्थ व्याख्या है। स्वभावतः पहले के दो उपन्यासों में शहर के प्रेमद्वन्द्व का आधिक्य और बाद की कृतियों में ग्रामीण जीवन की समस्याओं का उद्घाटन है। 'अप्सरा' से 'अलका' में और 'प्रभावती' से 'निरुपमा' में पहुँचते-पहुँचते निराला जी की कवित्वमय रोमान्टिक वृत्ति बहुत क्षीण पड़ती गई है, और वे भावुक कल्पना-जगत् को छोड़कर जीवन के सहज व्यावहारिक धरातल पर आरूढ़ हो गए हैं। प्रेमचन्द की भाँति निराला के उपन्यासों का भी ग्राम-पक्ष प्रबल है। जमींदारों की निर्ममता, बेगार, लगान, कुर्की और ग्राम-संगठन की योजना आदि सभी के चित्र निराला ने दिए हैं। 'अलका' में किसानों की अस्थिर-स्थिति का सजीव चित्रण और उनके प्रति लेखक की हार्दिक सहानुभूति प्रेमचन्द के 'गोदान' से टक्कर लेती है। 'गोदान' के होरी और 'अलका' के बुधुआ में बहुत कुछ साम्य है, दोनों ही भारत माई के लाल हैं। निराला के उपन्यासों के कथानक और चरित्र-चित्रण के विषय में भी दो शब्द कहना अनुचित न होगा। उनके प्रायः सभी कथानक प्रेम की शाश्वत-गति से संचालित हैं, थोड़े हेर-फेर के साथ सभी उपन्यासों में इसका आधार मिलता है। कथानक के अनुकूल उनके चरित्र भी एक ही स्वभाव और टाइप के बन गए हैं। सभी फक्कड़ तबीअत, पहलवान, सर्वभक्षी और निर्भीक हैं। स्त्रियाँ सभी रूप-शील तथा स्नेह-सम्पन्न और संगीतज्ञ हैं। निराला का कोई पात्र बिना संगीत-कला की निपुणता के अपना विकास नहीं कर सकता। निराला की संगीत-प्रियता इनके जीवन की सब से बड़ी विशेषता है। कथोपकथन की नाटकीय प्रवृत्ति औपन्यासिक प्रवाह में कभी कभी बाधा उपस्थित करती है। अप्सरा से लेकर निरुपमा तक उनके उपन्यासों का यही क्रम-विकास है।

अपने नवीनतम उपन्यासों (जीवन-चित्रों) में निराला ने यथार्थ जीवन की सहज-स्वाभाविक व्याख्या की है। 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' इस प्रयोग के प्रौढ़ और प्रोज्ज्वल उदाहरण हैं। कल्पनामय भावुकता और यथार्थ की वास्तविकता का साथ ही चित्रण करना निराला के व्यक्तित्व की महानता है। उनका जीवन स्वयं संघर्ष की तपन से प्रस्फुटित और विकसित है, शायद इसी कारण वे 'जुही की कली' और 'वह तोड़ती पत्थर' दो विरोधी और भिन्नवर्णी जीवन-स्थितियों का सफल स्वरूप सामने रखने में समर्थ हैं। उनके पिछले उपन्यास यदि 'जुही की कली' की भावना का उन्मेष करते हैं तो उनके नवीन चित्र 'वह तोड़ती पत्थर' की वास्तविकता के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक निकट हैं। इसे यों भी कहा जा सकता है—"बनी विकलता कविता कवि की, कविता बनी कहानी।'

साहित्य में युग-परिवर्तन और जागरण की सूचना देने वालों में निराला का स्थान बहुत ऊँचा है। भारतीय साहित्य में ही नहीं, सारे विश्व-साहित्य में आज परिश्रम ही आराध्य और परिश्रमी आराधक हैं। स्वभावतः साधक और सिद्ध भी वही हैं। आज का साहित्य केवल कुछ जनों का न होकर जनता का हो गया है, यह बहुत ही शुभ लक्षण है। निराला ने 'कुकुरमुत्ता', 'खजोरहा' आदि कविताओं में इस तथ्य का स्वागत किया है। गद्य रचनाओं में 'बिल्लेसुर बकरिहा' निराला के सामाजिक यथार्थ का उज्ज्वल उदाहरण है। इस उपन्यास में लेखक के व्यक्तित्व की सम्पूर्णता बड़े ही सहज भाव से सामने आई है। इसका कारण निराला की वह स्वाभाविक निरपेक्षता है जो उन्हें किसी विषय के अध्ययन की कलात्मक प्रवृत्ति तथा प्रेरणा देती है। 'बिल्लेसुर बकरिहा' निराला को स्वाभाविक सहानुभूति के साथ सजीव रूप से घुल-मिल गया है। इसके पढ़ने के पश्चात् लेखक की वैज्ञानिकों जैसी बुद्धि-व्याख्या, दार्शनिकों जैसी दूर-दर्शिता और साथ ही कलाकारों जैसी संयम की उस शक्ति का भी पता चलता है जो उनके अपने विचारों की अभिव्यक्ति में सहायक सिद्ध होती है। निराला मानव-समाज के प्रेमी हैं, उन्हें मानव-सत्य को चीन्हने की अन्तर्दृष्टि भी प्राप्त है। विशेषता यह है कि निराला में सम्वेदनात्मक कल्पना की वह शक्ति भी है जो जीवन के कृत्रिम रूपों को ही नहीं, उसके असीम तथा अज्ञात रहस्यों को भी वास्तविक रूप में देखने की क्षमता रखती है। 'बिल्लेसुर' के चित्रण में निराला की इन सभी शक्तियों का सुंदर समन्वय है। इसमें सन्देह नहीं कि निराला का साहित्य सदैव प्रगतिशील और प्रभावपूर्ण रहा है, किन्तु इधर की उनकी रचनाएँ एक सामूहिक चेतना के आधार पर ही खड़ी हैं। हवा, पानी और धूप लेकर ही तो अंकुर का विकास होता है, अन्यथा अंकुर की सृष्टि तो सहज नहीं होती। निराला के भीतर बीज-रूप से निहित मानव-ममता और साहित्यिक सात्विकता अब यदि अपना सहज-स्वरूप पा रही है तो इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है।

साहित्य के प्रत्येक स्वस्थ चित्र में विषय, पद्धति और कलाकार का व्यक्तित्व रहना आवश्यक है। विषय और पद्धति के चुनाव का अधिकार एकान्त रूप से कलाकार को है, किन्तु उससे उसके व्यक्तित्व का लगाव एक व्यापक रूप रखता है; क्योंकि कला में कलाकार का व्यक्तित्व कौतूहल, विश्वास और धैर्य के सम्बल से संयमित होकर कला को सार्वभौमिक स्वरूप देने में सफल होता है। उसके व्यक्तित्व का यही चरमतम विकास है। इसके विपरीत जब कलाकार आत्मलीन तामसिक वृत्तियों के प्रवाह में पड़कर कला के माध्यम से आत्म-विज्ञापन करने लगता है तभी वह पराजित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता है। व्यक्तिगत अभावजन्य ग्लानि और अतृप्ति का प्रदर्शन कला नहीं, एक बला है।

'बिल्लेसुर बकरिहा' गाँव का एक मार्मिक चित्र है। इसमें रोमान्टिक धरातल को एकदम छोड़कर निराला जी ने कठोर सामाजिक यथार्थ का अनुसरण किया है। सामाजिक विद्रोह और सामूहिक असंतोष का चित्रण ग्रामीण दरिद्रता के माध्यम से इतना अच्छा बन पड़ा है कि अभी तक हिन्दी में वैसा अन्यत्र नहीं है। इस गलित ग्रामीण चित्र में निराला जी ने सुधार का कोई सुझाव नहीं पेश किया, केवल वहाँ के शोषित, दलित तथा पीड़ित समाज का कंकाल सामने रख दिया है, जिसके दर्शन मात्र से उसके प्रतिकार की भावना मन में जागृत हो उठती है। प्रेमचन्द की भाँति निराला ने सुख-शमन का समझौता नहीं कराया, उन्होंने केवल चित्रण के माध्यम से स्थिति में क्रान्ति का बीज बोया है। इस दृष्टिकोण से 'बिल्लेसुर बकरिहा' एक प्रौढ़ प्रगतिशील रचना है। भाषा, भाव और उद्देश्य तीनों के दृष्टिकोण से निराला जी का यह 'स्केच' अत्यन्त सहज-सरल और अनुपम है। बिल्लेसुर का सामाजिक संघर्ष से ऊपर उठकर अपने विवाह की सफलता का संतोष प्राप्त करना युग-चेतना का प्रतीक है। आधुनिक भारतीय गाँव का प्रतिनिधित्व बिल्लेसुर के द्वारा बहुत ही यथार्थ रूप में हुआ है। काश कि बिल्लेसुर के धनी होने का राज भी खुल पाता। तब तो इस सामाजिक विद्रोह की तपस्या में चार चाँद लग जाते। निराला जी ने एक जगह लिखा है—"चिन्ता कुछ मुझे नहीं यद्यपि मैं ही वसंत का अग्रदूत"—वास्तव में छायावादी वासंती और समाजवादी शारदी, दोनों के निराला जी प्रौढ़ कलाकार हैं। उनकी प्रतिभा का जोड़ हिन्दी में दूसरा नहीं है।

'साकेत' की उर्मिला

[श्री भागीरथचंद बी० ए०, डी० टी०]

काव्य-जगत् की उपेक्षिता उर्मिला को लेकर ही गुप्त जी ने 'साकेत' की रचना की। साकेत की इस वियोगिनी के प्रति कवि-संसार उदासीन ही था; किसी ने भी अब तक अयोध्या के राजमंदिरों की चाहारदीवारी के भीतर कर्तव्य की बेड़ियों में जकड़ी हुई, वियोग की ज्वाला में रात दिन झुलसती हुई इस नारी-मूर्ति को जानने की चेष्टा न की थी। परन्तु गुप्त जी का भावुक हृदय कैसे चुप रह सकता था! वे क्षुब्ध हो उठे कवियों की उपेक्षा देखकर और उर्मिला की मलिन धूमिल मूर्ति का स्मरण कर। उसके इसी रूप को वे 'साकेत' में जनता के सम्मुख रखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब देखना है कि विश्व के लिये सर्वस्व त्याग करनेवाली, संसार की भलाई के लिये अपने जीवन की 'खिलखिल बेला' को धूमिल संध्या में परिवर्तित करनेवाली नारी को गौरव प्रदान करने में गुप्त जी कहाँ तक सफल हुए हैं।

सर्वप्रथम उर्मिला के दर्शन हमें उसके जीवन की 'खंडमयी खेला' में अभिषेक की बूँदों से घिरी हुई साकेत नगरी के प्रकोष्ठ में होते हैं, जहाँ वह प्रियतम के साथ हास-विलास करती हुई आनंद की सृष्टि कर रही है। अपने सरल विनोद, अपूर्व रूप-लावण्य तथा अनुपम चित्रकला के द्वारा आकर्षित करती हुई इस विनोदिनी बाला को हम पहचान भी न पाए थे कि वनवास के समाचार से नगर में दुःख के बादल छा गए। जेठ तथा जीजी के साथ स्वामी को बन जाते देखकर उर्मिला के हृदय को ठेस लगती है, उसके सुखों पर तुषारपात हो जाता है—उसके स्वामी वन जाना चाहते हैं, वह नहीं जानती वह क्या करे? उसके हृदय में (कर्तव्य और प्रेम का) घोर संघर्ष हो रहा है, अंत में कर्तव्य प्रेम पर विजय पाता है और वह मन-ही-मन कह उठती है—"हे मन, तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।" कहे भी क्यों नहीं, आखिर है तो उसी सूर्य-कुल की वधू जहाँ राम जैसे पुत्र तथा दशरथ जैसे धर्मवीर पिता उपस्थित हैं।

यहाँ से उर्मिला हमारे और भी निकट आने लगती है, परंतु हास्यवदनी बाला के रूप में नहीं। अब तो उन अधरों पर हँसी की क्षीण रेखा भी नहीं, नेत्रों की उस उज्ज्वल दीप्ति का पता नहीं, वरन् सर्वत्र ही दुःख की मलिन छाया है। उसकी इस करुण छवि को देखकर हमें व्यथा होती है, उसका कपूर की भाँति घुलना देखकर, उसका अर्धमूर्च्छित प्रलाप सुनकर हम व्याकुल हो उठते हैं। हम उसकी इस निराशा का, उसकी खोई-खोई सी मूर्ति की कमी का, उसके गरम-गरम श्वासों का स्पष्ट अनुभव करते हैं। वास्तव में गुप्त जी उर्मिला की विरह-व्यथा के चित्रण में अत्यंत सफल हुए हैं, उन्होंने उसकी व्यथा को समझा है। आज उर्मिला का हृदय अत्यंत व्याकुल है, उसे सर्वत्र ही अपने दुखों की छाप दीख रही है। प्रकृति तो उसके पूर्व सुखों का स्मृति-कुंज बनकर उसके हृदय को कचोट रही है[1]। वह प्रयत्न करती है धैर्य धरने का, अपनी आँखों से बरसती हुई सावन-भादों की धारा को रोकने का। अपने लिये नहीं तो दूसरों के लिये—सासुओं तथा देवरों का मन रखने के लिये—वह अपना दुख भूलना चाहती है, पर कहाँ भूल सकी है वह उसे[2]?

---

[1] त्रिविध पवन ही था, आ रहा जो उन्हीं-सा,
यह घन-रव ही था, छा रहा जो उन्हीं सा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही गुप्त जी की सबसे बड़ी कमी है कि वे उर्मिला के चरित्र का गौरवमय विकास न कर सके, वे उसे प्रिय-वियोग में सुध-बुध खोने वाली सीमित नारी की भावना से ऊपर न उठा पाए, उसकी वियोग-व्यथा का वर्णन करते समय वे भूल गए कि जीवन की सफलता केवल दुःख सहन करने की शक्ति तक ही सीमित नहीं, वरन् उससे कहीं आगे है—जहाँ मानव अपनी व्यथा को, अपने कष्टों को छिपाकर, संसार की व्यथा को हलका करने लगता है। यही है मानव-चरित्र की महानता। उर्मिला के जिस महिमामय स्वरूप की हमें कहीं-कहीं झलक मिलती है उसका विकास गुप्त जी न कर पाए; वे उर्मिला के जीवन का वह गौरवशाली रूप न दिखा सके जो 'प्रिय-प्रवास' की राधा की एक स्वाभाविक विशेषता है।

राधा तथा उर्मिला के चरित्र में भिन्नता है, किंतु दोनों की बहुत-सी बातें एक-सी हैं। दोनों ही कर्तव्य की वेदी पर अपने प्रेम का बलिदान करती हैं, प्रियतम से बिछुड़कर घर रहकर ही अपने जीवन की विषम घड़ियाँ काट रही हैं। पर उस काटने में भी भिन्नता है। उर्मिला इस दुःख में औरों को भूल जाती है, औरों का खयाल भी उसे क्रियाशील नहीं बनाता। वह अनुभव करती है कि उसके दुखों के कारण दूसरों को दुख होता है—सासों की व्यथा बढ़ती है, बहनों की उसासें छूटती हैं, देवरों के मुख श्रीहीन हो जाते हैं—किन्तु इस अनुभूति को कार्यरूप में परिणत करती हुई उर्मिला नज़र नहीं आती। वियोग में उर्मिला उस शक्ति को खो बैठती है जिसके बल पर वह कहना चाहती थी—"हे नाथ साथ दो भ्राता का, बल रहे मुझे उस धाता का", और उपवन में वह पुरबाला शाला का विचार करके ही चुप रह जाती है। परंतु राधा केवल—"प्यारे जीवें जगहित करें, गेह चाहे न आवें" कहकर ही नहीं रह जाती, वरन् वह

प्रिय सदृश हँसा जो, नीप ही था, कहाँ वे ?
प्रकृति-सुफल फैले, भा रहा जो उन्हीं-सा।

२ रोती हैं और दूनी निरख कर मुझे
दीन सी तीन सासें।
होते हैं देखकर श्रीनत, हत बहनें
छोड़ती हैं उसासें।
आली, तू ही बता दे, इस विजन बिना
मैं कहाँ आज जाऊँ ?
दीना, हीना, अधीना ठहर कर कहाँ
शांति दूँ और पाऊँ ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी उस जगत्-कल्याण की भावना को सार्थक भी करती है। वह अपना जीवन दूसरों के दुःख दूर करने में बिता देती है। व्रज के घर-घर जाकर वह वियोग-पीड़ित लोगों को सांत्वना देती है, माता यशोदा को धैर्य बँधाती है और पी जाती है अपने आँसुओं को आँखों में ही— उन्हें बाहर निकलने का मार्ग ही नहीं देती। यही नहीं, वह व्रज के लोगों को कृष्ण के उस महत् कार्य का स्मरण कराती है जिसके कारण वे उन्हें छोड़ गए। राधा साधारण नारी से ऊपर उठकर देवी बन जाती है—अपने गौरवमय चरित्र के बल पर।

परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि उर्मिला के चरित्र को गौरव प्रदान करने में गुप्त जी सर्वथा ही असमर्थ रहे हैं। 'साकेत' में अनेक ऐसे स्थल विद्यमान हैं जहाँ हमें उर्मिला के वास्तविक हृदय की छाप मिलती है, जहाँ वह अपने सुखों की आहुति देकर विश्व को सुखी बनाना चाहती है, जहाँ वह कामना करती है—स्वामी के कर्तव्य पथ की बाधा न बनकर वह सहायक बने, और समय की कठोर देन को चुपचाप सहन करना चाहती है। तभी तो वह कहती है—"सुख भोगे हैं मैंने दुख भला क्यों न भोगूँगी ?" आज उसे किसी से कोई रार नहीं, भाग्य से असंतोष नहीं। वह केवल अपने दुःखों को सहन करती हुई जीवित रहना चाहती है। वह चाहती है कि समस्त संसार सुखी हो, सारी पृथ्वी हरी-भरी होकर सरसे और सब के लिये केवल एक वही सरसे; कभी उसकी बारी भी सरसने की आवेगी ही।

प्रियतम से उर्मिला प्रेम करती है प्राणों से बढ़कर; उनसे मिलने के लिये, उनकी केवल एक झाँकी भर देखने को वह व्याकुल है, परंतु उसे सहन नहीं कि वे कर्तव्य-च्युत होकर उसे मिलें। जब वह विक्षिप्त होकर लक्ष्मण को लौटा हुआ (स्वप्न में) देखती है तो कर्तव्य से विमुख होते देख वह उनसे कहती है—"जाओ।" वह चाहती है कि उसके स्वामी व्रती रहें और स्वयं वह सती रहे, इसलिये वह अपने को समझाती है—"प्रिय-पथ में विघ्न न डालूँ, रहूँ निकट भी दूर।" दर्शनाभिलाषा के प्रबल होने पर वह वन के झुरमुटों में पहुँचकर स्वयं न दिखाई देकर उन्हें देख पाने की कामना करती है।

इन भावनाओं की उर्मिला के प्रति हृदय में सहानुभूति उत्पन्न होने लगती। किंतु उसे जब पाठक लगातार चौदह वर्ष तक रोने में ही दिन रात बिताते देखता है, तब उसकी सहानुभूति खिन्नता से मलिन पड़ने लगती है और वह सोचता है कि उर्मिला के जिस चरित्र को गुप्त जी सम्मुख लाना चाहते थे वह उसके आँसुओं की बाढ़ में बह गया; वह नारी जो अपने सिंदूर-बिन्दु के बल पर कामदेव को भस्म करने की शक्ति रखती है, वसंत के आगमन से जिसका तरुण हृदय पल भर भी विचलित न हुआ, जो अपनी समस्त कामना को, अपने यौवन की उमंगों को चपल शिशु का स्वरूप

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर अपने प्रियतम के लिये सहेजना चाहती है और उसे केवल थाती भर समझती है, भला वह कभी प्रिय के मिलने पर अपने जीवन की 'खिलवेला' के लिये पश्चात्ताप करेगी ? कदापि नहीं ! जीवन भर तो वह उसे शिशु के रूप में देखती रही और अब उसके लिये शोक ? यह असंभव है । उर्मिला का यह गौरवमय नारी-रूप नवम सर्ग की अंतिम पंक्तियों में पूर्णरूप से व्यक्त हुआ है, जहाँ उर्मिला संसार के हित के लिये, विधि के विधानों की रक्षा के लिये, सहर्ष अपने प्रियतम के उत्सर्ग को और उस उत्सर्ग की पीड़ा को वरदान समझकर अपनाती है और आँचल फैलाकर प्रार्थना करती है—

मुझे भूल कर ही त्रिभुवन में बिचरें मेरे नाथ ।
मुझे न भूलें उनका ध्यान ॥

वह दुख सहन करती हुई भी जीवित रहकर प्रिय की प्रतीक्षा करना चाहती है, इसीलिये वहाँ उसका गौरव सीता तथा लक्ष्मी से भी ऊँचा हो गया है । सती आग में जल गई, लक्ष्मी पानी में डूब गईं । उनमें दुःख सहन न कर सकने की कायरता थी, पर उर्मिला में अदम्य दुःख सहन करने की शक्ति सती और लक्ष्मी की कायरता से प्रेरणा पाकर बलवती हो जाती है ।

यदि नवम सर्ग के पूर्वार्द्ध में विरह-गीतों की प्रचुरता के स्थान पर गुप्त जी इस विश्वकल्याण की भावना से ओत-प्रोत हृदय को भूमि बनाकर 'साकेत' रचना करते तो आज उर्मिला का रूप उसमें कुछ और ही रहता । उस कृशकाय वियोग-विधुरा की मुरझाये मुख की हँसी देखकर हमारी अंतर्व्यथा श्रद्धा के रूप में जागरित होती और हम उसकी सीता द्वारा अंकित की गई मूर्ति—

आँसू नयनों में, हँसी बदन पर बाँकी ।
काँटे समेटती, फूल छींटती झाँकी ॥

की सत्यता में हृदय से विश्वास कर गुप्त जी की भूरि भूरि प्रशंसा करते । किंतु ऐसा हुआ कहाँ है ! 'साकेत' ने मानस को उज्ज्वल करना चाहा था, पर वह उसकी आग में स्वयं धुँधला पड़ गया । लक्ष्मण के लिये पंचवटी की रचना आवश्यक हो गई और धूलि-धूसरित मलिन-वसना रघुकुल की कुलवधू उर्मिला अपने लिये रोती ही रह गई । बाहर से आई हुई प्रेरणा में उत्तर देकर शांत हो गई । उर्मिला की मौन व्यथा महाकाव्य में नहीं, उक्तिवैचित्र्य में खो गई है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाँच उपसमिति का विवरण*

कार्यसमिति ने अपनी १६-८-४३ की बैठक मेंनीचे लिखे मन्तव्य के द्वारा इस उपसमिति की नियुक्ति की थी—"निश्चय हुआ कि निम्नांकित सज्जनों की एक उपसमिति इस बात का निर्णय करने के लिये बनाई जाय कि श्री दीक्षित जी ने जो आक्षेप कार्यालय तथा सहायक मंत्री पर लगाए हैं उनमें कहाँ तक तथ्य है। श्री दीक्षित जी को अवसर दिया जाय कि वे अपने आक्षेपों को प्रमाणित करें। यदि वे चाहें तो उपसमिति के सदस्यगण उनकी बताई हुई फाइलों का निरीक्षण कार्यालय में कर सकते हैं। उपसमिति अपनी जाँच का विवरण एक मास के भीतर कार्यसमिति के सामने उपस्थित करे।" जाँच-समिति के सदस्यगण—

१. श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

२. श्री रामनाथ सुमन

३. डा० बाबूराम सक्सेना (संयोजक)

उपसमिति की कुल सात बैठकें हुईं, पहली २१-८-४३ को और अन्तिम १४-१०-४३ को। पहली बैठक में दीक्षित जी के 'प्रताप' में प्रकाशित लेख को पढ़कर उससे निकले हुए १० प्रश्नों का और लेख में दीक्षित जी द्वारा स्वयं वर्गीकृत ७ प्रश्नों की जाँच करने का निश्चय किया। इसके बाद दीक्षित जी से प्रत्येक प्रश्न का मौखिक स्पष्टीकरण लिया और उसे लेखबद्ध किया। दीक्षित जी से कहा गया कि अगली बैठक (२७-८-४३) के पूर्व वह उन फाइलों की सूची दे दें जिन्हें वह देखना चाहते हैं और उन सज्जनों के नाम बता दें जिनको प्रमाणों के साक्षी-स्वरूप उपस्थित करना चाहते हैं। फलस्वरूप दीक्षित जी ने ३१ फाइलों और ७ गवाहों की सूची दी। उपसमिति ने दूसरी बैठक में निश्चय किया कि ३१ फाइलों में से १७ दीक्षित जी को दिखला दी जायँ, ८ नितान्त गोपनीय फाइलों के बारे में निश्चय हुआ कि ये तभी दीक्षित जी को दिखाई जायँ जब वह इनके विषय में कोई व्योरेवार अभियोग उपसमिति के सामने उपस्थित करें। शेष ६ फाइलें कार्यालय में नहीं थीं। गवाहों के बारे में निश्चय हुआ कि उनको उपस्थित करने का भार स्वयं दीक्षित जी पर है। यह भी निश्चय हुआ कि फाइलें देखकर तत्संबंधी अपने निश्चित अभियोग ३ सितम्बर तक दे दें और ५ सितम्बर को गवाहों समेत उपसमिति के समक्ष उपस्थित हों। ३ सितम्बर को दीक्षित जी ने निवेदन किया कि वह अभी फाइलें नहीं देख पाए हैं और उन्हें सभी

---

* ५ दिसम्बर '४३ की स्थायी-समिति द्वारा स्वीकृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाइलें देखने की अनुमति श्री प्रधान मंत्री जी से मिल गई है; इसलिये उपसमिति की अगली बैठक १५-६-४३ के बाद रक्खी जाय। इस पर उपसमिति के संयोजक ने १ सितम्बर की बैठक खारिज करके सम्मेलन के उच्चाधिकारियों से उपसमिति के कार्य-काल की अवधि बढ़वा ली। तदुपरान्त दीक्षित जी को यथेष्ट समय देकर उपसमिति की अगली बैठक ११-१०-४३ को रक्खी गई। उपसमिति की चौथी बैठक १७-१०-४३ को हुई। उसमें दीक्षित जी ने अपना अन्तिम लिखित वक्तव्य दिया और कहा कि इस विषय में उन्हें अब कुछ और कहना नहीं है।

दीक्षित जी ने अपने वक्तव्य में कुछ विशेष शिकायतों के बारे में कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के नाम लिए थे। उनमें से सर्वश्री अमरनाथ झा, रामप्रसाद त्रिपाठी, उमेश मिश्र और दयाशंकर दुबे से जानकारी प्राप्त की और सम्मेलन के सहायक मंत्री जी और साहित्य-लेखक गौरीशंकर जी का वक्तव्य लिया। यह सब सामग्री लेखबद्ध है। उपसमिति ने जहाँ तक आवश्यक समझा, कार्यालय के कागज-पत्र भी देखे। अपने अन्वेषण के फलस्वरूप उपसमिति अपने निर्णय पर पहुँची है और यह रिपोर्ट सर्व-सम्मत है।

दीक्षित जी के आक्षेप नीचे लिखी श्रेणियों में विभाजित किये जा सकते हैं—

(क) दलबन्दी और गुटबन्दी।

(ख) पुरस्कारों में गड़बड़ी।

(ग) साहित्य-मंत्री आदि अधिकारियों के कार्य में न केवल असावधानी, बल्कि पक्षपात और बेईमानी।

(घ) सहायक मंत्री तथा कार्यालय पर न केवल कार्य की लापरवाही और अयोग्यता का लांछन, अपितु बेईमानी, बदनीयती और चोरी तथा अनुचित पक्षपात का आरोप।

इस रिपोर्ट में क्रम से इन चारों श्रेणियों के आरोपों पर विचार किया जायगा।

(क) दलबन्दी और गुटबन्दी

दीक्षित जी ने यह अभियोग लगाया है कि पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी का एक दल है और यह सम्मेलन पर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये कब्जा जमाये हुए हैं और अन्य निःस्वार्थ सेवियों को सम्मेलन में प्रवेश नहीं करने देता। कभी इसको 'दल' शब्द से व्यक्त करते हैं कभी 'गुट' से। दोनों शब्द आपत्तिजनक हैं। 'गुट' शब्द बेईमानी और स्वार्थपरता की अधिक व्यंजना करता है। दीक्षित जी के शब्दों में स्वार्थ-सिद्धि यह है कि परीक्षाओं में परीक्षक बनकर और अपनी पुस्तकें रखवाकर स्वयं और मित्रों को धन की प्राप्ति हो और अपनी पुस्तकें प्रकाशित कर प्रतिष्ठा प्राप्त करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षित जी अपने अभियोग को सिद्ध करने के लिये कोई प्रमाण नहीं उपस्थित कर सके। दलबन्दी और गुटबन्दी के प्रमाण उपस्थित करना दुःसाध्य भी है। समिति का निश्चय है कि सम्मेलन में कोई विशेष दलबन्दी नहीं है। सम्मेलन के प्राण माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन समय समय पर हिन्दी-हितैषी सज्जनों को प्रेरित करके सम्मेलन में लाते रहे हैं। सम्मेलन का संगठन चुनाव पर निर्भर है। चुनाव में बहुधा मनुष्य ऐसे ही व्यक्तियों को श्रेय देता है जो उससे सहमत हों। इस दृष्टि से चुनाव में कैनवसिंग का होना स्वाभाविक है और सब जगह होती है। सम्मेलन की अधिकारी-समितियों के लिये कुछ सज्जन स्वयं अथवा मित्रों द्वारा कैनवसिंग करते हों यह संभव है। स्वयं दीक्षित जी ने अपने पक्ष के आदमी लाने की कोशिश की, इसके प्रमाण उनके मौखिक वक्तव्य में मौजूद हैं। गत वर्ष साहित्य-परिषद् का सभापति बनने के के लिये उन्होंने प्रयत्न किया यह सर्वविदित है। रामदुलारे शुक्ल जी वाले मामले में श्री दीक्षित जी के बारे में कैनवसिंग करने के प्रमाण मौजूद हैं। परीक्षकों की सूची दीक्षित जी बिना किसी अधिकारी की अनुमति के प्रेस से ही (कार्यालय से प्रकाशित होने के पूर्व ही) ले गये और इसके लिये उन पर डाट भी पड़ी। इन सब बातों से उपसमिति का निर्णय है कि दीक्षित जी स्वयं अपना दलबल स्थापित करना चाहते थे और उसमें असफल होने पर दूसरों पर दलबन्दी का आरोप करते हैं।

जिन सज्जनों को कथित दल ने नहीं आने दिया उनके नाम दीक्षित जी ने सर्वश्री रासबिहारी शुक्ल, काशीप्रसाद पांडे और रघुनाथप्रसाद त्रिवेदी बताए हैं। प्रथम के बारे में श्री कार्यवाहक सभापति जी ने स्वयं सूचना दी थी कि रामबिहारी जी अभी दो एक साल तक कार्य करने में असमर्थ हैं। श्री काशीदत्त पांडे को जो दल लाकर सम्मेलन का रजिस्ट्रार बनावे, वही स्थायी समिति में न आने दे यह विश्वसनीय नहीं। श्री त्रिवेदी जी दो चार सम्मेलन के अधिवेशनों में आवें और अन्यथा स्पष्ट रूप से सेवा करें, तब भी न चुने जायँ तो अचरज की बात हो सकती है। संभावना यही है कि प्रतिनिधियों को उनसे परिचय न रहा हो।

दीक्षित जी का यह भी आरोप है कि इस दल के लोग मतपत्रों के गणक होते हैं और बदनीयती से प्रतिपक्षी व्यक्तियों को संभवतः बहुमत प्राप्त होने पर भी निर्वाचित नहीं घोषित कराते। यह आक्षेप बिल्कुल निराधार और निर्मूल है। सर्वसम्मत प्रणाली यह है कि सभापति मतपत्रों को गिनने के लिये गणक नियुक्त कर लेता है और उनकी गणना मान्य समझी जाती है। बदनीयती और पक्षपात का कोई प्रमाण उपसमिति को नहीं मिला। गणकों में कई बार दीक्षित जी के परम हितैषी श्री उदयनारायण तिवारी भी रहे हैं; उनपर दलबन्दी और पक्षपात का आरोप कृतघ्नता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की सीमा तक पहुँचता है। पर दीक्षित जी को कोई भी आरोप लगाते संकोच नहीं होता।

कथित दल में दीक्षित जी ने प्रायः सभी प्रमुख प्रयागवासी हिन्दी-सेवियों के नाम दिए हैं। ये सब के सब स्वार्थपरता और पक्षपात के लिये सम्मेलन में घुसे हुए हैं, इस बात पर विश्वास नहीं होता। इनमें से बहुतेरों का सम्मेलन से बहुत पुराना सम्बन्ध है और यह बात स्वाभाविक है कि पुराने कार्यकर्ताओं को चुनाव में श्रेय मिलता रहे। स्वयं दीक्षित जी ही एक उदाहरण हैं।

(ख) पुरस्कारों में गड़बड़ी

दीक्षित जी का आरोप है कि सम्मेलन के पुरस्कारों के वितरण में गड़बड़ी, कैनवसिंग आदि होती है और अयोग्य पुस्तकों पर पुरस्कार मिल जाता है। उनसे जब प्रमाण माँगे गए तब वह कोई भी प्रमाण उपस्थित करने में असमर्थ रहे। गड़बड़ी के चार गवाह बनाए; सर्वश्री अमरनाथ झा, उमेश मिश्र, रामप्रसाद त्रिपाठी और दयाशङ्कर दुबे। इनमें से प्रथम दो सज्जनों ने स्पष्ट कहा कि उन्हें किसी गड़बड़ी का ज्ञान नहीं है और उन्होंने किसी से गड़बड़ी की चर्चा नहीं की है। श्री त्रिपाठी जी ने प्रायः दस साल पूर्व श्री जयचन्द्र विद्यालंकार द्वारा दौड़धूप करके मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त करने की अपनी धारणा का उल्लेख किया है। श्री दुबे जी ने श्री दुलारेलाल भार्गव द्वारा कैनवसिंग करके मं० पा० प्राप्ति की सूचना दी है, पर दुलारेलाल जी असफल रहे। दुबे जी का आरोप है कि जिस वर्ष समाजशास्त्र की पुस्तकें मँगाई गईं और श्री सम्पूर्णानन्द को पारितोषिक मिला, उस वर्ष ऐसे निर्णायक चुने गए जो अर्थशास्त्र के कम और राजनीति शास्त्र के अधिक थे। दुबे जी ने स्वयं अपनी पुस्तक प्रतियोगिता में रखवाई थी और पारितोषिक प्राप्त करने की उनकी उत्सुकता स्वाभाविक थी। पर जिस पा० समिति में सर्वश्री अमरनाथ झा, बेनीप्रसाद (प्रोफेसर), उदयनारायण तिवारी और रामप्रसाद त्रिपाठी हों उस पर लांछन लगाना अनुचित है। पारितोषिक की फाइलों से कोई प्रमाण कैनवसिंग के नहीं मिले और मिलना असंभव भी है। समिति की सम्मति है कि उच्च आदर्श की रक्षा के लिये यह आवश्यक रीति है कि सम्मेलन के अधिकारी अपने कार्यकाल में किसी पुरस्कार की प्रतियोगिता में भाग न लें।

सुधाकर पुरस्कार के विषय में दीक्षित जी और व्यथित हृदय जी का यह आरोप है कि श्री रामनाथ सुमन को 'गांधीवाद की रूपरेखा' नाम की पुस्तक के लिये पुरस्कार मिला जो अनुचित था। क्योंकि पुस्तक समाजवाद की थी ही नहीं। फाइल देखने से पता चला कि सुमन जी ने स्वयं पुस्तक नहीं भेजी थी, बल्कि पुरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समिति ने अपनी ओर से उक्त पुस्तक प्रतियोगिता में सम्मिलित की थी, जिसका उसे पूर्ण अधिकार था। कौन पुस्तक प्रतियोगिता के योग्य है और कौन अयोग्य इसका अन्तिम निर्णय पुरस्कार-समिति का होता है, जो सर्वथा नियमानुकूल है। समिति की जिस बैठक में सुमन जी की पुस्तक रखने का निश्चय हुआ उसमें केवल दो सदस्य उपस्थित थे—डा० रामप्रसाद त्रिपाठी और श्री दयाशङ्कर दुबे। इन दो सज्जनों ने अनुचित प्रभाव से प्रेरित होकर उक्त पुस्तक को स्थान दिया होगा, समिति की दृष्टि में यह असंभव है।

सेकसरिया पुरस्कार के वितरण के बारे में जो लांछन लगाए गये हैं वे निर्मूल और निराधार हैं। निर्णायक उच्चकोटि के विद्वान् और सर्वथा विश्वसनीय थे।

रत्नकुमारी पुरस्कार के संबंध में जो शिकायत श्री श्यामनारायण जी 'श्याम' को थी उसका यथेष्ट समाधान श्री प्रधान मंत्री जी के वक्तव्य से हो गया है। खेद है कि दीक्षित जी ने तब भी शिकायत दुहराई है।

उपसमिति का निर्णय है कि पुरस्कारों के वितरण का संचालन कार्यालय द्वारा सर्वथा नियमानुकूल हुआ है। एक आध बार यदि किन्हीं व्यक्तियों ने बहुत साल पूर्व अनुचित लाभ उठाने की कोशिश की तो वह सम्मेलन के इतिहास में बहुत थोड़ी मात्रा की है।

(ग) साहित्य-मंत्री तथा प्रचार-मंत्री आदि

दीक्षित जी ने कई मंत्रियों पर आक्षेप किए हैं, विशेषकर वर्तमान और भूतपूर्व साहित्य-मंत्रियों पर, प्रचार-मंत्री श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी पर और प्रबंध-मंत्री श्री पद्मकांत मालवीय पर। आक्षेप न केवल कार्य की उदासीनता के हैं, अपितु पक्षपात, दलबन्दी और बेईमानी के भी हैं।

साहित्य-मंत्रियों में से सर्वश्री रामचन्द्र टंडन, ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' और कृष्णदेवप्रसाद गौड़ का उल्लेख किया है। उनका कहना है कि टंडन जी अपने मित्रों की ही पुस्तकें प्रकाशित कराते हैं जिनमें से श्री नन्ददुलारे वाजपेयी की पुस्तक निन्दनीय है; अपनी सौतेली बेटी सम्मेलन पत्रिका को ढंग की नहीं निकालते और लेखों के चुनने में पक्षपात करते हैं। समिति को मालूम हुआ कि सम्मेलन के सभी प्रकाशनों का उत्तरदायित्व साहित्य-समिति का है, सा० मंत्री का व्यक्तिगत नहीं है। सभी पुस्तकें समिति के निर्णय से छपी हैं। बीस पच्चीस प्रकाशनों में से एक आध का ऐसी होना जो सर्वसाहित्य सेवियों की, और विशेषकर दीक्षित जी की, रुचि के अनुकूल न हो, यह स्वाभाविक है, विशेषकर यदि उस पुस्तक में वर्तमान-कालीन साहित्यिकों की आलोचना हो तो मतभेद अवश्यभावी है। पक्षपात का लांछन निर्मूल है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीक्षित जी का सोरों-संबंधी अनुसन्धानात्मक लेख पत्रिका में स्थान नहीं पा सका, यह विशेष शिकायत है। समिति की दृष्टि में वर्तमान सा० म० श्री टंडन जी का काम निर्दोष ही नहीं प्रशंसनीय है। जो उन्नति साहित्य-विभाग ने इधर दो साल में की है वह सम्मेलन के गौरव की वस्तु है। गौड़ जी के बारे में दीक्षित जी को शिकायत है कि वह जब साहित्य-मंत्री थे तब दो हस्तलिखित प्रतियाँ उठा ले गए और वापस नहीं कीं। इस लांछन का कोई प्रमाण न दीक्षित जी ने उपस्थित किया न कार्यालय से मिल सका। इसलिये उपसमिति का निर्णय है कि यह शिकायत निर्मूल है। श्री निर्मल जी के बारे में श्री प्रधान मंत्री जी से ज्ञात हुआ कि उनके कार्यकाल के प्रथम वर्ष में तत्कालीन सा० मंत्री निर्मल जी ने अपनी एक पुस्तक उपस्थित की थी जिसके बारे में एक दूसरे लेखक ने नोटिस दिया कि मेरी लिखी है, निर्मल जी की नहीं। इसका यथेष्ट परिमार्जन उसी समय कर दिया गया था। उपसमिति की सिफारिश है कि कोई साहित्य-मंत्री अपने कार्यकाल में सम्मेलन द्वारा अपनी रचना न प्रकाशित कराए तो अच्छा है।

श्री प्रचार-मंत्री के विरुद्ध शिकायत का मूल कारण उनके द्वारा प्रचारक श्री दीक्षित जी के कार्य का नियंत्रण और भत्ता बिलों की रकमों में कमी करना ही है। यदि कोई योजना सफल न हो तो उसका उत्तरदायित्व वैतनिक कर्मचारी पर ही अधिक पड़ता है।

श्री प्रबन्ध मंत्री पर दलबन्दी आदि का आरोप भी दीक्षित जी पर नियन्त्रण करने और बार बार चेतावनी देने के कारण ही लगाया जान पड़ता है।

(द) सहायक मंत्री तथा कर्यालय पर आरोप

दीक्षित जी ने 'प्रताप' में प्रकाशित लेख में लिखा था कि "सम्मेलन के कुछ कर्मचारी भी इस दल का पूरा हाथ बँटा रहे हैं।" मौखिक विवरण में उन्होंने स्पष्ट किया कि 'कुछ कर्मचारी' से उनका अभिप्राय केवल सहायक मंत्री जी से था। आगे चलकर उन्होंने उसी लेख में लिखा है—

"सहायक मंत्री की शिकायतें आम हैं। स्थायी समिति के चुनाव, पत्रव्यवहार, सूचनाएँ, टिकटें गायब होना, सूची की छपाई आदि में अष्टता, सम्मेलन में गुटबन्दी, आदि बातों की त्रुटियों के लिये सहायकमंत्री ही जिम्मेदार हैं।" दीक्षित जी की यह भी शिकायत है कि "सहायक मंत्री ने अनेक स्थलों पर कुछ का कुछ लिखकर पास तक करवा लिया है।" उनका लांछन यह भी है कि परीक्षकों की सूची में से गत वर्ष और इस वर्ष जो नाम छूट गए उस भूल की जिम्मेवारी भी सहायक मंत्री पर है। "सारी शक्ति पहाड़ी के हाथ में दे दी गई है। मंत्री लोग इसमें सावधानी बर्तना उचित नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझते। उपाधिधारी के वोटिंग पेपर सुधार हो जाने पर भी पुराने पते से भेजे गए और पुराना ही पता सूची में दिया। इसके लिये न प्रबन्ध-मंत्री को चिन्ता है और न सहायक मंत्री को। पहाड़ी जिनको गुट का विरोधी समझता है उन्हीं के पेपरों में गड़-बड़ी की जाती है।" उनके अन्तिम वक्तव्य में इस प्रकार की शिकायतों की भरमार है और भाषा इतनी असंयत है कि पढ़कर दुःख होता है।

इन शिकायतों को समझने के लिये सम्मेलन कार्यालय की कार्यप्रणाली पर ध्यान देने की जरूरत है। सम्मेलन में अलग-अलग विभाग हैं, जिनमें अलग अलग लेखक हैं जो अपने-अपने विभाग के मंत्रियों के अधीन हैं। प्रबंध करने के लिये प्रबन्ध-मंत्री और सहायक मंत्री हैं, पर इनका अधिकार बहुत सीमित है। मुख्य जिम्मेवारी मंत्रियों की है। विशेषकर परीक्षा विभाग प्रायः स्वतंत्र ही काम करता रहा है। ऐसी दशा में सहायक मंत्री को ही सम्मेलन कार्यालय की असावधानी के लिये जिम्मेवार ठहराना अनुचित है। सहायक मंत्री की शिकायतें आम नहीं हैं। चुनाव, पत्र-व्यवहार, सूचनाओं आदि के निकालने में यदि वह गड़बड़ करना चाहें तो विभागीय लेखकों के सहयोग के बिना नहीं कर सकते। इसकी संभावना नहीं है। जिस कार्यालय में स्टाफ कम हो और सो भी थोड़े वेतनवाला, उसमें पत्र-व्यवहार में देर हो जाना, हजार में दस-बीस पत्रों के उत्तर में गड़बड़ हो जाना, छपाई में कभी कभी त्रुटियाँ रह जाना, पता कभी कभी ठीक न लिखा जाना यह सभी संभव है। पर इस सबकी मात्रा जितनी अपने कार्यालय में है वह अन्य कार्यालयों की अपेक्षा अधिक नहीं है। यदि स्टाफ दुगना किया जा सके (जिसके लिये द्रव्य अपेक्षणीय है) तो कार्यालय का काम अधिक सुचारु रूप से चल सकता है। सहायक मंत्री ने जो वक्तव्य दिया है उससे वह सर्वथा निर्दोष सिद्ध होते हैं और दीक्षित जी पर नियन्त्रण करने के प्रयत्न के कारण सहायक मंत्री दीक्षित महोदय के रोष के पात्र बन गए हैं। इसके यथेष्ट प्रमाण फाइल में मौजूद हैं। दीक्षित जी को अन्तिम चेतावनी दी जाने के बाद ही 'प्रताप' में उनका लेख निकला है। वास्तविक दोष दीक्षित जी का है। वह वेतनभोगी कर्मचारी होते हुए भी अनुशासन में रहकर काम नहीं कर सकते। अन्य कर्मचारियों पर रोब गाँठ कर स्वेच्छाचारिता बर्तना चाहते हैं।

सहायक मंत्री के विरुद्ध सबसे अधिक अपमानजनक लांछन टिकट गायब करने का है। कोई भी सज्जन इस प्रकार का आरोप करने के पूर्व सोच-विचार कर प्रमाण उपस्थित करेगा। पर दीक्षित जी को इसकी चिन्ता नहीं। सम्मेलन में टिकट न पहुँचने की शिकायत बहुत पुरानी है। इसमें मुख्य दोष उन भोले-भाले सज्जनों का है जो सादे लिफाफों में टिकट रखकर भेज देते हैं। डाक न केवल सहायक मंत्री खोलते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, चपरासी की मदद से प्रबन्ध-मंत्री, परीक्षा-मंत्री अथवा मुख्य लेखक भी खोलते रहे हैं, और तब भी टिकट लिफाफों में नहीं मिले हैं। दीक्षित जी का अनुमान है कि टिकट गायब करके कार्यालय में जलपान किया जाता है, अर्थात् सभी लेखक इस बेईमानी में शामिल हैं। दीक्षित जी को बिना प्रमाण के ऐसा लांछन लगाते लज्जा नहीं आई, यही अचरज है। उनका यह लांछन उनके नैतिक पतन की सूचना देता है। भविष्य के लिये सम्मेलन को घोषणा कर देनी चाहिये कि सादे लिफाफे में भेजे हुए टिकटों के लिये सम्मेलन उत्तरदायी नहीं है।

प्रश्नपत्रों की प्रूफरीडरी की भी शिकायत दीक्षित जी ने की है, विशेषकर अपने पत्र की। परीक्षा-मंत्री जी ने स्पष्ट किया कि दीक्षित जी के प्रश्नपत्र में जो परिवर्तन हुआ वह माडरेटर ने किया, जो वैध था।

इस प्रकार की शिकायतें कार्यालय के विरुद्ध पत्रों में छपाना दीक्षित जी द्वारा पहली बार नहीं हुआ है। पूर्व में भी एक बार प्रायः इसी प्रकार के लांछन उन्होंने 'जागृति' आदि पत्रों में छपाए थे और स्थायी समिति में उनकी चर्चा पेश होने पर अपनी भूल मानी थी और स्थायी समिति तथा प्रधान मंत्रीजी से शुद्ध हृदय से क्षमा माँग कर प्रायश्चित्त-स्वरूप स्थायी समिति से त्यागपत्र दिया था। पर वस्तुतः उनका हृदय शुद्ध नहीं था क्योंकि अब वह कहते हैं कि तब श्री पुरुषोत्तमदास टंडन और काका कालेलकर के कहने से क्षमा माँग ली थी। उदारता का यह परिणाम है।

उपसमिति का निर्णय है कि दीक्षित जी के लगाये लांछन प्रायः सर्वांश में झूठे, निर्मूल और निराधार हैं। इनसे न केवल उन्होंने सम्मेलन के कर्मचारी से जिस अनुशासन की आशा की जाती है उसकी अवहेलना की है, अपितु जनता में सम्मेलन के प्रति दुर्भावना को उत्तेजित कर इस संस्था की प्रतिष्ठा को धक्का लगाया है।

जाँच के दौरान में भी उन्होंने पत्रों में यह लेख लिखा कि सम्मेलन पर जाँच कमीशन बैठा है, जब कि वस्तुतः उनकी जाँच करने के लिये उपसमिति बैठी हुई थी। अपने अन्तिम वक्तव्य को भी उन्होंने बिना अनुमति लिये प्रेस में भेज दिया। इससे उपसमिति के सदस्यों के ऊपर ही नहीं, कार्यवाहक सभापति जी तक पर छींटे फेंके हैं। उन्हें सभापति जी के आश्वासन का भी विश्वास नहीं।

खेद है कि समाचार-पत्र बिना प्रमाण लिये और सम्मेलन कार्यालय से बिना पूछे इस प्रकार के भ्रान्ति-उत्पादक लेख छाप देते हैं। सम्मेलन उनसे सहानुभूति की आशा रखता है।

सारांश यह कि दीक्षित जी ने अपने कार्य से सम्मेलन को अनुचित हानि पहुँचाई है और उनके आचरण में तथ्य नहीं है।

बाबूराम सक्सेना
रामशंकर शुक्ल 'रसाल'

२४।१०।४३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेवी जी का आलोचना-साहित्य

[इलाचन्द्र जोशी]

महादेवी जी की पद्य-रचना हिन्दी-जनता को काफी प्रभावित कर चुकी है। इधर कुछ समय से उनकी गद्य-रचना के भी एक से एक अच्छे नमूने पाठकों के आगे आते जाते हैं। 'अतीत के चलचित्र' और 'श्रृङ्खला की कड़ियाँ', इन दो पुस्तकों का महत्त्व हिन्दी-जनता स्वीकार कर चुकी है। इनमें से प्रथम पुस्तक में कुछ संस्मारणात्मक चित्र एक ऐसी शैली में अंकित किए गए हैं, जो कहानी-कला के लिये आदर्श मानी जा सकती है। दूसरी पुस्तक में युगों की दासता से श्रृङ्खलाबद्ध भारतीय नारी के विद्रोह का भैरव-स्वर निनादित हो उठा है। 'महादेवी का विवेचनात्मक गद्य'[1] संभवत उनकी तीसरी गद्य-पुस्तक है। इसमें हिंदी के सुप्रसिद्ध तरुण आलोचक श्री गंगाप्रसाद जी पांडेय ने उनके छः निबंध संगृहीत किए हैं, जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं—(१) काव्य-कला, (२) छायावाद, (३) रहस्यवाद, (४) गीति-काव्य, (५) यथार्थ और आदर्श, और (६) सामयिक समस्या।

महादेवी जी की कविताएँ जितने ही परिमाण में करुण, कोमल, तरल और विविध वर्णच्छटा से झलमलाती हुई होती हैं उनके आलोचनात्मक निबंध उसी परिमाण में निर्मम, कठोर, ठोस और सघन होते हैं। उनकी उस सघनता में बीच-बीच में व्यंग की बिजली अवश्य चमकती हुई पाई जाती है, पर इससे उसके निबिड़ रूप में कोई अन्तर नहीं आता।

वाह्य जगत् के व्यापक पर्यवेक्षण और अन्तर्जगत् के गहन चिंतन के फलस्वरूप जो ज्ञान महादेवी जी ने पाया है उन्हें निश्चित शब्दों में निर्भीकता से व्यक्त करने की कला में वह बहुत निपुण हैं। किसी विशेष व्यक्ति या वर्ग का लिहाज करके अपने विचारों को दबाना या संकुचित करना उन्हें पसंद नहीं। वह जैसा-कुछ उचित समझती हैं उसे बेलाग कह देती हैं; यह बात नाना प्रकार की विषमताओं के बंधनों से ग्रस्त इस युग में एक बड़ी भारी विशेषता है। हिन्दी के अधिकांश ख्यातनामा आलोचकगण कुछ विशेष व्यक्तियों अथवा वर्गों को असंतुष्ट करने के भय से ऐसी संकुचित शैली में, हेरफेर के साथ, अपनी बातें कहते हैं कि उनकी एक भी बात स्पष्ट नहीं हो

---

[1] प्रकाशक, इंडियन प्रेस प्रयाग, मूल्य २ रु०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाती और बेचारा पाठक लाख सिर पटकने पर भी अंत तक इस भ्रम में पड़ा रह जाता है कि वास्तव में आलोचक का अपना निजी और निश्चित मत क्या है। इसका एक कारण शायद यह भी है कि इस अनिश्चित युग में किसी आलोचक का अपना निजी और निश्चित मत है भी नहीं। संभवतः इसी कारण अस्पष्ट और वाग्जालों में उलझी हुई आलोचना को कलात्मक रूप देने की प्रवृत्ति आये दिन हिंदी संसार में चल पड़ी है। आलोचक की आत्म-विवशता ने उसे यह एक अभिनव चातुरी सिखा दी है! पर महादेवी जी की आलोचनाओं में हम इस प्रवृत्ति का लेश भी नहीं पाते। वह प्रत्येक विषय पर अपना निश्चित मत रखती हैं और जो कुछ भी कहती हैं स्पष्ट शब्दों में, सुसंस्कृत भाषा में, सुलझे हुए ढंग से कहती हैं। इसका कारण वही है जो पहले बताया जा चुका है—वाह्य जीवन के व्यापक निरीक्षण और अंतर्जीवन की गहन अनुभूति तथा चिंतन के फलस्वरूप उन्होंने जीवन और साहित्य के संबंध में एक ऐसा ज्ञान प्राप्त किया है जो अपनी एक निश्चित सत्ता रखता है, फिर उसमें मतभेद की कैसी ही संभावना निहित क्यों न हो। पर हमारे अधिकांश अन्य आलोचकों में न वाह्य जीवन के विस्तृत पर्यवेक्षण की दीर्घ दृष्टि वर्तमान पाई जाती है, न अन्तर्जीवन की किसी प्रकार की साधना की प्रवृत्ति। यही कारण है कि, महादेवी जी के कथनानुसार, आज का आलोचक "मानसिक पूँजीवाद और जीवन का दारिद्र्य साथ लाये बिना न रह सका। जीवन की ओर लौटने की पुकार उसकी ओर से नहीं आती, क्योंकि ऐसी पुकार स्वयं उसी के जीवन को विरोधात्माक बना देगी। व्यावहारिक धरातल पर भी वह एक अथक विवादैषणा के अतिरिक्त कोई निश्चित कसौटी नहीं दे सका जिस पर साहित्य और काव्य का खरा-खोटापन विश्वास के साथ परखा जा सके।"

सारी पुस्तक को आद्योपांत पढ़ जाने के बाद जो दो-चार बातें विशेष रूप से पाठक के मन पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ जाती हैं उनमें से एक यह है कि लेखिका का हृदय वर्तमान युग के कोरे बुद्धिवादी साहित्य की व्यर्थता देखकर अत्यंत मार्मिक रूप से क्षुब्ध है। 'बुद्धिवादी', 'बुद्धिजीवी', 'बुद्धि-व्यवसायी' आदि शब्द उनकी पुस्तक में बार-बार आए हैं, और इस विशेष वर्ग की एकांगीय मनोवृत्ति का विरोध लेखिका ने खुले शब्दों में किया है। लेखिका की राय में—

"नवीन साहित्यकार और कवि के बुद्धिवैभव और अनुभूति की दरिद्रता ने ऐसी क्रियाशीलता को जन्म दे दिया है जो सिद्धांतों को माँज-धोकर रात-दिन चमकाती रहती है, पर जीवन में जंग लग जाने देती है।.....काव्य में तो जीवन का निरन्तर स्पर्श और उसकी मार्मिक अनुभूति सब से अधिक अपेक्षित है। यह युग यथार्थवादी है, अतः जीवन के स्पन्दन के बिना उसका यथार्थ इतना शीतल हो उठता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्लील उत्तेजनाओं से उसमें कृत्रिम उष्णता भरी जाती है।"

तथाकथित बुद्धिवादी लेखकों की अनुभूतिहीनता के खिलाफ लेखिका को जो शिकायत है वही आजकल के कोरे यथार्थवादी लेखकों की आदर्श-विमुखता के विरुद्ध भी है। उनकी सम्मति में "अस्वस्थ साहित्य का सृजन करते-करते ही यथार्थवादी प्रगति के चरम लक्ष्य तक पहुँच जायँगे, इसे मान लेना यह विश्वास कर लेना है कि एक ही ओर चलने वाला चलते-चलते दूसरी ओर पहुँच जायगा। हमारा सामाजिक स्वास्थ्य नष्ट हो गया है, पर निर्माण के लिये तो स्वस्थ प्रवृत्तियाँ, संस्कृत हृदय, और परिष्कृत बुद्धि चाहिये। जो विकृतियों से प्रभावित हैं, पर आत्म-संस्कार के प्रश्न को भविष्य के लिये उठा रखते हैं, वे पथ-प्रदर्शन के लिये उपयुक्त न हो सकेंगे।" कहना नहीं होगा कि किसी भी समझदार व्यक्ति का मतभेद लेखिका की इस राय से नहीं हो सकता। जो यथार्थवादी केवल अस्वस्थ नग्न सत्य को यथारूप चित्रित करके अपना कर्तव्य पूरा हुआ समझता है उससे अधिक भ्रम में पड़ा हुआ दूसरा व्यक्ति नहीं हो सकता। पर जो समालोचक यह मत रखते हैं कि किसी भी हालत में, किसी भी उद्देश्य से, समाज की छाती पर घुन की तरह बैठे हुए विकृत किन्तु ज्वलंत यथार्थ का चित्रण होना ही नहीं चाहिये, उनसे हम सहमत नहीं हैं। यदि लेखक एक निश्चित और महत्त्वपूर्ण आदर्श के बीज-वपन के उद्देश्य से यथार्थ की मिट्टी को गहराई में खोदता है, या समाज के किसी गर्हित अंश के मूलगत परिष्करण के मांगलिक उद्देश्य से वास्तविकता के कीचड़ को तल से सतह तक उलीचता है, तो उसके यथार्थ-चित्रण का महत्त्व निश्चय ही अविवादास्पद समझा जाना चाहिये। पर महादेवी जी की शिकायत यह है कि हिन्दी के वर्तमान युग के अधिकांश यथार्थ-वादी लेखकों ने गंदगी को केवल गंदगी के लिये ही अपनाया है, उसे आदर्शात्मक मिट्टी को उर्वरा बनाने के लिये केवल खाद के काम में लाना उनका उद्देश्य नहीं रहा है। यह प्रवृत्ति निश्चय ही घोर निन्दनीय और गर्हित है, इसे सभी स्वीकार करेंगे।

यदि एक ओर विशुद्ध यथार्थ और दूसरी ओर कोरा आदर्श, इन दो में एक को ग्रहण करने का प्रश्न उठे तो महादेवी जी निश्चय ही कोरे आदर्शवाद को ग्रहण करना पसंद करेंगी। उनकी सम्मति में "एक सम्भाव्य आदर्श एक निश्चित यथार्थ से उतना ही मूल्यवान है जितना एक मूल्यवान स्वप्न एक बेदाम स्थूल से।" हमारी विनम्र सम्मति में 'एक निश्चित यथार्थ' केवल एक 'बेदाम स्थूल'-मात्र ही नहीं है। किसी भी निश्चित यथार्थ से (चाहे वह प्रकट रूप से कैसा ही गंदा क्यों न हो) हम सुनिश्चित रूप से जीवन से संबंध रखनेवाली अत्यंत मूल्यवान शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। प्रश्न है ग्रहण करने वाले की दृष्टि का। एक व्यक्ति कीचड़ के कीड़े की तरह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीचड़ में डूबे रहने में ही सुख प्राप्त कर सकता है और उसी कीचड़ को जीवन का अथ-इति मान सकता है। यह उसकी विकृत और भ्रमित बुद्धि का दोष है। दूसरा व्यक्ति उसी कीचड़ में से ऐसा सार निकाल सकता है जो जीवन के पोषण और स्वास्थ्य विकास के लिये परम आवश्यक है। जीवन के महत् आदर्श का सुचारु कमल केवल मात्र यथार्थ के कीचड़ से पोषक-तत्व खींच सकता है। यथार्थ की पंकिलता का आग्रह ग्रहण किये बिना उस कमल की उद्भावना ही संभव नहीं है। महाभारतकार को यह बात मालूम थी। महाकवि दांते इस तथ्य से भली भाँति परिचित था। इसीलिये उसने अपनी 'डिवाइना कामीडिया' में पहले नरक का कीचड़ उलीचकर तब उसपर स्वर्ग की स्थापना की है। जिस स्वर्ग की स्थापना यथार्थ जीवन के नरक के ऊपर नहीं है वह स्वर्ग झूठा है। महादेवी जी स्वयं इस सत्य को महसूस करती हैं। उन्होंने लिखा है—"सन्तुलन का अभाव हमारा जातीय गुण चाहे न कहा जा सके, परन्तु यह तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि एक दीर्घकाल से हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों में यही त्रुटि विशेषता बनती जा रही है। या तो हम ऐसे आध्यात्मिक कवच से ढके रहते हैं कि जीवन की स्थूलता हमें किसी ओर से भी स्पर्श नहीं कर सकती, या ऐसे सुख जड़वादी कि सम्पूर्ण जीवन बालू के अनमिल कणों के समान बिखर जाता है; या तो ऐसे तन्मय स्वप्नदर्शी हैं कि अपने पैर के नीचे की धरती का भी अनुभव नहीं कर पाते, या यथार्थ के ऐसे अनुगत कि सामञ्जस्य का आदर्श भी मिथ्या जान पड़ता है।" यथार्थ और आदर्श के सुसंगतिपूर्ण सामञ्जस्य की जो शिक्षा महादेवी जी ने दी वह वास्तव में उन्हीं के समान उदार दृष्टिवादी और गहन अनुभूति-परायण लेखिका के योग्य है। इसके अतिरिक्त यथार्थ और आदर्श का अलग-अलग तौर से, सूक्ष्म रूप से, जो कलात्मक और वैज्ञानिक विश्लेषण और विस्तृत और गहन विवेचन उन्होंने किया है वह हिन्दी-आलोचना-साहित्य के लिये एकदम नयी चीज़ है। अपने समन्वयात्मक दृष्टिकोण को ऐसे सुन्दर, सजे और सुलझे हुए ढंग से उन्होंने पाठकों के आगे रखा है जो भावी आलोचक के लिये एक महान् आदर्श सिद्ध होता रहेगा।

केवल एक निवेदन और करके हम यथार्थ और आदर्श के संबंध में अपने वक्तव्य को समाप्त करेंगे। प्राचीनतम काल से लेकर आज तक के साहित्य के इतिहास में यह विशेष बात पाई गई है कि यथार्थ उस युग में अधिक अपनाया गया है जिस युग में राजनीतिक उथल-पुथल ने महाभारत-काल की-सी विषमतामूलक और विध्वंसक स्थिति उत्पन्न की है। वर्तमान युग में नये ढंगों से और नये रूपों से वे ही परिस्थितियाँ फिर से आकर विश्व-गगन में विनाश के बादलों की तरह छाई हुई हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये यदि इस युग का झुकाव यथार्थ की ओर विशेष रूप से हो तो इसमें आश्चर्य कोई बात नहीं है। महादेवी जी ने रामायण और महाभारत-काल की यथार्थ-ष्टियों की तुलना करते हुए रामायण के यथार्थ को सामञ्जस्यपूर्ण, सृजनात्मक और दर्शमूलक माना है, और महाभारत के यथार्थ को विनाशशील बताया है। समें संदेह के लिये कोई गुञ्जाइश नहीं है कि महाभारतयुग के यथार्थ आदर्शवादी ति को विध्वंस और विनाश के माध्यम से होकर आगे बढ़ने को विवश होना पड़ा । पर इसमें महाभारतकार की यथार्थ-दृष्टि का तनिक भी दोष नहीं है; जिस जनीतिक उथल-पुथल और बौद्धिक क्रांति की घोर संघर्ष-विघर्षमयी विषमता के च में उस युग का कवि काव्य-रचना कर रहा था उसके उत्कट यथार्थ की अवज्ञा किसी प्रकार भी नहीं कर सकता था। उस यथार्थ ने स्वभावतः उसकी समस्त ता-धारा को छा लिया था और वह जानता था कि उस युगव्यापी ज्वलन्त, प्रत्यक्ष, र प्रतिपल अत्यन्त तीव्रता से अनुभूत होने वाले घनघोर यथार्थ के आधार के ना किसी आदर्श के स्थापन की चेष्टा करना बालू की भीत पर स्थायी मांगलिक त्र अंकित करने के प्रयास के बराबर है। युग की विषमताओं और विनाशात्मक न्तिचक्रों के बीच में पिसते रहने पर भी जनता के प्रतिनिधि उस कवि ने छुरे की ी धार के समान तीखे यथार्थ के पथ पर चलकर निष्काम कर्मयोग के जिस विराट् दर्श की स्थापना की वह किसी भी युग के किसी आदर्श से किसी अंश में न्यून हीं था। जो यथार्थ गीता के समान अमर आदर्श की सृष्टि कर सकता है वह सी भी स्थिति में विनाशबीजक नहीं कहलाया जा सकता, भले ही उसका ऊपरी रिणाम प्रकट में विध्वंसमूलक जान पड़े। सच्चे यथार्थवाद की महत्ता इसी बात पर कि वह नाना वैषम्य और वैपरीत्य को तद्रूप और तद्वत् चित्रित करके पाठकों के न में स्पन्दनशील जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के प्रति तीव्रता की अनुभूति गाकर उन विषमताओं के भीतर से एक निश्चित और अखंड आदर्श का स्रोत फोड़ निकाले।

रामायण के कवि ने निस्सदेह एक सुस्निग्ध, सामञ्जस्यपूर्ण निर्माण के आदर्श ो ग्रहण किया और साहित्य में एक गतिशील, सृजनात्मक सत्य की स्थापना की। पर जिस युग में रामायण की रचना हुई वह युग महाभारत-काल की तरह किसी बड़ी बौद्धिक क्रान्ति और राजनीतिक विप्लव का युग नहीं था। उस युग के बौद्धिक, राज-नीतिक तथा सामाजिक जीवन की समस्याएँ वैसी जटिल, विस्फोटक और विरोधाभास-मूलक नहीं थीं। इसलिये उस युग के कवि के आगे आदर्श का पथ अत्यंत स्पष्ट और सरल था। पर महाभारतकार का मार्ग इतना सीधा और स्पष्ट नहीं था। उसके मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मस्तिष्क के चारों ओर कठोर द्वन्द्वात्मक और विकट विरोधाभास-मूलक यथार्थ ने ऐसा जबर्दस्त धावा बोल रखा था कि उसे आधी से अधिक शक्ति उससे जूझने में खर्च करनी पड़ी। पर यह उसकी महान विशेषता है—रामायणकार की अपेक्षा कई गुना अधिक महान—कि अपने चारों ओर के जीवन्त और ज्वलन्त यथार्थ से न भागकर वह अन्त तक उससे जूझता रहा है और हारमान न होकर अंत में विजयी सिद्ध हुआ। इसमें सन्देह नहीं कि प्रकट रूप से वह विजय भी हार का जामा पहन कर आई, पर परोक्ष में उस हारवेषी विजय ने अपने आगे के 'सीमाहीन मरु' के भीतर अंतःसलिला की तरह कर्मयोग की दार्शनिकता की एक अक्षय धारा बहाई। आदर्श और यथार्थ के महत्त्व की आपेक्षिकता पर विचार करते हुए हमें यह परम तथ्य नहीं भुलाना होगा।

हमारे कथन का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि महादेवी जी ने महाभारत के यथार्थ के महत्त्व को नहीं समझा है। वास्तव में तथ्य इसके विपरीत है। उन्होंने इस महत्त्व को जितना समझा है उतना शायद ही हिन्दी का कोई दूसरा मनीषी समझ पाया हो। सच पूछा जाय तो महाभारत के यथार्थ के स्पष्टीकरण की चेष्टा में हमने यथार्थ के संबंध में महादेवी जी के ही दृष्टिकोण की व्याख्या करने का क्षीण प्रयास किया है। यह दूसरी बात है कि रामायण का सहज गतिशील आदर्श महाभारत के द्वन्द्वात्मक और विरोधाभासमूलक यथार्थ की अपेक्षा उन्हें अधिक प्रियकर लगता है। पर इससे यथार्थ के संबंध में उनके विचारों में तनिक भी पंगुता नहीं आने पाई है और न उनके इस निश्चित मत में उससे कोई परिवर्तन ही आता है—"आदर्श की रेखाएँ कल्पना के सुनहले-रूपहले रंगों से तब तक नहीं भरी जा सकतीं जब तक उन्हें जीवन के स्पन्दन से न भर दिया जावे, और दूसरी ओर *** यथार्थ की तीव्र धारा को दिशा देने के पहले उसे आदर्श के कूलों का सहारा देना आवश्यक है।"

'छायावाद' शीर्षक लेख में महादेवी जी ने स्वभावतः छायावादी कविता का जबर्दस्त पक्ष लिया है। उनकी राय में "मनुष्य की निम्नवासना को बिना स्पर्श किए हुए जीवन और प्रकृति के सौन्दर्य को उसके समस्त सजीव वैभव के साथ चित्रित करने वाली उस (छायावादी) युग की अनेक कृतियाँ किसी भी साहित्य को सम्मानित कर सकेंगी।" उनका यह भी मत है कि छायावाद जीवन-संघर्ष से पलायन का परिणाम नहीं था, बल्कि उसका संबंध मानव-स्वभाव के भीतर निहित उस विशेष पलायन-वृत्ति से है जिसे "युगों से, परिचित से अपरिचित, भौतिक से अध्यात्म, भाव से बुद्धिपक्ष, यथार्थ से आदर्श की ओर मनुष्य को ले जाने और इसी क्रम से लौटाने का बहुत कुछ श्रेय है।" उनकी यह भी धारणा है कि छायावादी युग का रंगीन दृष्टिकोण तारुण्य का द्योतक है, "जो चाँदनी के समान हमारे जीवन की कठोरता,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्कशता, विषमता आदि को एक स्निग्धता से ढक देता है।" और इस तारुण्य की तुलना में वर्तमान का कोरा बुद्धिवादी युग उन्हें वार्द्धक्य से पीड़ित जान पड़ता है।

हमारी व्यक्तिगत राय यह है कि साहित्य-क्षेत्र में छायावाद अपने काल में उसी रूप में प्रगतिशील रहा है जिस रूप में राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्र में पूँजीवाद। जिस प्रकार पूँजीवाद ने सामंतवर्गीय समाज की जड़ता के विरुद्ध विद्रोह करके अपनी औद्योगिक क्रांति से समाज में एक सजीवता और सक्रियता ला दी, ठीक उसी प्रकार छायावाद ने रीतिकालीन युग की बद्धता और भारतेन्दु तथा द्विवेदी युग की स्थूल-दर्शिता के विरुद्ध विद्रोह करके अंतर्जीवन की गतिशीलता और सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूति की युक्तता से साहित्य को परिप्लावित-कर दिया। अंतर्जीवन के सौन्दर्यलोक की यह सूक्ष्मानुभूति अपना एक निजी महत्त्व और विशेषत्व रखती है, जिसकी अवज्ञा करना अपनी दृष्टि की क्षीणता का परिचय देना है। यह अनुभूति चाहे जीवन-संघर्ष से पलायन के फलस्वरूप आई हो, चाहे तारुण्य की अदूरदर्शी रङ्गमय स्वप्न-दृष्टि के कारण, वह हर हालत में हमारे साहित्य में एक बहुत बड़ी देन के रूप में आई, इसमें सन्देह के लिये कहीं कोई आधार नहीं है। खराबी तब आई जब उसकी एकांगीयता ने साहित्य को अपनी रंगीनी से इस बुरी तरह छा लिया कि यथार्थ की दृष्टि ही उसने एकदम लुप्त कर दी। महादेवी जी की इस धारणा का हम पूर्णतया समर्थन करते हैं कि "यदि हम पहले की-सी सौन्दर्य-दृष्टि और आज की यथार्थ-सृष्टि का समन्वय कर सकें, पिछली सक्रिय भावना से बुद्धिवाद की शुष्कता को स्निग्ध बना सकें और पिछली सूक्ष्म चेतना को व्यापक मानवता में प्राण-प्रतिष्ठा कर सकें, तो जीवन का सामञ्जस्यपूर्ण चित्र दे सकेंगे।"

सूक्ष्म-सौन्दर्य-बोध जीवन के सच्चे परिज्ञान के लिये उतना ही आवश्यक है जितना स्थूल वास्तविकता का बोध। इसलिये छायावाद का जो एक अपना निजी महत्त्व है, वह अविवादास्पद है। पर उस सूक्ष्म सौन्दर्यानुभूति के एकांगीय अनुशीलन को सीमाहीन गति से बढ़ाए ले चलने में बहुत खतरे हैं—ठीक उसी रूप में जिस रूप में अविद्या के संग-स्पर्श से रहित कोरी विद्या के अनुशीलन को उपनिषत्कार ने भयानक बताया है। विद्या तथा अविद्या, सूक्ष्म और स्थूल, स्वप्न और यथार्थ, इन दोनों के सानुपातिक सामञ्जस्य के बिना साहित्य कभी जीवन को सुचारु गति नहीं दे सकता। महादेवी जी का यही संदेश है।

पलायन-वृत्ति की जो एक स्वतंत्र व्याख्या महादेवी जी ने की है वह भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण और माननीय है। जैसा कि पहले निर्देश किया जा चुका है, उनकी दृष्टि में छायावादियों का 'पलायन' जीवन-संघर्ष से पलायन नहीं है, बल्कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतर्जीवन के संबंध में रागात्मक चिंतन की एक सहज-स्वाभाविक प्रेरणा का फल है। उनका यह विश्वास है कि सच्चे अर्थों में पलायनवादी आजकल के कोरे बुद्धिवादी साहित्यिक हैं जो "यथार्थ की सक्रियता स्वीकार करने में असमर्थ होने के कारण" वास्तविक जीवन से भाग कर सैद्धांतिक चिंतन का आश्रय ग्रहण किये हुए हैं। इस तर्क से चाहे किसी का कैसा ही मतभेद क्यों न हो, वह विचारणीय अवश्य है। महादेवी जी के छायावाद संबंधी लेख के विषय में यह कहने में हमें कोई झिझक नहीं है कि हिन्दी में उसका वही ऐतिहासिक मूल्य है जो अँगरेज़ी में शेली की 'डिफेन्स आफ पोएट्री' का। जैसे सुन्दर, सजीले ढंग से, ठोस तर्कों द्वारा महादेवी जी ने छायावाद का पक्ष-समर्थन किया है उस रूप में आज तक हिन्दी का कोई दूसरा आलोचक नहीं कर पाया है।

रहस्यवाद-विषयक निबंध भी महादेवी जी की अपनी विशेषता है। स्वयं रहस्यवादिनी होने के कारण उन्होंने इस जटिल और दुरूह विषय का स्पष्टीकरण बड़ी ही सुन्दर और सुलझे हुए ढंग से किया है। उनके इस निबंध का मूलगत भाव इन शब्दों में व्यक्त हुआ है—"हमारे मूर्त और अमूर्त जगत् एक दूसरे से इस प्रकार मिले हुए हैं कि एक का यथार्थदर्शी दूसरे का रहस्यद्रष्टा बनकर ही पूर्णता पाता है। * * * अलौकिक रहस्यानुभूति भी अभिव्यक्ति में लौकिक ही रहेगी। विश्व के चित्रफलक पर सौन्दर्य के रंग और रूपों के रेखाजाल से बना चित्र यदि अपनी रसात्मकता द्वारा हमारे लिये मूर्त का दर्शन और अमूर्त का भावन सहज कर देता है तो तर्क व्यर्थ होगा। * * * अखण्ड चेतन से तादात्म्य का रूप केवल बौद्धिक भी हो सकता है, पर रहस्यानुभूति में बुद्धि का ज्ञेय ही हृदय का प्रेय हो जाता है।"

इस प्रकार का भाव-निरूपण निश्चय ही किसी भी रहस्यार्थी जिज्ञासु के लिये अत्यंत उपादेय सिद्ध हो सकता है।

'सामयिक समस्या' में यथार्थवाद और प्रगतिवाद पर विस्तृत रूप से विचार किया गया है।

सच्चे प्रगतिवाद से, चाहे वह मार्क्सवाद से प्रभावित हो चाहे गांधीवाद से, महादेवी जी का कोई विरोध नहीं है। सच्चे प्रगतिवाद से हमारा आशय उस साहित्यिक विचारधारा से है जो किसी भी विशेष 'वाद' को अपने भीतर न बाँधकर साहित्य और जीवन के स्वाभाविक विकास के प्रवाह-पथ को भविष्य के लिये मुक्त छोड़ देती है। पर उनकी धारणा है कि सच्चे प्रगतिवाद की प्रवृत्ति वर्तमान रहते हुए भी एक ऐसे नकली प्रगतिवाद ने आज हिन्दी में अपना रंग जमाना शुरू किया है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मार्क्स के वैज्ञानिक भौतिकवाद से प्रभावित ही नहीं, काव्य में उसका अक्षरशः अनुवाद भी चाहता है। अतः साहित्य की उत्कृष्टता से अधिक महत्त्व सैद्धांतिक विचार को मिल जाना स्वाभाविक है। * * * वह राजनीतिक दलों के समान साहित्यकारों का विभाजन कर अपने पक्ष में बहुमत और दूसरे पक्ष में अल्पमत चाहता है।"

इस प्रकार की दलबद्ध संकीर्णता से घिरा हुआ प्रगतिवाद निश्चय ही साहित्य को किसी निश्चित और स्थायी कल्याण के पथ पर ले चलने में असमर्थ है। उसे केवल एक ऐसा बुद्धिजीवी वर्ग अपना सकता है जो "जीवन के स्वाभाविक और सजीव स्पर्श से दूर रहने का अभ्यस्त हो चुका है। परिणामतः एक ओर उसका मस्तिष्क विचारों की व्यायामशाला बन जाता है और दूसरी ओर हृदय निर्जीव चित्रों का संग्रहालय मात्र रह जाता है।"

वास्तव में हमारे साहित्य में ऐसे सच्चे और साधनाशील प्रगतिवादियों की बड़ी आवश्यकता है जो समाज और साहित्य की वास्तविक प्रगति की सच्ची लगन से प्रेरित होकर चिंतन करते हैं, और सच्ची पीड़ा से आकुल होकर प्रगति की आवश्यकता को महसूस करते हैं; जो बहुत व्यापक, ऊँचे और साथ ही गहरे दृष्टिकोण से प्रगति की नाप-जोख करते हैं, और अपने मतवाद के चारों ओर किसी प्रकार की सम्प्रदायिक चहारदीवारी खड़ा करना पसंद नहीं करते।

श्लीलता और अश्लीलता का प्रश्न यद्यपि सच्चे प्रगतिवाद से कोई संबंध नहीं रखता, तथापि कुछ नवीन कलाकारों ने उसे जबर्दस्ती झूठे प्रगतिवाद की पूँछ के साथ बाँधकर एक नयी समस्या खड़ी कर दी है। वर्तमान प्रगतिवाद की प्रारंभिक अवस्था में कुछ नग्नतावादियों ने प्रगतिवाद की आड़ में स्त्री-पुरुष-संबंधी विषयों को लेकर अपने अन्धकारमय हृदय के फफोले इस भयंकर रूप से फोड़ने शुरू कर दिये थे कि श्लीलता और अश्लीलता का महत्त्वहीन प्रश्न, जो दब चुका था, फिर एक बार पूरे प्रवेग से उभर पड़ा। इस प्रश्न के संबंध में हमारी यह धारणा सदा से रही है कि अपने-आप में कोई वस्तु न श्लील है न अश्लील; देश, काल, पात्र और उद्देश्य की आपेक्षिकता एक ही घटना, कार्य या भाव को कभी अश्लील बना देती है और कभी श्लील। महादेवी जी के विचार हमारे दृष्टिकोण से पूर्णतः मिलते हैं। उनका कथन है कि "व्यापक अर्थ में ये भाव (श्लीलता और अश्लीलता) जीवन के प्रति सम्भव और असम्भव के पर्याय हो सकते हैं। जिस भाव, विचार, संकल्प, संकेत और कार्य से जीवन के प्रति सदिच्छा प्रकट होती वे सब अश्लील की परिधि में रखे जा सकेंगे। जो चिकित्सक रोगी के शरीर की परीक्षा करता है वह अश्लील नहीं कहा जाता। पर यदि राह में कोई उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगी की पगड़ी उतारकर कहे कि जब चिकित्सक को पीठ दिखाने में लज्जा नहीं आई तब यहाँ सिर उघड़ जाने में क्या हानि है, तो इस कार्य को श्लील नहीं कहा जा सकेगा।"

तथाकथित 'विकृत और अश्लील' चित्रों के चित्रण से महादेवी जी को कोई आपत्ति नहीं है, बशर्ते उन चित्रों का लेखक उस विकृति अथवा अश्लीलता के रस में स्वयं डूबा न होकर तटस्थ हो—केवल तटस्थ हीं नहीं, बल्कि उसका उद्देश्य निश्चित रूप से उन 'विकृत तथा अश्लील' चित्रों के अंकन द्वारा प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूपों से एक मांगलिक आदर्श की स्थापना करने का हो ; वह एक ऐसे गोताखोर की तरह हो "जो केवल तट पर कीचड़ और घोंघों का ढेर लगाने के लिये समुद्र की अतल गहराई में नहीं धँसता," बल्कि "उस मोती को निकाल लाता है जिससे संसार अपरिचित था और जिसे पाकर मनुष्य खारे जल और भयानक जल-जंतुओं से भरे समुद्र को रत्नाकर नाम देता है।"

वर्तमान हिंदी साहित्य में झूठे यथार्थवाद का जामा पहने हुए जिस आदर्शहीन सस्ते सेक्सवादी साहित्य की भरमार पाई जाती है उसके मूल में, महादेवी जी की राय में, "हमारे समाज की समष्टिगत विकृति" के अलावा "यूरोप के पतनशील साहित्य में मिलनेवाले फ्रायडियन सिद्धांत" भी हैं। महादेवी जी के मतानुसार "हमारी स्वभावगत विकृति से अधिक हानिकारक फ्रायडियन प्रवृत्ति है, क्योंकि वह व्यक्ति की विकृति को संरक्षण ही नहीं देती, वरन् उसे सामान्य बनाने के लिये एक कल्पित सिद्धांतवाद भी देती है।"

स्वस्थ यथार्थवादी दृष्टि और उन्नत आदर्शवादी अनुभूति से रहित, उच्छृंखल, उत्तरदायित्वहीन और कामदग्ध लेखकों की विकृतियों के लिये फ्रायडियन सिद्धांतों को दोषी ठहराकर महादेवी जी ने फ्रायड के साथ न्याय नहीं किया है, ऐसा कहने को हमें बाध्य होना पड़ता है। हमारे कहने का तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि फ्रायड के सिद्धांत निभ्रांत और निरापद हैं। पर इतना हम कह सकते हैं कि यदि हम उन प्रकट रूप में भूल-भ्रांति से भरे सिद्धांतों की गहराई में पैठकर उनकी विशेषता की परख करें, और बिना किसी पूर्व संस्कार के उनके सामूहिक अर्थों के भीतर छिपे हुए गहन रहस्यवाद आदर्शवाद की खोज में जुट जावें, तो हमको मालूम होगा कि मानव-स्वभाव के उदात्तीकरण की प्रक्रिया में, हिमालय-तुल्य विराट् बाधाओं के दूरीकरण के प्रयास में, जिन प्रारंभिक सीढ़ियों का निर्माण फ्रायड ने किया है, मानवीय सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में उनका महत्त्व अमर है। असल बात यह है कि कुछ ऐसे ज्ञान-लव-दुर्विदग्ध 'कलाकारों' ने (दूसरे आलोचकों के साथ) महादेवी जी को भी इस भ्रम में डाल दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि उन्होंने अपने गलित और अस्वास्थ्यकर यथार्थवाद की प्रेरणा फ्रायड से पाई है, हालांकि ऐसे कलाकारों में से ९९ प्रतिशत ऐसे होते हैं जो फ्रायडियन सिद्धांतों का ककहरा भी नहीं जानते; फ्रायड के संबंध में केवल दूसरों से सुनी-सुनाई बातों की पूँजी को अपना संबल बनाकर वे 'मनोवैज्ञानिक कथाकार' के नाम से अपना झूठा परिचय दुनिया को देते फिरते हैं। और जिन लोगों से ये 'मनोवैज्ञानिक कथाकार'-गण फ्रायडियन सिद्धांतों के बारे में सुनते हैं उनमें से भी ९९ प्रतिशत ऐसे होते हैं जो दो-एक फ्रायडियन पुस्तकों के पन्ने उलटकर उनकी वर्णमाला-मात्र जान लेते हैं, और उतने ही से अपने को दिग्गज मनोविश्लेषक करार देने लगते हैं।

किसी भी विद्या का अधूरा ज्ञान हानिकारक होता है, फिर फ्रायडियन मनोविज्ञान का अधूरा ज्ञान तो निश्चय ही घातक सिद्ध होता है। यूरोप के बहुत से अधकचरे व्याकार फ्रायडियन मनोविज्ञान का बिल्ला लगाकर साहित्यिक आत्महत्या कर चुके हैं, फिर हमारे यहाँ के अधकचरों के संबंध में तो कहना ही क्या है। तिसपर विशेषता यह कि हमारे यहाँ के दिग्गज कथाकार फ्रायडियन सिद्धांतों का अधूरा ज्ञान भी नहीं रखते—जैसा कि पहले कह आए हैं, फ्रायडियन विज्ञान के ककहरे से भी वे लोग भली भाँति परिचित नहीं रहते। ऐसी हालत में ऐसे निपट अज्ञ तथाकथित 'मनोवैज्ञानिक कलाकारों की गंदी यथार्थवादिता के लिये फ्रायडियन सिद्धांतों का तिरस्कार करना कहाँ तक युक्ति-संगत है, यह विचारणीय है।

फ्रायड के सिद्धांतों पर यदि हम लोग ऊपरी स्तर पर से विचार करें तो वे निश्चय ही वीभत्स, विकृत, अस्वास्थ्य कर और समाजघाती जान पड़ेंगे। पर यदि हम उस सारी ऊपरी गंदगी के बावजूद उस मानव-कल्याणकारी अस्त्र-चिकित्सक, उस परम मांगलिक ऋषि के अन्तरोद्देश्य की ओर दृष्टिपात करें तो हमें बरबस, उसकी भयंकर भूलों और भ्रांतियों के बाजूद भी, भक्ति से उसके आगे प्रणत होना पड़ेगा। उस महान् आत्मा की अगाध अंतर्दर्शिता की केवल सतह पर सरसरी नजर फेरकर जो लेखक 'यथार्थवादी फ्रायडियन कथाकार' बन बैठते हैं वे निश्चय ही साहित्य में घोर घातक प्रवृत्तियों का प्रचलन करते हैं, और यदि महादेवी जी ने उन्हें तिरस्कृत किया है तो उचित ही किया है।

स्त्री-पुरुष के यौन-संबंध को लेकर नवीन यथार्थवादी लेखकों ने यथार्थवाद की जो छीछालेदर की है और स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम-संबंधी आदर्श को जो अत्यंत हीन और विकृत रूप दिया है उसकी निंदा करते हुए महादेवी जी ने अपने पक्ष-समर्थन में लेनिन के वाक्य उद्धृत किए हैं। कोई भी सच्चा जन-नायक स्त्री-पुरुष संबंधी चारित्रिक भ्रष्टता का पक्ष-समर्थन कभी नहीं कर सकता। लेनिन एक जन-हितैषिणी, ऐति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हासिक, अन्तरराष्ट्रीय क्रान्ति का विधायक था, फलतः वह कभी इस प्रकार की चारित्रिक विकृति को प्रश्रय नहीं दे सकता था। इसलिये उसने यदि इस मनोवृत्ति की निंदा की है तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। पर यदि इसी कारण उसने वास्तव में फ्रायडियन सिद्धांतों की भी निन्दा की है तो हमें खेद के साथ यह कहना पड़ेगा कि उसे भी पिछले युग के बहुत-से अन्य नीतिनिष्ठों की तरह उन सिद्धांतों के ऊपरी रूप से धोखा हुआ, और उनकी गहराई में पैठकर उनके यथार्थ महत्व का अध्ययन करने का अवकाश उसे नहीं मिला।

महादेवी जी ने उस मनोवृत्ति की भी तीव्र निन्दा की है जो भारतीय संस्कृति की संपूर्ण उपेक्षा कर विदेशी संस्कृति से उधार-प्राप्त प्रत्येक हीन से हीन और गलित से गलित भावधारा को अत्यंत लोलुपता के साथ अपनाने को दौड़ती है। वास्तव में भारतीय संस्कृति सहस्रों वर्षों से सत्य, सुन्दर और मंगल के ऐसे-ऐसे स्वरूपों को पूरी प्राणशक्ति से अपनाती आई है जिन्होंने विश्व-जीवन को नित्य नयी प्रेरणा और अभिनव ज्योति प्रदान करके चिर-प्रगतिशील पथ आलोकित किया है। उन युग से युगांतर का पथ सुझानेवाले, कभी न बुझनेवाले मशालों की अवज्ञा करके विदेशों की क्षणिक प्रकाशशील फुलझड़ियों, आतिशबाज़ियों और पटाखों की ओर दौड़ने वाले इस युग के लेखक-रूपी आत्मनाशी पतिंगों के लिये दुःख होना महादेवी जी जैसी सहृदय और दूरदर्शी लेखिका के लिये स्वाभाविक है।

महादेवी जी विशुद्ध भारतीय संस्कृति की सच्ची उपासिका हैं, यह उनकी एक महान् विशेषता है। पर इस संबंध में हम एक नम्र निवेदन करना चाहते हैं। सारी पुस्तक पढ़ जाने के बाद हमारे मन पर यह प्रभाव पड़ने लगता है कि उनकी इस उपासना ने 'अति' की मात्रा तक पहुँचकर एकांगीयता का-सा रूप धारण कर लिया है। परंपरागत भारतीय संस्कृति को एकदम अछूती, अमिश्रित और विदेशी संस्कृतियों के प्रभाव से एकदम वर्जित समझना भूल की आशंका से खाली नहीं है। वास्तव में भारतीय संस्कृति पर युग-युग में विभिन्न विदेशी संस्कृतियों का जितना प्रभाव पड़ा है उतना किसी दूसरे राष्ट्र की संस्कृति पर नहीं। हमारी संस्कृति की महानता, परिपुष्टता, विशालता और गहराई का प्रधान कारण ही उसकी यही विशेषता रही है। प्राचीनतम काल से लेकर आज तक विभिन्न जातियाँ भारत के इस महामानव-क्षेत्र में आकर विलीन होती चली गईं और उनके साथ ही उनकी संस्कृतियाँ भी यहाँ की संस्कृति से घुल-मिलकर एकरूपता में परिणत होती रहीं। उनके संमिश्रण से यहाँ की सांस्कृतिक मिट्टी अधिक फलप्रसू हुई है, बंध्या नहीं। और तो और, स्वयं जो वैदिक संस्कृति यहाँ की मूल संस्कृति मानी जाती है, उसके संबंध में भी इतिहास-पूर्व काल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अध्ययनार्थियों ने यह सिद्ध किया है कि वह भी संसार की नाना विभिन्न संस्कृतियों (सुमेरियन, हिट्टाइट, एसीरियन, बेबिलोनियन आदि) से प्रभावित थी। इस संबंध में मतभेद हो सकता है, पर इतना निश्चित है कि भारतीय संस्कृति की मूलधारा समय-समय पर विदेशी संस्कृतियों की उपधाराओं से बराबर पुष्ट होती आई है। ऐसी हालत में यदि वर्तमान संक्रान्ति-काल में भी किसी पाश्चात्य संस्कृति की नयी धारा बड़े वेग से उमड़कर हमारी मूलधारा से मिलने के लिये आकुल है तो उससे घबराने का कोई कारण नहीं होना चाहिये। यह निश्चित है कि उस विदेशीधारा में जो आविलता होगी वह हमारी मूलधारा में कभी स्थिर नहीं रहने पावेगी, पर उसमें जो प्राणशक्ति छिपी होगी वह भारतीय संस्कृति को एक स्वास्थ्यवर्द्धक रासायनिकता प्रदान करेगी, और यही महादेवी जी चाहती हैं।

अंत में समष्टि रूप से महादेवी जी के विवेचनात्मक गद्य की विशेषता के संबंध में हम संग्रहकार श्री गंगाप्रसाद जी पांडेय के शब्दों में कहना चाहते हैं कि "वह हिंदी-आलोचना-पद्धति के विकास में [illegible] निश्चित पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ होगी।" इनकी वर्तमान पुस्तक हिन्दी के [illegible]ालोचना-साहित्य के इतिहास में एक अत्यंत महत्व-पूर्ण मील के पत्थर की तरह है। यदि हिन्दी के अन्य आलोचकगण महादेवीजी के साधनात्मक और सहृदयतापूर्ण गहन चिंतन द्वारा प्रसूत इस विवेचना से लाभ उठा सकें तो यह हिन्दी के लिये निश्चय ही बड़े सौभाग्य की बात होगी।

श्रीकृष्ण किंकर जी की चीन-यात्रा

"आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि चीन सरकार ने चीन के यूनान प्रान्त के कुमिङ् शहर में पूर्वी भाषा कालेज की स्थापना की है और भारतीय भाषाओं में से एक मात्र हिन्दी को ही स्थान दिया गया है। पढ़ाई नागरी लिपि द्वारा होगी। मेरे जानते भारत के बाहर संसार में यह पहला ही स्थान है जहां हिन्दी के लिए इस प्रकार की व्यवस्था की गई हो। मैं उसी कालेज में अध्यापक होकर जा रहा हूँ। चीन ने निमन्त्रण-पत्र और मार्ग-व्यय दोनों ही भेज दिया है। मैंने पासपोर्ट के लिए प्रबन्ध भी दे दी है और सम्भवतः दिसम्बर के अन्त तक वह मुझे मिल भी जायेगा।"

श्रीकृष्ण किंकर सिंह ने हमें अपने ७—१२—४३ के पत्र में लिखा है। निस्संदेह यह तो किसी भी हिन्दी-सेवी व्यक्ति या संस्था के लिए केवल प्रसन्नता ही की नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गर्व की बात भी है। चीन और भारत का सांस्कृतिक सम्बन्ध कितना पुराना है—साहित्य, कला, दर्शन, विज्ञान और यहाँ तक कि धर्म में भी इन पड़ोसी देशों ने एक दूसरे को कितना प्रभावित किया है; इतिहास जाननेवाले अच्छी तरह जानते हैं। भौतिक जड़ता के घेरे से निकल कर जिस दिन मानव बौद्धिक चेतना की ओर बढ़ा था, वह दिन तो भारत और चीन के इतिहास में, गंगा और यांगट्सी-क्यांग की तलहटी में, आज भी देखा जा सकता है। उज्ज्वल और प्रकाशमय, साथ ही शान्त और सदय, ऐसा था वह दिन, जब भारत चीन ने कन्धे से कन्धा मिलाकर, मनुष्य में जो कुछ बर्बर और असंयत था, उसे एक ही झटके में फेंक दिया था। हूणों की बाढ़ रोकने के लिए चीन और भारत की जन-शक्ति एक ही साथ आगे बढ़ी थी। चीन के साथ यदि इस देश का सम्पर्क इतना न बढ़ा होता हो कदाचित हमारे भौतिक और आध्यात्मिक जीवन की रूप-रेखा कुछ और रहती। आचार्य तान युन-सान के शब्दों में—

"चीन का यूरप के साथ का सम्पर्क भारतीय सम्बन्ध की तरह आनन्ददायक नहीं रहा। जब चीन और भारत एक साथ मिला था तो उनमें सम्मान और प्रेम की भावना थी। भद्र मित्रों की तरह दोनों देशों ने अपने अपने अभिवादन और उपहारों का आदान-प्रदान किया था। दोनों के हृदय में एक दूसरे के प्रति कपट और छल का भाव नहीं था और न किसी प्रकार का स्वार्थ ही। दोनों के अभिप्राय और कार्य, वचन और कर्तव्य शुद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक थे। परन्तु जब यूरोपीय जाति चीन में आई उसने पहले धर्मप्रचार शुरू किया, उसके बाद व्यापार और अन्त में शोषण।"

'विश्वभारती' कार्तिक २००

हज़ारों वर्षों के बाद गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ने चीन के साथ भारत की संस्कृति का फिर सम्बन्ध जोड़ा। उनकी विश्व-भारती में चीनी साहित्य, कला और दर्शन को जगह मिली। इधर इस महायुद्ध ने चीन और भारत के बीच राजनैतिक सम्बन्ध भी पैदा किया और आज वह दिन भी देखने को मिला जब कुमिङ के पूर्वी भाषा विद्यालय में हिन्दी को जगह मिली और श्रीकृष्ण किंकर सिंह वहाँ हिन्दी के अध्यापक रूप में बुलाये गये। श्रीकृष्ण किंकर जी हिन्दी की उत्कृष्ट पुस्तकें उस विद्यालय के लिए प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं। इस अवसर पर हिन्दी के प्रत्येक लेखक और प्रकाशक का कर्तव्य है कि पुस्तकें देकर श्री सिंह की कामना पूरी करे। कुमिङ् विद्यालय के पुस्तकालय में हिन्दी कृतियों को देखकर हमारा साधक अपने को धनी समझेगा इससे उसकी निष्ठा और साधना को बल मिलेगा। यह गौरव केवल श्रीकृष्ण किंकर सिंह का न होकर हमारी भाषा का, हमारे लेखकों और कवियों का हमारे विचारों का होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीकृष्ण किंकर सिंह चीनी पुस्तकों के अनुवाद हिन्दी में करना चाहते हैं। वे अपने उद्देश्य में सफल हों हमारी यही कामना है। प्रो० तानयुन-सान, चीन भवन, पो० शान्ति निकेतन, बोलपूर E. I. R. के पते पर पुस्तकें भेजी जानी चाहिए। हिन्दी के लेखक और प्रकाशक अपने इस कर्तव्य में पीछे न रहेंगे, हमारी ऐसी धारणा है।

[लक्ष्मीनारायण मिश्र]

समालोचना

टूटे हुए दिल—लेखक—श्री रामप्रताप बहादुर, प्रकाशक—हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद, मूल्य २)।

इस कहानी-संग्रह में लेखक ने अपनी लम्बी भूमिका में अपने साहस, विश्वास और बौद्धिक क्षितिज का जो रूप हमारे सामने रक्खा है, सब ओर से उससे सहमत न होते हुए भी लेखक को स्रष्टा और विचारक एक ही साथ मान लेने में हमें कोई आपत्ति नहीं। 'अपनी और पराई बात' के साथ जब हम कहानियों की ध्वनि के भीतर साँस लेते हैं, "मैं स्वयं अपनी कोटि का हूँ" कार्ल स्तर्नर का चकाचौंध पैदा करनेवाला व्यक्तिवाद प्रायः एक शताब्दी के बाद क़ब्र से सिर निकाल कर फिर झांकने लगता है। लेखक अपने उपकरणों में तो व्यक्तिवादी हैं और आवरण में समाजवादी। इस स्थिति में जीवन और जगत का जो मापदण्ड हमें इन कहानियों में मिलता है वह तो कुछ ऐसा लगता है जैसे विश्वामित्र की तपश्चर्या के बीच ऊर्वशी की लालसा। लालसा से जीवन अलग नहीं किया जा सकता, किन्तु जीवन में लालसा का यथार्थ अनुपात निश्चित करना ही साहित्यकार की सफलता है।

"उस चालीस करोड़ कलुषित, गर्हित और पीड़ित मानवता को देखें जो उन्हें अपने दुख-दर्द की कहानी सुनाने को तैयार है, ताकि यह लोग उसके प्रति साहित्यिक होने के नाते अपना कर्तव्य पूरा कर सकें" प्रस्तुत लेखक श्री रामप्रताप बहादुर का यह उपदेश जमाने के हिसाब से कितना सटीक है, हमारे लेखकों को इस पर ईमान-दारी के साथ सोचना होगा। और सोचने की हालत में यदि कोई लेखक कह बैठें, कि दूसरों की मुक्ति के लिए तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो? पहले अपनी तो मुक्ति कर लो। तुम जो निर्माता बनने चले हो, अपनी नज़र अपने भीतर दौड़ा कर देखो, कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम्हारी निजी वासनायें साहित्य और कला का रंग भरकर दूसरों का उपकार करने चली हैं? हम इस विचार का भी स्वागत करेंगे। वास्तव रूप से तो एक ही विचार के ये दो पहलू हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस संग्रह की "अधूरी चिट्ठी" जैसे हर कहानी में व्याप्त सी है। मरणासन्न रोगी खाँसी और उसके साथ निकलने वाले रक्त को दबाकर प्रेम-पत्र लिख रहा है। पत्र समाप्त भी नहीं होता और उसका दम टूटा जाता है। आह! इस प्रेम से मानवता कभी मुक्त न होगी? पुराने विचारकों ने कहीं इसीलिए तो प्रवृत्ति के दमन पर ज़ोर नहीं दिया था? जिसका आधुनिक साहित्य में उपहास हो रहा है। सिनेमा भवन में ज़रीना पर पहले पहल प्रेमी की नज़र पड़ती है। कोई जान-पहचान नहीं। परिचय का कोई दूसरा साधन नहीं। उसी रात स्वप्न में प्रेमी को ज़रीना का नाम मालूम हो जाता है।

जीवन की यथार्थ अनुभूति में ऐसी बातों को स्थान नहीं। कल्पना की नशा, शराब की नशा से गहरी हुआ करती है। कच्ची बुद्धि के पाठक यह सब सच मानकर जीवन का स्वाभाविक पथ छोड़कर अपना और समाज का अनिष्ट करते हैं।

लेखक में शक्ति है, प्रतिभा है, बौद्धिक विश्लेषण की क्षमता है। साहित्यकार की महिमा बहुत कुछ कह देने में नहीं, बहुत कुछ रोक लेने में है। यदि इस विचार-धारा के साथ लेखक का मेल हो सका तो निस्सन्देह हिन्दी साहित्य को इनकी प्रतिभा से लाभ होगा।

हिंदी में अपने ढंग की पहली पुस्तक

कैलास-मानसरोवर

(सचित्र)

पवित्र कैलास-शिखर की १५ और पुनीत मानसरोवर की १७ परिक्रमाएँ किये हुए श्री कैलास-मानस-तीरवासी

श्री १०८ प्रणवानंद जी महाराज

लिखित

स्वामी जी ने घोर शीतकाल में भी पुनीत मानसरोवर के तट पर निवास करके श्री कैलास और पुतीत मानसरोवर संबंधी जिन बातों का परिचय इस पुस्तक में कराया है वे एकदम नयी, आश्चर्यजनक, आनंददायक और रोमांचकारी हैं। पुस्तक छप कर तैयार है। मूल्य १०)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्यप्रकाश

अनुवादक—स्वर्गीय पंडित हरिमंगल मिश्र, एम० ए०

मम्मटाचार्च विरचित काव्यप्रकाश संस्कृत में काव्य-शास्त्र-संबंधी एक अनुपम रत्न है। आज तक हिंदी में उसका कोई प्रामाणिक अनुवाद न होने से संस्कृत न जानने वाले हिंदी के पाठक उसके विशेषत्व और महत्व से अपरिचित थे। इसी बात को ध्यान में रखकर यह पुस्तक विशेष रूप से तैयार कराई गई है। स्वर्गीय श्री हरिमंगल जी मिश्र कई वर्ष पूर्व इस अमूल्य पुस्तक का हिंदी अनुवाद करके उसे अप्रकाशित अवस्था में छोड़ गए थे। उनके अनुवाद के साथ मूल भाग नहीं था। इसलिये मूल संस्कृत टेक्स्ट यथा-स्थान जोड़कर यह अत्यन्त उपादेय अनुवाद प्रकाशित किया गया है। काव्यतत्त्व-जिज्ञासु सज्जन इससे अवश्य ही लाभान्वित होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। मूल्य ६)

पताः—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।

संस्कृति का अग्रदूत **धर्म-दूत** सचित्र मासिक पत्र

सम्पादक—सुमन वात्स्यायन

आप जानना चाहेंगे कि संसार में भारतीय संस्कृति का कैसे प्रचार हुआ? 'धर्म-दूत' में आप पढ़ेंगे कि चीन, कोरिया, मलाया, तिब्बत, तुर्किस्तान, ईरान, अफगानिस्तान, जावा, सुमात्रा आदि देशों में कब और कितनी भयंकर आपत्तियों का सामना करके हमारे पूर्वजों ने भारतीय संस्कृति, सभ्यता, साहित्यकला, विज्ञान और धर्म का प्रचार किया। आप भगवान बुद्ध के उन अनुचरों को भूल गये हैं। 'धर्म-दूत' द्वारा उनसे परिचित होकर आपका हृदय उत्साह और साहस से भर जायगा। अपने गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण कर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकेंगे।

पताः—'धर्म-दूत' कार्यालय, सारनाथ (बनारस)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख को निकलता है।

इसमें—

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनाएँ और राष्ट्र-भाषा-प्रचार-समिति की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा दो रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिए।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार' वर्धा

सामान्य-भाषाविज्ञान

लेखक—श्री बाबूराम सक्सेना

भाषा-विज्ञान संबंधी यह पुस्तक सामान्य श्रेणी के पाठक और भाषा-विद्यार्थी के प्रारंभिक विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर लिखी गई है। पर यह होने पर भी उक्त विषय का कोई भी महत्वपूर्ण तथ्य छूटने नहीं पाया है, और विशेषज्ञ भी इस पुस्तक से काफी लाभ उठा सकेंगे—ऐसी हमारी धारणा है। ऐसे जटिल और नीरस (तथापि अवश्य जानने योग्य) विषय को लेखक ने ऐसा सुगम, सुबोध—बल्कि रोचक—बना दिया है कि आश्चर्य होता है। लेखक अपने विषय के विशेषज्ञ हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दी में यह पुस्तक अपने ढंग की एक ही है। पुस्तक तीन परिशेषों में क्रम से लिपि का इतिहास, ग्रन्थसूची तथा समाधान, और पारिभाषिक शब्द-सूची सन्निविष्ट हैं। मूल्य ४)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

भारत-गीत	≡)
राष्ट्रभाषा	॥)
शिवाबावनी	≡)
भागवत पूर्वार्द्ध	१), १।)
सूरदास की विनयपत्रिका	≡)
नवीन पद्यसंग्रह	।॥)
नारी-संग्रह	≡)
श्री कण्णकी	॥)
हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव	॥=)
...ों का आर्थिक पुनरुद्धार	१।)

साधारण पुस्तकमाला

...र की राज्यव्यवस्था	१)

...ज्ञानिक पुस्तकमाला

शरीर-विज्ञान	॥), ।॥)
...क रसायन	१)
...ी कथा	१)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला	।)
२ बाल-कथा भाग २	।=)
३ बाल विभूति	≡)
४ वीर पुत्रियाँ	।=)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र	३)
२ कृषि प्रवेशिका	१)
३ विकास (नाटक)	॥=)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र	३॥)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति	१।=)
६ गावों की समस्यायें	१)
७ मीराँबाई की पदावली	२॥)
८ भट्ट निबंधावली	१।)
९ बंगला-साहित्य की कथा	१।)
१० शिशुपाल वध	२)
११ ऐतिहासिक कथायें	।॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर	॥)

नवीन पुस्तकें

मैथिली लोकगीत—रामइक़बालसिंह 'राकेश', भूमिका लेखक—पण्डित अमरनाथ झा	३)
...रखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल	३)
...वाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी	१॥)
...वंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन	३)
...दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी	३॥)
...का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट	१॥)
...थानी लोकगीत—स्व० सूर्यकरण पारीक	१)
...न्य भाषाविज्ञान—डा० बाबूराम सक्सेना	४)
...प्रकाश—मम्मटाचार्य, अनुवादक स्व० हरिमंगल मिश्र	६)
...चार-पत्र शब्दकोष—डा० सत्यप्रकाश डी० एस-सी०	१॥)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं, मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में इनका मुकाबला नहीं हो सकता। ये बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ४४०—२५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)
द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४१४—२४ डिमा साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अ कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के फो स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा

२. श्री सुमित्रानन्दन पंत ३. श्री रामकुमार व

४. श्री गोपालशरण सिंह

प्रत्येक का मूल्य २)

मिलने का पता :

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक—श्रीरामप्रसाद त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग
मुद्रक—श्रीगिरिजाप्रसाद श्रीवास्तव, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मेलन-पत्रिका

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मुख-पत्रिका

आषाढ़, श्रावण, २०००

२०-१२-४३

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपादक—श्री रामचंद्र टंडन, साहित्य मंत्री

विषय-सूची

१. असम के व्रजावली साहित्य का दार्शनिक स्वरूप—
श्री के० आर० मेधी, एम्० ए० - - - १
२. जयशंकर प्रसाद : सामान्य प्रवृत्तियाँ—श्री शंभुप्रसाद
बहुगुना, एम्० ए० - - - - १७
३. समालोचना - - - - २१

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अभूतपूर्व प्रकाशन

प्रेमघन-सर्वस्व

(प्रथम भाग)

'दो शब्द'-लेखक, माननीय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन

परिचय-लेखक, स्वर्गीय आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल

आधुनिक हिन्दी के एक निर्माता, हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति, स्वर्गीय उपाध्याय पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' की सम्पूर्ण कविताओं का विशाल संग्रह-ग्रंथ। हिन्दी में प्रथम और अपूर्व काव्य। लेखक के चित्रों से सुसज्जित और सजिल्द।

मूल्य ४॥)

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

(३) संवत् २००० की मध्यमा परीक्षा के हिन्दी साहित्य विषय की निम्नलिखित पुस्तकें अप्राप्य हैं। अतः इन पुस्तकों में से प्रश्न नहीं पूछे जायंगे—

साहित्य (प्रथम प्रश्नपत्र)—

भगवतीप्रसाद वाजपेयी और गुर्ती सुब्रह्मण्य—आधुनिक वीर काव्य (हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

साहित्य (तृतीय प्रश्नपत्र)—

रसाल—सम्मेलन निबन्धमाला, भाग १ (हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

साहित्य (चतुर्थ प्रश्नपत्र)—

गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश'—सम्मेलन निबन्धमाला, भाग २ (हिन्दी साहित्य सम्मेलन)

परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्रों के साथ पोस्टल रसीद या व्यवस्थापक के हस्ताक्षर की रसीद रहनी चाहिये।

काशीदत्त पाण्डेय, एम० ए०
रजिस्ट्रार
हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग

हिंदी में अपने ढंग की पहली पुस्तक

कैलास-मानसरोवर

(सचित्र)

पवित्र कैलास-शिखर की १५ और पुनीत मानसरोवर की १७ परिक्रमाएँ किये हुए श्री कैलास-मानस-तीरवासी

श्री १०८ प्रणवानंद जी महाराज

लिखित

स्वामी जी ने घोर शीतकाल में भी पुनीत मानसरोवर के तट पर निवास करके श्री कैलास और पुनीत मानसरोवर संबंधी जिन बातों का परिचय इस पुस्तक में कराया है वे एकदम नयी, आश्चर्यजनक, आनंददायक और रोमांचकारी हैं। पुस्तक छप कर तैयार है। मूल्य १०)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुभती हुई शैली और चुहचुहाती भाषा पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है। कुछ बालकोपयोगी कविताएँ भी बहुत सुन्दर और सुघड़ हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि ख़ामियाँ होते हुए भी 'आरसी' का रचयिता वास्तविक अर्थ में कवि है, और हमें इस बात की आशा करनी चाहिये कि उसके कवित्व का उत्तरोत्तर विकास उसे आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत् में एक निश्चित स्थान प्रदान करने में समर्थ होगा। उसकी कलात्मकता वास्तव में प्रशंसनीय है। रही विचारों की गम्भीरता और दृष्टिकोण की प्रगतिशीलता। वर्तमान संग्रह की कुछ सम्मुन्नत कविताओं से हमें इस बात के सुस्पष्ट लक्षण दिखाई देते हैं कि कवि के जीवन की अनुभूतियाँ उत्तरोत्तर गहन होती जा रही हैं, जिनसे स्वभावतः उसका दृष्टिकोण सच्ची प्रगति का पंथ पकड़ लेगा ऐसी आशा करनी चाहिये।

—इलाचंद्र

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख़ को निकलता है।

इसमें—

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनाएँ और राष्ट्र-भाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा दो रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिए।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार', वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

(हिन्दी विश्वविद्यालय)

परीक्षार्थियों को आवश्यक सूचना

(१) इस वर्ष सम्मेलन की सब परीक्षाएँ ता० १५ नवम्बर सन् १९४३ से आरम्भ होंगी और उनके आवेदनपत्र ता० ५ अगस्त, सन् १९४३ तक स्वीकार किये जायंगे। जो परीक्षार्थी उक्त तारीख तक अपने आवेदनपत्र कार्यालय में नहीं भेज सकेंगे उनके प्रार्थनापत्र उपाधि परीक्षाओं के लिये एक रुपया और छोटी परीक्षाओं के लिये आठ आना अतिरिक्त शुल्क लेकर १ सितम्बर, सन् १९४३ तक स्वीकार किये जायंगे। उक्त तिथि के पश्चात् फिर किसी परीक्षार्थी का आवेदनपत्र स्वीकार न हो सकेगा।

(२) इस वर्ष परीक्षा समिति ने निश्चय किया है कि उत्तर-पुस्तकों के निरीक्षण करने के उपलक्ष्य में परीक्षकों को कुछ पारिश्रमिक दिया जाय। अतः परीक्षा शुल्क में कुछ वृद्धि की गई है। प्रत्येक परीक्षा का शुल्क नीचे लिखे अनुसार रखना निश्चय हुआ है :—

प्रथमा सम्पूर्ण परीक्षा	३)	वैद्य विशारद अध्याय १ नियम १२ के अनुसार कुछ विषयों में सम्मिलित होने के लिये	४)
,, केवल साहित्य अध्याय ३ नियम ४ के अनुसार	३)	कृषि विशारद परीक्षा	७)
,, अध्याय १ नियम १२ के अनुसार कुछ विषयों में सम्मिलित होने के लिये	२)	सम्पादन-कला विशारद ,,	७)
मध्यमा सम्पूर्ण परीक्षा	७)	शीघ्रलिपि विशारद ,,	७)
,, केवल साहित्य अध्याय ३ नियम ७ के अनुसार	७)	व्यापार विशारद ,,	७)
,, अध्याय १ नियम १२ के अनुसार कुछ विषयों में सम्मिलित होने के लिये	४)	हिन्दी परिचय ,,	१)
उत्तमा सम्पूर्ण परीक्षा	१४)	हिन्दी कोविद ,,	२)
,, एक खण्ड ,,	७)	अर्जीनवीसी ,,	३)
साहित्य महोपाध्याय ,,	२५)	,, अध्याय १ नियम १२ के अनुसार कुछ विषयों में सम्मिलित होने के लिये	२)
वैद्य विशारद ,,	७)	मुनीमी परीक्षा	३)
		,, अध्याय १ नियम १२ के अनुसार कुछ विषयों में सम्मिलित होने के लिये	२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रजिस्टर्ड नं० ए० ६२६

. GC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जातक

[प्रथम तथा द्वितीय खण्ड]

अनुवादक : भदंत आनन्द कौसल्यायन

इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् पं० जयचन्द्र विद्यालंकार का कथन है कि "विश्व के वाङ्मय में 'जातक' जन-साधारण की सब से पुरानी कहानियाँ हैं; मनोरंजकता, सुरुचि, सरलता, आडम्बरहीन सौन्दर्य और शिक्षाप्रद होने में उनका मुक़ाबला नहीं हो सकता। ये बच्चों के लिये सरल और आकर्षक, जवानों और बूढ़ों के लिये भी रुचिकर और विद्वानों के लिये प्राचीन भारत के जीवन का जीता-जागता चित्रण करने के कारण अत्यन्त मूल्यवान हैं।"

प्रथम खंड, पृष्ठ संख्या ५४०—५५; डिमाई साइज़; सजिल्द मूल्य ५)
द्वितीय खंड, पृष्ठ संख्या ४६४—२४ डिमा. साइज़; सजिल्द मूल्य ५)

'आधुनिक हिन्दी कवि' माला

आधुनिक काल के श्रेष्ठ कवियों द्वारा अपनी सर्वोत्तम रचनाओं के संग्रह इस माला के अन्तर्गत छपे हैं। पुस्तकों के प्रारंभ में कवियों ने अपनी कविताओं की विचारधारा पर विस्तृत प्रकाश डाला है। कवियों के पेन्सिल स्केच, तथा हस्तलिपियाँ भी साथ हैं।

१. श्री महादेवी वर्मा

२. श्री सुमित्रानन्दन पंत · ३. श्री रामकुमार वर्मा

४. श्री गोपालशरण सिंह

प्रत्येक का मूल्य २)

मिलने का पता :

साहित्य मंत्री—हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक—श्री रामप्रसाद पोद्दार, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग।
मुद्रक—श्रीनारायणप्रसाद अरोरावंश, हिन्दी साहित्य प्रेस, प्रयाग।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित कुछ पुस्तकें

(१) सुलभ साहित्यमाला

१ भारत-गीत	≡)
२ राष्ट्रभाषा	॥)
३ शिवाबावनी	≡)
४ पद्मावत पूर्वार्द्ध	१), १।)
५ सूरदास की विनयपत्रिका	≡)
६ नवीन पद्यसंग्रह	॥।)
७ बिहारी-संग्रह	≡)
८ सती कयणाको	॥)
९ हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव	॥≈)
१० ग्रामों का आर्थिक पुनरुद्धार	१।)

(२) साधारण पुस्तकमाला

१ अकबर की राज्यव्यवस्था	१)

(३) वैज्ञानिक पुस्तकमाला

१ सरल शरीर-विज्ञान	॥), ॥।)
२ प्रारम्भिक रसायन	१)
३ सृष्टि की कथा	१)

(४) बाल-साहित्य माला

१ बाल नाटक-माला	।)
२ बाल-कथा भाग २	।≈)
३ बाल विभूति	≡)
४ वीर पुत्रियाँ	।≈)

(५) नवीन पुस्तकें

१ सरल नागरिक शास्त्र	३)
२ कृषि प्रवेशिका	१)
३ विकास (नाटक)	॥≈)
४ हिंदू-राज्य शास्त्र	३॥)
५ कौटिल्य की शासन-पद्धति	१।≈)
६ गावों की समस्यायें	१)
७ मीराँबाई की पदावली	२॥)
८ भट्ट निबंधावली	१।)
९ बंगला-साहित्य की कथा	१।)
१० शिशुपाल वध	२)
११ ऐतिहासिक कथायें	।॥)
१२ दमयन्ती स्वयंवर	॥)

नवीन पुस्तकें

१—मैथिली लोकगीत—रामइक़बालसिंह 'राकेश', भूमिका लेखक—पण्डित अमरनाथ झा	३)
२—गोरखबानी—डाक्टर पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल	३)
३—दीवाली और होली—(कहानी संग्रह) श्री इलाचन्द्र जोशी	१।)
४—महावंश—भदन्त आनन्द कौसल्यायन	३)
५—हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी—श्री नन्ददुलारे वाजपेयी	३॥)
६—स्त्री का हृदय—(एकांकी नाटक) श्री उदयशंकर भट्ट	१॥)
७—राजस्थानी लोकगीत—स्व० सूर्यकरण पारीक	१)
८—सामान्य भाषाविज्ञान—डा० बाबूराम सक्सेना	४)
९—काव्यप्रकाश—मम्मटाचार्य, अनुवादक स्व० हरिमंगल मिश्र	६)
१०—समाचार-पत्र शब्दकोष—डा० सत्यप्रकाश डी० एस-सी०	२)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113057
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग ३० : : संख्या ११, १२ : : आषाढ़, श्रावण, २०००

सम्मेलन-पत्रिका

असम के ब्रजावली साहित्य का दार्शनिक स्वरूप*

[श्री के० आर० मेधी, एम० ए०]

यह कहा जा चुका है कि जीव मायी (ईश्वर) की माया से आवृत होने के कारण अपने आपको भूलकर उससे विरत हो जाता है। चूँकि समस्त भूत (प्राणी) सर्वशक्तिमान् के ही अभिव्यक्त रूप हैं, और प्रत्येक जीव के हृदय में सर्वशक्तिमान् का निवास है, इसलिये जीव का प्राकृतिक धर्म यह है कि वह उस परम पिता को पहचान कर उसके प्रति श्रद्धा और भक्ति प्रकट करे, और उसके निकट रहे, जिससे वह उसी परम तत्त्व में लीन हो जावे या मोक्ष पा जावे। पर मायी की माया उसे सम्मोहित करके भ्रांति में डाल देती है, और वह उस सम्मोहन पर विजय प्राप्त करने में अपने को असमर्थ पाता है। अतएव श्री शंकरदेव जीव के भाग्य पर इस प्रकार विलाप करते हैं :—

"यह संसार एक गहन वन है; यह चारों ओर से सांसारिक विषय-तृष्णा-रूपी मोह-पाशों से घिरा हुआ है; उस निबिड़ अरण्य में जीव-रूपी हरिण भटकता फिरता है। वह माया के फंदे में जकड़ा हुआ है, और काल-रूपी व्याध उसे पकड़ने के लिये दौड़ा चला जा रहा है। काम-क्रोध रूपी कुत्ते काट खाने के लिये उसका पीछा कर रहे हैं। लोभ और मोह-रूपी दो बाघ उसे किसी समय भी चैन नहीं लेने देते—सब समय उसके पीछे लगे रहते हैं। उसकी चेतना खो गई। वह नहीं जान पाता कि इस भय और विषादमय भवसागर को वह किस प्रकार पार करे।"[1]

---

*इस लेख का प्रथम अंश सम्मेलन-पत्रिका की माघ-फाल्गुन १९९९ की संख्या में छप चुका है।

[1] ए भव गहन बन : अति मोहपाशे चन :
ताते [illegible] हरिण वेड़ाय ।
फन्दिलो मायार पाशे : काल व्याधे धाया आसे :
काम क्रोध कुत्ता खेदि खाय ॥
हराइल चेतन हरि : न जानो किमते तरि :
गुणिते दगध भेल जीव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
113057

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फल यह होता है कि जीव या तो पुण्यकर्म करता है या पापकर्म, और कर्म के अनुसार ही फलभोग करता है। जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है, उसे अपने पुंजीभूत पुण्य या पापकर्मों का फल मृत्यु के पूर्व तथा उसके बाद—दोनों दशाओं में भुगतना होगा, और उन समष्टिगत प्रवृत्तियों को लेकर फिर से जन्म ग्रहण करना होगा।[२]

अब प्रश्न यह है कि इस जन्म-मरण के चक्र से निस्तार पाने का उपाय क्या है? जीव माया के प्रभाव से या अपने कर्मों के फलों से किस प्रकार मुक्ति पा सकता है, और अपनी स्वाभाविक वृत्ति को पुनः प्राप्त करके कर्मबंध से कैसे छूट सकता है? इस उपचार की खोज के लिये हमें अधिक दूर नहीं जाना होगा, क्योंकि वह जीव के ही भीतर निहित है।[३] यह उपचार है भागवत धर्म या भक्ति।[४] मुक्ति का यह उपाय सबसे सरल है, जिसके द्वारा अज्ञानी भी आत्मज्ञान प्राप्त कर सकता है। वैष्णव सुधारकों ने इसे सब प्रकार के दोषों का निवारक और परम संपद बताया है[५], और मुक्ति का परम साधन कहा है।[६] यह माया के बंधनों को तोड़कर जीव को जन्म-मरण

लोभ-मोह दुहो बाघ : सतते न छाड़े लाग :
राखु राखु राखु सदाशिव ॥—बड़गीत, १६।

२ गुणान्वयो यः फलकर्मकर्ता
कृतस्य तस्यैव स चोपभोक्ता।
स विश्वरूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा
प्राणाधियः संचरति स्वकर्मभिः ॥
—श्वेताश्वतर उप०, ५.७।

३ कोटि कल्पतरु पुरण कामा।
ऐचन ईश रहत निज ठामा ॥
—पारिजात-हरण नाट।

४ ये वै भगवता प्रोक्ता उपाया ह्यात्मलब्धये।
अंजः पुंसामविदुषां विद्धि भागवतान् हितान् ॥
—भागवत ११.२.३४।

५ हरिक भकति अहि परम संपद।
दहे दोस सब मिलावय मनोरथ ॥
—केलि-गोपाल नाट।

६ याहे भकति : ताहे मुकुति : भकत ए तत्त्व जाना।
—बड़गीत, १०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के चक्र से छुट्टी दे देता है।[७] यह पथ सरल और सबके लिये सहज-साध्य है।[८]

विने हरि भकति : मुकुति कति पाइ।
—बड़गीत, २।

और भी—तत्संस्थस्यामृतत्वोपदेशात्।
—शाण्डिल्यसूत्र।

ब्रह्म संस्थोऽमृतत्वमेतीति।
—छान्द० उप०, २.२३.२।

सर्वं मद्भक्तियोगेन मद्भक्तो लभतेहञ्जसा।
स्वर्गापवर्गं मद्धाम कथञ्चिद्यदि वाञ्छति॥
—भागवत, ११.२०.३३।

[७] भकति करमबन्ध कयो क्षीना : कह शंकर परमाना।
—के० गो० नाट।

तेजिए सयल : मनोरथ आवरि : हरिपदे प्रेम मिलायो।
पुनु आवा : गमन एड़ायो : माया भरम बाहुड़ायो॥
—बड़गीत, ७७।

और भी—भय द्वितीयाभिनिवेशतः स्या-
दीशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः।
तन्मामयाहतो बुध आभजेत्तं
भक्तैकमेशं गुरुदेवतात्मा॥
—भागवत, ११.२.३७।

[८] जाहे नाम सुनि : नीच स्वपच मुनि : दुहो हये एकु समान।
—कालिदमन नाट।

न लागे भक्ति देव : द्विज सदाचार हुइबे : समस्त प्राणीर अधिकार।
—नृसिंहलीला नाटक।

और भी—नालं द्विजत्वं देवत्वमृषित्वं वाहसुरात्मजाः।
प्रीणनाय मुकुन्दस्य न वृत्तं न बहुज्ञता॥
—भागवत, ८.७.५१।

जप तप तीरथ करसि गया काशीवास बयस गोवाइ।
जानि योग युगुति मन मोहित। विने हरि भकति गति नाइ॥
—बड़गीत, १३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके लिये न क्रिया की आवश्यकता है, न ज्ञान की, न धन की और न दान की।[९]

अब प्रश्न यह है कि भक्ति क्या है? पंचरात्र पंथ से संबंधित शाण्डिल्य मुनि ने अपने एक सूत्र में भक्ति की परिभाषा बतलाते हुए कहा है कि "ईश्वर में परानुरक्ति (तद्गत प्रेम) ही भक्ति है।[१०]" श्री माधव देव ने भागवत पुराण का अनुसरण करते हुए ईश्वर प्रेम की तीन अवस्थाएँ निर्देशित की हैं—श्रद्धा, रति और भक्ति।[११] छांदोग्य उपनिषद् में श्रद्धा के संबंध में कहा गया है—"श्रद्धा होने से मनुष्य गहन रूप से मनन कर सकता है। श्रद्धा-रहित व्यक्ति मनन नहीं करता; केवल श्रद्धावान् ही मनन कर सकता है।"[१२] इस मंत्र की व्याख्या करते हुए शंकराचार्य ने श्रद्धा का अर्थ बतलाया है 'आस्तिकतापूर्ण बुद्धि' (आस्तिक्यबुद्धीति श्रद्धा)। इस प्रकार ईश्वर में विश्वास ही श्रद्धा है। 'रति' का अर्थ किया है—"मन के द्वारा इच्छित किसी व्यक्ति के प्रति लगाव होना।"[१३]

अतएव भक्ति के लिये यह आवश्यक है कि पहले ईश्वर पर विश्वास (श्रद्धा) हो,

---

[९] न क्रिया कृत्यनपेक्षाज्ज्ञानवत्।
—शाण्डिल्य सूत्रम्, १.१.७।
और भी—न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेहंमृतत्वमानाशुरित्यदि श्रुतिभ्यः।
—तैत्ति० आरण्य।
देखिए बड़गीत, ९।

[१०] अथातो भक्तिजिज्ञासा। सा परानुरक्तिरीश्वरे।
—शाण्डिल्य सूत्र, १.१.१२।

[११] मोक्षदाता मञि मोत शीघ्रे अतिशय।
अनुक्रमे श्रद्धा रति भकति मिलय॥
—भक्तिरत्नावली, २८९।
तज्जोषणापवर्गवर्त्मनि
श्रद्धारतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति॥
भागवत, ३.२५.२५।

[१२] यदा वै श्रद्धात्यथ तथा मनुते नाश्रद्धान्मनुते
श्रद्धादेवा मनुते।
—छान्द० उ०, ७.२१।

[१३] रतिर्मनोनुकूलेऽर्थे मनसः प्रवणायितम्।
—सा० द०, २०७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसके बाद उसके प्रति प्रेम का भाव उत्पन्न होकर मन का लगाव उसी की ओर हो। तभी ईश्वर के प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति का भाव हृदय में उत्पन्न हो सकता है।[१४]

भक्तिमार्ग जिसका महाभारत, भगवद्गीता और भागवत पुराण में विशद वर्णन मिलता है, कोई नया धर्म-मत नहीं है। इसके बीज स्वयं वेदों में वर्तमान रहे हैं। वैष्णव लोग प्रधानतः विष्णु, नारायण और कृष्ण अथवा वासुदेव की आराधना करते हैं, जो ब्रह्म या परमात्मा के ही रूप हैं। विष्णु वैदिक देवता हैं, और ऋग्वेद में उनकी स्तुति के मंत्र वर्तमान हैं।[१५] वेदों में 'अर्चना', 'वंदना', 'नमस्कार' आदि श्रद्धा-भक्ति भाव-मूलक शब्द बहुलता से पाए जाते हैं। उपनिषदों में भी यही हाल है। पर एक विभिन्न मत या पंथ के रूप में भक्ति का उल्लेख पहले-पहल श्वेताश्वतरोपनिषद् के निम्न मंत्र में मिलता है—

यस्य देवे परा भक्ति यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथित ह्यर्थः प्रकाशते महात्मन प्रकाशते महात्मनः॥

अर्थात्—"ईश्वर (देव) के प्रति जिसके मन में परम भक्ति है और अपने गुरु के प्रति वैसी ही भक्ति है जैसी कि ईश्वर में, उसीके आगे इस गूढ़ रहस्य का उद्घाटन करना होगा। उपनिषद् का वास्तविक अर्थ इसी प्रकार के महात्माओं के आगे ही स्पष्ट हो सकता है।" कुछ दूसरे उपनिषद् भी किसी-न-किसी रूप में भक्ति का उपदेश देते हैं।[१६]

---

[१४] भज हरिचरणे: छोड़हु सब आस।
हरिनामे करु : सुदृढ़ विछोआस।
—पारिजातहरण नाट।

[१५] ऋग्वेद, १-२२-१६-२

[१६] उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते।
—प्रश्नोपनिषद्, ३.१६।
चैतदुपस्मरति। —केनो०, ३०.५।
तद्वनमित्युपासितव्यम्। —वही, ६।
उपाषते पुरुषम्। —मुण्डको०, ३.२.१
सर्वं खल्विदं ब्रह्म—तज्जलानिति शांत उपासीत।
—छान्दो०, ३.१४.१।
नमो ब्रह्मणे। —तैत्ति०, १.१।
ते नम उक्तिं विधेय।—ईशो०, १६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह स्पष्ट है कि भक्तिमार्ग को जिस रूप में उपनिषदों ने समझाया है वह भारतीय चिंताधारा के मनन-युग से संबंध रखता है। "प्रधान उपनिषदों के मूल भाग उस युग की कृतियाँ हैं जो 'ब्राह्मणों' और 'आरण्यकों' के युग से बहुत दूर नहीं था। यह युग बुद्ध तथा पाणिनि से बहुत पहले था। निस्संदेह, ऐतरेय, बृहदारण्यक, छांदोग्य, तैत्तिरीय, कैशीतकी और केन ये छः उपनिषद् समस्त औपनिषदिक साहित्य के सबसे प्रारंभिक अवस्था की रचनाएँ हैं। उनमें वेदांत-मत विशुद्ध, मौलिक रूप में वर्तमान पाया जाता है।[१७] कुछ दूसरे उपनिषद्—कठ, श्वेताश्वतर, ईश, मुण्डक आदि—कुछ-बाद की रचनाएँ हैं, पर वे भी बौद्धकाल से पहले की हैं। यद्यपि इन चार और दो और उपनिषदों—'महानारायण' और 'प्रश्न'—में भी वेदांत मत पाया जाता है, तथापि "वे सांख्य और योग संबंधी तत्त्वों और एकेश्वरवाद-संबंधी विचारों से भरे पड़े हैं।"[१८] कुछ भी हो, इतना निश्चित है कि यह भक्ति-धर्म पाणिनि (ई० पू० ४००) से पहले वर्तमान था। पाणिनि ने अपने व्याकरण में 'वासुदेव' और 'भक्ति', इन दो शब्दों का उल्लेख किया है।

भक्ति-पंथ का विकास पहले-पहल उत्तर भारत में हुआ। इस बात का प्रमाण बेसनगर (ग्वालियर) के ई० पू० दूसरी शताब्दी के एक शिलालेख में मिलता है। उक्त शिलालेख में एलिओडोरस नामक एक यूनानी राजदूत को 'भागवत' (भगवान् का भक्त) कहा गया है। आसाम में नवगाँव ज़िले के अंतर्गत 'बड़गंगा' के चट्टान पर जो शिलालेख (सन् ५६३-६४) है, उसमें कामरूप के विख्यात राजा भूतिवर्मन को 'परम भागवत' कहा गया है। भागवत पुराण में भागवत उसे कहा गया है जो समस्त भूतों को भगवान् में देखता है और उन्हें परमात्मा का ही अंश समझता है; जो सांसारिक विषयों के परे रहता है, और जो वासुदेव को ही एकमात्र आश्रय मानता है।[२०] एक दूसरा शिलालेख असम के शिवसागर ज़िले के अंतानि देवपाणि नामक स्थान में पाया गया है। यह लेख विष्णु की एक प्रस्तर-मूर्ति पर अंकित है, और इसका समय नवीं शताब्दी के आस-पास है। उसमें लिखा हुआ है—"भगवतो नारायण शैलीप्रतिम भक्तयन्तम्"[२१]

---

१७ डा० विन्टरनित्स : हिस्ट्री ऑफ़ इण्डियन लिटरेचर। पे० २३६।

१८ वही, पेज २३७।

१९ ,, ,,

२० भागवत, ११.२.४५-४७।

२१ राव बहादुर दीक्षित—एपिग्राफिया इंडिका, भाग १७, पेज, ३२९-३०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेसनगर के शिलालेख[२२] के समय आलवारों (तामिल संतों) ने दक्षिण भारत में भक्तिमार्ग का प्रचार किया, और तामिल भाषा में एक विस्तृत धार्मिक साहित्य की सृष्टि की। "इस संप्रदाय के एक धर्मग्रंथ का नाम 'वैष्णव प्रबंध' है, जिसमें ४००० पद हैं। इसकी रचना बारह आलवार संतों ने की, जो भक्ति-सम्बन्धी गीतों को गाया भी करते थे। इनमें से अधिकांश पदों के रचयिता का नाम तिरु-मंगई है, जिनका समय आठवीं शताब्दी का प्रारंभिक काल बताया जाता है। इन आलवारों में एक स्त्री भी थी जिसका नाम अण्डाल था। उसके लिखे हुए १०७ पद बताए जाते हैं। वह कृष्ण के गीत गाती थी और मध्य युग की ईसाई संन्यासिनियों की तरह भगवान् से विवाह होने के स्वप्न देखा करती थी।"[२३] भक्तिमार्ग के सब से बड़े व्याख्याता रामानुज ने इन्हीं संतों की वाणियों का अनुसरण किया, और उपनिषद्, महाभारत, भगवद्गीता तथा पुराणों के परस्पर-विरोधी मालूम पड़ने वाले मतों में एकता का प्रतिपादन करके उन्हें अपने निजी धर्म और दर्शन के सामंजस्य-सूत्र में बाँध दिया।

श्री शंकरदेव असम में प्रचलित भक्तिपंथ के व्याख्याता थे, और उनका मुख्य उद्देश्य था ईश्वर के प्रति विश्वास की भावना के साथ उसके प्रति प्रेम (भक्ति) की भावना को समन्वित करना। उन्होंने अपने मत के प्रचार के लिये श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, वंदन तथा आत्मनिवेदन—भक्ति के इन विविध रूपों को अपनाया।[२४] श्रवण, कीर्तन और स्मरण पर उन्होंने विशेष रूप से ज़ोर दिया। उन्होंने 'दास्य' की अवस्था के प्रति अपना विशेष पक्षपात जताया है, जो निस्संदेह जीव का प्रधान कर्त्तव्य

---

२२ देखो श्री ए० एम० कृष्ण ऐयंगर कृत 'रामानुज, इन दि रिव्यू ऑफ फिलासफी एण्ड रिलीजन,' भाग १०, संख्या २, पेज ७।

२३ मेकडानेल कृत 'इण्डियाज़ पास्ट', पेज २२०।

२४ पुरुष बासना दुर करहु हामारि।
बचने रहोक गुणनाम तोहारि॥
तुआ कथा श्रवणे रहोक अविराम।
कर मेरि रहोक तोहारि कए काम॥
तुआ पद सुमरि रहोक मन थिर।
तोहारि चरण बन्दि रहु मेरि सिर॥
तुआ निज मुरुति भकत सब चाइ।
रहु मेरि बयन माधव गुण गाइ॥
—अर्जुन-भञ्जन नाट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। उनकी भक्ति किसी उद्देश्य को लेकर नहीं चलती। फिर भी भक्त को भगवान् के प्रेम और उनकी पदसेवा से चरम आनंद प्राप्त होता है वह अपने-आप में एक महान् उद्देश्य है। यही कारण है कि सच्चा भक्त उस आनंदामृत का पान करने के बाद मोक्ष को भी तुच्छ समझ कर उसे अस्वीकार कर देता है।[२५]

एकशरण

श्री शंकरदेव के भक्तिपंथ की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है उनका 'एकशरण'-संबंधी सिद्धांत। श्रीकृष्ण, जो परम ब्रह्मस्वरूप हैं, अंत में जीव के एकमात्र शरण हैं।[२६] इसलिये जीव को अगत्या उनके चरणों का आश्रय लेना ही

---

[२५] जोहि कृपामय देवक देवा।
मुकुति बिड़म्बन जाकर सेवा॥
—भूमि लुटीया झुमुरा।
हरिपदयुग सेवाभकति निश्चय।
ओहि मुकुति हरिपदक लङ्घय॥
ऐकान्तिक सुख हरि-चरण उपासा।
कह माधव हरि-दासकु दासा॥
—बड़गीत, ५७।
और भी देखो—नामघोषा, प्रारंभिक पद।

[२६] शुद्ध परब्रह्म गोपकुमारा।
त्रिभुवन तारण हेतु अवतारा॥
—बड़गीत, १०४।
यदुर्वंश नरः श्रुत्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।
यत्रावतीर्णं विष्ण्वाख्यं परब्रह्म नराकृतिः॥
—विष्णुपुराणम्, ४.११.२।
वासुदेवेऽपीति चेन्नाकारमात्रत्वात्।
—शा० सू०, २.१.५२।
ओहि जगत-कारण नारायण : कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जाहेर रोम-रन्ध्रे थिक : जगत तारण कारणे : तोहारि उदरे : मानुष रूपे अवतरल : ओहि जगतक आतमा : ऐछन कृष्णक तोही : कैछन बन्धन करह।
—अर्जुन-भंजन नाट।
शारङ्गपाणि : पाहे पामर मति हामि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ेगा।[२७] दूसरे शब्दों में, आवागमन के चक्र से मुक्ति पाने के लिये जीव को ईश्वर के प्रति आत्मसमर्पण करना होगा। यही 'एकशरण' का मूल तत्व है। यह भक्ति-साधना के लिये परमावश्यक है, और भक्त की साधना की सिद्धि के लिये भी इसकी बड़ी आवश्यकता है। 'एकशरण' का वास्तविक तात्पर्य आत्म-समर्पण समझना चाहिये। पर 'शरण' का अर्थ भक्त-संप्रदाय में इस प्रकार भी है—"भजन और प्रार्थना के क्षेत्र में दीक्षित और वैष्णव-संप्रदाय में स्वीकृत होना।" भक्तिरत्नावली में इस विषय को लेकर पूरा एक अध्याय लिखा गया है। यह भक्तिरत्नावली असम की उन चार पवित्रमय धार्मिक पुस्तकों में से है जिन्हें प्रत्येक भक्त को या तो पढ़ना पड़ता है या सुनना। इनमें से शेष तीन ग्रंथों के नाम इस प्रकार है—कीर्तन, दशम और नामघोष। 'बड़गीत', धार्मिक नाटक, जो ब्रजावली में लिखे गए हैं, तथा सभी धार्मिक गीत उक्त चार मुख्य ग्रंथों के परिशिष्ट-रूप हैं। पर असम के वैष्णव-मत की दार्शनिकता 'भक्ति-रत्नाकर' में पाई जाती है, जिसे श्री शंकरदेव ने स्वयं संस्कृत भाषा में लिखा है, और जिसका अनुवाद असमिया भाषा में श्री रामचरण ठाकुर ने किया है। बिना इस दर्शन से परिचित हुए असम के वैष्णव मत का कोई भी विद्यार्थी श्री शंकरदेव द्वारा वर्णित भक्ति-तत्व की कल्पना यथार्थ रूप से नहीं कर सकता। पूर्वोक्त 'शरण'-तत्व का

निरय निवार : आवरि नाहि हेरोही :
बिने चरण तयु स्वामी।
अंतकाले गति : मेरि कमलापति : शंकर कर प्रणिपात।
—बड़गीत, ६।

[२७] पयरहि लागि : शरण एक माँगों।
—वही, ५९।
कृष्ण किङ्कर कह बिछोड़ि बिसय-कामा।
राम-चरण लेहु शरण : जय गोविन्दकु नामा॥
—वही, ६
हरि-चरण शरण बिना। गति नाहि नाहि मतिहीना॥
—वही, ३७।
अथिर जीवन राम : माधव केरि नाम :
सरणक समल लेहु॥
—वही, १६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूर्वाभास हम उपनिषदों में पाते हैं।[२८] भगवद्गीता की निम्न उक्ति में इसे प्रमुख स्थान दिया गया है—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।—१८.६१।

एक दूसरे श्लोक में यह कहा गया है कि भक्तियोगी को अंतिम अवस्था में अपनी चरम मुक्ति के उद्देश्य से भगवान् के प्रति आत्म-समर्पण कर देना चाहिये।[२९] भागवत पुराण में इस 'शरण' तत्त्व की व्याख्या विस्तृत रूप से की गई है। दक्षिण भारत में श्री रामानुज ने जिस श्री वैष्णव संप्रदाय की संस्थापना की, उसमें भी यह मत विशेष रूप से मान्य समझा जाता है। इस संप्रदाय वाले उक्त मत को 'शरणागति' या 'प्रपत्ति' (आत्म-समर्पण) कहते हैं, और इस संबंध में भागवत में उनसे एकमत पाया जाता है कि चरम मुक्ति शरणागति द्वारा ही प्राप्त की जा सकती है।

नामधर्म

यह प्रश्न उपस्थित किया जा सकता है कि भक्ति का कौन रूप उत्तम समझकर उसकी साधना की जाय? उसका केवल एक ही रूप स्वीकार किया जाय या उससे अधिक, या सब? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए शाण्डिल्य मुनि कहते हैं—"भक्ति का एक ही रूप पर्याप्त है—यदि उसके द्वारा भगवान् की संतुष्टि की जा सके तो।"[३०] फिर भी वह जैमिनि के साथ इस विषय में एकमत हैं कि नाम (अर्थात् नाम का ध्यान) सबसे उत्तम है।[३१]

अब प्रश्न यह है कि नाम क्या है? छांदोग्योपनिषद् के छठे प्रकरण में इस विषय पर पूर्ण विवेचना की गई है। उसमें सनत्कुमार नारद से कहते हैं :—

"तुम जो कुछ भी जानते हो (ऋग्वेद, सामवेद, पुराण, देवज्ञान-विद्या आदि) वह सब नाम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।"[३२] नाम-संबंधी ज्ञान प्राप्त कर

---

२८ तम् ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये।
—श्वेताश्व० उ०, ६.१८।

२९ ६-४७।

३० ईश्वरतुष्टेरेकोऽपि बली।
—शा० सू० २.२.६३।

३१ नाम्नेति जैमिनि सम्भवात्।
—वही, २.२.६१।

३२ ६.१.४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने से उसके समस्त गुणों और विशेषताओं का बोध भी हो जाता है।[३३] जो नाम के संबंध में यह धारणा करके उसकी आराधना करता है कि "यह ब्रह्म है," उसकी पहुँच ब्रह्म तक हो जाती है।[३४] समस्त मंत्र नाम में एकरूप हो जाते हैं।[३५]

श्री शंकरदेव भी नाम को भक्ति का सर्वोत्तम रूप मानते हैं, और पूर्वोक्त अर्थ में ही उन्होंने 'नाम' शब्द का व्यवहार किया है।[३६] असम के भक्ति-पंथ की यह एक विशेषता है। वहाँ इसे 'नामधर्म' भी कहा गया है। इसका सिद्धांत इस प्रकार है—"नाम की शरण गहो।"[३७] श्री शंकरदेव ने नामधर्म की अनुभावना को निम्न गीत में इस प्रकार वर्णित किया है :—

---

३३ ६.४.१-५।

३४ ७.१.५।

३५ ७.४.१।

३६ रोम विवरमह : कोटि कोटि अण्ड :
जैसन अनु परमानि।
नन्दनन्दन कति : नाम धरत सोहि :
तुहि लीला कोइ जानि॥
—बड़गीत, ७३।

रामनाम मह : निखिल पुण्य रह : उहि निगम तत्त्व बानी।
कलिको परम : धरम हरिनामा : पढ़ि पुनु मद्रम न जानि॥
—वही, १३।

सब अपराधक : बाधक साधक : सिद्ध कर हरिनाम।
देवक उपरि : राजा माधव : धरमक उपरि नाम॥
—रामविजय नाट।

कोटि कलपक : पातक नासक : डाकि बोलउ राम राम।
—कालिदमन नाट।

येइ नाम सेइ हरि जाना निष्ट करि।
—नामघोषा, ५१४।

३७ सब अपराधक : बाधक तुआ नाम :
ताहे शरण लेहों जानि॥
—बड़गीत, ४।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग धनश्री

बोलहु राम नामे से मुकुति निदान ।
भव वैतरणी : तरणी सुख सरणी :
नाहि नाहि नाम समान ॥ –ध्रुवम् ॥
नाम पञ्चानन : नादे पलावत
पाप-दन्ती भयभीत ।
बुलिते एक : सुनिते सत नितरे :
नाम-धरम विपरीत ॥
बचने बुलि राम : धरम अरथ काम :
मुकुति सुख सुखे पाइ ।
सबकहु परमा : सुहृद् हरिनामा :
छुटे अन्तकेरि दाइ ॥
नारद शुक मुनि : राम नाम बिनि :
नाहि कहल गति आर ।
कृष्ण-किङ्कर कय : छोड़ मायामय :
राम परम तत्वसार ॥
—बड़गीत ८ ।

श्री शंकराचार्य और शंकरदेव के उपदेशों में कई विषयों में साम्य अवश्य पाया जाता है । दोनों वेदान्त और अद्वैत मत के अनुयायी थे । पर शंकराचार्य दृश्य जगत् को माया का ही स्वरूप मानते थे, और श्री शंकरदेव की धारणा इस संबंध में उनसे भिन्न थी । उनके कथनानुसार दृश्य जगत् अपने-आप में माया या मिथ्या-रूप नहीं है, बल्कि माया का भ्रमात्मक आवरण उसके ऊपर पड़ा हुआ है । उनकी धारणा है कि ब्रह्म समस्त विश्व के अणु-परमाणु में व्याप्त है, और वह सत् है । उसके अतिरिक्त सब-कुछ असत् है । ब्रह्म ने अपनी माया से ही विद्या और अविद्या की सृष्टि की । यह माया अविद्या के अंधकार का आश्रय लेकर जीव को भ्रम के आवरण से ढक लेती है । इसलिये यह सत् और असत् का भेद जानने में असमर्थ रहता है । श्री शंकरदेव का उद्देश्य माया के इस मोहपाश को छिन्न करके आत्म-दर्शन करना है । पूर्वोक्त दोनों आचार्यों में और भी कुछ विषयों में मतभेद पाया जाता है । शंकराचार्य ने ज्ञान और धर्म-कर्म को महत्त्व दिया है, पर श्री शंकरदेव ने भक्ति को ही प्रधान कर्त्तव्य माना है । इसलिये दोनों के मत एक-दूसरे से मिलते-जुलते होने पर भी एक नहीं कहे जा सकते ।

रामानुजाचार्य और श्री शंकरदेव के विचारों में भी कुछ बातों में साम्य पाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। दोनों अपने-अपने भक्ति-मार्ग को प्रायः एक ही दिशा की ओर विकसित करते चले गए, और दोनों ने 'शरणागति' या 'एकशरण' के सिद्धांत को विशेष महत्त्व दिया। पर मूल विषयों में दोनों में बड़ा मतभेद पाया जाता है। श्री शंकरदेव ने अद्वैत-वाद का अनुसरण किया और रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत मत का प्रचार किया। इसके अतिरिक्त श्री रामानुज ने कर्म-कांड तथा उत्तर-मीमांसा दोनों को एक-दूसरे का प्रतिपूरक समझा, पर श्री शंकरदेव ने केवल उत्तर-मीमांसा (वेदांत) को ही स्वीकार किया। इसलिये दोनों के मतवाद एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं।

बङ्गाल के वैष्णव मतवाद का भी, जिसके प्रमुख भाष्याकार श्री चैतन्यदेव रहे हैं, असम के भक्तिवाद से कोई सम्बन्ध नहीं है। बङ्गाल के वैष्णव-मार्गियों का मूल सिद्धांत है "राधा तथा कृष्ण के प्रति प्रेम-भक्ति," जो सांख्य-दर्शन के प्रकृति और पुरुष की उपासना का ही रूपान्तर है। उक्त मतवाद के अनुसार आत्माओं का एक संसार है और उससे पृथक् है प्रकृति, जो सुसंबद्ध नैसर्गिक तत्त्वों का प्रस्फुटन करती है। यह पूर्णतया द्वैत मतवाद है। साथ ही यह मतवाद यह भी मानता है कि समस्त दृश्य जगत् में ईश्वर की मूलात्मा छाई हुई है। इस प्रकार यह वेदांत को भी मान्य समझता है। पर हर हालत में यह मतवाद राधा को कृष्ण के साथ एकसूत्र में बाँधना चाहता है—इस सिद्धांत के मूल में यह भाव निहित है कि आत्माओं की उत्पत्ति पुरुष से उसी प्रकार होती है जिस प्रकार विभिन्न जीवों की उत्पत्ति प्रकृति से। इस मतवाद के अनुसार राधा के बिना कृष्ण की कल्पना नहीं की जा सकती। इस प्रकार यह मतवाद सांख्य और वेदांत की मिश्रित उपज है।

राधा-विषयक मतवाद की उत्पत्ति बहुत अर्वाचीन है। राधा का उल्लेख वैदिक साहित्य में नहीं पाया जाता। न उपनिषदों में उसका उल्लेख है, न महाभारत में, न महाभारत के परिशिष्ट भाग—हरिवंश में। भगवद्गीता में भी उसका नाम नहीं पाया जाता, और न प्रारंभिक पुराणों—ब्रह्म-पुराण, विष्णु-पुराण, भागवत पुराण आदि—में। बाद के कुछ पुराणों में—ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्मपुराण आदि में—राधा की अवतरणा हुई है। परवर्ती काल के इन पुराणों में और जयदेव के गीत-गोविंद में "भगवान कृष्ण और उनकी प्रेमिका राधा की महिमा पौराणिक कथाओं और गीतों के द्वारा वर्णित की गई है।"

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, माधव (११९७-१२७६ ई०) द्वारा स्थापित धार्मिक संप्रदाय ने द्वैतमत का अनुसरण किया। माधव ने वेदांत को सांख्य तथा भागवत धर्म से समन्वित करके अपने द्वैत मत में सामंजस्य लाने की चेष्टा की।[३८]

---

[३८] देखो मेकडानेल कृत 'इण्डियाज़ पास्ट', पे० १५०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री चैतन्यदेव का मत उक्त मत से ही संबंधित है। पर असम की विचारधारा इससे बिलकुल मेल नहीं खाती।

श्री शंकरदेव के तत्त्वोपदेश में राधा के लिये कोई स्थान नहीं है। असम के धार्मिक ग्रंथों में राधा का नाम कहीं भी देखने में नहीं आता। केवल तीन 'नाटों' (नाटकों)—'केलि गोपाल', 'रास झुमुरा' और 'भूषण-हरण'—में राधा का उल्लेख पाया जाता है। पर इससे केवल यही सिद्ध होता है कि राधा श्रीकृष्ण की अन्य गोपियों की अपेक्षा अधिक विशेषत्वपूर्ण नहीं थी। उक्त नाटों में वह अन्य साधारण गोपियों के समान ही कृष्ण का आदर और पूजा करती है, और उन्हें अपना समकक्षी समझने की धृष्टता भूलकर भी नहीं करती।[३९] वह स्वयं पूजनीया नहीं समझी गई है।

दोनों मतवादों में एक और मूलगत अंतर है भक्त की दशा को लेकर। असम के भक्तों ने दास्य भाव को अपनाया है; और बंगाल के भक्तों ने सख्य भाव को स्वीकृत किया है। असम का भक्त अपने को दास और ईश्वर को प्रभु समझता है।[४०] श्री शंकरदेव ने अपनी समस्त रचनाओं में अपना उपनाम दिया है 'कृष्ण-किंकर'। भक्त अपने को भक्त का भी दास समझता है।[४१] वह ईश्वर के आगे अपने को एकदम

---

[३९] राधा के इस गीत से तुलना कीजिए—

जादव हे, कैछन बात बेगारि।
सकल निगमे तेरि : अन्त न पावत :
हाम पामरि गोप-नारि ॥ ध्रुवम् ॥
तुहु परम गुरु : निखिल भुवन-पति :
मानुस भाव तोहारि।
चतुर बयन तेरि : माया विमोहित :
जाने नाहि योग बिचारि ॥
तेरा अइचन : भाव न जानिए :
कयालु गरब नाथ तोइ।
राधा उचित बात : कहय माधव दिन :
गति गोविंद-पद मोइ ॥

—रास झुमुरा, ४।

[४०] गोविंद दयाशील स्वामि। तुहुँ मेरि सायेव : चाकर हामि।

—बड़गीत, ७२।

[४१] रामचरण योहि करत उपासा। ताकेरि हों हामु दासकु दासा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महत्त्वहीन और विनीत समझता है, और श्रद्धा और आदर के साथ उसके प्रति मस्तक नवाकर अपने दास्य भाव को निबाहता है। उदाहरण के लिये, यद्यपि भक्त गोपियाँ यमुना के किनारे रासमंडल के नृत्य में भगवान् कृष्ण के एकदम सन्निकट थीं, तथापि वे सब समय इस संबंध में सचेत थीं कि कृष्ण परमात्मा हैं और उनकी पहुँच के परे हैं। इसलिये उन्होंने विनीत दासियों की तरह आचरण किया। श्री शंकरदेव ने अपनी अमर रचना 'रासक्रीड़ा' (कीर्तन) तथा सुंदर नाटक 'केलि गोपाल' में वृंदावन की गोपियों की जिस भक्ति का वर्णन किया है उसका भाव अत्यंत उन्नत और स्वरूप अत्यंत महान् है; उसमें किसी प्रकार के पार्थिव सुख विलास की छाया भी नहीं आने पाई। उक्त दोनों रचनाएँ प्रति पद में मन को ऊपर परमब्रह्म की ओर आकर्षित करती रहती हैं, और कभी हीन वासनाओं की ओर प्रवृत्त नहीं करतीं।[४२] बड़ू चंडीदास ने

—वही, ३२।

नाम धरत : रूप स्मरत : ताकेरि हामो दासा ॥

—वही, १०।

मज्जि तेरि दासकु दासा : करु करुणा मुरारि।
ए भव-सागर मह तारहु : तुवा चरणे हामारि ॥

—वही, ६५।

४२ तुलना कीजिए :—

सकल सुरासुरेश्वर-शिखर-चूड़ामणि विराजित पदपंकज : परमेश्वर श्री श्री गोपालक समिप पावल ॥

—केलि गोपाल नाट।

कथा ॥ जे लक्ष्मी गोसानि : हृदये थान लयि कहों : तथापि ओहि पद-पंकज-रेणु आसा करचे : ओहि चरण-सेवा करिते धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, चारि पदारथ सुखे पाइ : ऐचन तव पद-पंकज : इहा छाड़िते : हामाक प्राण चुटि जाइ ॥ हे परमेश्वर स्वामि : तव पद-पंकज : तेजए नाहि पारिए : नाहि पारिए ॥

—वही।

कथा ॥ जे परमेश्वर श्रीकृष्ण : ब्रह्मारुद्रादि देवता : जाहेरि पद-पंकज सदाए सेवत : ऐचन जगत्-गुरुक : बनचरि अनाचारि गोपनारि : काम भकतिए वस्य कयल। हरि भकतिक महिमा कि कहब ॥ आहे लोकाइ : पेखु पेखु : हरिगुण नाम श्रवण-कीर्तन बिने : कलित गति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कृष्ण-कीर्तन में कृष्ण के जिस प्रेमालाप और रति-रंग-जनित पुलक का वर्णन किया है, उसके लिये श्री शंकरदेव की रचनाओं में कोई स्थान नहीं है। बंगाल के भक्तों ने राधा को कृष्ण के समकक्ष माना है, अथवा भगवान् की शक्ति के रूप में उनकी आराधना की है। पर असम में राधा का पद एक साधारण गोपिका से ऊँचा नहीं समझा गया है; उसने दूसरी गोपिकाओं की तरह ही भक्ति द्वारा मुक्ति प्राप्त की।[४३] इन बातों से स्पष्ट है कि असम तथा बङ्गाल के भक्ति-पंथों में मूलगत अंतर है।

वल्लभाचार्य (सन् १४७८-१५३०) एक दूसरे वैष्णव संप्रदाय के प्रतिष्ठापक थे। उनका संबंध पंचरात्र-पंथ से था। ज्ञानामृतसार संहिता में, जो 'नारद-पंचरात्र' शीर्षक से प्रकाशित हुई है, कृष्ण और राधा का गुणगान किया गया है। इस ग्रंथ में जिस मत का प्रचार किया गया है वह वल्लभी संप्रदाय से अधिकांश में मिलता है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि इसकी रचना सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में वल्लभाचार्य के कुछ पहले हुई होगी। चूँकि श्री शंकरदेव ने अपने मत का प्रचार वल्लभ से बहुत पहले किया, इसलिये वल्लभ-पंथ के मूल तत्त्वों से उसका कोई संबंध नहीं हो सकता। असम का भक्तिमत रामानुज के प्रसिद्ध अनुयायी रामानंद के

नाहि नाहि : जानि निरन्तरे हरि बोल हरि बोल ॥

—वही।

कथा ॥ हे सखि : तोहों यसोदानंदन नह : जगत राखिते ब्रह्माये प्रार्थल : से निमित्ते तोहों सर्व-अंतर्यामि : श्रीकृष्ण बेकत हुयाच ; हामरासबक अघ बक वत्स पूतना वृष्टि, वह्निहन्ते रक्षा करैच : अखन कि निमित्ते रजनि कहों : वनमध्ये हामाक तेजल स्वामि ॥

—वही।

गीत ॥ भकति प्रमत्त गोपा अङ्गना। ऐचन करत हरि भावना ॥

—वही।

कथा ॥ जे पूर्णानन्द श्रीकृष्ण : तनिकर कुचित्त विषय सुखे कोन अभिलास थिक : नाहि नाहि : जैचे कामधेनुवृन्द अधिकारिक चागलित कोन प्रयोजन थिक ॥

—वही।

४३ अतएव तदभावाद्वल्लवीनाम्।

—शा० सू०, १.२.२४।

४४ विंटरनित्स : 'हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर', —पे० ५६१।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मतवाद से भी नहीं मिलता। रामानंद ने उत्तर भारत में एक नये ही सम्प्रदाय को जन्म दिया। उन्होंने इस सिद्धांत का प्रचार किया कि "मुक्ति का एकमात्र पथ विष्णु की भक्ति है।" असम के भक्तों का मत रामानंद के उस विख्यात शिष्य, कबीर, के मत से भी नहीं मिलता, "जिसने न केवल वर्णभेद को मिटाना चाहा, बल्कि धार्मिक तथा सांप्रदायिक बाँधों को भी तोड़ने का प्रयत्न किया।"[४५] इस प्रकार असम का भक्तिपंथ सबसे निराला है। इसके पीछे 'भक्ति-रत्नाकर' की दार्शनिकता है, और इसके मूल में भागवत पुराण अवस्थित है।*

जयशंकर प्रसाद : सामान्य प्रवृत्तियाँ

[श्री शंभुप्रसाद बहुगुना, एम० ए०]

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के उन मनीषियों में से हैं, जिन्होंने दैनिक जीवन की विषमताओं से संघर्ष करना कभी भी उचित नहीं समझा, और इस कारण जो वर्तमान यांत्रिक जीवन से असंतुष्ट होकर प्राचीन गौरवशाली भारत के दर्शन, इतिहास और काव्य के अध्ययन में लग गए। भारतीय संस्कृति के सतत चिंतन, मनन और अध्ययन से प्रसाद जी के हृदय में जो भावनाएँ उठीं, उन्हीं को अपनी प्रतिभा-संपन्न कल्पना से रंजित कर प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में काव्यमय रूप दिया है। किन्तु परिस्थितियाँ सदैव अपनी छाप व्यक्ति पर छोड़ती हैं। वर्तमान को अपनाने की अपेक्षा अतीत को महत्व देने पर भी प्रसाद वर्तमान से प्रभावित हुए बिना नहीं रहे। वर्तमान युग की शैली, भाव, विचार, समस्याएँ, सभी ने पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण से उन पर आक्रमण किए, और अपनी छाप छोड़ कर ही वे रहे। हृदय प्रसाद का अपना रहा है, मस्तिष्क भारतीय दर्शन और इतिहास ने उनकी रचनाओं को दिया है। इसलिये उनकी रचनाओं में इतिहास (चाहे वह एक भावना का हो, स्मृति का हो, अथवा मनुष्य समाज का अथवा सभ्यता और राजवंशों का हो), दर्शन और काव्य, तीनों एक ही सीमा के अंतर्गत रहते हैं। प्रसाद की कोई भी रचना केवल इतिहास ही इतिहास, दर्शन ही दर्शन अथवा काव्य ही काव्य नहीं है। नाटकों, निबंधों और उपन्यासों तथा कहानियों की तो बात जाने दीजिए, कविताओं में भी यह त्रिवेणी विद्यमान है। चाहे 'आँसू' हो चाहे 'कामायनी', चाहे 'कानन कुसुम' हो चाहे 'झरना', 'लहर' हो चाहे 'महाराणा का महत्व' अथवा 'प्रेमी पथिक', गहराई से देखने पर उस

---

[४५] मेकडानेल : 'इण्डियाज़ पास्ट। —पे० २२२

*इलाचंद्र जोशी द्वारा अनुवादित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिवेणी के दर्शन सर्वत्र हो सकते हैं।

भावुक और चिंतनशील कवि होने के कारण प्रसाद के काव्य में दार्शनिकता का आना स्वाभाविक है। ऊँची श्रेणी की कविता में दार्शनिकता आ ही जाती है। दर्शन, जीवन के सुख-दुख के रहस्य को समझने का प्रयत्न करता है, काव्य आनंद की रसानुभूति को अपना लक्ष्य मानता है और इतिहास दोनों का मेल करा देने वाला तत्त्व है। इतिहास, दर्शन और काव्य के एकत्र समन्वय से प्रसाद की रचनाओं में दुरूहता आती है और भाषा को कठिन बना देने का भी कारण प्रधान रूप से यही समन्वय है। जिस प्राचीन इतिहास और दर्शन को प्रसाद अपनी रचनाओं का विषय बनाते हैं, उसके विवेचन का काम साधारण बोलचाल की भाषा नहीं चला सकती, वरन् संपन्न सांस्कृतिक भाषा का विषयानुकूल प्रयोग ही काम देता है। ऐसी भाषा समझने में आज के विदेशी संस्कृति-प्रिय व्यक्तियों को अवश्य कठिनाई होगी, किन्तु जिसे भारतीय संस्कृति से जरा भी प्रेम होगा वह प्रसाद की रचनाओं से अपनी संस्कृति के प्राचीन युग के सजीव दर्शन कर सकता है। प्रसाद की रचनाओं के विषयोपयुक्त भाषा, वर्ण्य विषय की वास्तविकता को सजीव सत्यता देती है, और उस युग का चित्र खींच लाती है जिस को प्रसाद उपस्थित करना चाहते हैं। किन्तु प्रसाद की रचनाओं की कठिनाई भाषा की कठिनाई उतनी नहीं है, जितनी भाषा के प्रयोग के ढंग की। प्रसाद को जो भाषा मिली थी उसमें आज की सी अभिव्यंजनाएँ नहीं थीं। प्रसाद ने नई नई व्यंजनाएँ उर्दू, बंगला, संस्कृत तथा अंग्रेजी साहित्य से अपनाईं। इन व्यंजनाओं के वातावरण से आरम्भ में परिचित न होने के कारण ही प्रसाद की रचनाएँ छायावाद की रचनाएँ कही जाने लगी थीं, किन्तु आज उन व्यंजनाओं से परिचित समाज के लिये 'आँसू' भी यथार्थ जीवन की विरह-अनुभूति का ठोस गीति-काव्य मात्र है।

भावों की इतनी अधिक बाढ़ प्रसाद के हृदय में आती है कि वे उन्हें सँभालने में असमर्थ से हो जाते हैं, और फल होता है अव्यवस्थित अभिव्यक्ति और भाषा की अवहेलना। प्रसाद की रचनाओं को देखने से आसानी से ऐसे सैकड़ों उदाहरण मिल सकते हैं जहाँ भाषा व्याकरण के नियमों की चिन्ता न करती हुई अपने स्थानीय प्रयोगों को लेकर ही चलती हुई दुरूहता की सीमा पर पहुँच कर खटकने लगती है; और भाव एक रचना में नहीं अमा सकते हैं।

भाव-आधिक्य को न सँभाल सकने के कारण ही 'चन्द्रगुप्त' दो नाटकों की सामग्री लेकर चलता है, और उसमें प्रभाव-एकता नहीं रह जाती तथा रंगमंच पर दिखलाने की कठिनाई भी आ उपस्थित होती है। चन्द्रगुप्त के राज्याभिषेक पर ही एक नाटक की समाप्ति हो जानी चाहिये थी, उससे आगे एक प्रकार से दूसरा ही नाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरम्भ होता है। इसी भावाधिक्य के कारण प्रसाद जी आलम्बन का स्पष्ट चित्रण नहीं कर पाते, जिससे अलस सौंदर्य का विकास एक कुहासे के वातावरण में रह जाता है, और प्रसाद जी की लाक्षणिकतापूर्ण अप्रस्तुत विधान की ओर ध्यान न देने वाला पाठक उलझन में पड़ जाता है, तथा ऐसे स्थलों को किसी रहस्यवाद की छाया समझने लगता है। यदि नाटकों में ऐसे स्थल आते हैं, तो साधारण नाटक उन्हें प्रसङ्ग के अनुपयुक्त और दार्शनिक दुरूहता से पूर्ण समझने लगता है। 'अजातशत्रु' में बिम्बसार के दार्शनिक उद्‌गारों, विरुद्धक की मल्लिका-विषयक उक्तियों, मागंधी के शैलेन्द्र प्रेम के गीतों और 'स्कंदगुप्त' में मातृगुप्त की प्रेम-स्मृति की भावनाओं में साधारण लापरवाह पाठक ऐसी ही दुरूहता का अनुभव करता है। और जब ऐसा पाठक प्रसाद जी पर कुछ लिखने चलता है तो अपनी कमजोरियों से व्यर्थ ही प्रसाद की रचनाओं को रँग कर प्रसाद जी के प्रति अन्याय करता है। किन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो ऐसे स्थलों के उद्‌गार लम्बे भले ही हों, परिस्थितियों के स्वाभाविक परिणाम और प्रसङ्गों के उपयुक्त स्थलों पर आये हुए घटनाचक्रों के मार्मिक विवेचन हैं। 'अजातशत्रु' में दार्शनिक उद्‌गार पहले-पहल बिम्बसार के मुख से सुनाई देते हैं। एकान्त में बैठा हुआ वह सोचता है—"आह, जीवन की क्षण-भंगुरता देखकर भी मानव कितनी गहरी नींव देना चाहता है! आकाश के नीले पत्र पर उज्जवल अक्षरों में लिखे अदृष्ट के लेख जब धीरे धीरे लुप्त होने लगते हैं तभी तो मनुष्य उसका प्रभाव समझने लगता है और जीवन संग्राम में प्रवृत्त होकर अनेक अकांड तांडव करता है। फिर भी प्रकृति उसे अंधकार की गुफा में ले जाकर उसका शांतिमय रहस्यपूर्ण भाग्य का चिट्ठा समझाने का प्रयत्न करती है। किन्तु वह कब मानता है। मनुष्य व्यर्थ की आकांक्षा में मरता है, अपनी नीची किंतु सुदृढ़ परिस्थिति में उसे संतोष नहीं होता, नीचे से ऊँचे उठना ही चाहता है, चाहे फिर गिरे भी तो क्या।" (पृष्ट ३५।) किंतु बिंबसार की यह दार्शनिकता राज्य तथा राजमहलों में होने वाली उन घटनाओं का फल है जिनमें नवीन रक्त राज्य को अपने दर्द में देखने का प्रयत्न कर रहा था। युवक वृद्धों को, नारी स्वतंत्रता तथा महत्त्वाकांक्षा से पारिवारिक जीवन की व्यवस्था को, अधर्म धर्म को, देवदत्त बुद्ध को, छलना वासवी को, विरुद्धक प्रसेनजित् को, अजातशत्रु बिंबसार को अपदस्थ किए जाते थे। किंतु वर्तमान यांत्रिक सभ्यता से उत्पन्न खिन्नता और यूरोपीय प्रथम महासमर से उत्पन्न विषाद की छाया भी इस तथा अन्य कथनों की दार्शनिकता के मूल में है। 'अजातशत्रु' में समर की विभीषिका के काले चित्र यत्र-तत्र अंकित हुए हैं। दूसरे अंक के छठे दृश्य में बिंबसार मानों महासमर की विभीषिका का ही वर्णन कर रहा है—"संसार भर में विद्रोह, संघर्ष, हत्या, अभिभोग, षड्यंत्र और प्रतारण है।" और उसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंक के दसवें दृश्य (पृष्ठ १३१) में तो मानों महायुद्ध से लौटा सैनिक ही (ऐतिहासिक परिस्थिति में भी वास्तविक रूप में समर से लौटे हुए) अजातशत्रु के मुख से बोल रहा है—"युद्ध में बड़ी भयानकता होती है, कितनी स्त्रियाँ अनाथ हो जाती हैं। सैनिक जीवन का महत्त्वमय चित्र न जाने किस षड्यंत्रकारी मस्तिष्क की कल्पना है। सभ्यता से मानव की जो पाशववृत्ति दबी हुई है उसी को इस में उत्तेजना मिलती है।" तीसरे अंक के दूसरे दृश्य (पृष्ठ १३६) में बाजिरा भी युद्ध से उत्पन्न हुई अवस्था का चित्रण मोह में पड़े हुए अर्जुन की भाँति करती है—"क्या विप्लव हो रहा है! प्रकृति से विद्रोह करके नये साधनों के लिये कितना प्रयास होता है! अंधी जनता अँधेरे में दौड़ रही है। इतनी छीना-झपटी, इतना स्वार्थ-साधन कि सहज प्राप्य अंतरात्मा के सुख शांति को भी लोग खो बैठते हैं। भाई से भाई लड़ रहा है, स्त्रियाँ पतियों पर प्रेम नहीं, किंतु शासन करना चाहती हैं। मनुष्य मनुष्य के प्राण लेने के लिये शस्त्र-कला को प्रधान गुण समझने लगा है और उन गाथाओं को लेकर कवि कविता करते हैं।" अर्जुन के मोह और इस कथन में अंतर इतना ही है कि अर्जुन की भावना-क्षेत्र की मोहनिद्रा को दूर करने के लिये कर्मक्षेत्र के योगी कृष्ण की गीता आ गई थी, किन्तु प्रसाद के पात्रों की अथवा प्रसाद ही की 'मोहनिद्रा' को जगाने न किसी शंकराचार्य का वेदांत आता है, न किसी 'मोहन' की गीता। आती है तो केवल एक उदास बौद्ध-कालीन दार्शनिकता जो अपनी अकर्मण्य शांति से मनुष्य की शक्तियों को उत्तेजित करने के स्थान पर उन्हें शिथिल कर 'भिक्षुकों की भोंड़ी सीख' सिखलाती है। इस प्रवृत्ति के कारण प्रसाद मैथिलीशरण गुप्त के समान भावना-क्षेत्र के कर्मवीर भी नहीं रह जाते, वरन् अपने 'अजातशत्रु' के बिम्बसार की तरह 'नियति की डोरी' पकड़ कर उदासीनता का वातावरण उपस्थित करने वाले बौद्ध दार्शनिक अथवा दैनिक जीवन के संघर्षों से सामंजस्य स्थापित न कर सकने के कारण उससे दूर हुए इतिहास और कल्पना के लोक में विचरण करने वाले कवि बन जाते हैं। फलस्वरूप उनकी रचनाओं में गहरे विषाद का वातावरण उपस्थित हो जाता है। किन्तु जब प्रसाद की दार्शनिकता पर उनका हृदय अधिकार करने लगता है तो विषाद के बादल फटने लगते हैं और निराश भावनाओं के अंधकार में प्रेम की शीतल किरणें फूट फूट कर आशा का आलोक जगाने लगती हैं, जिससे प्रसाद की रचनाएँ विषादान्त होने से बच जाती हैं।

बौद्ध दर्शन के वातावरण में रहने वाले बिम्बसार और बौद्ध साहित्य में लीन रहने वाले प्रसाद के मन में अकर्मण्यशील विचारों का उठना स्वाभाविक ही है। ऐसी स्थिति में, जब सब ओर 'विद्रोह, संघर्ष हत्या, अभियोग, षड्यंत्र और प्रतारण का वातावरण हो' बिम्बसार राज्य से अलग होने की चाह में ही सुख देख सका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मण्यशील प्रतापी प्रसेनजित् की भाँति राज्य संचालन करना उसके लिये कठिन ही नहीं असंभव रहा है। इसलिये वह "यदि मैं सम्राट् न होकर किसी विनम्र लता के कोमल किसलयों के झुरमुट में एक अधखिला फूल होता और संसार की दृष्टि मुझ पर न पड़ती, पवन की किसी लहर को सुरभित करके धीरे से उस थाले में चू पड़ता, तो इतना भीषण चीत्कार इस विश्व में न मचता।"—जैसी सुंदर, किन्तु दुर्बल भावनाओं का ही आश्रय लेकर संतोष कर लेता है।

भावनाओं के अंतर्द्वन्द्व और प्रेम के लोक में अतीन्द्रिय जगत की नक्षत्रमालिनी निशा में 'लाज भरे मौन सौंदर्य' को देखने वाले प्रसाद अपनी रचनाओं में भाव-व्यंजना प्रकृति से लिये गये उपादानों की अप्रस्तुत योजना द्वारा करते हैं। 'आँसू' में—

पतझड़ था, झाड़ खड़े थे सूखी सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछाकर आए तुम इस क्यारी में।
शशि मुख पर घूँघट डाले, अंचल में दीप छिपाए
जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आए।

और अजातशत्रु में "अलका की किस विकल विरहिणी की पलकों का ले अवलंब," "निर्जन गोधूली प्रांतर में खोले पर्णकुटी के द्वार", और "चल वसंतबाला के अंचल से", आदि गीतों में बड़ी मार्मिक रीति से प्रसाद जी ने भावना की अभिव्यंजना की है। इस अभिव्यंजना की प्रणाली में मैथिलीशरण गुप्त 'प्रसाद' के अनुयायी हैं और अलंकारों के पीछे टेढ़ी भावना उनके काव्य-सौंदर्य का गुण है।

प्रकृति के विराट् रूप और विराट् दृश्यों को देखने में प्रसाद की भावुक दार्शनिक कल्पना खूब रम जाती है, इसीलिये जहाँ कहीं प्रलय के दृश्य आए हैं, प्रसाद बड़ी सजीवता से उन्हें दिखाने में समर्थ हुए हैं। 'कामायनी' में प्रलय का दृश्य, 'कामना' में 'स्वर्ण द्वीप की अवस्था,' 'आँसू' में जलनिधि का 'बौना' बनना और नील-निलय में फैले नक्षत्रों का ज्वालामयी जलन के स्फुलिंग और महामिलन के अवशेष चिह्नों के रूप में दिखाई देना प्रसाद की विराट्-प्रियता का ही परिचय देते हैं। उनकी दार्शनिकता इस विराट् भावना को और भी अधिक गंभीर कर देती है और शून्य भीति पर प्रसाद की उर्वरा कल्पना रंग-बिरंगे सजीव चित्र उपस्थित कर इतिहास को पूर्ण और जीती-जागती दुनिया बना कर सुंदर काव्य की सृष्टि कर देती है। यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है।

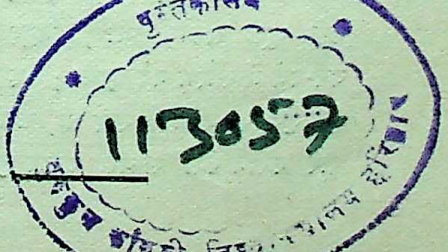

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समालोचना

आरसी । लेखक—श्री आरसीप्रसाद सिंह; प्रकाशक—श्री युगलकिशोर झा, ज्योतिषाचार्य, तारामण्डल, मुजफ्फरपुर । मूल्य सात रुपया !

इस पुस्तक में लेखक की विविध काव्य-रचनाएँ संगृहीत की गई हैं। श्री आरसी-प्रसाद सिंह ने हिन्दी के वर्तमान काव्य क्षेत्र में काफी अच्छा नाम कमा लिया है । बिहार के कवियों में तो वह विशेष ऊँचा स्थान प्राप्त कर चुके हैं । आरसी जी की कविता बहुत सरस, सुकान्त और भाव-विभोर हुआ करती है । उनकी प्रायः सभी उल्लेखनीय कविताओं के तारों में हम एक विशेष स्वर अविराम और अपरिवर्तित रूप से बजता हुआ पाते हैं । वह है यौवन के अचिर ज्वर का चिर-मादक स्वर । इस कवि की कविताओं को पढ़ने से ऐसा अनुभव होता है कि वह यौवन की वर्षा-प्लावित नदी में निरावरण अवस्था में तैरता हुआ कभी उसके तल तक डूबने की कोशिश करता है, कभी निर्द्वन्द्व भाव से सतह के ऊपर तैरता है, कभी दोनों हाथों और दोनों पाँवों से पानी उछाल कर उल्लसित किलकारियाँ भरता है, कभी किनारे के पास तक आकर कछार की कीचड़ से खेलने लगता है, और फिर मँझधार में जाकर उमड़ती हुई हिलोरों के साथ उन्मुक्त भाव से अज्ञात की ओर बहा चला जाता है । वास्तव में मदोन्मत्त यौवन का उच्छल कल-गान जिस तद्गत और तन्मय भाव से 'आरसी' के कवि ने गाया है वैसा वर्तमान हिन्दी-जगत् के बहुत कम कवि गा पाए हैं । विविध भावों और विभिन्न रसों के संयोग से यह कवि, दूसरे कवि के शब्दों में, ताल-ताल में अमंद थिरककर सौ-सौ छंदों में स्वच्छंद नाचता हुआ रूप और यौवन के गीत गाता चला गया है—किस ओर ? जादू की उस अज्ञात नगरी, उस चिर अलक्षित, चिर-भ्रामक तथापि चिर-सत्य सी प्रतीत होने वाली स्वप्नमयी अलकापुरी की ओर । बीच बीच में कवि को स्वयं चैतन्य होता है । वह स्वप्न से चौंकता हुआ-सा, स्वप्न की ही सी दशा में मानो यह चिल्ला उठता है—"यह सब स्वप्न है ! यह सब छलना है !" पर उस प्रबल माया के विराट् आकर्षण से छुटकारा पाने में वह किसी प्रकार भी अपने को समर्थ नहीं पाता, और वह बेबस गा उठता है—

बीच डगर पर खड़ी जोगिनी, बड़ी चतुर जादूगरनी !
कैसे भूल सकोगे प्यारे, निठुर ठगों की यह धरणी !
वन-वन में सौरभ-नव छाया ; तरु तरु पर समीर बौराया !
तृण-तृण पर वंशी के स्वर सी, फैली यह जादू की माया !
पार करोगे कैसे सागर, अगम तुम्हारी यह तरणी !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जादू का देश सनेही, इस जग का विश्वास नहीं ;
इस मरीचिका के मरुवन में मिटी किसी की प्यास नहीं !
जलती यहाँ चिता की ज्वाला, जला कल्प-कुसुमों की माला ;
इस नगरी की रीति निराली, पंथ निराले वेश निराला !

पर—"बचकर चले रूप चितवन से यह भी तो नादानी है !" इसलिये बचने की इच्छा रहते हुए भी कवि बचना नहीं चाहता—यह विचित्र विरोधाभासात्मक बात इस मायालोक में ही संभव है।

रूप-यौवन की उपासना और प्रेम-मिलन की वासना 'आरसी' के कवि के अणु-अणु में इस भग्नता के साथ व्याप्त पाई जाती है जो आश्चर्यजनक है। 'तरुणी' शीर्षक कविता से कवि की इस तन्मयता का भाव स्पष्ट हो जाता है। दमित यौन-वृत्ति की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हमारे कुछ छायावादी कवियों में केवल चरम आत्ममग्नता ही नहीं, बल्कि किसी स्वस्थ और प्राकृत (नॉर्मल) हृदय में भी आतंक उत्पन्न कर देने वाली विचित्र और विरूप 'फेन्टेज़ियाँ' पाई जाती हैं। श्री आरसीप्रसाद सिंह का नाम इस कोटि के कवियों की प्रमुख श्रेणी में गिना जा सकता है। वह किसी प्राकृत पुरुष की तरह नारी की सहज-सौन्दर्योपासना से सन्तुष्ट रहना नहीं चाहते। वह उसे एकदम वस्त्रहीन, नग्न और निरावरण रूप में चाहते हैं। नारी की उस विवश लज्जा-हीनता को कवि केवल दो ही आँखों से देखकर सन्तुष्ट नहीं है, वह "सहस्राक्ष-सा दृग पसार" कर "व्याकुल, विह्वल और विधुर" दृष्टि से उसे देखना चाहता है, क्योंकि—

यौवन मदिरा की विकट गन्ध
कर रही मुझे पल पल अधीर !

अतएव—

रह जाय न लेश भी वसन-शेष; उर, भुज, कपोल, शिर, जघन-देश !
हो मूर्तिमती मेरे समक्ष, अब धारण कर तू नग्न वेश !

* * *

मत हो लज्जा सर में निमग्न ; कर दे कुच-नीवी-ग्रन्थि-भग्न !
आ जा, ओ, आ मेरे समीप सम्पूर्ण नग्न, एकान्त नग्न !

'न्यूडिज्म' (नग्नवाद) के समर्थन में कवि ने कविता में जो दलीलें पेश की हैं, उनसे हमें कोई आपत्ति नहीं, और न हम यह कहने का ही दुस्साहस कर सकते हैं कि नग्न सौन्दर्य अपने-आप में अप्राकृत अथवा अपावन है। पर देखना यह है कि उस 'एकान्त नग्नता' के प्रति कवि की विह्वल वासना से दग्ध हृदय की प्रवृत्ति क्या है। वह अपने ही शब्दों में 'चीर-चोर' बनकर विवश नारी का चीर-हरण करके सहस्राक्ष की तरह दृग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसार कर उसका जो नग्न रूप देखने के लिये कुलबुला रहा है, वह क्या केवल विशुद्ध सौन्दर्योपासना की दृष्टि से ? नहीं ! इस 'चीर-चोर' के भीतर एक ज़बरदस्त चोर छिपा है, जो दबाए दबना नहीं चाहता। दमित यौनवृत्ति की इस अतृप्त वासना की सहस्र लोलुप आँखों से वह निरावरण, रक्षा-कवचहीन, निरस्त्र नारी-देह पर सहस्र परुष आघातों के चिह्न अंकित करने के लिये पागल हो उठा है। इस मनोविकारग्रस्त दृष्टि के लिये केवल 'आरसी' का कवि ही दोषी नहीं है, छायावाद के कुछ आचार्यगण इसके लिये रास्ता सुझा चुके हैं।

'आरसी' की कविताएँ मोटे तौर पर तीन श्रेणियों में विभक्त की जा सकती हैं। पहली श्रेणी में वे कविताएँ हैं जो संभवतः कवि की प्रारंभिक काल की रचनाएँ हैं, और केवल बच्चों के लिये लिखी गई हैं। दूसरी श्रेणी में हम उन कविताओं को गिनना चाहते हैं जो हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों की रचनाओं के पुनरुद्गीरण-मात्र हैं, और इस श्रेणी की कविताओं की संख्या 'आरसी' में कुछ कम नहीं है। तीसरी श्रेणी की कविताएँ वे हैं जिनमें कवि के अंतर की वास्तविक अनुभूतियाँ बौद्धिक परिपाचन के बाद अभिव्यक्त हुई हैं। इस कोटि की अधिकांश कविताएँ यथार्थ में उच्च श्रेणी की हैं, और कलात्मकता, गम्भीरता तथा विचार-प्रौढ़ता में हिन्दी के चोटी के कवियों की रचनाओं से टक्कर ले सकती हैं।

पंत जी की कविताओं का अनुकरण—केवल अनुकरण ही नहीं, पंक्तिहरण भी—'आरसी' के कवि ने आवश्यकतातीत रूप से किया है। उदाहरण के लिये यहाँ कुछ ही पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं—

फेंक दृढ़ आलिंगन का पाश बाँध लेता हूँ तुम्हें अजान ;
न करते क्यों उर से अभिसार कामना के ये शिशु नादान ?

* * *

न जाने प्रिये, तुम्हें तब कौन तड़ित से इंगित करता मौन ?
शिशिर की छाया में सुकुमार सुमन सा खिल उठता संसार ;
न जाने अलि, तब झंकृत कौन उतर कर जाता उर के तार ?

* * *

सिखाया था किसने हे प्राण, तुम्हें यह सोने का कल गान !
वन्य-कुसुमों-सी वन के बीच विजन में ही खिलकर चुपचाप,
मुसकिरा पड़ती हो तुम स्वयं माधुरी पर अपनी ही आप !

* * *

तेरे ही पदनख की द्युति से होवे इसमें सुरभि-प्रसार !

* * *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलि, मेरा यह कवि-शलभ-बाल फिरता क्यों उन्मन डाल-डाल ?
द्योतित रे किसका भव्य भाल रवि-शशि-ग्रह-उडुओं से विशाल ?
कर पार महायुग महाकाल जलती नव-ज्योतिर्पिण्ड ज्वाल !

इस तरह के बीसियों उदाहरण 'आरसी' में से पेश किये जा सकते हैं।

गरम खूनवाली 'विद्रोही' कविताएँ भी 'आरसी' में काफी हैं। पाठकों से यह बात छिपी न होगी कि इस कोटि की कविताएँ पढ़ने वाले का चित्त बरबस खींच लेती हैं, चाहे उनके भीतर कुछ सार निहित हो या न हो। पर इस बात से शायद बहुत-से पाठक परिचित न होंगे कि 'विद्रोहपूर्ण' कविताओं की रचना सब से आसान होती है। 'प्रलयंकर शंकर' पर, कविता का ककहरा जाननेवाला साहित्यिक बालक भी 'रवीन्द्रनाथी' कविता के बाहरी ढाँचे से मिलती-जुलती-सी चीज़ बड़ी सरलता से तैयार कर सकता है। इसलिये अक्सर यह देखा गया है कि बहुत-से नौसिखिए कवि अपने कवि-जीवन का श्रीगणेश 'रुद्र के ताण्डव नर्तन' या 'युग के भीषण विवर्तन' से ही किया करते हैं। बाद में कुछ लोग स्वयं समझ जाते हैं कि इस प्रकार के तूफानी उद्गारों के लिये किसी साधना की आवश्यकता नहीं है, इसलिये वे उससे मुँह मोड़ लेते हैं। पर कुछ कवि ऐसे भी होते हैं जो आग और धुएँ से भरे उद्गारों को निकालते रहने में ही कवित्व का महत्त्व समझते हैं, और अपने जले दिल के फफोले बड़े-बड़े उत्पाती शब्दों से फोड़कर 'क्रांतिकारी कवि' बनना चाहते हैं। ऐसे कवियों को यह जान लेना चाहिये कि बहुधा यौनवृत्ति की अतृप्ति अथवा हीनता-बोध जनित विकृति ही इस प्रकार के 'वैप्लविक' अथवा ध्वंसात्मक प्रवचनों की उत्पत्ति का मूल कारण होती है। ऐसे उद्गीरण बहुधा कवि की शक्ति और स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि विकृति और मानसिक अस्वस्थता का परिचय देते हैं। 'आरसी' के कवि ने भी इसी प्रकार की कुछ ध्वंसात्मक कविताएँ लिखी हैं। फिर भी यह प्रसन्नता की बात है कि हिन्दी के कुछ दूसरे विनाशशील 'क्रान्तिकारी' कवियों की तरह उन्होंने इस कोटि की कविताओं को मूल रूप से नहीं अपनाया है।

कवि की जिन रचनाओं को हमने तृतीय श्रेणी के अंतर्गत रखा है उनमें कवि समस्त मनोविकारों और अवलिप्साओं से ऊपर उठा हुआ जान पड़ता है और अपने जीवन के सच्चे अनुभवों से प्राप्त दार्शनिकता को बड़े ही कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त करता है। इस कोटि की कविताओं में हमें दो सर्वश्रेष्ठ लगीं। एक तो प्रारंभिक, मुक्तछन्दान्वित, 'अथ' शीर्षक कविता, और दूसरी अंत की 'आरसी' शीर्षक कविता। इन दो कविताओं में 'आरसी' के कवि की प्रतिभा का विकास चरम सीमा को पहुँचा हुआ जान पड़ता है।

वर्तमान संग्रह में कवि की कुछ व्यंगपूर्ण रचनाएँ भी संगृहीत हैं, जिनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुभती हुई शैली और चुहचुहाती भाषा पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है। कुछ बालकोपयोगी कविताएँ भी बहुत सुन्दर और सुघड़ हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि ख़ामियाँ होते हुए भी 'आरसी' का रचयिता वास्तविक अर्थ में कवि है, और हमें इस बात की आशा करनी चाहिये कि उसके कवित्व का उत्तरोत्तर विकास उसे आधुनिक हिन्दी काव्य-जगत् में एक निश्चित स्थान प्रदान करने में समर्थ होगा। उसकी कलात्मकता वास्तव में प्रशंसनीय है। रही विचारों की गम्भीरता और दृष्टिकोण की प्रगतिशीलता। वर्तमान संग्रह की कुछ सम्मुन्नत कविताओं से हमें इस बात के सुस्पष्ट लक्षण दिखाई देते हैं कि कवि के जीवन की अनुभूतियाँ उत्तरोत्तर गहन होती जा रही हैं, जिनसे स्वभावतः उसका दृष्टिकोण सच्ची प्रगति का पंथ पकड़ लेगा ऐसी आशा करनी चाहिये।

—इलाचंद्र

राष्ट्रभाषा-समाचार

[राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा का मुखपत्र]

हर महीने की १५ तारीख़ को निकलता है।

इसमें—

प्रचारकों तथा केन्द्र-व्यवस्थापकों के लिये आवश्यक एवं उपयोगी ताज़ी सामग्री रहती है।

वर्धा-कार्यालय तथा परीक्षा-विभाग की सभी सूचनाएँ और राष्ट्रभाषा-प्रचार की तमाम प्रान्तीय हलचलें निकलती हैं।

'प्रारम्भिक' से 'कोविद' तक के परीक्षार्थियों की कठिनाइयों को दूर करने के लिये समय-समय पर परीक्षा-संबंधी लेख भी प्रकाशित होते हैं।

इसका वार्षिक चंदा दो रुपया मात्र है। मनी-ऑर्डर से भेजकर 'राष्ट्रभाषा-समाचार' के ग्राहक ज़रूर बनिए।

व्यवस्थापक,

'राष्ट्रभाषा-समाचार', वर्धा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

113057

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri